0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हि. ६०२

एक सड़ी हुई कौम

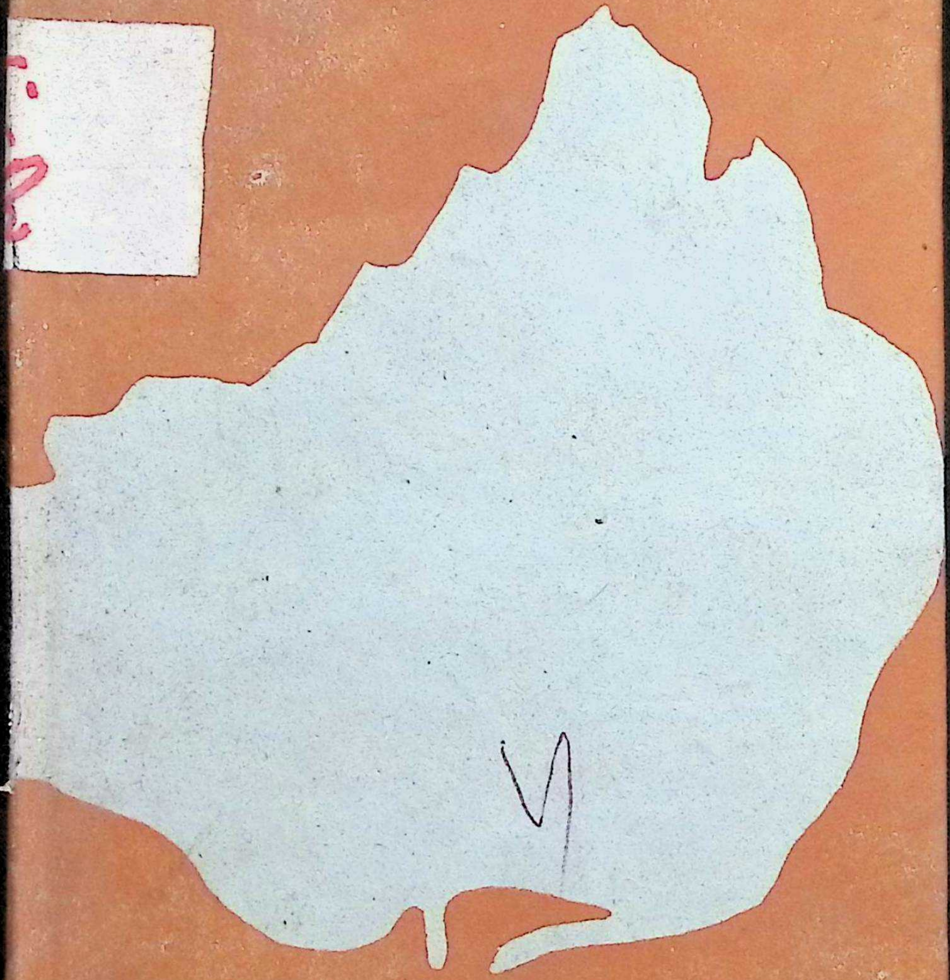

डॉ. रामप्रसाद मिश्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हि· ६०२

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

एक सड़ी हुई क़ौम

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

शारदा प्रकाशन
महरौली, नई दिल्ली - ११००३०

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

एक सड़ी हुई क़ौम

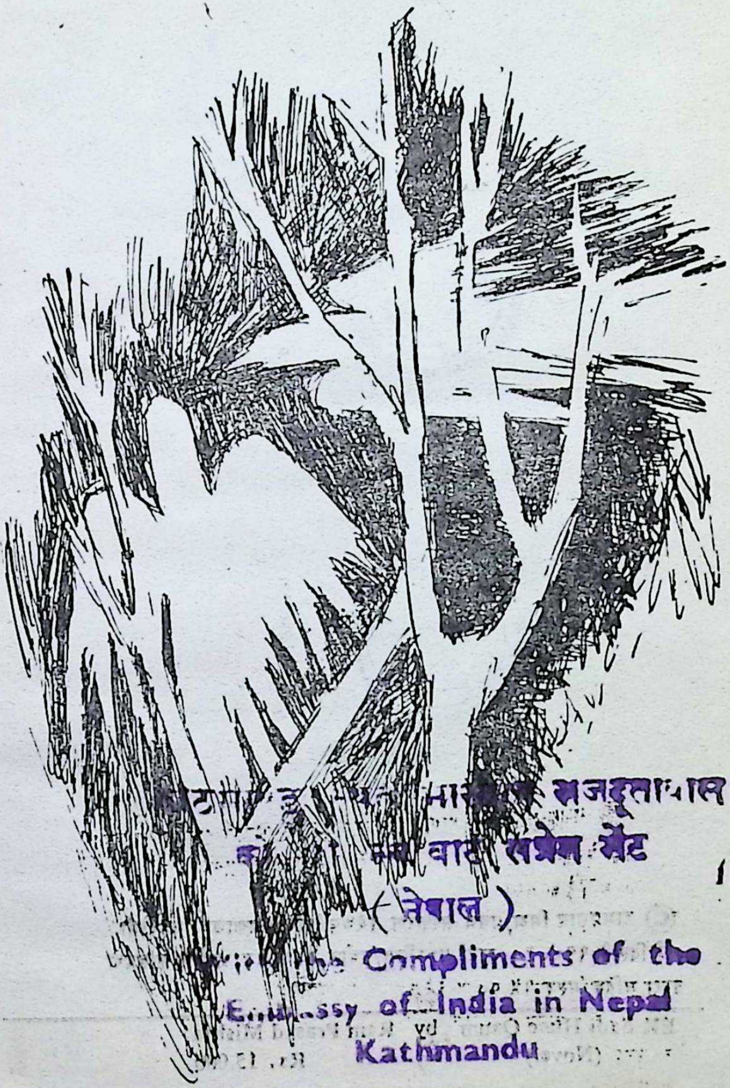

(नेपाल)
With the Compliments of the
Embassy of India in Nepal
Kathmandu

—रामप्रसाद मिश्र

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

© रामप्रसाद मिश्र/प्रथम संस्करण १९७८/शारदा प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली-११००३० द्वारा प्रकाशित/नवीन मुद्रणालय, नवीन शाहदरा द्वारा मुद्रित/मूल्य १५.००

EK Sadi Huee Qaum by Ram Prasad Mishra
(Novel) Rs. 15.000

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

परम मित्र स्वर्गीय डॉ. पुरुषोत्तमदास अग्रवाल

की

पावन स्मृति में

—रामप्रसाद मिश्र

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

क्रम

१. बीच की बात : ९
२. कुछ बेतरतीब यादें : ११
३. वह काली रात ! : ३७
४. विभीषिका : ४८
५. जीवन का प्रवाह : ६२
६. मकड़ी का जाला : ८९
७. अज्ञात आयाम : १७०
८. पुनश्च: : १८७

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

१. बीच की बात

दिल्ली के पुराने क़िले के शेर-मंडल का वह दिन ! बहुत घने-घने, बने-बने बादलों की बारातें ! मैं छत पर, छतरी के नीचे खड़ा कभी दिल्ली-पुराण के अनूठे कथावाचक क़ुतुब को देखता, कभी निर्धन देश के सम्पन्न राष्ट्रपति भवन के काले गुम्बद को, कभी शीशे की सड़क-सी यमुना को, कभी इसी शेर-मंडल की एक जानी-पहचानी सीढ़ी से गिरकर मरने वाले और ठोकरें खाने वाले हुमायूं (भाग्यवान) के मक़बरे को ! क़ुदरत के नशे में चूर, कभी गुनगुनाता, कभी गाता, कभी बादलों के शाही काफ़िले को देखता ! संयोगात् एकदम अकेला था। अकेलेपन में सामाजिक औपचारिकता समाप्त हो जाती है और मनुष्य अपने-आप को ठीक-ठीक पहचान पाता है।

वर्षा होने लगी। हवा नाच-नाच कर, गा-गा कर रस बरसाने लगी। छतरी के नीचे सिर के अलावा सारा शरीर थोड़ा-बहुत भीग गया। धरती और आकाश के बीच का रिक्त बूंदों से पूर गया था। अंधियारा छा गया था। भीगे शरीर में हवा के तेज़ झकोरों से कंपकंपी का अनुभव हुआ। और अचानक ही डर लगा···पास के ज़ीने से हुमायूं का प्रेत अब उभरा, अब उभरा !

रोएं कांप उठे, दिल धड़क उठा, भीगे और कांपते शरीर के बावजूद माथे पर पसीने की बूंदें महसूस हुईं। किसी तरह विज्ञान से मनोविज्ञान, तथ्य से कल्पना, यथार्थ से अन्धविश्वास तक के आकाश-पाताल के कुलाबे मिलाता रहा—दिमाग़ परिस्थिति पर क़ाबू पाने के लिए छटपटाता रहा।

और] तब अचानक, अप्रत्याशित, अनिच्छित पदचाप !···लगा,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मारे डर के मर जाऊंगा। सोचा, कई मित्र एकांत से दिल न लगाने, खण्डहरों और मकबरों से बचने की सलाह देते थे, वह सचमुच हितकारी थी। तभी एक मनुष्य दीख पड़ा जो हुमायूं का प्रेत न था! दम-में-दम आया। वह एक अच्छा-ख़ासा नवयुवक था। गोरा रंग, इकहरा ढांचा, चुस्त जिस्म, कसी मांसपेशियां, मज़बूत नज़र और लम्बा क़द! भीग गया था। आकर, छतरी के नीचे, मेरे पास ही, खड़ा हो गया।

जब तक मेरी किंकर्त्तव्यविमूढ़ता टूटे तब तक वह बोल पड़ा, "घनघोर वर्षा हो रही है!"

"लगता है, कभी रुकेगी ही नहीं!"

कुछ पल कोई कुछ न बोला।...

"आप यहां क्या कर रहे थे? कहां रहते हैं? क्या करते हैं?" आवाज़ में एक अकड़ भी थी, एक जकड़ भी।

मैं कुछ घबराया। पर अपने शरीर पर भरोसा करता हुआ बोला, "मैं यहां कुदरत के नज़ारे देख रहा था। दिल्ली में ही रहता हूं। कॉलिज में पढ़ाता हूं और कविता, उपन्यास आदि में रुचि रखता हूं।"

"प्रोफेसर हैं! कवि और उपन्यासकार भी!" अब आवाज़ में एक अकृत्रिम कोमलता आ चुकी थी। मैं आश्वस्त हुआ।

वह हंसा, "मैंने दूर से देखा तो समझा, कोई सेठ या लीडर हैं।"

मैं भी हंसा, "दिल्ली में राष्ट्रीय वेशभूषा देखकर लोग व्यक्ति के सेठ या नेता होने का ही अन्दाज़ा लगाते हैं। दिल्ली प्रयाग और हरिद्वार के नहीं, लंदन और पेरिस के निकटतर है! अपनी क़ौम..."

"एक सड़ी हुई क़ौम! बस मरी नहीं है!"

मैं स्तब्ध होकर उसे ध्यान से देखने लगा।

वह हंसा, "क्या देख रहे हैं? मैं तो एक नाचीज़ आदमी हूं!"

"कहीं, कभी कोई आदमी नाचीज़ न तो हुआ है, न है, न होगा। हर आदमी में रूहानी उजाला जरूर होता है..."

"चलिए, आप कहते हैं तो मान लेता हूं।" वह एक विचित्र हंसी हंसा। दो पल रुककर बोला, "जिसका दिल पाक होता है वह सबको पाक पाता है। आप अपनी जगह ठीक हैं। लेकिन मेरे अनुभव कुछ अलग

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

हैं।" उसने पैंट की दायीं जेब से सिगरेट का पैकेट निकाला, "लीजिए, कंपकंपी दूर हो जाएगी।" उसने लाइटर भी निकाल लिया।

मैंने हाथ जोड़कर कहा, "क्षमा करें, मैं दूध और पानी के अलावा कुछ नहीं पीता!"

वह ठठाकर हंस पड़ा। उसकी हंसी में एक सहज क्रूरता हो सकती थी, पर वह उसी के समान सुन्दर जरूर थी। सिगरेट सुलगाकर बोला, "दूध और पानी के अलावा कुछ न पीना तो बच्चों के लिए ही सम्भव है।"

"आप तो मुझे नाहक परमहंस बना रहे हैं।"

वह चुप रहा। मुझे ध्यान से देखता रहा। तब बोला, "शर्बत भी नहीं पीते।"

मैं हंस पड़ा, "चीनी मिला पानी ही न?"

वह हंसा पर चुप रहा।

कुछ कश खींच-छोड़ कर बोला, "आप कवि हैं, उपन्यासकार हैं, यहकार हैं, वहकार हैं, बेकार न होकर भी शायद बेकार हैं, तो बताइए, मैं कौन हो सकता हूं?"

मैं कुछ पल उसे देखता रहा। चुपचाप।

"बताइए न? संकोच न करिए, जो समझिए वही कह डालिए।"

"आपका रंग आपके ढंग से अलग है, आपका साज आपकी आवाज से अलग है, लेकिन आप मुझे प्रिय और आदरणीय लगते हैं…"

"और अगर मैं हकीकत बता दूं कि मैं दूर सड़क से इस सन्नाटे और अकेले में आपको लूटने आया था और मैं इस चाकू की कमाई खाता रहा हूं, तो?" उसने जेब से एक लम्बा चाकू निकाला और बटन दबाकर उसका चमचमाता फल मेरे सामने कर दिया…!

मैं कांप गया, घिघ्घी बंध गई…

"बोलिए!"

"तो भी मैं यही कहता। कुदरत ने इन्सान को अपराधी नहीं बनाया। उसमें पशुत्व हो सकता है, पर उसकी बनावट और उसका दिल-दिमाग खूंख्वार नहीं है।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"सच कह रहे हैं ?"

"मैं झूठ बहुत ही कम बोला हूं। हो सकता है, कुछ लोग मुझसे, अपनी सीमाओं के कारण, नाराज़ हुए हों, पर नफ़रत किसी ने नहीं की। मुझसे नफ़रत नामुमकिन है।"

वह मेरी ओर घूरकर देखने लगा···और उसने चाकू जेब में रख लिया। चुप रहा।

मैं भी चुप रहा। पर उसकी आंखें छलछला आईं। कुछ सुबकता सा बोला, "मैं एक चलता फिरता उपन्यास हूं। कई ऐसे होंगे, इसमें शक है। मुझ-जैसे लोग राम कहानी लिखने लगें, तो लोग उपन्यास पढ़ना छोड़ दें, क्योंकि अधिकतर उपन्यास निष्क्रिय लेखकों की कल्पित सक्रियता के प्रभावहीन परिणाम मात्र होते हैं।" और अचानक ही मुस्कान की एक हल्की सी लकीर बिजली की तरह कौंध गई।

"कुछ लिखा है ?"

"यूं ही, बेतरतीब···।"

"प्रकाशित···?"

"इधर ध्यान ही नहीं गया और···डर भी है।"

"अपने बारे में कुछ बताइए···।"

"माफ करें, बताऊंगा नहीं, पर अपनी लिखी-लिखाई राम कहानी दे दूंगा।"

"कब ? कहाँ ? कैसे ?"

वह हंस पड़ा, "कल ! यहां ! ऐसे ही !"

"क्या शीर्षक है ?"

"कुछ नहीं, पर आप 'एक सड़ी हुई कौम' कर लीजिएगा।"

मैं न जाने किन खयालात में खो गया और वह बड़ी बेतकल्लुफी से "अच्छा, बाइ ! गुड नून !" कहकर, हाथ हिलाते हुए ज़ीने से खट्खट् करता, उतर गया। मैं किंकर्त्तव्यविस्मृत खड़ा का खड़ा रह गया। हां, दो मिनट बाद जब उसने नीचे से हाथ हिलाया तब मुझे चेत आया। मैंने भी हाथ हिला दिया, उसका जाना देखता रहा। बड़े फाटक के पास से उसने एक बार फिर हाथ हिलाया। मैंने अनुकरण क्रिया।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

अब मैंने परिस्थिति और परिवेश पर ध्यान दिया। मैं सवेरे आया था। अब दोपहर थी। बारिश रुक गई थी पर बीच-खूच बूंदा-बाँदी हो जाती थी। कुछ देर उस व्यक्ति में खोया रहा। तब भूख ने चलने की आज्ञा दी।

दूसरे दिन जब पहुंचा तब देखा, वह पहले से ही मौजूद है। एक मोटी-सी प्लास्टिक कवर की कॉपी देते हुए बोला, "चलता हूं। गुड बाइ!" और मेरी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा किए बिना ही चला गया। मैं कॉपी पकड़े हक्का-बक्का खड़ा-का-खड़ा रह गया। ध्यान तब टूटा जब उसने नीचे से, कल की ही तरह वेव किया। मैं यंत्रवत् अनुकरण करता रहा।

वह चला गया…

काफी देर मैं गुम-सुम खड़ा रहा। फिर उसकी कॉपी खोली। जिल्द के नीचे एक पत्र था : "मैं आपको जानता नहीं, पहचानता नहीं, फिर भी, 'एक सड़ी हुई क़ौम' दिए जा रहा हूं। प्रार्थना है, आप इसे अपने नाम से प्रकाशित कराएं! मैं मिलूं या नहीं, पर…होगा!"

और मैं उसके आदेश का पालन कर रहा हूं…

२. कुछ बेतरतीब यादें

याद दिल की वह भूख है जो कभी नहीं मिटती। इसे जितना ही मिटाना चाहो उतना ही बढ़ जाती है। मेरी शुरूआत की यादें कुछ उखड़ी-उखड़ी-सी, कुछ बिखरी-बिखरी-सी और कुछ बेतरतीब-सी हैं। मैं उन्हें भुलाना चाहता हूं पर वे भुलाने को ही भुलाए देती हैं।

सबसे पहली यादें : मैं नन्हा-सा बालक एक ऊंची-सी कोठी की छत पर पतंग उड़ानेवाले अपने बड़ेभाई का सहायक बना हुआ हूं, हमारा संबंध गांव से भी है, एकदम नंग-धड़ंग, धूल-धूसरित घर के बड़े-से आंगन में, अपनी छोटी बहन के साथ खेल रहा हूं! गांव कहाँ था? बहन कैसी थी? हम किस जाति के थे? हमारा धर्म कौन-सा था?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हमारी आर्थिक स्थिति कैसी थी ? कुछ पता नहीं ! सम्भवतः मुझे शंकर कहकर पुकारा जाता था।…हां उस गाँव के बिल्कुल पास एक बड़ी नदी, शायद गंगा, बहती थी, जिसके किनारे की पैंज हम बच्चे भी किया करते थे—बड़ी सावधानी से, डरते-डरते !…पहली यादें खत्म !

दूसरी याद…हम एक सुंदर सग्गड़ पर कहीं, शायद किसी मेले में, जा रहे हैं। रात का सन्नाटा और अंधेरा ! मैं ज़्यादातर सोता ही रहा था, पर जब-जब आँखें खुलतीं, घर न देखकर, डरता ज़रूर था।

और तीसरी दर्दभरी याद, मैं खोया शिशु रो रहा हूं। एक काला-सा आदमी आकर मुझे गोद में उठा लेता है और मेरा रोना रोकने के लिए खरीदकर एक लड्डू देता है…

इसके बाद वह शहर ! दिल्ली !! राजधानी !!! बड़े-बड़े कंगूरों और गुम्बदों वाला वह चर्च ! कई दिनों तक मैं बहुत रोया, लेकिन अब रोने पर लड्डू नहीं, लप्पड़ मिलता था; इसलिए धीरे-धीरे रोना-धोना अपने-आप खत्म हो गया। बप्पा और अम्मा के चेहरे धुंधले पड़ते गए…अब तो शायद पहचान भी न पाऊं ! वह भाई, जिसे मैं कभी-कभी काट लेता था, एक सपना बन कर रह गया। और हां, उस बहन की लड़ाइयों की आंसूभरी यादें भी लुप्त होती गईं, अब शायद उसे भी न पहचान पाऊं !…

तब और अब में अन्तर था। तब मैं शंकर था, अब पीटर उर्फ पीटू। काफी अर्से बाद, मुझे एक स्कूल में भेजा गया। वहाँ प्रार्थना भी होती थी, पढ़ाई भी। संस्था के भवन में ही चर्च भी था। जगह-जगह एशु और मेरी के चित्र लगे थे। हम बच्चों को बार-बार बताया जाता, "प्रभु एशु, परमात्मा का प्यारा बेटा, आदमी के पाप को मिटाने के लिए खुद सलीब पर चढ़ गया। उसके बलिदान से परमात्मा को दया आई और स्वर्ग का द्वार आदमी के लिए खुल गया। लेकिन सिर्फ उसके लिए जो एशु की शरण में आए ! बाकी के लिए जलता हुआ नरक !" इस सिलसिले में बार-बार आदम और ईव की ईडन के उद्यान में शैतान की शैतानी के कारण, ज्ञानतरु के फल को खाने की अवज्ञा के पाप की चर्चा होती। मेरी पर परमात्मा की कृपा के सिलसिले में बताया जाता, "एशु परमात्मा का

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पुत्र था, इसमें शक करने से जलता हुआ नरक मिलता है, जिसमें हमेशा-हमेशा रहना पड़ता है। चूंकि रूह मरती नहीं, इसलिए, सदा जलते रहना पड़ता है। अनायास ही सबको प्राप्त आशा भी वहां साथ छोड़ जाती है। एशु को सिर्फ पैगम्बर मानना पाप है। हमारे मुसलमान भाई एशु को पैगम्बर मानते हैं, परमात्मा का पुत्र नहीं, क्योंकि कुरान में ऐसा कहा गया है। यह गलत है। इस गलती का फल मुहम्मद को कैसा मिला? ऋषि और कवि दांते ने उनको नरक में देखा था। साथ में उनके चचेरे-भाई और दामाद अली को भी! 'डिवाइन कॉमेडी' महाकाव्य में साफ-साफ खुलासा किया गया है।" बड़े गौरव से कहा जाता, "हम ईसाई हैं। ईसाई धर्म संसार का सर्वश्रेष्ठ धर्म है, क्योंकि इसके माननेवाले संख्या में सबसे अधिक हैं, सबसे धनी हैं, सबसे बलवान हैं, सबसे बुद्धिमान हैं। संसार के सर्वश्रेष्ठ देश अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी इत्यादि ईसाई हैं। कोई देश ऐसा नहीं जहां ईसाई न हों। दूसरे धर्मों के अनुयायी ईसाई बन रहे हैं क्योंकि इसी धर्म के सहारे वे स्वर्ग पहुंच सकते हैं।" यह भी बतलाया जाता, "एशु ब्रह्मचारी थे। वे कृष्ण और मुहम्मद की तरह बहुत-सी स्त्रियों से घिरे न रहते थे। उन्हें महावीर और बुद्ध की तरह बीवी और औलाद छोड़कर भागना नहीं पड़ा था। ईसाईधर्म के विशप्स और नन्स आज भी ब्रह्मचर्य पर अटल हैं। हमारा धर्म दया और सेवा का धर्म है। अनाथों और रोगियों, भूखों और नंगों, बूढ़ों और अपाहिजों पर जैसी दया हमारा धर्म करता है वैसी अन्य नहीं, हमारा धर्म इनकी जैसी सेवा करता है वैसी अन्य नहीं। अगर ईसाई अमेरिका कृपा न करता तो हिन्दू भारत के करोड़ों लोग भूखों मर जाते। यह जानते हुए भी कि भारत के अधिकांश लोग गुमराह और बुतपरस्त हैं, कृपालु ईसाई, इंसानियत के नाम पर, निःस्वार्थ सेवा करते रहते हैं। तभी तो हमारे नेताओं, जैसे कि मदर मेरी, के सामने सब झुकते हैं! जब पोप भारत आए थे तब तत्कालीन राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री, सब उनके स्वागत-सत्कार के लिए बम्बई दौड़े गए थे। पोप ने सबको अवनत देखकर कृपापूर्ण आशीर्वाद दिया था। किस हिन्दू-धर्म-नेता को ऐसा गौरव प्राप्त है? कई हिन्दूधर्म-नेताओं को तो सर-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

कार मंदिरों के अन्दर से पकड़कर जेल में बंद कर चुकी है, क्योंकि कोई गोहत्या पर दंगा कराता था तो कोई विरोधी चेलों का खून।"

जब मैं तीसरे स्टैंडर्ड में पहुंचा तब मदर मेरी के दर्शन हुए। गोरी थीं। अंग्रेजी में बोलीं, पर सरलता के कारण थोड़ा-बहुत समझ में आ गया। हमारी अंग्रेजी बहुत अच्छी थी ही। वे बीच-बीच अंग्रेजों के ढंग की हिन्दी भी बोलती थीं। हम बच्चे लगातार उनका नाम सुनते आ रहे थे। उन्हें बहुत श्रद्धा से देखा-सुना।

यों तो सब ठीकठाक था, पर मुझे लगता था कि मेरा वैसा आदर नहीं है जैसा अन्य लड़कों का। जो व्यक्ति मुझे मेले से लाए थे वे स्कूल में ही शिक्षक थे। इसके अलावा, वे धर्म-प्रचार भी करते थे। छुट्टियों में नागा, मिजो, खासी, जयंतिया, संथाल इत्यादि आदिवासी जातियों में धर्म-प्रचार के लिए जाते रहते थे। वे अविवाहित थे। मुझसे कसकर काम लेते। उनकी आवाज़ बधा की आवाज़ से अलग न थी! कक्षा में भी मुझे परिहास और दया का पात्र समझा जाता। चूंकि मेरी पढ़ाई व्यवस्थित और क्रमबद्ध न हो पाई थी; इसलिए, मैं उम्र में बड़ा था। लम्बा भी। चिढ़ाया जाता। कोई ऊंट कहता तो कोई कंगारू, कोई लम्बू कहता तो कोई बुड्ढ! लड़के, चाहे वे हिन्दू हों या ईसाई या अन्य, मुझे देख कर फब्तियां कसते, "बेचारा अनाथ! फादर जोसेफ न होते तो कहीं भीख मांगता होता!" टीचर्स मुझसे नौकरों-जैसा व्यवहार करते। मैं सहन करने के अतिरिक्त करता ही क्या? एक घुटन-सी महसूस होती, पर लाचार था!

बात तब की है जब मैं सातवें स्टैंडर्ड में था। मेरी की मूर्ति के सामने खड़ा था कि अचानक अम्मा की याद आ गई और मैं सुबक-सुबक कर रोने लगा। उस दिन फादर जोसेफ ने मुझे काफी मारा था। उनके बूटों में पालिश वैसी ही की थी जैसी रोज करता था, लेकिन मूड ऑफ होने के कारण वे नाराज हो गए, "गधा! तुझे कुछ नहीं आता। मैं न होता तो दर-दर भीख मांगता होता!" वगैरह-वगैरह। अब मैं दूधमुंहा बच्चा न था। मेरा क़द साढ़े-पांच फुट से ज्यादा था, जबकि फादर इससे भी तीन इंच कम थे। मैं गोरा था, जबकि वे काले थे। मैं मज़बूत था,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

जबकि वे मरियल थे। मेरे मन में आया कि दो करारे हाथ धर दूं ! मेरे मन में यह भी आया कि भाग निकलूं ! किसी होटल या रेस्ट्रां में काम कर लूंगा या अगर कोई काम न मिला तो रेल की पटरी पर लेटकर जीवन समाप्त कर दूंगा ! परन्तु मनुष्य जो सोचता है वह करे भी, यह अनिवार्य नहीं। द्विविधा की स्थिति में इधर-उधर टहलता रहा। छुट्टी का दिन था। सब तरफ सन्नाटा था। अचानक ही मेरी की मूर्ति को देखकर उसके सामने खड़ा हो गया और पता नहीं कैसे और कब आंसू झर चले···।

अचानक देखता हूं कि मदर मेरी सामने खड़ी हैं ! बहुत कोशिश की कि आंसू रोक लूं लेकिन असफल रहा। उन्हें नमन किया। उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखकर बहुत प्रेम से कहा, "तुम सच्चा ईसाई है।"

मैं चुप !

"प्रभु एशु तुम पर प्रसन्न है !"

मैं चुप।

"तुम्हारा नाम होगा।"

मैं चुप।

"तुम स्वर्ग पाएगा।"

मैं चुप।

उन्होंने मेरे गाल थपथपाए, "चुप क्यों है ?"

मैं चुप।

वे मुझे हाथ पकड़कर साथ ले ग ं। एक बहुत ही सजे हुए कक्ष में ठहरी थीं। मैं संभ्रम में था। उन्होंने एक कीमती सोफे पर बैठते हुए मुझे पास ही बैठने का संकेत किया। मैं बैठ गया। उन्होंने पूछा, "क्या खाएगा ?"

मैं भूखा था, पर बोला, "कुछ नहीं।"

"क्या पिएगा ?"

"कुछ नहीं।"

"क्या दुखी है ?"

मेरे मुंह से निकल ही तो पड़ा, "हाँ।"

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

"क्यों ?"

"मैं यहां नहीं रहना चाहता।"

"मेरे साथ रहेगा ?"

मैं खुश हो गया, "हां ! हां !!"

उन्होंने मेरी ओर वहुत ध्यान से देखा। तब बोलीं, "हम दुर्गम पहाड़ी जगह में रहता है..."

"मैं भी रहूंगा।"

"जगह वदल सकता है..."

"मैं भी वदलूंगा।"

"तो ठीक।"

मैं खुशी से खिल उठा, "मैं पढ़ना नहीं चाहता, मेहनत की कमाई करना चाहता हूं। मुझे लड़के चिढ़ाते हैं, फादर जोसेफ मारते हैं। मैं आपका काम करूंगा, तव खाऊंगा, औरयदि आप चाहेंगी तो वेतन लूंगा। मैं खुद्दारी की मज़बूत ज़िन्दगी जीना चाहता हूं।"

वे मेरी ओर एकटक देख रही थीं, "ठीक है !"

उन्होंने फादर जोसेफ से वातचीत की और इसके परिणामस्वरूप मैं उनका वैयक्तिक सेवक हो गया। मेरी आयु कम-वेश पन्द्रह की थी। पर मैं क़द और सेहत में लगभग जवान आदमी लगता था। कुछ ही दिनों वाद मैं मदर मेरी के साथ असम चला गया। जाने के कुछ ही दिनों के वीच मेरे पेट में गड़वड़ी हो गई। लेकिन मदर के अस्पताल में इलाज ठीक होता था। मैं ठीक हो गया। जीवन में पहली वार खान-पान के संयम का वोध हुआ। दिन ठीकठाक वीतने लगे। मैं मदर मेरी का निजी नौकर था। यों, नौकरों की कमी न थी। अपार साधन थे। पर मेरा काम मदर की व्यक्तिगत सेवा का था। स्वभावतः मेरा अच्छा आदर था। अव कोई मुझ पर तरस न खाता था, मुझे गालियां न देता था, मारता न था, ताने न देता था।

मदर का भोजन सादा पर ताक़तवर होता था। उवला नमकीन मांस, सलाद, फ्रूट, व्रेड, वटर और व्रांडी। मुझे भरपेट खाना मिलता। कुछ ही महीनों में मैं अच्छा-खासा नौजवान लगने लगा। जो शरीर

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

प्रताड़ना और अपमान के वैषम्य में भी वन के वृक्ष के सदृश बढ़ सकता था वह परितोष और आत्मसम्मान के आनुकूल्य में असाधारण उत्कर्ष कैसे न प्राप्त करता ! जिम्नैस्टिक्स में रुचि स्कूल-काल से ही थी। वह बढ़ गई। मदर ने अच्छे कपड़ों का प्रबंध कर दिया था। उनसे मिलनेवाले बड़े-बड़े नेता, नेत्री, विदेशी राजनयज्ञ इत्यादि तक कभी-कभी कुतूहलवश पूछ पड़ते, "यह लड़का···?"

"मेरा···"

मैं समाधान कर देता, "वैयक्तिक सेवक।"

किन्तु कई आश्चर्य करते ही रहते।···

मदर सवेरे बहुत जल्दी उठती थीं। मैं उनसे भी पहले उठ जाता था। वे बेड-टी लेती थीं। मैं सदा समय पर देता। उनके नहाने-धोने की व्यवस्था करता। मैं तो उनके सैंडल भी साफ करना चाहता था लेकिन वे रोक देती थीं। शायद वे मेरे मनोविज्ञान को पूरी तरह—मुझसे भी ज्यादा—समझती थीं।

एक बार मदर को यूरोप जाना पड़ा। पहले भी ऐसा होता था। उनकी ख्याति अन्तर्राष्ट्रीय थी। वे थीं भी यूरोपियन। अब मुझे पूरी छुट्टी थी। मैं ऊबने लगा। मेरा परिचय बहुत-से लोगों से हो गया था। इनमें एक धर्मप्रचारक था। नाम था जॉन। वह कभी-कभी टोली लेकर धर्मपरिवर्तन-अभियान पर निकल पड़ता था। इस बार छोटा नागपुर की ओर जा रहा था। मैंने प्रार्थना की, "मुझे भी लेते चलिए ! ज्ञान और अनुभव बढ़ेगा।"

वह सहर्ष सहमत हो गया, "अगर इस तरफ पारंगत हो गया तो नाम-का-नाम, दाम-का-दाम।" उसने आंख की टीप से रहस्य-संकेत किया।

'दाम-का-दाम' से मैं परिचित हो गया था। जिधर देखता उधर ऐश्वर्य ! पश्चिम के धनी देशों की उदार सहायता के कारण किसी आर्थिक कठिनाई का प्रश्न ही न था। फिर भी, पता नहीं क्यों, कुछ अटपटा-सा लगा। परंतु चुप रहा, क्योंकि चुप्पी विवशता की सबसे बड़ी कृति है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

हम लोगों का पहला पड़ाव कलकत्त में पड़ा। पांच का जत्था था। जॉन नेता था। उसके साथी मैथ्यू, डैनियल और पॉल को भी मैं पहचानता था। ये सब लोग अनुभवी थे। नौसिखुवा केवल मैं था। स्पष्ट था, सब मुझ पर रोब ग़ालिब करते। सौभाग्य या दुर्भाग्य से, मैं रोब सहने का अभ्यस्त हो गया था। इसलिए, कोई बाधा न पड़ी। एक दिन शाम को जॉन ने मुझे साथ लेकर चौरंगी का चक्कर लगाया। पिए हुए था। जोश में आकर बोला—"ये शाला मैथ्यू तुम पर तड़ी दिखाता है जैशे कि मैं,··· है तो भंगी ही। डैनियल और पॉल चमार हैं, तभी तो शाला लोग बात-बात में गाली देता है। हम अशली क्रिश्चियन है—क्रिश्चियन बाप का बेटा। ये शब नकली है! इण्डिया में ज्यादातर क्रिश्चियन भंगी-चमार से बना है। ऊंचा जात का लोग क्रिश्चियन नहीं बनने सकता। तभी तो क्रिश्चियन को आम लोग भंगी-चमार शमझता है।" वह सिगरेट का कश खींचने के लिए रुका।

मैंने उसे ध्यान से देखा—दुहरा-तिहरा शरीर, गहरा काला रंग, अधिक धूम्रपान से जले-भुने ओंठ, लाल आंखें। अधेड़ था। अविवाहित होना स्वाभाविक ही था। उसने मेरी ओर देखा।

कुछ याद-सा करके बोला—"तुम शिगरेट नहीं पीता?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"बदबू लगती है।"

"ह-ह-ह-ह! बदबू या खुशबू?" उसने धुएं का एक गोला ठीक मेरे मुँह पर छोड़ते हुए कहा," शराब जैशा बढ़िया चीज में भी पिछड़ा और गंवार लोग बदबू का बात करता है। शोसाइटी में मूव करना है तो शराब और शिगरेट पीना होगा···"

मुझे बुरा लगा। पर करता क्या? इसी बीच उसने एक सिगरेट बढ़ाते हुए हुक्म दिया—"लो, पिओ।"

मैं हिचकिचाया तो डांटा—"तुम गधा है! बैकवर्ड!! रीएक्शनरी!!!···तुम क्रिश्चियन नहीं, हिन्दू है। गुलाम कौम खाने-पीने में बहुत नैतिकता दिखलाता है। उशके पाश दिखावे की नैतिकता के अलावा

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

और होता ही क्या है ? आजाद कौम आजादी से खाता-पीता है, मश्ती से जीता है। शिगरेट में टोबैको होता है, जो मश्त कर देता है। गम गलत कर देता है। इशशे एकाग्रता आता है। बहुत बड़ा-बड़ा लोग पीता है। चर्चिल पीता था, माओ पीता है, अशोककुमार पीता है। शिगरेट पीने से आदमी ग्रेट हो जाता है।"

मैं जानता था, जरा भी चीं-चपड़ की तो जॉन साथ नहीं ले जाएगा, क्योंकि मैं इस कार्य के लिए नियुक्त नहीं था। कलकत्ते से गौहाटी लौटने में खर्च जेब से भरना पड़ेगा। बाद में भी तंग कर-करा सकता था। सिगरेट ले ली। उसने लाइटर से सुलगा दी। एक कश खींचते ही खाँसी आने लगी, आंखों से पानी निकलने लगा, दिमाग चकराने लगा। जॉन ने बहुत ज़ोर से हंसकर समझाया, "पहले ऐशा ही होता है, लेकिन बाद में मजा आने लगता है। हर बड़ा काम शुरू में कड़ा होता है !"

घूमता-घामता जॉन ऐसी गलियों में पहुंचा जहां बाज़ारू औरतें बैठती हैं। मैंने हाथ जोड़कर प्रार्थना की, "अब मैं जाना चाहता हूं।"

जॉन हंसा। शराब और सिगरेट की मिली-जुली बदबू सीधे मेरे मुंह पर पड़ी। वह बोला—"खर्च से डरता है ? जिन्दगी का मजा खर्च करने में है, उशशे बचने में नहीं। अभी लौंडा है न ! खैर जाओ।"

मैं ठीक वैसे ही भागा जैसे पिंजरे का पंछी खुले आसमान की ओर उड़ता है। सोचा, गौहाटी लौट जाऊं। पर खर्च से डरता था। यों कुछ रुपए पास में थे, लेकिन खर्च जहाँ तक बच सके वहाँ तक बचाना चाहता था। रुपए ज्यादा हो भी न सकते थे। मदर मेरी खाने-पीने और कपड़े-लत्ते पर काफी-कुछ खर्च करती थीं। ऊपर से सिर्फ पचास रुपए मासिक देती थीं। मेरी आयु और योग्यता को देखते, यह सब बहुत काफी था। इन पचास में ज्यादातर रुपया बाल कटाने, घूमने-घामने और सिनेमा देखने वगैरह में खर्च हो जाता था। कोई एक सौ रुपए जोड़े थे, जो पास थे। उन्हें बचाए रखने की इच्छा बलवती थी।

इसी उधेड़बुन में चलता चला जा रहा था कि अचानक अहसास हुआ कि रास्ता भूल गया हूं। एक व्यक्ति से पूछा—"भाई साहब, चौरंगी किधर है ?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

वह व्यक्ति ठठाकर हंस पड़ा, "भाई साहब !"

मैं भी हंस पड़ा, क्योंकि वह मैथ्यू था, जिसे मैं शाम के धुंधलके में पहचान न पाया था। मैंने 'सॉरी सर।' कहा। मैथ्यू 'सर' शब्द सुनकर पुलकित हो गया। गले में हाथ डालकर बोला—"ब्रदर, तुम तो जॉन के साथ गया था ?…"

"ह…आँ ! ले…कि…न…"

"समझ गया। वो साला प्रॉस के पास गया होगा। और प्रॉस फोकट में पास नहीं फटकने देता; इसलिए तुम को चलता किया, चरका दे दिया…"

"मैं खुद आ गया हूं। मुझे…"

"मुझे भी ये चीज नापसंद है, लेकिन जॉन इस पर भी लेक्चर देता है, कहता है, क्राइस्ट भी…

"वो साला प्रॉस का दिल वदलने का बात चला बैठता है। जिसको देखो, दिल बदलने पर जुटा है। बुड्ढा क्राइस्ट और गांधी जब दिल नहीं बदल पाया तो साबित हो गया कि दिल को बदलने की बात एक स्टंट है—खुद को ग्रेट मानने का बीमारी है।"

मैं चुप रहा।

"तुमको क्या लेक्चर पिलाया ?"

"कुछ नहीं, यूं ही…"

"अपना खानदान का ऊंचाई समझाया होगा ? साला का दादा मंडल था, पर मुखर्जी बताता है। वो नौकरी के लिए क्रिश्चियन हो गया था। हमारा लीडर लोग बात बराबरी का करता है, लेकिन प्रैक्टिस में जोर जात-पांत पर देता है। अगर कोई ब्रह्मिन क्रिश्चियन बन जाता है तो जश्न मनाता है। पर ब्रह्मिन एक तो क्रिश्चियन बनता ही नहीं, दूसरे, अंग्रेजों के टाइम में जो बना था, वो भी अपने को ब्रह्मिन क्रिश्चियन कहता है और शादी-व्याह अपने-जैसों से ही करता है। वो बहुत ही थोड़ा है। इंडिया में सब लोग जात मानता है। मुस्लिम में शिया-सुन्नी चलता है, अहमदिया-खोजा चलता है, शेख-सैयद चलता है, तेली-पठान चलता है। जो अछूत मुसलमान बना था, उसके औलाद को कोई नहीं

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

पूछता। सिर्फ साथ-साथ नमाज पढ़ लेने से भेद-भाव नहीं मिट सकता। सिख लोग एकता का ढोल पीटता है लेकिन खत्री और जाट वगैरह में बंटा है। वो लोग भी शादी-ब्याह अपने-जैसों में ही करता है। वो लोग भी हरिजन-सिख से नफरत करता है। पंजाब में हरिजन सबसे ज्यादा दुखी है। लीडर भी बराबरी का बात महज चुनाव जीतने के लिए करता है। उसका फैमिली में कभी कोई हरिजन से शादी नहीं करता, न लड़का, न लड़की।"

मैं उसकी बातों के सत्य से प्रभावित हो रहा था। वह उत्साहित हो कर बोला—"बराबरी का बात सब लफ्फाजी है। गोरा लोग काला लोग से नफरत करता है। यूरोप और अमेरिका में काला लोग का होटल अलग, क्लब अलग, स्कूल अलग। गोरा लोग पहले काला लोग को झांसा देकर ईसाई बनाया, उनका नाम-धाम, उनके बाप-दादों से अलग कर दिया, बेचारा लोग को बिना पेंदे का लोटा बना दिया, 'धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का' कर दिया, न पूर्व का रखा न पश्चिम का, उनका कल्चर खत्म कर दिया और बाद में उनसे नफरत करता है—कितना बड़ा विश्वासघात, छल, पाखण्ड ! गोरा मर्द दिमाग पर बेसी जोर देने के कारण आधा नपुंसक हो गया है, इससे गोरी औरत हब्शी को चाहने लगा है, क्योंकि वो जबर्दस्त मर्द होता है। इससे भी गोरा अलगाव चाहता है। भारत में सब लोग, जात-पांत मानने के बावजूद, हरिजन का दर्जा ऊंचा कर रहा है, उस पर हमदर्दी का इजहार कर रहा है, लेकिन यूरोप और अमेरिका में नीग्रो को हिकारत की नजर से देखना बरकरार है। क्रिश्चियन बनता है, लेकिन आदमी-आदमी में फर्क मानता है। 'ब्लैक मुस्लिम' इसीलिए बनता है। यहां ही देख लो, गोरा पादरी और गोरा नन हम काला लोग को गुलाम समझता है, यही जोर देता है कि ब्रह्मिन-ठाकुर या बनिया-कायस्थ को कन्वर्ट करो। तुम हसीन था, लम्बा था, फादर जोसेफ ने कहा था कि तुम शायद ब्रह्मिन था; इसलिए, मदर मेरी जैसी बुलंद हस्ती ने रख लिया !" मैथ्यू चुप हो गया; आहत-सा, क्षुब्ध-सा, कुंठित-सा।

कुछ पल बाद बोला, "तुम मस्ती के लिए क्या खाता-पीता है ?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"कुछ नहीं। मैं तो वैसे ही ठीक-ठाक रहता हूं।"

"मैं तो हाशिश लेता। बड़ा-बड़ा हिप्पी हाशिश लेता है। इसमें मजा गहरा और ज्यादादेर का होता है। शराब लौंडा-लफाड़ी का नशा है, हाशिश जोगी-जती का। फिर, शराब महंगा पड़ता है। सरकार जनता का कमजोरी को लूटता है—भारी टैक्स लगाकर! बेचारा गरीब शराब पीना चाहे तो आसमान छूने वाला दाम, फिल्म देखना चाहे तो आसमान छूने वाला दाम! उसको घुट-घुटकर मरना पड़ता है!··· जॉन शराब लेता है, क्योंकि मालदार है। मैं तो हाशिश लेता। तुम लेगा?"

"नहीं! मैं बिना नशे की सहायता के, अपने बल पर ही, जीने का साहस रखता हूं। यों, मैं नशे की मजबूरी की इज़्ज़त करता हूं।"

"चलो, अच्छा है! नशा इन्सान को अपना गुलाम बना लेता है। थोड़ी देर का महंगा मजा—वह भी सेहत को चौपट करने वाला!"

मैंने प्रसंग बदला, "आप डैनियल और पॉल से अलग कैसे···?"

"हम तीनों साथी हैं, पर आज वह दोनों अपने-अपने नन-फ्रेंड्स से रंगरेली मनाने गया है, और हम,···हमारा कोई फ्रेंड नहीं!" और एक दीर्घ निःश्वास मर्म-व्यथा कह गया।

मैंने उन्हें ध्यान से देखा। सींकिया ढांचा, काला रंग, आम पोशाक। हमदर्दी भी हुई, हंसी भी आई, जिसे रोक लिया। मनुष्य विरोधाभासों का पुंज है। वह, शायद मेरे मनोभावों को ताड़ते हुए बोला, "हमको कौन फ्रेंड बनाता है! और शादी कर नहीं सकता! सुनता हूं, इण्डिया में बुड्ढिज्म इसलिए मरा कि उसका भिक्षु-भिक्षणी कामुक हो गया था। क्रिश्चियनिटी में भी यही हाल है। यूरोप और अमेरिका में हर साल हजारों विशप्स और नन्स शादी के लिए चर्च छोड़ देता है। तभी तो इण्डिया जैसे कंगाल मुल्क से नन्स ले जाया जाता है, जिनसे अक्सर गुलामी, और कभी-कभी प्रॉस्टिट्यूशन तक, कराया जाता है। केरल में ये धन्धा जोरों पर है। गोरा पादरी इसका बॉस है। यूरोप और अमेरिका में विशप्स में होमो का जोर है और नन्स में प्रॉस्टिट्यूशन का!"

आवास आ गया। हम लोग सोने चले गए। मैं आधी रात तक आज

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

की सुनी-देखी पर विचार करता रहा। एक पक्का क्रिश्चियन था। फिर भी, ब्राह्मण होने की बात पर गर्व होने लगा।···इसी बीच अम्मा-बप्पा का ख्याल हो आया और आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गई। पता नहीं, कब नींद आ गई !···

सवेरे कोई चार का समय था जब मैं हड़बड़ा कर उठ बैठा। स्वप्न देखा था, गंगा की धारा, गांव, आंगन, अम्मा का चूमना, बप्पा का पहले उछालकर फिर गोद में लोक लेना, और मेले में खोना, रोना···

शेष लोग सोए पड़े थे। इच्छा हुई, चल पड़ूं और वह गांव, वह आंगन, वह अम्मा, वह बप्पा, वह सब ढूंढूं जो स्वप्न में देखा था, लेकिन मस्तिष्क ने आज्ञा न दी। दिमाग अपनी जगह एकदम ठीक था। मैं दिल्ली तो जा सकता था, लेकिन स्वप्न-लोक में नहीं। नाराज़ फादर जोसेफ मुझे यह कदापि न बता सकता था कि मैं किस मेले में खोया था। जब मैं उसके साथ रहता था तब अक्सर पूछा करता था, कभी गिड़गिड़ाकर, कभी हाथ जोड़ कर, कभी पैर पकड़ कर, पर उसने कुछ न बताया था, तो अब क्या बतलाएगा ?

कलकत्ते से हम लोग पटना गए। वहां पता चला कि आर्यसमाज के प्रचारक भी स्थान-स्थान पर पहुंच चुके हैं। हम लोगों को निर्देश था कि उनसे तू-तू, मैं-मैं या हाथा-पाई न होने पाए। मेरे चारों साथी पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके थे। उन्होंने मुझे भी काफी-कुछ बता दिया। एक दिन शाम को मैं अकेला ही पटना घूमने निकला। देखा कि एक सार्वजनिक उद्यान में मजमा-सा लगा है। कुतूहल हुआ। निकट पहुंचने पर ज्ञात हुआ कि एक आर्यसमाजी शास्त्रार्थ-महारथी बोल रहे हैं। सुनने लगा। उन्होंने लोगों से सीधा डण्ड-पेल सवाल किया—"बन्धुओ, अगर किसी क्वांरी लड़की के सन्तान हो जाए तो उसे क्या कहा जाएगा ?"

"छिनाल !"

"कुलटा !"

"बदचलन !"

भीड़ में शायद ही कोई बचा होगा जिसने तात्कालिक उत्तर न दिया हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

"और ऐसी सन्तान को क्या कहा जाएगा ?"

"हरामी !"

"दोगला !"

"कमीना !"

लोगों ने पूरा रस लेते हुए सोत्साह कहा।

"ईसाईधर्म के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, परमात्मा के तथाकथित पुत्र और मसीहा ईसा क्वांरी मां के पुत्र थे ! उनकी मां मरियम या मेरी थी और स्वयं उनकी पूजा ईसाईधर्म की सर्वोपरि विशेषता है। ईसाइयों के अनुसार, मरियम का गर्भ परमात्मा से सम्बन्धित था ! मुहम्मद ने क़ुरान में परमात्मा पर लफंट लगाने वाले इतने बड़े अपमान की कड़ी भर्त्सना ठीक ही की है। परमात्मा का इतना घटिया और अश्लील अपमान मार्क्स और लेनिन, स्टालिन और माओ तक ने नहीं किया !"

प्रतिक्रियाएं हुईं :

"ओह !"

"तो ऐसा है !"

"थू: !"

"धिक्कार है !"

मुझे बहुत बुरा लग रहा था। लेकिन, एक तो हम सब को लड़ने-झगड़ने की रोक थी, दूसरे मैं कर भी क्या सकता था ? अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता ! सारा मजमा शास्त्रार्थ-महारथी पर लट्टू था। उस का व्यक्तित्व भी भव्य था। लम्बा, मज़बूत जिस्म, गोरा रंग, दुहरा ढांचा। पंजाबी बंदा था। आवाज़ ऐसी कि सुनने वाला फिदा हो जाए ! जानकारी ऐसी कि समझने वाला मुरीद बन जाए। मंजा हुआ प्रचारक था। मजमे का मूड देखकर उसने गति पकड़ी, "ईसाई कहते हैं कि आदमी पाप का पुतला है। आदम ने ज्ञान-तरु का फल खाकर ईश्वर की अवज्ञा का पाप किया और स्वर्ग-च्युत हुए। हम कहते हैं कि मनुष्य पुण्य का पुंज है। हमारा परमात्मा ज्ञान-रूप है, विज्ञान-रूप है, आनन्द-रूप है। जो परमात्मा मनुष्य को सदा-सर्वदा अज्ञानी रखना चाहे वह उस अत्याचारी और बर्बर राजा के सदृश है जो क्रांति के भय से जनता को शिक्षित

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नहीं होने देता। स्वयं पश्चिम में परिहास किया जाता है कि बाइबिल के परमात्मा ने जो एकमात्र बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य किया वह आदम का स्वर्ग से निष्कासन था !" उन्होंने दयानन्द-कृत सत्यार्थ-प्रकाश के कुछ अंश पढ़कर सुनाए जिनमें ईसाईधर्म को आदिम और असभ्य कबीलों का घोर अंधविश्वास-पुञ्ज सिद्ध किया गया था।

जनता खुश थी, "वाह ! वाह !"

"बन्धुओ, ईसाइयों के पैगम्बरों का हाल निराला ही था। आदम के दो पुत्रों में आपस में ठन गई और एक ने दूसरे का कत्ल कर डाला। हजरत नूह शराब के नशे में धुत्त होकर नंगे दिखाई पड़ते थे। हजरत इब्राहीम कई बीवियां रखते थे, लेकिन मुख्य बीवी सरा के कहने पर गौण बीवी हाजरा को निकाल बाहर करते थे। रखैलें अलग ! ये यात्राओं में बीवी को बहन बताते थे और इस प्रकार उसके रूप-रंग से भरपूर लाभ उठाते थे। हजरत याकूब रात-भर परमात्मा से कुश्ती लड़ते रहे ! इस पहलवानी पर खुश होकर परमात्मा ने उन्हें इस्रायल की पदवी दी थी, जिसका अर्थ है 'वह जो परमात्मा से भी भिड़ सके' ! हजरत यूसुफ के सौतेले भाइयों ने उन्हें कुएं में ढकेल दिया और बाद में गुलाम के रूप में बेच दिया। हजरत मूसा कई बीवियां रखते थे। इस कारण उनकी भाई और बहन से ठन तक जाती थी। वे परास्त शत्रुओं में एक-एक को मरवा डालते थे ! राजा और हजरत दाऊद ने बाथशेबा के साथ तब व्यभिचार किया था जब वह बेचारे उरिया की बीवी थी। बाद में उस स्वामिभक्त-देशभक्त व्यक्ति को मरवाकर उन्होंने मुकम्मल तौर पर उसकी बीवी हथिया ली। विलासी और शराबी जहांगीर ने भी शेर अफगान को मरवाकर नूरजहां को हथियाया था, लेकिन दाऊद इससे पहले बाथशेबा को भोग चुके थे। उनके बेटे सुलेमान हजार बीवियां रखते थे। संत जॉन एक बांझ बुढ़िया के बेटे थे; वे अपने चेले ईसा की ही तरह दिव्यजन्मा थे ! ईसा का आलम भी निराला था—कभी वेश्याओं के कोठों पर जाना, कभी चेलों के पैर धोना, कभी बिना मालिक से मांगे-पूछे किसी गधे पर सवारी कर बैठना, कभी जेरूसलेम के मन्दिर का अपमान करना ! यहूदी लोग उनको हरामी कहते थे। उन्होंने उनको मन्दिर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

के अपमान के अपराध में मृत्युदण्ड दिलाया।"

प्रतिक्रियाएं हुईं :

"तो ये बातें हैं !"

"गजब का विद्वान् है !"

"इसका काट असम्भव है !"

"ऐसा पोइंट देता है कि विरोधी का सिट्टी-पिट्टी गुम !"

"वंधुओ, ईसा के अंतिम वाक्य पर ध्यान दो ! सलीब पर लटकाए जाते समय वे वत्तिस साल के जवान थे। तेंतिसवाँ चल रहा था। बढ़ई-परिवार के लगभग निरक्षर व्यक्ति थे। हट्टे-कट्टे और लम्ब-तड़ंग। सवेरे नौ के लगभग सलीब पर लटकाए गए थे। लोगों ने उनका घोर अपमान किया, उन पर थूका, उन पर व्यंग किए, उनके अगल-बगल सलीबों पर लटके दो डाकू मरते-मरते भी उनका मजाक उड़ा रहे थे। हाकिम लोग भी परिहास कर रहे थे—यही ईश्वर का पुत्र है, यहूदियों का राजा है, स्वर्ग का पथ-प्रदर्शक है ! कोई साथी नहीं, संगी नहीं, कायर चेले जान बचाकर भाग चुके थे, उनमें एक ने घूस खाकर उन्हें एन मौके पर धरा दिया था। हताश ईसा तीन बजे तक दीन-हीन दशा में सलीव पर लटके रहे और अंततोगत्वा 'एली,एली, लमा सबाक्-तानी ?' अर्थात् 'हे ईश्वर, हे ईश्वर, तूने मुझे क्यों त्याग दिया ?' चिल्लाकर मर गए। वाद में, उन्हें छोड़कर भागनेवाले कायर चेले-चपाटियों ने अपने नाम-दाम के लिए पुनरुज्जीवन की कथा गढ़ी। अंग्रेजी का कवि कीट्स वाइबिल की वचकाना गप्पों को 'पवित्र धोखाधड़ी' (पॉयस फ़ॉड) कह गया है। एक दूसरा कवि शेली बाइबिल के वैयक्तिक परमात्मा (पर्सनल गॉड) से घृणा की स्पष्ट अभिव्यक्ति कर गया है। अभी, बीसवीं सदी में, दार्शनिक बर्ट्राण्ड रसेल ने 'मैं ईसाई क्यों नहीं हूं' (व्हाई आई ऐम नॉट ए क्रिश्चियन) पुस्तक में इस अंधविश्वासपूर्ण धर्म के धज्जे उड़ाए हैं।"

प्रतिक्रियाएं हुईं :

"गॉड इज फ्रॉड ! मैं नास्तिक हूं !!"

"गजब का विद्वान है !"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

"''इससे कौम लोहा ले सकता है ?''

''राम भजो !''

''सारा बैबल को मथ डाला है !''

''बंधुओ, ईसाईधर्म नरकधर्म है। ये लोग नरक का डर दिखाकर भोले-भाले पापियों को अपने धर्म के चंगुल में फंसाते रहते हैं। इनका स्वर्ग, पश्चिम के क्लब के सदृश, सबके लिए नहीं है। धर्मान्ध दांते ने होमर और सुकरात, प्लेटो और अरस्तू जैसे ठोस और ईसा से कहीं श्रेष्ठ-तर महापुरुषों को महज इसलिए नरक में डाल दिया है कि वे ईसा से पहले पैदा हुए थे और ईसाई नहीं थे। छोटा दांते, अंग्रेजी का मिल्टन, अपने पूर्वजों की केवल इसलिए विगर्हणा करता है कि वे ईसाई नहीं थे। यह धर्मान्ध नेत्रांध भी था। ईसाई होने के लिए पहली शर्त है अपने पूर्वजों को नरक में डालना, उनकी अवहेलना करना, अपना नाम बदलना या दोगला बनना !''

प्रतिक्रियाएं हुईं :

"आंखें खोल दीं !''

''बातें एकदम सच हैं !''

''स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः !''

''बंधुओ, ईसाइ मिशनरी जो अस्पताल खोलते हैं, स्कूल खोलते हैं, अनाथालय खोलते हैं, वे इनके सेवाश्रम नहीं, आखेटस्थल हैं। इन शिकार-गाहों के लिए इन्हें अमेरिका और जर्मनी इत्यादि देशों से करोड़ों रुपया मिलता है। इनका असली उद्देश्य सेवा नहीं, धर्म-परिवर्तन है। धर्म-परिवर्तन के लिए नाम बदलना अनिवार्य नहीं तो आवश्यक अवश्य है। इन्हीं अस्पतालों और स्कूलों के बल पर ईसाई मिशनरियों ने नागालैण्ड और मिजोराम इत्यादि बनवाए हैं, पार्थक्य और पंचमार्गिता की वृद्धि की है, विनाश-लीला कराई है !''

प्रतिक्रियाएं हु :

''बात एकदम सच है !''

''भोले-भाले आदिवासियों को बहकाना और उनको राष्ट्र की प्रकृत जीवन-धारा से अलग-थलग करना ही मिशनरियों का धंधा है।''

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

"मिशनरी गद्दारी को बढ़ावा देते हैं।"

"मिशनरी विदेशी एजेन्ट हैं।"

"बंधुओ, सरकार को विदेशी मुद्रा चाहिए, चाहे देश की कन्याएं विदेशों में दयनीय दशा में ही क्यों न रहें। मिशनरी विदेशी मुद्रा देते हैं, अपने विदेशी ढंग के स्कूलों में नेताओं के बेटे-बेटियों को अंग्रेजी तालीम देते हैं, अपने रोब-दाब से भरे-पूरे अस्पतालों में उनका चोखा इलाज करते हैं, फिर और क्या चाहिए ? देश भाड़ में जाए ! जितने ईसाई अंग्रेजी परतंत्रता के एक सौ-पचास वर्षों में बनाए गए थे, उससे अधिक स्वतंत्र भारत के पंद्रह वर्षों में बन चुके थे।"

प्रतिक्रियाएं हुईं :

"धिक्कार है !"

"शेम ! शेम !"

शोर-गुल बढ़ने लगा। मेरा पहले का गुस्सा काफूर हो चुका था। कुछ सोच-विचार में उलझ गया था, "क्या ये बातें गलत हैं ? नंगी सचाई है। क्या आँखें मूंदने से छिप जाएगी ?"···ध्यान बंटा—

"बंधुओ, ईसाईधर्म के प्रचारक झूठ, छल, फरेब, प्रलोभन, सबका प्रयोग करते हैं। मूर्तिपूजा की आलोचना भी करते हैं और स्वयं मरियम और ईसा की मूर्तियाँ पूजते हैं। जनेऊ का मजाक उड़ाते हैं और स्वयं गले में क्रॉस या टाई लटकाते हैं। कभी नौकरी का लोभ देते हैं, कभी छोकरी का, कभी दोनों का···।"

प्रतिक्रियाएं हुईं :

"वाह !"

"क्या बात कही है !"

"और बिल्कुल सच्ची !"

"बंधुओ, ईसाईयों के अस्पताल और स्कूल धर्म-परिवर्तन के पाप-केन्द्र हैं। इनके बड़े-बड़े जन-सेवक और जन-सेविकाएं धर्म-ठग हैं, धर्म-चोर हैं। सेवा की आड़ में देश को पश्चिम का दास बनाना ही इनका धन्धा है, जिसमें ये मोटी-मोटी रकमें पाते हैं और ऐयाशी की जिंदगी बिताते हैं···।"

bal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सहसा एक आवाज़ सुनाई पड़ी, जो मुझे परिचित-सी लगी—"तुम्हारा परमात्मा सब चीज में होता है न ?"

मैंने देखा, प्रश्नकर्त्ता जॉन था।

शास्त्रार्थ-महारथी ने जॉन को ध्यान से देखा और शान्ति से बोला, "हां !"

"तो वह मल में भी होता है ?"

शास्त्रार्थ-महारथी ने भीड़ को सम्बोधित करते हुए कहा, "बंधुओ, यदि सुअर के सामने रसगुल्ला, मलाई, अंगूर और मल रखे जाएं तो वह सबसे पहले किस पर टूटेगा और चम्भ-चम्भ करता हुआ खाएगा ?"

"मल को।"

शास्त्रार्थ-महारथी ने जॉन से कहा, "समझे या नहीं ?"

जॉन गरजा, "यू ब्लडी फूल, इण्डियन डॉग !…"

भीड़ में से एक गिट्ठे क़द का बलिष्ठ युवक आगे बढ़ा और उसने जॉन के जबड़े पर एक करारा मुक्का जमाते हुए कहा, "क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा ! गीदड़ी के जुकाम हो गया है। चींटी के पर लगे हैं। शास्त्रार्थ करता है या गालियां बकता है ? तू क्या अमेकिरन है ? गद्दार कहीं का।"

लोग-बाग पीछे हट गए। कुछ लोग 'मारो साले को !' और 'बच के न जाने पाए !' इत्यादि चिल्लाने लगे। जॉन पर बेभाव की पड़ने लगीं। बेचारे की बोलती बन्द हो गई। वह मुंह नीचा किए एक ओर को चल दिया। मैं उसके साथ हो लिया। भीड़ में हा-हा-हा-हा और ही-ही-ही-ही का आलम !

जब कुछ शांत वातावरण मिला तब मैंने कहा, "चोट ज़्यादा तो नहीं आई ? ये लोग भी पूरी तैयारी से आते हैं। मेरा मन बार-बार लड़ने को कहता था, पर अक्ल रोकती थी।"

"तुम ठीक था ! मैं गलती कर गया। इण्डिया में अभी हिन्दू का फोर्श बेशी है।"

जॉन के मुंह से शराब की गंध आ रही थी। स्पष्ट था, नशे में आकर वह अंट-शंट बक गया था। अब नशा उतर चुका था। बोला,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

"हम भी गधा है—क्या ऊल-जलूल बक गया ! लेकिन ये गुंडा लोग था।"

"बेशक, लेकिन परमात्मा के प्रसंग में गंदी चर्चा ठीक नहीं। इससे जनता पर गलत असर पड़ता है। आर्यसमाजी अपने और हमारे धर्मों का अधिक गम्भीर अध्ययन करते हैं, इसलिए बहस-मुवाहसे में बाज़ी मार ले जाते हैं। हम केवल प्रचुर साधनों और पुष्कल स्वर्ण के बल पर उन्हें परास्त नहीं कर सकते। दूसरे, भारत का वातावरण उनके अधिक अनुकूल है। यह तो मानना ही पड़ेगा कि भारत का औसत अहिन्दू, चाहे वह मुसलमान हो या ईसाई, बौद्ध या जैन, पारसी यहां यहूदी, सिख या अन्य, आधा-हिन्दू होता है, जो स्वाभाविक ही है, क्योंकि यहां बहुमत हिन्दुओं का है, सांस्कृतिक परम्परा हिंदुत्व की है। अन्य धर्मावलम्बी यहां प्रत्यक्ष या परोक्ष, ज्ञात या अज्ञात हीन-भाव से बच नहीं पाते, तभी तो अपना धर्म-पालन ताक पर रखकर हिन्दू-धर्म की निन्दा करते रहते हैं। जो क्रॉस लटकाता है, उसे जनेऊ की निन्दा करने का क्या अधिकार ? जो कच्छा, कंघी, केश, कड़ा, कृपाण का भारी बखेड़ा पालता है, उसे शिखा-सूत्र पर व्यंग्य करने का क्या अधिकार ? हम ईसाईयों को अपने धर्म की सेवा-भावना का प्रसार करना चाहिए, हिन्दू धर्म की निन्दा नहीं।"

जॉन का मुंह दर्द कर रहा था। फिर भी बोला, "लेकिन गोरा मिशनरी तो चट-पट कन्वर्शन चाहता है। ग्राहम हिन्दू धर्म को अमेरिका के हितों का विरोधी मानते हुए इसका फटाफट नाश चाहता है। स्कॉट इस काम के लिए सिविलवार तक चाहता है। जोर-शोर से कन्वर्शन न हो तो अमेरिका वगैरह नाराज होता है, जिसका पैसा इस मद में सबसे बेसी लगा है और लग रहा है। हम तो नौकर हैं। अगर आज की घटना का पता चले तो मुझी को फटकारा जाएगा, मेरा ही लानत-मलामत किया जाएगा। चित भी मेरा, पट भी मेरा ! जबर्दश्त मारता भी है, रोने भी नहीं देता !...क्या करे, ये धंधा ही खराब है।"

"फूंक-फूंक कर कदम रखने से काम चल सकता है।"

"हाँ।"

इ ी बीच एक प्राइवेट क्लीनिक की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, "तुम

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

चलो, हम इधर होकर आता है। किसी से कहना नहीं !"

पास ही हरा-भरा पार्क था। मैं उसी में चला गया। एक बेंच पर बैठकर शास्त्रार्थ-महारथी की बातों पर विचार करने लगा, 'मैं स्वयं देखता आ रहा हूं कि विदेशी धन मिशनरियों का प्रधान सम्बल है। यह सभी जानते हैं कि जहाँ-जहाँ ईसाईयों का बहुमत बना या प्रभाव बढ़ा वहाँ-वहाँ पार्थक्य का हिंस्र संघर्ष छिड़ा। सामान्य स्तर पर, हिन्दू ही नहीं, जैन, सिख और पारसी भी ईसाई को अंत्यज समझते हैं। वह समाज की मुख्य धारा से कट जाता है।'

एक हम-उमर लड़का आकर बेंच पर बैठ गया, "आप मजमे में थे ?"

"हाँ !"

वह बोला, "हमारे शासक मिशनरियों से इस या उस रूप में विदेशी मुद्रा पाते हैं, इलाज कराते हैं, अपनी संतानों को अंग्रेजी पढ़वाते हैं ; इसीलिए, ये गद्दारी का प्रचार कर पा रहे हैं, नहीं तो मार-मार कर कचूमर निकाल दिया जाए। ये सारे देश को नागालैण्ड बनाना चाहते हैं। लेकिन इनकी दाल गलने नहीं दी जाएगी। विश्व हिन्दू परिषद् सचेत हो गया है। आदिवासियों में भी गैरईसाई तबका पाश्चात्य शक्तियों के नव-साम्राज्यवादी षड्यंत्र को समझने लगा है। अब इनका प्रचार उचित रीति से ही चल पाएगा; मनमानी-घरजानी के दिन लद गए !"

"हिन्दूधर्म में छुआछूत···"

"वही ढाक के तीन पात ! छुआछूत अवैदिक है। यह वर्ण-विद्वेष से मिलता-जुलता परवर्ती विकार है। इसे महावीर और बुद्ध, कबीर और नानक, दयानन्द और गांधी, विवेकानन्द और रवीन्द्र, सभी ने अनुचित कहा है। छुआछूत धीरे-धीरे मिट रही है, कम होती जा रही है। लेकिन छुआछूत पर मगरमच्छी आँसू बहाने वाले गोरे वर्ण-विद्वेष क्यों नहीं मिटाते ? काले और पीले ईसाई पश्चिम में टके सेर बिकते हैं !"

"राम ने शम्बूक को मारा था···।"

"वही एक बेसुरा राग ! यह कथा बाल्मीकि-रामायण के उत्तर-काण्ड से सम्बद्ध है, जिसे प्राच्य-पाश्चात्य विद्वानों ने लगभग एक स्वर से प्रक्षिप्त घोषित किया है। जब शूद्रों का शोषण बढ़ गया तब स्वार्थी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

द्विजों ने शम्बूक-कथा गढ़ डाली, जिससे अस्पृश्यता को आधार प्राप्त हो सके। राम वैदिक काल में हुए थे। तब की वर्ण-व्यवस्था, 'प्लेटो के गण-तन्त्र' की वर्ग-व्यवस्था के तुल्य, सामाजिक संव्यूहन का अंग थी, धार्मिक प्रथा नहीं। ऋग्वेद में कम-से-कम दो ऋषि शूद्र हैं, ब्राह्मण ग्रंथों में यज्ञ तक में शूद्रों का भाग एवं कर्त्तव्य स्पष्टत: वर्णित है, उपनिषद् के सत्यकाम जाबाल, रामायण के गुह और शबरी, महाभारत के विदुर और श्वपच इत्यादि इस तथ्य के प्रमाण हैं कि अस्पृश्यता एक परवर्ती दोष है। अनेक तत्त्वों-द्वारा महर्षि वाल्मीकि को शूद्र माना जाता है। नन्द और चन्द्रगुप्त मौर्य-जैसे सम्राट शूद्र थे, रैदास और नाभादास जैसे संत शूद्र थे, जयकर और अम्बेडकर जैसे नेता शूद्र थे, जिनकी प्रशंसा सारे हिन्दू करते हैं।"

मैं चकित रह गया, क्योंकि बात बड़ी थी और मुंह छोटा। पूछा, "आप कौन हैं ?"

"विश्वविद्यालय में पढ़ता हूं। दर्शनशास्त्र में एम० ए० कर रहा हूं।"

"एम० ए० ?" मैं शंकालु-सा चिल्ला पड़ा।

वह मुस्कराया, "क्यों ? राधाकृष्णन अट्ठारह वर्ष की आयु में, दर्शनशास्त्र में ही प्रथम श्रेणी में, एम० ए० की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए थे। सरोजिनी नायडू ने ग्यारह वर्ष की आयु में हाई स्कूल पास किया था और वे उस समय की भारी-भरकम मद्रास प्रेसिडेंसी में प्रथम थीं।"

"ओह ! आप ठीक कहते हैं···ब्राह्मण हैं ?"

"नहीं, कायस्थ !"

"हिन्दूधर्म में ब्राह्मणों की तूती बोलती है···।"

"यह थोथा और भोथा प्रचार है। राम और कृष्ण, महावीर और बुद्ध, प्रताप और शिवाजी क्षत्रिय थे। गांधी और लाजपतराय, भारतेन्दु और रत्नाकर, मैथिलीशरण और प्रसाद वैश्य थे। विवेकानन्द और अरविन्द, सुभाष और लालबहादुर, घनआनन्द और प्रेमचंद कायस्थ थे। सत्यकाम और श्वपच, गुह और विदुर, रैदास और जयकर शूद्र थे। हिन्दू जाति किसी एक वर्ण में बद्ध नहीं प्रत्युत सब वर्णों की समन्वित संस्था है। यदि ब्राह्मणों में महापुरुष अधिक और अनवरत हुए तो इसके लिए उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की जानी चाहिए, निन्दा नहीं। व्यास और

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

शंकराचार्य, पाणिनी और पतञ्जलि, आर्यभट्ट और भास्कराचार्य, कालिदास और भवभूति, तुलसी और सूर, रामकृष्ण और रवीन्द्र, दयानंद और तिलक, लक्ष्मीबाई और नानासाहब, रामप्रसाद 'बिस्मिल' और चन्द्रशेखर 'आजाद' इत्यादि को उत्पन्न करने वाले ब्राह्मण, यहूदियों के सदृश, विश्व के महान ज्योति-स्तम्भ रहे हैं—वे विश्व-वंद्य हैं ! उनके प्रति हीनतामूलक अपशब्द केवल व्यर्थ जा सकते हैं। महाकवि प्रसाद ने 'चन्द्रगुप्त' और 'स्कंदगुप्त' नाटकों में ब्राह्मण की जो स्तुति की है, वह शतशः उचित है।"

मैं चुपचाप कुछ सोचने लगा, जिसका आदि और अन्त एक था, 'मैं भी ब्राह्मण था ?' और मेरी आँखों से आँसू झर चले, जो रात के अंधियारे में उसे न दीख सके।

कुछ पल पश्चात वह चला गया। मैं भी अपनी राह लगा। अड्डे पर पहुंचा तो सिर्फ डैनियल और पॉल दिखाई पड़े। ठर्रे की दो बोतलें सामने थीं। कुछ कबाब, कुछ पकौड़े। शुरू कर चुके थे। पता चला, "जॉन एक जगह फिसल कर गिरा था···हॉस्पिटल में है। ठीक हो रहा है। कोई फिक्र की बात नहीं। मैथ्यू सिनेमा गया है। आओ, जाम उठाओ !"

मैंने आनाकानी की तो डैनियल ने डाँटा, "क्या पोंगा-पण्डितों-सा घिघियाता है ! क्रिश्चियन होकर जो शराब न पिए उसको लानत है ! क्राइस्ट खुद पीता था···बाइबिल नहीं पढ़ा ?"

डैनियल छह-फुटा पट्ठा था। रंग भी काला नहीं बल्कि सांवला था। बनावट आकर्षक थी। पॉल उससे कुछ ही उन्नीस बैठता था। उसने समर्थन किया, "गोरा लोग शराब पीता था, तभी तो गंगाजल पीने वालों पर आन-बान-शाम के साथ राज कर गया ! अब देखो, जूतों में दाल बंट रहा है ! अंधे के हाथ बटेर लग गया है ! शराब ताकत का खजाना है। हिन्दू देवता सुरा पीता था; यूनानी देवता भी पीता था। तुम भी पीकर दुनिया में ही जन्नत का मजा लो !"

मैंने प्रसंगांतर के माध्यम से बचना चाहा, "आन-बान-शान कौन था···कोई चीनी···?"

"हा-हा-हा-हा ! तुम एकदम बछिया का ताऊ है ! आन-बान-शान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

का मतलब है…पूरा जोर और ताकत। ये लिटरेचर का चीज है !"

"ओह !"

दोनों पिलाने पर बेतरह अड़ गए। व्यसनी व्यसन का संक्रमण चाहता है। इससे उसका ज्ञात या अज्ञात हीन-भाव परितुष्ट होता है। थोड़े-से न-नु-न-च के बाद मुझे झुकना पड़ा। मन खुद-ब-खुद लहरा आया था। जाम टकराने और चीयर्स की तकरीबें सिखलाकर डैनियल ने बताया, "बड़ा-बड़ा लीडर डटकर पीता है। इससे उन लोग का पाप का गम गलत हो जाता है। इसी से तो दारूबंदी नहीं होता ! पाकिस्तान का मालिक भुट्टू साहब तो भारी पियक्कड़ है…और याहिया खान तो उसका भी बाप था ! मदर मेरी तक पीता है ! तुम चूतिया था, जो झिझकता था …अब फार्वर्ड हो जाएगा, सोसाइटी में मूव करने लगेगा !"

मेरे गले में अग्नि-रेखा खिची हुई थी, शरीर रोमांचित और कम्पित था, सर चकरा रहा था, आँखों में पानी आ रहा था, लेकिन फार्वर्ड और प्रोग्रेसिव बनने के लोभ में पीता जा रहा था। मैं यह नहीं दिखाना चाहता था कि उन दोनों को इक्कीस मानता हूं ! मेरी कंजूसी इस बात से खुश-खुर्रम थी कि मुफ्त के मजे ले रही है !

उधर पॉल ने 'चूतिया' शब्द का विरोध करते हुए कहा, "ये वर्ड गाली है। लिटरेचर में इसका प्लेस नहीं ! सभ्य लोग…।"

डैनियल ने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा, "ये वर्ड…गाली नहीं, … गालिब जैसे अज़ीम शायर ने…इसका इस्तेमाल किया है ! हिन्दी के एक पोएट ने भी कहा है, '…लछिमी जी तिहारे काज…नेकहू न आवत लाज …खासे असल चूतियन को…चातुर कहिबो परै', …मैं लिटरेचर का नस-नस जानता हूं ! 'चूतिया' वर्ड लिटरेरी है, …।"

पॉल को स्वीकार करना पड़ा, "तो गाली नहीं होगा…लिटरेरी होगा ! लेकिन हम हाई क्लास क्रिश्चियन लोगों को…।"

डैनियल ने भी स्वीकार किया, "तुम ठीक कहता है !"

पॉल उठकर खड़ा हो गया, "आओ ट्विस्ट करें !"

डैनियल भी खड़ा हो गया, "एस ! एस !"

दोनों में कमर के झटकों की प्रतियोगिता आरम्भ हो गई। गजब

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

की उछल-कूद हो रही थी। दोनों ज़ोर-ज़ोर से एक अंग्रेजी गीत गाने लगे, जिसकी टेक 'आई लव यू' की थी। वे इतनी तेज़ी से उछलते-कूदते थे कि मैं मारे डर के छज्जे पर आ खड़ा हुआ। चकित होकर देखता रहा। लेकिन ज्यादा देर न देख पाया। बरामदे की ओर से फादर फेरर कमरे में आ धमके। यूरोपियन थे। कोई साढ़े-छह फुट लम्बे, भारी-भरकम, गंजे अधेड़ थे। ऐसी आयु में किंग-कांग ऐसा ही रहा होगा…हाँ, ये लम्बे बहुत ज्यादा थे! उनके पीछे दो बिहारी ईसाई नौकर थे। जिस कमरे में डैनियल और पॉल नाच रहे थे उसमें प्रकाश के नाम पर बहुत हल्की नीली रोशनी मात्र थी अन्यथा वे मुझे भी देख लेते। मैं छज्जे में था, जहां अंधेरा था। उनका विकट घोष सुनते ही दुबक कर जहाँ-का-तहाँ बैठ गया। सुना, "यू डैम फूल, ब्लडी, इण्डियन डॉग! हमारा एक जर्मन दोस्त इन्जीनियर था, जो इस जंगली देश से जाते समय ठीक ही कहता था कि यहाँ पर जरूरत कारखानों की नहीं बल्कि गैस-चैम्बर्स की है, जिनमें यहां के दो पैरों वाले जानवर ठूँस दिए जाएं और मार डाले जाएं!" इन शब्दों के साथ ही तड़ाक्-तड़ाक् की दो आवाजें आ । फिर सुना, "यू ब्लैकी, लॉग्हेड, क्राइस्ट के नाम पर हरामखोरी और मुटमर्दी करता है! ठर्रा पीकर रोला मचाता है! हमारा नींद उखड़ गया!"

"सॉरी सर!" डैनियल और पॉल ने माफी मांगी।

"अब ऐसा गलती न हो!" चेतावनी देकर फादर फेरर फर्राटे के साथ निकल गए। मैंने उन्हें मदर मेरी के अतिथि के रूप में देखा था। उनके रोब-दाब और उनकी शान-शौकत का क्या कहना था! मध्यकालीन पोप, वस्तुतः होली रोमन एम्पायर के सम्राट पोप, के अधुनातन संस्करण प्रतीत होते थे!

अब मैं कमरे में आ गया। डैनियल और पॉल ने बरामदे में जाकर देखा, पूरी टोह ली और तब आकर जोर-जोर से हँसने लगे, "ये साला शैतान कहाँ से आ गिरा! …'हिम दि ऑलमाइटी हर्ल्ड हेडलांग'…!" और अपने-अपने गालों पर अपने-अपने दाएं हाथ फिराने लगे।

मैंने सहानुभूतिपूर्वक पूछा, "ज्यादा तो नहीं लगा?"

दोनों ने व्यंग्य का अनुभव किया, जो वस्तुतः निराधार था, क्योंकि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मैंने सहज हास को बलपूर्वक नियंत्रित करते हुए, संजीदगी के साथ पूछा था। जल-भुन कर बोले, "इस साले का हाथ स्टील का बना है—लगता तो बेटा, नानी याद आ जाती ! खुद खड़खड़-अद्धड़ होकर जी-भर पिएगा, पर दूसरे छैल-छबीले जवानों को सूंघने पर भी जलील करेगा ! 'जिस की लाठी उसकी भैंस' वाली करता है—जंगल्स लॉ का चीफ जस्टिस !"

मैंने कहा, "सो तो ठीक है, पर यह भूधरसिंह खड़खड़ कहाँ है ?"

एक पल रुककर डैनियल ने कहा, "पीटर, तुम खुशक़िस्मत था जो उसकी नजर में नहीं आया ! देख लेता तो पकड़ ले जाता !" वह एक वीभत्स हँसी हंसा।

पॉल ने साथ दिया, "गॉड को थैंक्स बोलो कि बाल-बाल बच गया !" उसने आँख की टीप से भेद स्पष्ट किया।

डैनियल ने स्पष्टोक्ति से काम लिया, "लेकिन बकरे का माँ कब तक खैर मनाएगा ? उसका नजर जरूर पड़ेगा···और तुम्हारा मुक़द्दर भी खुलने सकता है ! प्रिंस बना देगा, यूरोप घुमा देगा !"

कुछ देर बाद वे दोनों वहीं पर लुढ़क गए। सो गए या बेहोश हो गए ? पता नहीं ! मैं बहुत परेशान हो चुका था। जॉन, मैथ्यू, शास्त्रार्थ-महारथी, विद्यार्थी, डैनियल और पॉल की बातें दिमाग में अंधड़ बन चुकी थीं—जिसमें फेरर की भीमा मूर्ति प्रेत के तुल्य लड़खड़ा रही थी। विचार-विवर्त में तिनके की तरह थपेड़े खा रहा था। नशे ने अनेक भय साक्षात कर दिए। चुपचाप उठा। अपना लेदर-बैग उठाया। बटुवा देखा-जाँचा। और गोहाटी जाने का निर्णय कर लिया ! सड़क पर उतरते ही रिक्शा मिल गया। स्टेशन की ओर चल पड़ा। रास्ते में सोचता रहा, "जब पटना में यह हाल है तब छोटा नागपुर में क्या होगा ? यह मेरे दम के जलूसे में नहीं ! पता नहीं, कितने विवाद हों और कितने झगड़े ? दूसरे, इन शराबियों के बीच रहना मेरे वश की बात नहीं। फादर फेरर,···।" मैं काँप उठा ! "···खर्च तो होगा, पर वह कहीं अच्छा है। ···लेटर लिख दूंगा। फिर, यहाँ हम-जैसों को पूछता ही कौन है ? सबको अपनी-अपनी पड़ी है। मैं जो कर रहा हूं, वही ठीक लगता है···।"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

३. वह काली रात !

यकायक रिक्शा रुक गया। मेरी चेतना भंग हुई और कठोर वस्तु-लोक सामने आ खड़ा हुआ। रात काफी बीत चुकी थी। अंधियारा बहुत घना हो चुका था। जगह सुनसान थी। पलक झपकते ही मैं समझ गया कि रिक्शेवाला मुझे लूटना चाहता है। मेरा अनुमान सच निकला। रिक्शेवाले ने पैंट की जेब में हाथ डाला। पता नहीं कहां से, मुझमें तात्कालिक कर्तृत्व का प्रबल बोध हो गया ! सम्भवतः प्राणरक्षा और वित्तचिंता ने मिलकर मुझमें असामान्य स्फूर्ति और ऊर्जा उत्पन्न कर दी। मैंने सीट से ही उचककर उसके मुंह पर एक करारा मुक्का धर दिया। आदमी मामूली कद-मद और दम-खम का ही था। चाकू के बल पर ही गुण्डा बनता होगा। चारों खाने चित्त ! मैं कूदकर उस पर चढ़ बैठा और दोनों हाथों से गर्दन दबोचते हुए बोला—"मासूम लौंडा समझकर लूटना चाहता था ? कमीने !…"

उसके मुंह से कोई शब्द न निकला। मैं घबरा गया। सर पर पैर रखकर भागा। कोई चार फर्लांग बाद एक बस्ती दीखी तब जान में जान आई। रूमाल से मुंह पोंछा, सांस को ठीक-ठाक किया, मन को सम्हाला और तब एक भलेमानुस से पूछा—"स्टेशन…?"

भलामानुस सनका—"यहां से तीन मील है। सीधे चले जाओ !" और वह हांफता-काँपता-सा भागने-जैसी चाल चलने लगा, जैसे कि पीछा छुड़ाना चाहता है।

मैंने बुरा नहीं माना। भारत में आम जनता के लिए शासन है ही कितना ? देश परमात्मा चलाता है। बड़े-बड़े नास्तिक भारत आकर आस्तिक हो जाते हैं। रात के अंधियारे और सन्नाटे में यदि उस भले-मानुस ने भिड़ंत और भागमभाग से विवर्ण और विरूप हुए मुझसे गुण्डे का भय पाया तो उसका कोई दोष नहीं। यह तो उसकी बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता थी। जिसके पैर में कांटा चुभता है वही दर्द जानता है। मुझे उससे सहानुभूति हुई।

सरपट चला जा रहा था कि तीन पुलिसवाले दिखाई पड़े। मारे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

डर के दिल भड़ाऊं-भड़ाऊं होने लगा। एक लहर उठी कि भाग चलूँ। डग लम्बे हैं ही। दौड़ने में स्कूल-काल में ही लासानी माना जाता रहा हूं। अब तो दम-खम कहीं ज्यादा है। किन्तु बुद्धि ने 'कर नहीं तो डर कैसा ?' के आधार पर शक्ति प्रदान की। ठीक उनके पास से गुज़रा। उनमें से एक ने घूरा तो मैंने भी घूर दिया। किसी ने नहीं छेड़ा। मैंने परमात्मा को धन्यवाद दिया। रफ्तार में तेज़ी लाया। राम-राम करते स्टेशन आ पहुँचा। पूछतांछ से पता चला कि टिकट बंटने में आध घंटे की देरी है। कोई बेंच ढूंढ़ने लगा, जिस पर कुछ देर विश्राम कर लूँ। तन और मन दोनों बेहद थक गए थे। लेकिन एक भी बेंच खाली न मिली, एक-एक पर दो-दो सोए पड़े थे। ढूंढ़ते-ढांढ़ते, बड़ी मुश्किल से, एक बेंच ऐसी मिली जिसका एक छोर कुछ खाली था। लेदर-बैग बांह के नीचे कर उसी छोर पर बैठ गया। अब ध्यान गया तो ज्ञात हुआ कि कोई युवती सोई है। संकोच लगा। पर इतना थका था कि उठने की हिम्मत न पड़ी। झपकी आने लगी। पता नहीं कब, बैठे-बैठे ही सो गया।

यकायक जब आंखें खुलीं तब देखा कि मुसाफिरखाने में भारी चहल-पहल हो रही है। वह युवती भी लगभग मेरे साथ ही जागी और उठ बैठी। अचानक ही कुछ चिल्लाती-सी बोली—"ओह पीटर, तुम ! हॉउ डु यू डू ?" और उसने पूरी बेतकल्लुफी से हाथ बढ़ा दिया।

मुझे भी तत्काल ज्ञात हो गया कि यह मदर मेरी के अस्पताल की नर्स मिस रीटा है। औपचारिकता के क्षणों को शीघ्रतर समाप्त करके हम दोनों ने चटपट टिकट लिए और प्लेटफार्म की ओर लपके जहाँ गाड़ी आनेवाली थी। समय हो चुका था। गाड़ी आई लेकिन बेहद भरी। थर्ड क्लास के कुल दो डिब्बे थे। उन्हें भी अंदर से सोनेवालों ने बन्द कर रखा था। सौभाग्यवश एक डिब्बे की एक खिड़की से दो-तीन यात्री कूदे। शायद उन्हें पटना उतरना था। दरवाज़े से उतरना सम्भव न था; इसलिए, खिड़की से कूदे थे। मैंने झटपट अपना बैग अन्दर फेंका और पल-भर में ही डिब्बे के अन्दर होने वाला था कि साथ की नारी के प्रति कर्तव्य का ध्यान आया। बिना कुछ बोले-सोचे, उसकी अटैची

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अन्दर फेंकी, उसे गोद में उठाकर खिड़की के अन्दर ठेला और तब स्वयं जा गिरा। शायद रीटा के कारण हम दोनों को सीट भी मिल गई।

अब चेतनाएं लौटीं-—"थैंक्यू पीटर, तुम न होते तो मैं रह ही जाती।"

अब संकोच लगा— किस धड़ल्ले से गोद में उठाकर खिड़की के अंदर ठेल गया! कुछ बोला न गया। रीटा को भी, शायद मेरा शर्म से लाल चेहरा देखकर, संकोच का अनुभव हुआ। उसने आंखें झुका लीं। यद्यपि वह मुझसे काफी बड़ी थी तथापि अतीव प्रिय लगी। मैं लुकी-छुपी नज़रों से उसे देखने की मजबूरी पर कुछ-कुछ ही काबू कर पाया। एकाध बार अचानक ही आँखें चार होने पर वह हल्का-सा मुस्करा पड़ी। मुझे लगा, मेरा समग्र अस्तित्व झंकृत हो उठा है। गाड़ी चली। सब लोग सो रहे थे, लेकिन मेरी और रीटा की आंखों से नींद गायब थी। न एक शब्द का आदान, न प्रदान; केवल मौन-मूक अभिव्यक्त-मुखर शालीन दृष्टिदान।

इसी बीच ऐसा लगा कि रीटा के बगल में सोया यात्री, जो एक हट्टा-कट्टा हूण-छाप सरदार था, बीच-बीच अपनी बंटों जैसी आंखें पसार कर यह-सब देख रहा है। संकोच लगा, क्रोध आया और पता नहीं कब और कैसे, मैं सोने का अभिनय करने लगा। ऐसा लगा जैसे रीटा भी या तो यही कर रही है या सचमुच सो रही है। तभी वह सरदार उठ बैठा। अच्छा गबरू जवान था—पचास प्रतिशत हूण और पचास प्रतिशत मंगोल नृवंशों से समन्वित। केश इत्यादि न होते तो, भयावहता के साथ भी बहुत सुन्दर लगता। वह बैठे-बैठे ऊंघने का नाटक करने लगा। बीच-बीच उसका मुँह रीटा के कंधे से आ लगता। मुझे बड़ा क्रोध आता। पर क्या करता? जब रीटा ही कुछ नहीं कर-कह रही तब मैं दाल-भात में मूसलचन्द या कबाब में हड्डी का विशेषण पाने के लिए क्यों रपटता? फिर रीटा पर मेरा अधिकार ही क्या? संबंध ही क्या? उससे लेना-देना ही क्या?…मुझे क्रोध क्यों आ रहा है?…बीच-बीच में मन होता कि सरदार का कंधा झकझोर दूं, लज्जित कर दूं। पर डर लगता। एक तो सरदार तगड़ा था, दूसरे रीटा की प्रतिक्रिया का आकलन असरल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

था। कुल कुछ घंटों का मामूली बोल-चाल ही तो हुआ था।

अजीब हालत थी। कभी जलता-भुनता, कभी हिलता-उचकता, कभी सोने-ऊंघने का नाटक करता। नींद काफूर ! उधर सरदार रीटा के पूरे कंधे पर मुंह रखता जा रहा था। झख मारकर मैं खिड़की के बाहर अंधियारे में शरण लेने लगा। तभी एक सज्जन बर्थ से उतरे और बोले, "चार बजने वाले हैं। तुम ऊपर जाकर सो जाओ— रात-भर के जागे हुए लगते हो।" मुझे उनका परोपकारपूर्ण प्रस्ताव पसंद आ गया। बैग लेकर बर्थ पर जा लेटा। पर नींद का नाम-निशान नहीं। बार-बार नीचे ताकता-झाँकता। अब मेरे स्थान पर बैठे सज्जन, उनींदेपन की ओट ले कर, रीटा पर लुढ़के पड़ रहे थे। गेहुवां रंग, इकहरा शरीर, कानों में सोने की लुड़कियाँ, मालूली कद। अधेड़ मारवाड़ी व्यापारी लगते थे। मुझे उनके परमार्थ में निहित स्वार्थ का बोध हो गया। घृणा हुई। साथ ही, रीटा पर भी ! और अंततोगत्वा अपने पर भी, "मैं कौन हूं—काजी या मुल्ला ? और मियां-बीवी राज़ी तो क्या करेगा काजी ? फिर, इस कमजोर और कामुक राष्ट्र में और सम्भव ही क्या है ? टीन के भगोनों जैसे मर्द और अलमूनियम की कटोरियों जैसी औरतें। लेकिन मुझे क्या पड़ी जो मगजपच्ची कर रहा हूं ?…" फिर भी, नींद न आई सो न आई।

पाँच बजे के लगभग मारवाड़ी महाशय ने स्टेशन आने पर, चाय वाले को पुकारा। रीटा की आंखें खुल गईं ! उन्होंने चाय का ऑफर किया, रीटा ने तत्काल स्वीकार कर लिया। मैं जल-भुन कर राख हो गया। रीटा ने आवाज़ दी तो बोला तक नहीं, हिला तक नहीं। मारवाड़ी महाशय ने कहा—"सोने दो बेचारे को। बच्चा है। मुझे तरस आया तो खुद नीचे उतर आया और अपने बेड पर उसे सुला दिया —'दया धरम का मूल है, पाप मूल अभिमान' !… नौकर है ?"

रीटा ने बहुत धीरे-से कहा, "ह…आं ! मदर मेरी…"

मारवाड़ी महाशय ने चाय का सकोरा पकड़ाकर, तब स्वयं पकड़ कर, श्रद्धा-गद्‌गद् कण्ठ से कहा—"मदर मेरी तो देवी हैं। साक्षात् भग-वती ! सेवामूर्ति ! ऐसी महान नारी न आँखों से देखी और न कानों से

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सुनी।" उन्होंने सिर हिलाते हुए आंखें बन्द कर लीं।

सरदार भी जाग चुका था। ज्ञान का प्रदर्शन करते हुए बोला, "फ्लोरेंस नाइटिंगेल की याद कराती हैं ! काश, भारत में ऐसी ममता-मयी-सेवामयी नारियाँ होतीं ! शी इज सर्विस पर्सानिफाइड···"

"अजी, राम भजो ! गोरों का मुकाबला कोई क्या खाकर कर सकता है ? देवता हैं—रेल, जहाज़, बिजली और चन्द्रयात्रा उन्हीं के दम का जलूसा है···।"

"क्या राज कर गए !"

"और क्या न्याय ! दूध का दूध, पानी का पानी—हंस की कहानी ! व्हेरी-व्हेरी ग्रेट···"

सामने की सीट पर सोए वृद्ध जम्हाई लेते हुए बोले—"अब तो राज भगवान् के भरोसे चल रहा है···"

मारवाड़ी महाशय ने विरोध किया—"खैर, ऐसा तो नहीं है पर वो बात कहां !···"

इधर ये दोनों वार्तालाप और वाद-विवाद में उलझ गए, उधर सरदार रीटा पर पट्टू डालने लगा। दोनों खूब रस रहे थे। उसने अपना कार्ड दिया और रीटा का अता-पता नोट किया। जब वह ब्रश करने उठा तब मारवाड़ी ने अपना ठिकाना बताया और निमंत्रित किया, "आठ साल का लड़का है; उसकी अंग्रेजी मजबूत कर दें तो अहसान मानूंगा।"

मैं तटस्थ और निर्लिप्त होने का यत्न कर रहा था। हाथ-मुंह धोने आदि में जो समय खपा, वह कहीं अच्छा लगा। स्टेशन आने पर मैंने नीचे उतर कर चाय पी। इसके बाद बर्थ पर चला गया और पता नहीं कैसे, सो गया ! चाय जगाती है, पर मुझे सुला गई ! नींद सुलाती है, पर मुझे जगा चुकी थी ! मेरी तटस्थता तथा निर्लिप्तता अरुचि तथा विषण्णता में अवसित होती जा रही थी। यथा समय गाड़ी बदली गई। मैं कटना चाहता था, पर रीटा ने ऐसा न होने दिया। शायद उसे एक परिचित सहायक की अपेक्षा थी ? गोहाटी आई तो मैं अपना बैग लेकर अकेले उतरा। लेक़िन रीटा, सरदार और मारवाड़ी से घिरी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

होने के बावजूद, मुझे पुकारना नहीं भूली, "पीटर, साथ-साथ चलेंगे।"

मुझे कुछ अच्छा-सा लगा, कुछ बुरा-सा भी। लेकिन मैं रुक गया। उसने सरदार और मारवाड़ी से कहा—"मैं ज़रा नहा-धो लूं।…ओ. के. …बाइ-बाइ…टा-टा।" और वह बड़े धड़ल्ले से फर्स्ट क्लास के वेटिंग रूम में घुस गई। मैं पीछे-पीछे।

जमादार ने सिर्फ उसे सलाम किया। वह महज़ हल्का-सा मुस्करा दी। मैं सोच रहा था—"यह सांवली पर सलोनी, छरहरी पर बलिष्ठ, लम्बी पर दमदार युवती कितनी फॉर्वर्ड है। जो हो, क्रिश्चियन महिलाएं होती तो प्रगतिशील ही हैं। इधर पंजाबिनें इनके भी कान काटने लगी हैं। तभी तो दफ्तरों में छोकरियों और लौंडियों की भरमार है। इनके कारण दफ्तरों की नीरसता में सरसता का आभास होता रहता है।" पर मेरा सोच अन्यत्र भी गया—"प्रगतिशीलता व्यवसाय भी है, व्यवसाय का अंश भी। कई बार तो झख मार कर भी प्रगतिशील बनना पड़ता है। बहुत-से लोग बिना इच्छा के ही प्रगतिशील बनते हैं…"

नहा-धोकर रीटा सजाव-सिंगार पर जुटी। भरे-से वेटिंग रूम में भी उसे स्नो, पॉउडर, लैवेंडर इत्यादि के प्रयोग में कोई हिचक न हुई। मैं यंत्रवत् यह-सब देखता रहा। अचानक मेरा ध्यान टूटा—अटैची से एक नया रूमाल निकालने के सिलसिले में कुछ छोटी-मोटी चीजें उसके साथ लगी चली आईं, जिनमें एक पैकेट निरोध का था !…मैं आश्चर्यचकित और स्तब्ध रह गया; ग्लानि और क्षोभ की तात्कालिक रेखाएं आनन को आवृत कर गईं !…

रीटा भी कुछ शर्मा गई। फिर भी, मुस्कराकर धीरे-से बोली—"हर प्रोग्रेसिव गर्ल चाहे एंग्लो-इंडियन हो या इंडियन-क्रिश्चियन, पंजाबी हो या सिंधी, एक्ट्रेस हो या एक्स्ट्रा, एयर-हॉस्टस हो या कॉल-गर्ल, मॉडेल हो या सेल्स-गर्ल, टेलीफोन-ऑपरेटर हो या क्लर्क, निरोध रखती है—पता नहीं कब कैसा मौका आ पड़े। मन का क्या भरोसा?" वह कुछ और फुसफुसाई पर मैं, मुंह फेर लेने के कारण, सुन न सका। दो पल बाद वह कुछ ज़ोर से बोली—"तुम्हारा चरित्र ऊंचा है। मैंने इम्तहान लेकर देख लिया। दरअसल, ये पैकेट मैंने अपनी सहेली मार-

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: I

ग्रेट के लिए लिया है···।"

मैंने कुछ प्रसन्न होते हुए उसकी ओर देखा। प्रत्यय तो न हुआ क्योंकि उसकी काइयां आंखों में सत्य नहीं अपितु चातुर्य व्यञ्जित हो रहा था, तथापि कुछ संतोष-सा अनुभूत हुआ। बोला, "वो तो नन है···।"

"नन का रेट तो नर्स से भी ज्यादा है।" वह अचानक ही रुक गई।

चलते-चलते उसने जमादार को एक रुपया दिया। उसने झुककर सलाम किया।

उसका आवास नर्सों के हॉस्टेल में था। मदर मेरी का बंगला कुछ आगे पड़ता था। आवास में जाते समय बोली, "ये सफर याद रहेगा। रहेगा न?"

मैं कुछ न बोल पाया।

"फिर मिलोगे?"

मैंने सिर हिला दिया और औपचारिक अभिवादन करता अपने रास्ते हो लिया। मुझे उबकाई-सी आ रही थी। साथ ही, एक अजीब-सी याद भी। इन्सान कमज़ोरियों का लोंदा है; ···यह सोचता हुआ मैं अपनी कोठरी की ओर डगरता गया।

नहाने-धोने और खाने-पीने के बाद एक गहरी नींद मारी तो ताज़गी और ताकत का अहसास हुआ। पड़ोस की कोठरी में एक माली रहता था। नाम था अमलानादन्। हिन्दू था। कोई पच्चीस वर्ष का होगा। अविवाहित। सांवला रंग। साधारण कद। दाक्षिणात्य था। मेरा मन उससे बातें करने का होता था। वह बोलता भी प्रेम से था। लेकिन एक छिपा हुआ अहंकार व्यक्त हुए बिना न रह पाता। वह मुझे अछूत समझता था। भारत में आमतौर पर ईसाई को अछूत ही समझा जाता है। कोई यह मानने को तैयार नहीं कि वह ब्राह्मण या क्षत्रिय या वैश्य या कायस्थ वर्ग के पूर्वजों का वंशज है। गोरे-चिट्टे एंग्लो-इण्डियन तक आदर नहीं पाते और वर्णसंकर समझे जाते हैं। यही हाल मामूली मुसलमानों और नव-बौद्धों का है। हां, ऊंची नस्ल के मुसलमानों के रूप-रंग और बोल-चाल की तारीफ ज़रूर की जाती है। आम हिन्दू प्रतिक्रियावादी है, रूढ़िवादी है। किन्तु इसके मूल में धर्म-परिवर्तन की हिकारत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

ज्यादा काम करती है। हिन्दू जातीय गर्व से सम्पन्न है। अदना-से-अदना हिन्दू भी अपने आपको अन्य धर्मावलम्बियों से श्रेष्ठतर मानता है। यह गलत है। पर इसमें एक शान भी छिपी है। भारत में आम ईसाई अपने-आपको कुछ अलग-थलग-सा पाता है। आम मुसलमान को भी ऐसा लगता है, लेकिन चूंकि वह अपनी घनी बस्तियों में रहता है, इसलिए उसका एक सामाजिक जीवन अवश्य है। अमलानादन् नम्र था, सुशील था, पर उसमें हिन्दुत्व का अहंकार विद्यमान था। इसलिए कई बार मुझसे वह तो उससे मैं कटता रहता था। यों, हम अच्छे पड़ोसी थे।

उस दिन मैं स्वाभिमान को ताक पर रखकर उसकी कोठरी में चला गया। वह पढ़ा-लिखा था। अखबार खरीदता था। दुआ-सलाम के बाद मैं अखबार देखने लगा। पन्ने पलटते-पलटते एक खबर पर ध्यान टिका··· 'रिक्शेवाले की रहस्यमय मृत्यु', एकदम हक्का-बक्का रह गया! अमलानादन् न होता तो चीख अपने-आप ही निकल जाती। खबर का सारांश था कि पटने में चित्त गिरने से एक रिक्शेवाले का कपाल फट गया, जिससे उसका देहांत हो गया। उसके गले में अंगुलियों के निशान मिले हैं। चूंकि वह एक सजायाफ्ता गुण्डा और पेशेवर अपराधी था, इसलिए हो सकता है, किसी प्रतिद्वन्द्वी गुण्डे के द्वारा ढकेला और मारा गया हो, यद्यपि उसकी मृत्यु गला घोंटने से नहीं, प्रत्युत कपाल फटने से हुई है। पुलिस जांच कर रही है।

मैंने खबर कई बार पढ़ी···

सिर चकराने लगा। कुछ देर इधर-उधर की बातें करके मैं अपनी कोठरी में लौट आया। पड़ा-पड़ा बहुत-कुछ सोचता रहा, जिसका सारांश था, मैं हत्यारा नहीं हूं क्योंकि मैंने अपनी और अपनी छोटी-सी पूंजी की रक्षा के लिए उसे ढकेला था, मैं स्वप्न में भी न सोच सकता था कि वह मर जाएगा, यद्यपि उसके बोल न सकने से यह जान गया था कि अचानक और सपाट गिरने के कारण वह कुछ समय के लिए बेहोश हो गया है, जैसाकि आमतौर पर होता रहता है। रात तक नींद न आई। रात में भी नींद नहीं।···आधी रात के लगभग आंखें झंपीं, पर कुछ ही देर में खुल गईं, "बचाओ; बचाओ; लूटे ले रहा है···मार डालो।" इत्यादि

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding:

चिल्लाता उठ बैठा। अमलानादन् दौड़ा आया। कुण्डी खटखटाई। मैंने दरवाज़ा खोला। उसने पूछा और सांत्वना दी, "चौंक पड़े थे? कोई बात नहीं, ऐसा हो जाता है।" मुझे लिटाकर सिर सहलाया। एक-दो चौंकने और चिल्लाने की कहानियां सुनाईं। वह सिर सहलाता रहा और मैं सो गया। इसके बाद चौंका-चिल्लाया नहीं। सवेरे उठा तो उसके प्रति कृतज्ञता से नत था। मेरी विपत्ति ने उसकी अरुचि मिटा दी, उसकी सेवा ने मेरी हीन-भावना मिटा दी।

अब दिन अच्छे कटने लगे। हम दोनों में मित्रता हो चली। मैंने उसे बताया, "मैं न पुश्तैनी ईसाई हूं, न कन्वर्ट। कहीं किसी मेले में खो गया था। शिशु था। एक ईसाई उठा लाया। इसलिए ईसाई हूं। मैं न नौकरी के लिए ईसाई बना हूं, न छोकरी के लिए। हां, अब हूं ईसाई ही, यद्यपि सुना है कि मेरे माता-पिता शायद ब्राह्मण थे।"

अमलानादन् यह सुनकर खुश हुआ, हालांकि उसने उत्तर आदर्शवादी ही दिया, 'सब मनुष्य समान हैं। हिन्दू हो या मुसलमान या ईसाई, हरएक के सीने में मुट्ठी-भर का एक-जैसा दिल धड़कता है। मुझे बहुत प्रलोभन दिए गए पर मैंने धर्म नहीं छोड़ा। मेरी बागबानी की खास जानकारी और कड़ी मेहनत ने मुझे कभी बेकार या बेजार नहीं होने दिया। मैं तो चाहता हूं, सब अपने-अपने धर्म पर चलें, किसी से धर्म बदलने को न कहा जाए, भले ही कोई स्वेच्छा से चाहे तो धर्म बदल ले, लेकिन ऐसा न रोजी-रोजगार के लालच से करे और न शादी-ब्याह के।"

मुझे उसकी हिम्मत पर नाज़ हुआ। ईसाई मिशनरियों के बीच भी यह कितनी मुस्तैदी से अपने मजहब की ख़िदमत कर रहा है। क्या यह किसी पुजारी से कम है?

कुछ दिनों बाद मदर मेरी आ गईं। लाल होकर लौटी थीं! यूरोप की ठण्डक में लाली का निवास है। उड़ती-सी चर्चा थी कि प्लास्टिक-सर्जरी कराके लौटी हैं, नहीं तो इतनी खूबसूरत और स्लिम कैसे हो गईं? यों वे खूबसूरत थीं, पर ऐसी नहीं। अब वे प्रौढ़ नहीं अपितु युवती लगती थीं। इसलिए मुझे भी अफवाह पर ध्यान देने के लिए विवश होना पड़ा।

आने के दो दिन बाद उन्होंने मुझे बुलाया। इन दो दिनों में कुछ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

बड़े-बड़े धर्माधिकारियों और धर्मध्वजियों के साथ लगातार एक नई योजना पर विचार-विमर्श होता रहा था, जिसके अनुसार त्याज्य शिशुओं तथा बहिष्कृत पतिताओं के लिए आश्रमों की व्यवस्था करनी थी, क्योंकि इन्हें बिना किसी खास झमेले के ईसाई बनाया जा सकता है—मानवता और सेवा की ठसक और चमक के साथ। छोटे-बड़े सब इस नई योजना से बहुत प्रभावित थे। जब इसका निर्विरोध अनुमोदन प्राप्त हो गया और आगंतुक चले गए तब मदर मेरी को विदेश से लाए सामान को व्यवस्थित रूप से रखाने-जमवाने का ध्यान आया। मैंने उनके आदेशानुसार इधर-उधर की अलमारियों और तिजोरियों में रखा-जमाया। इस सिलसिले में, मैंने हरे-हरे डॉलरों के बड़े-बड़े बंडल देखे, पीले-पीले सोने की छोटी-छोटी ईंटें और देखीं लाल-लाल विदेशी शराब की कोई एक सौ फुल-साइज बोतलें। सिगरेट्स के कोई तीन सौ पैकेट्स भी लाई थीं। और अजीब संयोग था···कांट्रासेप्टिव यहां भी दीख गए। मैं जानता था, वे बहुत सम्पन्न और प्रतिष्ठित हैं तथा बहुत सम्पन्न और प्रतिष्ठित नेत्रियों, धर्म-नेत्रियों, अभिनेत्रियों, कवयित्रियों तथा कला-नेत्रियों इत्यादि में से अनेक के सदृश, वैयक्तिक स्तर पर, शराब पीती हैं, सिगरेट पीती हैं और यूरोप, अमेरिका तथा इनसे प्रभावित-प्रेरित क्षेत्रों में ऐसा होना आश्चर्यजनक नहीं है; फिर भी उस दिन कुछ अजीब-सा लगा। जब उन्होंने मुझे अपनी सेवा में लिया था तब समझा दिया था कि उनके बारे में कभी, कहीं और किसी से एक शब्द भी न बताऊं। कोई कुछ पूछे तो सपाट-झपाट कह दूं कि इस विषय पर वार्ता न करे। मैंने सदा-सर्वदा इस आज्ञा का पालन किया था। आज यह लिख तो रहा हूं, लेकिन आज तक यह किसी से कहा नहीं है। मैं उनका सेवक रहा हूं। उनका नमक मेरी हड्डियों में समाया हुआ है। मैं उनका कृतज्ञ हूं। यह लिखना तो केवल सत्य को व्यक्त करने के लिए है।

सब सामान यथा स्थान रखवाकर उन्होंने मुझे दस रुपए इनाम में दिए, पीठ थपथपाई और जाने की आज्ञा दी। मैं खुश तो हुआ पर अजीब-सा लगना खत्म न हो पाया।

उस दिन की घनघोर वर्षा! जो लोग असम या उसके पार्श्ववर्ती

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

राज्यों में नहीं रहते, वे उधर की वर्षा का अनुमान नहीं लगा सकते। लगता था मानो सारे समुद्र आकाश पर लटक गए हैं और धरती पर धावा बोल रहे हैं। घनघोर अंधियारे में दिन रात बन गया था। सारा काम-काज ठप ! शाम तक बंगला एकदम सुनसान हो गया ! रात होते-न-होते बिजली गुल हो गई। मदर मेरी ने कहा, "आज का दिन विचित्र था, किंतु रात विचित्रतर है ! अजीब-सा लग रहा है। तुम बाहर निकले तो भीग-कर सराबोर हो जाओगे, क्योंकि छतरी ऐसी प्रलय-वृष्टि में व्यर्थ हैं। आज यहीं खाओ-पियो !"

लैम्प जलाया जा चुका था। मदर मेरी ने विदेशी-पोर्क, सॉस, नम-कीन काजू और ह्विस्की इत्यादि की हल्की-सी ख़ुराक ली, पर मुझे भर-पेट खिलाया-पिलाया। मुझे लगा, फौलाद का हो गया हूं। नशे के जोर में उठकर झूमने लगा, क्योंकि उस समय वे बगल के एपार्टमेंट में चली गई थीं। मैं झूमते-झूमते गाने लगा। कभी जालीदार खिड़की से बाहर का घना अंधियारा देखता···केवल, केवल, केवल एक अस्तित्व—अंधकार ! आकाश, पृथ्वी, पवन, वृक्ष—सब अंधकार में विलीन थे !···कभी गाने लगता, कभी थिरक-थिरक कर नाचने लगता। उनके आने की आहट पाकर मैंने नाचना-गाना एकदम बंद कर दिया, लेकिन उन्हें एकटक घूरने लगा—गहरी खुशबू की अरघानें उठाने वाले झीने कीमती नाइट गॉउन में वे जन्नत की हूर ही लग सकती थीं। उन्माद ने मेरी सारी चेतना को आवृत कर लिया, मेरा समग्र अस्तित्व झंकृत और विह्वल हो उठा !

वे थोड़ा-सा मुस्कराईं और मोनालीसा की रहस्यमय मुस्कान सदियों पीछे पड़ गई ! हेलेन, पेनीलोप, खदीजा और नूरजहां प्रसिद्धि-शिखर पर पहुंचते समय प्रौढ़ा ही थीं।

"पीटर, तबीयत कैसी है ?"

मेरी चेतना कुछ-कुछ सजग हुई, "ठीक है; आप प्रसन्न हैं न ?"

"हूं तो, लेकिन लगातार बदली और वर्षा के कारण मामूली-सा सिर-दर्द···।"

"लाइए, दबा दूं ! चन्दन का तेल लगाने से आनन-फानन में गायब हो जाएगा !"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

वे कोच पर लेट गईं। मैं सिर में तेल लगाने लगा। दसेक मिनट बाद वे बोलीं, "मुझे नींद आ रही है…।"

"आप सो जाइए, मैं सुलाने के बाद ही जाऊंगा।"

"लेकिन, यह लैम्प…!"

मैंने उठकर लैम्प बुझा दिया।

अब अंधेरे कमरे में, जिसमें इत्र और चंदन की मिली-जुली खुशबू पूरी तरह से भर चुकी थी, मेरा उन्माद प्रखरतर होने लगा। मेरी सांसें तेज़ हो चलीं। मुझे उनकी बेहद तेज़ सांसों का भी अहसास हुआ। मैं सिर से उतरकर मस्तक पर तेल लगाने लगा। अंधेरे कमरे में उनका मुंह बादलों में चांद की तरह चमकता लगा। उनकी गर्म सांसें कमरे में भरी खुशबू के कारण बेहद प्यारी और सुरभित लगने लगीं। मेरे दाएं हाथ की तर्जनी उनके होठों से खेलने लगी—जो खुले थे। मुझे लगा, उनका दिल मेरे दिल से भी ज्यादा तेज़ धड़क रहा है और इसके परीक्षण के लिए मैंने अपना हाथ उनके दिल के ऊपर रख दिया।

४. विभीषिका

मेरा जीवन बाह्यतः बहुत सुखी था। अच्छा भोजन, अच्छे वस्त्र, अच्छा आवास, निश्चिन्तता और डाकघर में एक हजार के लगभग का जमाखाता। शरीर भी खूब निकल आया था। जिमनेजियम के शौक और दौड़ ने पूरा एथलीट बना दिया था। रूप-रंग भी बहुत अच्छा था। जानकारी भी ठीक-ठाक थी। अंग्रेजी और हिन्दी पढ़, लिख और बोल सकता था। उपन्यास और अन्य रोचक साहित्य पढ़ता था। किन्तु, आभ्यंतरतः एक विचित्र हाहाकार अनुभूत होता रहता था। जब कभी एकांत मिलता तब अतीत को वर्तमान बनाने लगता। कभी सोचता, मैं खानपान में बेहद उच्छृंखल हो गया हूं। तब लगता, मैं ब्राह्मण हूं! किंतु तुरंत मन बहलाने लगता। गांधी की आत्मकथा में गुजराती के कवि नर्मद के विचार और भाव मस्तिष्क के पटल पर कौंध जाते। निरामिष

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding:

हिन्दू प्रायः सदैव मांसाहारी मुसलमानों और ईसाईयों से पिटा और अपमानित हुआ है। तत्काल अन्य विचार भी आ उठते। मथुरा के कृष्ण-जन्मस्थल-मंदिर और सौराष्ट्र के सोमनाथ-मंदिर को ढहाने वाले महमूद गज़नवी का एक भी वंशज नहीं, नामलेवा नहीं; वह इतिहास के कूड़े के ढेर में 'एक लुटेरा' बना सड़ रहा है। यही हाल तैमूर, फीरोज तुगलक, सिकंदर लोदी और औरंगजेब का है। किन्तु वशिष्ठ और विश्वामित्र, शाण्डिल्य और कात्यायन, राम और कृष्ण के वंशज और भक्त करोड़ों की संख्या में विद्यमान हैं। क्लाइव की आत्महत्या और हेस्टिंग्स की अवमानना भी कम विचारणीय नहीं। सुल्तान, बादशाह और गवर्नर-जेनरल, वाइस-राय कहाँ गए ? क्या हिन्दू-जीवन का परवर्ती शाकाहार-दर्शन, पदमुक्ति-दर्शन, इन्द्रियदमन-दर्शन शाश्वत नहीं प्रमाणित हुआ ?

अमलानादन् से वार्ता होती। वह शांत-गम्भीर व्यक्ति व्यावहारिकता का आदर करता था। प्रायः अनुभूतिगत अभाव अभिव्यक्तिगत भाव बन जाता है। सामान्य-चरित्र व्यक्ति कठोर नैतिक मूल्यों पर बहुत बोलता है, श्रेष्ठ-चरित्र व्यक्ति मानवीय दौर्बल्यों को क्षम्य प्रतिपादित करता है। सामान्य-वित्त व्यक्ति ऐश्वर्य-विलास की चर्चा में रमता है, धनकुबेर-व्यक्ति त्याग-वैराग्य को महत्त्व देता है।

एक दिन यौन पर वार्ता हो रही थी। अमलानादन् ने किसी ग्रन्थ में जो पढ़ा था, उसका सारांश बता रहा था। यौनाकर्षण सर्वथा सहज है। वह जाति, देश, वर्ण इत्यादि की शृंखलाओं से तो मुक्त है ही, आयु की शृंखलाएं भी तोड़ देता है। पच्चीस वर्ष के युवक मुहम्मद ने चालीस या तैंतालीस वर्ष की प्रौढ़ा खदीजा से विवाह किया था। जब तक वह जीवित रही, वे किसी अन्य नारी पर आसक्त नहीं हुए। अन्त तक खदीजा की ही प्रशंसा करते रहे, हालाँकि आयशा और जैनब-जैसी बीवियां तथा रेहाना और सफिया-जैसी रखैलें कहीं-अधिक खूबसूरत और जवान थीं। बावन साल के पैगम्बर ने नौ साल की आयशा से निकाह किया था ! अस्सी साल के गेटे ने सत्रह साल की प्रेमिका से विवाह करने की सोची थी। इसलिए, यौन के प्रसंग में सामान्य नैतिकता की जकड़ पाखण्ड की सूचक है। यौनाचार परिस्थिति और परिवेश के इन्द्रजाल में, यदि लोभ और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

एकपक्षीयता से मुक्त होकर, कुछ भी करता है तो वह उचित है। अश्लीलता मन की दासता की दुहिता है। प्रेम में कुछ भी अश्लील नहीं होता। प्रेम में तथाकथित अश्लील ही सर्वोपरि प्रेय बन जाता है। प्रेम में नग्नता कुहक बन जाती है। प्रेमकृत्य की प्रत्यालोचना संस्कारगत हीनता की सूचक है। विज्ञान और मनोविज्ञान इसे प्रमाणित करते हैं, पश्चिम का सर्वांगीण विकास इसे स्पष्ट करता है। नैतिकता एवं पावनता की दुहाई देने वाला, इनका दुंदुभि-नाद करने वाला भारत भ्रष्टाचार-निलय बना हुआ है। अतएव, भारत इसे सूचित करता है।

मुझे यह विवेचन बहुत दूर तक समीचीन लगा, किन्तु मन परितुष्ट न हो सका। भारत ने काम का सर्वोपरि सम्मान करते हुए, उसे पुरुषार्थ का महत् अंश घोषित करते हुए, देवता मानते हुए, अपनी महान् स्थापत्य-कला में उच्च स्थान देते हुए, जिस संयम और मर्यादा का प्रतिपादन किया है, अंतर्विकास के लिए वही वरेण्य है, श्रेयस्कर है—यह मान्यता ही मर्म को अधिक छूती रही। कुंठित-यौन व्यक्ति तथा राष्ट्र पतित हो जाते हैं, किन्तु अनियंत्रित-यौन व्यक्ति तथा राष्ट्र नष्ट हो जाते हैं।

अमलानादन् ने इसी सिलसिले में कुछ और बताया। पुरुष का पौरुष तत्त्व उसे यह कल्पना भी नहीं करने देता कि नारी भी उसी के सदृश एक व्यक्ति है, जो उसी-सा शरीर रखती है, जिसकी भूख एक-जैसी है। यदि पुरुष किसी नारी से सम्पर्क बढ़ाता है तो रसिक है; यदि नारी किसी पुरुष से सम्पर्क बढ़ाती है तो कुलटा है, छिनाल है, कलंकनी है, पतिता है! सहस्रों वर्षों तक ईसाई-पुरुष ईसाई-नारी की केवल इसलिए अवहेलना करता रहा कि ईव के ज्ञान-तरु का फल खाने तथा आदम को खिलाने के कारण आदम स्वर्ग-च्युत हुए थे! एक प्राचीन गल्प के कारण जीवन के श्रेष्ठतर अर्द्धभाग की ऐसी हृदयहीन अवमानना! पुरुष का पशुत्व इतना उग्र है कि कई बार वह प्रेमालाप-पात्रा को चरित्रहीना तक मानने लगता है और यह भूल जाता है कि पहले वह चरित्रहीन हुआ था!

मुझे इस विवेचन से शांति तो मिली, पर तर्क दूर न हुआ। पुरुष बाह्य है, नारी आभ्यंतर। पुरुष शरीर है, नारी आत्मा। नारी माता है, धात्री है। शरीर का पतन आत्मा की प्रेरणा से मार्जनीय हो सकता है,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

किन्तु आत्मा का पतन विनाश कर देता है। पितृशक्ति का विचलन हानिकर हो सकता है, किंतु मातृशक्ति का विचलन भयावह है। जिस राष्ट्र की मातृशक्ति में स्खलन अथवा ह्रास हो गया उसका पतन अवश्यम्भावी हो जाता है। पुरुष को नारी के गुणों की अपेक्षाकृत अधिक आवश्यकता है, नारी को पुरुष के गुणों की अपेक्षाकृत अल्प आवश्यकता है, क्योंकि वह प्रकृत्या अधिक गुणमयी है।

अमलानादन् ने सुनाया, यौन-घटनाओं से विचलित होना कायरता है। एक आम आदमी कृष्ण और मुहम्मद को कामुक कह सकता है, क्योंकि उसकी शारीरिक और मानसिक शक्तियां संकीर्ण और सीमित हैं। हमें यह न भूलना चाहिए कि वर्ड्सवर्थ-जैसे संत-कवि ने किसी समय किसी कुमारी को गर्भवती किया था और शेली-जैसे क्रांतदर्शी कवि ने कम-से-कम दो सुन्दरियां भगाई थीं! कई हिन्दी-साहित्यकारों पर शंकितपुंसत्व, सीमितपुंसत्व और अनियमितपुंसत्व का आरोप सरल है, किन्तु आत्मपरीक्षण सर्वथा कठिन ही होता है।

मुझे यह विवेचन पसन्द न आ सका। मैं, पता नहीं किन संस्कारों के कारण, मर्यादा का उल्लंघन अनुचित ही मानता रहा! क्लीव का विवाह करना नारीत्व का अपमान करना है। ऐसा व्यक्ति असभ्य ही माना जा सकता है, भले ही वह कवि और उपन्यासकार हो, दार्शनिक और चिंतक हो, नेता और शासक हो। बारम्बार पत्नियाँ छोड़ना-जोड़ना या तो नपुंसकता का सूचक है या उच्छृंखलता का। भ्रमर-वृत्ति मानवीय मूल्यों के ह्रास की सूचक है। प्रसिद्ध व्यक्ति का उदाहरण दुर्बलता को सबलता नहीं बना सकता। यदि प्रेमचंद ने अपनी पहली पत्नी को गँवार और अनपढ़ कहकर त्याग दिया तो इसे केवल इसलिए आदर्श नहीं माना जा सकता कि इसे उन्होंने किया था। यदि अज्ञेय बार-बार पत्नी-परिवर्तन करते हैं तो यह उनके करने के कारण मात्र से प्रशंस्य नहीं हो सकता। यदि मोहन राकेश रसिया-बालम थे तो ऐसा होना महज़ उनके कारण अनुकरणीय नहीं बन जाता। यदि नगेन्द्र तरल व्यक्तित्व वाले हैं तो ऐसा होना केवल उनके निदर्शन के आधार पर श्रेयस्कर नहीं बन जाता। संयम यौन का बल भी है, सम्बल भी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मेरी मुझ पर कृपालु थीं। किंतु कुछ-कुछ कटने-सी लगी थीं। परिणामतः मुझे काम कम करना पड़ता था। वे प्रायः आसपास के पार्वत्य अंचलों में बने अस्पतालों, अनाथालयों और स्कूलों के निरीक्षण तथा उद्घाटन इत्यादि के निमित्त बाहर जाती रहती थीं। ईसाई बनाने में ये संस्थाएं ही सर्वाधिक सहायक सिद्ध हुई हैं। मिशनरीज का इन पर सर्वाधिक ध्यान देना स्वाभाविक ही है। पहले भी वे ऐसा करती थीं। किन्तु अब मुझे इससे खुशी नहीं होती थी बल्कि ग़म होता था। अब वे मुझे बाहरी कामों में ज्यादा लगाती थीं। आयु की वृद्धि के साथ अनुभव की वृद्धि की दृष्टि से यह लाभकर था। तिकड़मबाजी और पौवेबाजी की मदद से यह आर्थिक वरदान भी बन सकता था। किन्तु मेरा मन उनकी वैयक्तिक सेवा के लिए अधिक तत्पर रहने लगा था। मैं उनकी सेवा के लिए अत्यधिक उत्सुक रहता, किन्तु जब कभी इसका अवसर मिलता तब चुपचाप और गुमसुम काम करने लगता—बस! अजीब हालत थी। मैं पल-पल विरोधाभास-पुञ्ज बनता जा रहा था।

ऐसी ही उधेड़बुन के बीच एक रात मेरी से सम्बन्धित विचित्र स्वप्न देखा। दिन-भर स्वप्न जागरण पर शासन करता रहा। रात होने पर, अवसर देखकर, मैंने उनसे कहा—"आज आपके पैर दबा दू ?"

"क्यों ?"

"मन हो आया है।"

"क्यों ?"

"गत रात मैंने एक अजीब स्वप्न…"

"स्वप्न पर दुःख या हर्ष का अनुभव व्यर्थ है। स्वप्नों की विचित्रता का अनुभव प्लेटो तक ने किया था, स्पिनोजा तक ने किया था, जो वस्तुतः संत और तत्त्वतः ऋषि थे। आधुनिक मनोविज्ञान के जनक फ्रायड ने स्वप्न को परोक्ष इच्छा-पूर्ति के रूप में प्रस्तुत किया है…" वे अचानक ही रुक गयीं…

वे कुर्सी पर बैठी थीं। पैरों पर स्लीपर-मात्र थे। मैं यंत्रीकृत त्वरा से भूमि पर बैठ गया और एक स्लीपर से उनका दांया पंजा निकालकर दबाने लगा—"मैं इन कदमों को चूमना चाहता हूं।" और मैंने जो

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

कहा वह कर गुजरा। वे कुछ न बोलीं। मैंने उनके पंजे को पोंछा, उसकी ज्येष्ठा को शलाका के सदृश नेत्रों पर फिराया, तलवे को चूमता रहा। अहा, कितने आरक्त और कितने कोमल चरण थे ! मैं इस क्रिया में पूर्ण तन्मयता के साथ व्यस्त था कि अचानक कण्ठ पर एक जलबिन्दु आ गिरा और प्रवृत्ति ने मुख ऊपर उठाकर देखने को प्रेरित कर ही दिया — देखा तो यह मेरी की आंखों से गिरनेवाले अश्रुओं मेंसे एक था ! मैं स्तब्ध और अवाक् रह गया ! वे किसी प्रकार बोलीं, "अब बस करो! मेरा जीवन ···खैर, होगा !···"

"मन नहीं मानता···"

"मन प्रकृत्या चंचल है। उस पर शासन ही वरेण्य है···"

मैंने पंजा छोड़ दिया। उठकर खड़ा हो गया। मुंह नीचे ! उन्होंने मेरा बायां हाथ पकड़कर कहा—"क्या रूठ गए ?"

मैं पुलकित हो उठा—"नहीं, नौकर को रूठने का अधिकार कहां ?"

"तुम अपने-आप को नौकर समझते हो ?"

"तो फिर आप कदमों से दूर क्यों करती हैं ?"

ऐसा लगा, वे परास्त हो गई हैं। मैं देर तक पंजे और पैर दबाता रहा। वे ऊंघने लगीं। बोलीं—"अब मैं सोऊंगी।"

"और मैं सेवा करूंगा।"

वे विरोध न कर सकीं।···

रात को मैंने 'ओथेलो' का वह भयानक दृश्य देखा जिस में डेस्डिमोना की हत्या की जाती है। पसीने से तर-ब-तर उठ बैठा। सोचने लगा, "यह कैसा स्वप्न है ? क्या काले-गोरे नर-नारी का प्रेम-प्रणय सफल नहीं हो सकता ?···" जब स्कूल में पढ़ता था तब महाकवि शेक्सपीयर का यह अमर नाटक सरल-प्रचलित अंग्रेजी-गद्य में अभिनीत किया गया था। संयोगात् इयागो का रोल मुझे करना पड़ा था। अब यह समझ में न आ रहा था कि ऐसा स्वप्न क्यों देखा? इसका परिणाम क्या निकल सकता है ? स्वप्नों से सम्बन्धित निरी घटनाएं याद आने लगीं। बाइबिल के याक़ूब और यूसुफ के अमर स्वप्न भी याद आए। विचार उठा—"लेकिन मेरा स्वप्न तो दुखदायी ही है !"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पता नहीं कब सो गया। और सवेरे उठा तो स्वप्नांत-प्रलाप के साथ "'मेरी मेरी···!"

देखा तो वे सामने खड़ी थीं। शांत, गहन, गंभीर! मैंने झुककर उनके पैर चूम लिए!···

उस दिन तब मैं बहुत विचलित और विषण्ण हुआ जब देखा फादर फेरर अतिथि के रूप में पधारे हैं। बात नई न थी, पर पटना में जो देखा-सुना था उसके कारण डर लगा। मेरी उनकी अच्छी-खासी आवभगत कर रही थीं। पहले मैं उन पर कतई ध्यान न देता था। उन्होंने कभी कोई आज्ञा भी न दी थी। पता नहीं क्यों, इस बार मैं उन पर ध्यान दे रहा था! उन्हें मेरी के ठीक पार्श्ववर्ती कक्ष में ठहराया गया था। मैं आमतौर पर मेरी के कक्ष के बाहर लेटता था। जब वे पड़े-पड़े ही विजली जला देतीं या बैटरी से प्रकाश कर देतीं तब उठकर आज्ञापालन मेरा कर्तव्य था। यदि मैं गहरी नींद सो जाता तो वे घंटी बजा देती थीं। ऐसी नौबत कम ही आती थी। मैं कोताही करने वालों में न था। मुस्तैदी से काम करने के लिए प्रशंसित था। ज्यों ही वे कहतीं, यह खिड़की वन्द कर दो; या, पंखा वन्द कर दो; या पानी पिला दो; फटाफट उठता और चटपट आज्ञा-पालन कर देता। नींद जरूर पूरी करता था, पर सजगता के साथ। किंतु पता नहीं क्यों, उस रात नींद न आई, सो न आई। चुपचाप पड़ा रहा। लगभग आधी रात बीतने पर कुछ आहट सुनाई पड़ी। ध्यान दिया तो लगा, फेरर अपने कमरे से निकलकर धीरे-धीरे मेरी के कमरे की ओर जा रहे हैं। सांस साधे पड़ा रहा, मानो शलॉक होम्स ही हूं! अन्दर से लॉक लगाने की आवाज़ सुनी। लेकिन अभी कमरे की प्रायः रातभर जलनेवाली बहुत हल्की और बहुत प्यारी नीली रोशनी बुझाई न गई थी। मुझे लगा, मेरी के कमरे की रोशनी अब गुल हुई, अब गुल हुई, लेकिन ऐसा न हुआ···

मैं धीरे-से उठा। दरवाजा लगा था ही इसलिए कोई खास दिक्कत न हुई। इधर-उधर से ताक-झांक की कोशिश की, पर नाकाम रहा। रोशन-दान ऊंचा था। नजर दौड़ाई तो बरामदे में कुछ दूर एक स्टूल दिखाई पड़ गया। उसे लाया। सब तरफ खूब देखा-सुना। रात में इधर कोई

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

आता-जाता न था। चौकीदार फाटक पर रहता था, कुत्ते मैदान में। कभी किसी प्रकार का डर या अन्देशा नहीं लगा था। फिर भी चोर की तरह डरता-डरता कांपता-काँपता, ताकता-झाँकता ही स्टूल पर चढ़ पाया। आश्वस्त था कि अन्दर के वेहद हल्के उजाले और बाहर के सूचीभेद्य अंधकार के कारण मुझे देखा नहीं जा सकता। और जब नजर अन्दर गई तब एकदम हक्का-बक्का रह गया !···

टेबल पर कबाब और काजू, व्हिस्की और सोडा इत्यादि जमा थे और···पास ही, फेरर और मेरी एकदम निर्वसन खड़े प्रगाढ़ चुम्बन में लीन थे !···

पल-मात्र में मेरा शरीर स्वेद-संचार, हृत्कम्प और मस्तिष्ककम्प से अभिभूत हो गया। मनस् आक्रांत हो उठा—क्रोध से ? क्षोभ से ? ईर्ष्या से ? द्वेष से ? इस से ? उस से ? या, सब से ? पता नहीं !···फिर भी, मैं हिला नहीं, डुला नहीं, ज्यों-का-त्यों खड़ा-का-खड़ा रह गया !···

किन्तु कुछ ही पलों में हल्की रोशनी गायब हो गई। मैं शिथिल, निराश भग्न···स्टूल से उतर पड़ा। चेतना विश्रृंखल हो रही थी, किन्तु स्टूल यथास्थान रखना न भूला। चारपाई पर जा गिरा। पर नींद कहां ? सोचता रहा, जो धर्म काम को उचित महत्त्व और मान नहीं देता वह अधर्म का क्रोड़ बन जाता है। जिस धर्म के सेवकों और सेविकाओं को जड़ीभूत नियम के अनुसार अविवाहित रहना पड़ता हो वह भ्रष्ट हुए बिना नहीं रह सकता। सुना था, नग्न दिगम्बर जैन मुनि ऐसा आसन लगाते हैं जिसका परिणाम नपुंसकता के अतिरिक्त कुछ नहीं हो सकता। दिल्ली के दिगम्बर जैन लाल मंदिर में ऐसे मुनियों को देखकर भारी सदमा पहुंचा था। यदि प्राचीन असभ्यता का पालन ही धर्म है तो मार्क्स और लेनिन का उसे अफीम कहना कम-से-कम कहना मात्र है। सुना था, भारत में बौद्ध धर्म तथाकथित ब्रह्मचर्य की अग्नि में जलकर राख हो गया था। देखता था ईसाईधर्म का ब्रह्मचर्यपालन पाखण्ड या भ्रष्टाचार या कुण्ठा या विकृति में अवसित हो रहा है।···"

मेरी के कमरे की हल्की नीली बत्ती जली और मेरा विचार-सूत्र टूट गया। तत्काल फेरर ने धीरे-से दरवाजा खोला। वह शनैः शनैः चलकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

अपने कक्ष में प्रविष्ट हो गया। किन्तु मुझे नींद न आ सकी। सोचा, ऐसे स्थान और ऐसे लोगों से दूर दिल्ली या कानपुर चला जाऊं; चाहे होटल में बैरा बनूं या फुटपाथ पर बूट-पॉलिश करूं, पर यहां न रहूं। मैंने ठोस योजना बना डाली। फिर भी बीच-बीच मस्तिष्क ने कठिन आत्म-परीक्षण के लिए विवश अवश्य किया। ग्लानि भी हुई। किन्तु चले जाने का विचार अविचलित रहा।

सवेरे चाय के बाद मेरी फेरर को अस्पताल और स्कूल, चर्च और अनाथालय आदि का निरीक्षण कराने ले गई। मैं अपनी कोठरी में जाकर सो गया। खाने के समय भी तब जगा जब अमलानादन् ने जगाया, "क्या रात-भर नौटंकी देखते रहे थे जो घोड़े बेचकर सो रहे हो ?"

"नौटंकी !" मैं बुदबुदा कर रह गया, रुक गया।···

खाने के बाद भी जाने की ही सोचता रहा। मस्तिष्क प्रायः प्रवृत्ति के अनुकूल तर्क ही प्रस्तुत करता है। सोचा, व्यक्तिगत सेवाओं में कोई भविष्य नहीं। अब नवयुवक हो गया हूं। भविष्य के लिए अथक आयास ही परम कर्तव्य है।

शाम को फेरर और मेरी वापस आ गए। मैंने आज्ञानुसार ऑमलेट तैयार किया, कॉफी तैयार की। मन में वितृष्णा, नेत्रों में घृणा और करों में सेवा का वह विचित्र और बीभत्स योग कभी न भूलेगा। जैसे ही ट्रे लेकर पहुंचा, फेरर ने अपनी पैनी नजर से घूरकर देखा। मैं कांप उठा ! ट्रे गिरते-गिरते बचा।···

लौटते-लौटते सुना—"योर सर्वेन्ट इज वेरी-वेरी चार्मिंग।"

"एस, एण्ड वेरी-वेरी सेंसिबल!"

"ओह ! आइ सी।"

मेरा मन हुआ, इस जगह से अभी नौ-दो-ग्यारह हो जाऊं। लेकिन डाकखाने के रुपए, लेन-देन, सफर का इन्तजाम और दोस्तों से दुआ-सलाम वगैरह मन की तरंग के साथ नहीं चल सकते थे। बहरहाल, यह तय कर लिया कि चाहे भीख मांगनी पड़े, आत्महत्या करनी पड़े, पर यहाँ नहीं टिकूंगा, जल्दी-से जल्दी चला जाऊंगा।···

रात में बादल घिर आए और भयानक गर्जन करने लगे। रह-रह

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

कर बारिश हो रही थी। लगभग बारह बजे फेरर फिर निकला, किन्तु अब मुझमें न कोई कुतूहल था, न औत्सुक्य। लेकिन यह क्या ! वह मेरी चारपाई के पास खड़ा हो गया !…

कुछ देर एकटक देखने के बाद उसने धीरे-से मुझे जगाया—"पीटर, माफ करना, तकलीफ दे रहा हूं…जरा सर तो दबा देना, बहुत दर्द है।"

मैं कुछ न बोला।

"सुना नहीं ?"

मुझे उठना पड़ा—"यहां ?"

"तुम्हारा दिमाग तो ठीक है ? मैं यहाँ लेटूंगा ?" और वह अपने कमरे की ओर चल पड़ा।

मैं खड़ा-का-खड़ा रहा। चारपाई के नीचे हॉकी-स्टिक रखकर सोता था। इच्छा हुई, उठाकर खोपड़ा खोल दूं—पर हिम्मत ने साथ न दिया। अभी ऐसी स्थिति भी क्या है ?

उसने मुड़कर देखा, "क्या पागल हो गए हो ?"

मैं मन-मन भर के पांवों से चल पड़ा।

वह कोच पर लेट गया और मैं बेमन-बेतन उसका मटके-जैसा भारी और सपाट खोपड़ा दबाने लगा। मुश्किल से पांच मिनट बीते होंगे कि उसने कहा—"सर्दी लग रही है, साथ लेट जाओ !"

"सर आई एम वेरी सॉरी।"

उसने मेरा दायां हाथ पकड़कर मुझे अपने सीने से लगा लिया—"बट माई जोसेफ, आइ लव यू।"

"प्लीज, एक्सक्यूज मी !"

"ओह, डोण्ट बी टची !" उसने अपने प्रचण्ड भुजदण्डों का कसाव तेज कर दिया। मुझे लगा, मेरा सारा शरीर चरमरा जाएगा। मैं रोने लगा, गिड़गिड़ाने लगा, "मैं इसे अपना सबसे बड़ा अपमान समझूंगा, मर जाऊंगा, आत्महत्या कर लूंगा !" उसने विचित्र व्याख्यान देना आरम्भ कर दिया, "क्यों ? क्या पुरुष-वर्ग का पारस्परिक प्रेम इतना हेय है ? तुम निरक्षर और मूर्ख नहीं हो। नर-नारी प्रेम तो प्रत्येक प्राणि-वर्ग में देखा जा सकता है, समलिंगी प्रेम केवल महान मानव का वैशिष्ट्य है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

यह गर्व-योग्य है। क्या तुम्हें नहीं मालूम—सुकरात-जैसा ऋषि अपने जीवन-यापन के द्वारा समलिंगी प्रेम का प्रतिपादन कर गया है ? प्लेटो-जैसा महान दार्शनिक इस प्रेम के सच्चे आत्म-प्रकाश की प्रशस्ति कर गया है। जूलियस सीजर जैसा अज़र-अमर योद्धा और विश्वविजेता जिस प्रेम की सुकुमार प्रेरणा से सलज्ज और सुरम्य नारी बन जाता था, वह हेय हो सकता है ? प्रभु एशु का शिष्यों का चरणप्रक्षालन-हठ इस ओर संकेत कर सकता है। क्या तुम शेक्सपीयर और मॉर्लो की वैश्विक प्रतिभा से नितांत अनभिज्ञ हो ? क्या तुमने ऑस्करवाइल्ड और डगलस का प्रेम-प्रकरण नहीं सुना ? काश, तुमने ऑस्करवाइल्ड का अदालत में दिया गया सदाबहार बयान पढ़ा होता ! अमेरिका और इंग्लैण्ड-जैसे महान देशों ने इस पावन प्रेम पर कानून की मोहर लगा दी है। महान अमेरिका में तो पुरुष-पुरुष के बीच विवाह तक होने लगे हैं। अरब और ईरान-जैसे मामूली देशों तक में इस पावन प्रेम का सम्मान है। भारत-जैसे घटिया देश में ही इसे, सिर्फ कागजी तौर पर, निंद्य मानते हैं। नतीजा यह है कि अनेक समलिंगी सज्जन ठगों, लुटेरों, ब्लैकमेलर्स, गुण्डों और पुलिस वालों, जो सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं, के द्वारा नाहक ही लुटते रहते हैं। पता नहीं कब इस बेवकूफ देश के बेवकूफ नेताओं को अक्ल आएगी और प्रतिभाशाली व्यक्तियों की एक कोमल पहचान समलिंगी प्रेम-भावना को कानून का आदर भी प्राप्त होगा ! भारत के पुरुष यदि समलिंगी प्रेम की पावनता और उपयोगिता समझ जाएं तो यहां की अशोभनीय और अवांछनीय जनसंख्या-वृद्धि अनायास ही रुक जाए; चिंता के अल्प होने से पुरुषों का और प्रजनन-कष्ट से अपेक्षाकृत मुक्त होने से स्त्रियों का स्वास्थ्य श्रेष्ठ हो जाए; यह फटेहाल देश महान बन जाए ! तुम गौरवशाली ईसाई होकर भी पाखण्डी हिन्दुओं की तरह पोंगापन की बातें करते हो !"

"मैं आपके पैरों पड़ता हूं…।"

"पुरुष का समलिंगी प्रेम उसे नारी की कोमलता, समर्पणशीलता और मोहकता से सम्पन्न कर देता है। समलिंगी सज्जन चिरयुवा लगते हैं…।"

"कृपया मेरे पुंसत्व का अपमान न करें !"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

फेरर तैश में आकर उठ बैठा। उसने मुझे छोड़ दिया, तकिए के नीचे से पिस्तौल निकालकर बोला, "यू इण्डियन डॉग ! यू सेंसलेस लॉग्हेड ! मैं तुझे मार डालूंगा ! जानता है, यहां वड़े-से-वड़े लीडर सामने आने पर झुक जाते हैं ? मैं तुझे शूट करके, कार में डालकर किसी बियावान खड्ड में कुत्ते की तरह फेंक आऊंगा। कोई जान भी न पाएगा कि तेरा क्या हुआ, और कोई या सब जान भी जाएं तो भी मेरा क्या विगड़ सकता है ? कौन गवाही देगा ? कौन दण्ड देगा ? मेरे एक इशारे पर बड़े-से-बड़े कातिल को क्षमा-दान प्राप्त हो सकता है। मैं तुझ-जैसे फटीचर को, चरकटे को, नाचीज़ को, नामुराद को कितना बड़ा आदर दे रहा हूं—इस पर तो ध्यान दे।"

मैं मारे डर के पीपल के पत्ते की तरह थर-थर काँपने लगा, परास्त हो गया, निरुपाय हो गया !…

लगातार रोता रहा। मुझे लगा, मेरा पौरुष लुट चुका है—मुझे आत्मघात कर लेना चाहिए। उधर फेरर ने अपनी कीमती हीरे से जड़ी अंगूठी मेरी अंगुली में पहना दी। मैंने उतारकर फेंकते हुए कहा, "मैं विकाऊ नहीं हूं ! यदि स्वेच्छा और प्रेम से दो वयस्क पुरुष प्रेम करें तो उसे उचित माना जा सकता है। लेकिन आपने जवर्दस्ती की है। आप ईसाई-धर्म के दिग्गज आचार्य माने जाते हैं…!"

वह नाराज़ नहीं हुआ बल्कि "मेरी जान !" कहकर मुझे वाहों में भरता गया, "तुमने अलाउद्दीन और काफूर के बारे में नहीं पढ़ा ? काफूर भारत का सीज़र था। तुमने मुबारकशाह और खुसरो के बारे में नहीं सुना ? क्या तुम नहीं जानते कि हुमायूं का एक मर्दाना हरम भी था ? क्या तुम्हें नहीं पता कि जहांगीर औरत बनता था ? क्या तुम्हें शाह आलम और गुलाम कादिर के इश्क की जानकारी नहीं है ? क्या तुमने नहीं पढ़ा कि उर्दू के आवरू, आरज़ू, जानजानां, मजहर, तावां और मीर जैसे शायर समलिंगी प्रेम के स्वर्गोपम स्पर्श से पुलकित हुए थे ?"

"भाड़ में जाएं ये और आप !"

वह नाराज़ नहीं हुआ और जले पर नमक छिड़कने की तरह चूमने का अत्याचार करता रहा, करता रहा…।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

कोई तीन बजे होंगे जब, लस्त-पस्त होने पर, उसे नींद आ गई। मैं उसकी भारी-भरकम बांहों से निकल कर आजाद हुआ। वह इसे न जान सका। घृणा के अतिरेक ने मेरी विचार-शक्ति समाप्त कर दी। यंत्रवत् बाहर निकला। अपनी चारपाई के नीचे रखी हॉकी-स्टिक उठा लाया। बिना कुछ सोचे-विचारे, मैंने फेरर के खोपड़े के पिछले हिस्से पर, काफी दूर से, भरपूर प्रहार किया। जैसे कोई भारी और पक्का घड़ा फूटे ऐसे, भारी आवाज के साथ, उसका खोपड़ा फट गया। पर कमरा बंद था, पवन ने प्रलय-प्रभंजन का रूप धारण किया था, मेघों का भयावह निनाद आकाश के कान बहरे कर रहा था; इसलिए किसी के कान में भनक पड़ने तक का प्रश्न न उठ सकता था। मैंने न कुछ देखा, न सुना, न सोचा, न विचारा…हॉकी वहीं-की-वहीं फेंक दी और सिर पर पैर रखकर भाग निकला। मैदान में कुत्ते भौंके तो, पर धुवांधार बारिश के कारण पास न आ सके; शायद पहचान भी गए हों। चौकीदार या तो अपनी कोठरी या कैबिन में ही सोया पड़ा था, क्योंकि उसकी कोई आहट न मिली। फाटक बंद था। मैं दीवार फांद गया, क्योंकि एक तो वह खास ऊंची न थी और दूसरे मैं लम्बा था ही। कोई कठिनाई नहीं हुई। बाहर आकर लगा जैसे इन्फ़र्नो से निकला हूं। स्टेशन की ओर भागा। रास्ते से भली-भांति परिचित था। वैसे मौसम में मिलता ही कौन ?…

अब याद आया कि पैंट की जेब में पड़े पर्स में, सदा के सदृश, लगभग एक सौ रुपए रखे हैं। संतोष हुआ। शरीर पर सिर्फ पैंट, बनियान और कमीज थे। जूते तक नहीं। जब सांस में सांस आई तो आश्चर्य हुआ—यह सब क्या कर डाला ? किसने कर डाला ? क्यों कर डाला ?

किन्तु मनन-मंथन और अन्तर्द्वन्द्व के लिए अधिक अवकाश न था। सौभाग्यवश ध्यान आ गया कि लगभग इसी समय दिल्ली के लिए जाने वाली गाड़ी छूटती है। अधिक तेजी से दौड़ा। अभ्यास और लम्बे डग अच्छे सहयोगी सिद्ध हुए। किसी तरह समय पर स्टेशन पहुंच गया। गाड़ी छूटने वाली थी। इसलिए टिकटघर पर खास भीड़ न थी। यों भी, तूफानी मौसम और प्रलयंकारी वर्षा के कारण स्टेशन सुनसान-सा पड़ा था। दिल्ली का टिकट लेकर मैं गाड़ी पर सवार हो गया। कुछ ही पलों

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

में गाड़ी डगर चली। मेरे दम-में-दम आया, "लाख-लाख शुक्र है उस परमात्मा का, जिसने भागने का ऐसा सुयोग प्रदान कर दिया। यदि घटनाचक्र में आध घंटे का भी अन्तर होता तो बचकर कैसे निकल सकता ? 'जो होता है, अच्छा ही होता है' का आस्तिक वाक्य एकदम ठीक है, 'बावन तोले पाव रत्ती' दुरुस्त है !"

मुझे लगा, मेरा पौरुष वापस लौट आया है। मुझे लगा, मैं एक वीर व्यक्ति हूं। मुझे लगा, मैंने बहुत बड़ा पुण्य किया है। मुझे लगा, मैं सारे संसार के अत्याचार से अकेले ही भिड़ सकता हूं !…और मैं दर्प से दीप्त हो तनकर बैठ गया। इससे सामने बैठे और निद्रा पर विजय प्राप्त करने वाले अच्छे-खासे सिंधी सेठ को डर लगने लगा, क्योंकि संयोगात् उस छोटे-से डिब्बे में केवल तीन यात्री थे—एक मैं, दूसरे वे और तीसरा एक दुबला-पतला मजदूर, जो वित्त-चिंता-मुक्त होने के कारण, लम्बी ताने खर्राटे भर रहा था। सिंधी सेठ का नामे से तर चिकना चेहरा और उनके शरीर पर सोने की जंजीर, सोने के बटन, कीमती फैज कैप वगैरह बता रहे थे कि वे मोटे आसामी हैं। यों, लम्बे और पतले आदमी थे। वृद्धावस्था को देखते हुए असाधारण और सुन्दर !…एक लहर उठी कि इन्हें उठाकर ट्रेन से बाहर फेंक दूं और इनकी अटैची, जिसमें काफी ज़र होगा, अपने कब्जे में कर लूं—आखिर सारी सम्पत्ति चोरी या डकैती की ही तो है। व्यापारी जनता का पैसा चुराता है, अभिनेता जनता का चरित्र चुराता है, नेता जनता का विश्वास चुराता है। साधारण चोर और डाकू इन असाधारण चोरों और डाकुओं के सामने किस खेत की मूलियां हैं !

किन्तु यह अप्रत्याशित और अभूतपूर्व अपराध-वृत्ति अस्थायी ही रही, "क्या मैं परिस्थितियों की विषमता के सामने घुटने टेक रहा हूं ? क्या मैं कायर हूं ?" और मैं अनायास ही मुस्करा पड़ा।

सिंधी सेठ कुछ डर-से गए थे। शायद वे मेरे मनोभावों को पढ़ रहे थे। मुझे लगा, बड़े डाकू छोटे डाकुओं की नस-नस जानते हैं। कई दिग्गज नेताओं का यह कहना शत-प्रतिशत सत्य है कि वे जनता की नाड़ी पर हाथ रखे रहते हैं। उन्होंने अपना सिगरेट-केस मेरी ओर बढ़ाया। अब मुझे बोध हुआ कि मैं अपरिसीम रूप से श्रांत और श्लथ हूं। मैंने 'धन्य-

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

वाद' कहते हुए हंसकर एक सिगरेट ले ली और मंहगे विदेशी धूम्रपान का मजा लेने लगा।

यकायक मेरे मन में विचार उठा, "अगर नफरत का चश्मा हटाकर देखूं तो इस चेहरे में पिता के दर्शन सम्भव हैं! क्या बुद्धि-सम्पन्न आनन-गरिमा है!"

५. जीवन का प्रवाह

अचानक सिंधी सेठ ने प्रश्न कर दिया, "आप कहां जाएंगे?"

मेरा दिलकश धूम्रपान रुक गया। विचारधारा में व्यवधान आ पड़ा। सारी कशिश काफी फीकी पड़ गई। कुछ पल रुककर बोला, "दिल्ली।"

"किधर से आए हैं?"

"यहीं से।"

वे चुप हो गए। कुछ देर बाद बोले, "बहुत भीग गए हैं। तबीयत न खराब हो जाए?"

मैं चुप रहा।

उन्होंने अपना बैग खोला और थर्मस निकालकर बोले, "लीजिए, गर्म कॉफी पीजिए।"

"जी...!"

"संकोच न कीजिए, नहीं तो बीमार हो जाइएगा। इन्सान वह जो इन्सान के काम आए!" उन्होंने एक प्लास्टिक-प्लेट पर दो उबले अण्डे रखकर आग्रह किया, "जल्दी कीजिए! लगता है, तकलीफ के मारे हैं?"

मेरी आंखों में आंसू छलछला आए। उन्होंने यह सब देखा। कुछ देर बाद बोले, "पैंट काफी मोटा है, जल्दी सूखने से रहा। कमीज भी सूखते-सूखते समय लेगी। धोती-कुर्त्ता पहनिएगा?"

मुझे लगा, परमात्मा एक बार पुनः बचा रहा है। सवेरा होते-होते फेरर की हत्या की खबर दावाग्नि के सदृश फैल जाएगी। तार और बेतार-

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

का-तार वगैरह सारी गाड़ियों और स्टेशनों को मेरे लिए जेलों का रूप दे देंगे। आश्चर्य हुआ कि अब तक यह सब क्यों न सोचा था ? मैं कोई अपराधी नहीं जो…

"बोलिए ?"

मैं वस्तु-स्थिति के लोक में लौटा, "जरूर ! आपका अहसान कैसे चुकाऊंगा ?"

उन्होंने बिना उत्तर दिए ही अपनी अटैची खोली और एक-एक धोती-कुर्त्ता निकाला। बेडिंग के नीचे से एक जोड़ी चप्पल निकाले। बोले, "लैवेटरी में जाकर कपड़े बदल आइए।"

मेरे जाते समय उन्होंने एक तौलिया दिया, "हाथ-मुंह पोंछ लेना। और हां, पानी का प्रयोग अभी न करना, नहीं तो कॉफी जुकाम का काफी बड़ा तोहफा दे बैठेगी !" वे हंस पड़े।

मैं कृतज्ञता के बोझ से दब गया। परामर्श शतशः उपयोगी और पूर्णतः लाभकर था। कपड़े बदलते समय सोचा, अगर सर पर टोपी लगा लूँ तो न कोई पहचान ही पाएगा, न शक ही कर सकेगा, न ध्यान ही देना चाहेगा। धोती लस्टम-पस्टम ही बाँध पाया, पर असफल नहीं हुआ। हाथीदाँत का बना क्रॉस, कम्पार्टमेन्ट की खिड़की से बाहर फेंक दिया। पर्स और रूमाल निकालने के बाद पैंट और शर्ट भी फेंक दिए। कुर्ता लगभग फिट आ गया; न तो माँगे का लगा, न बबूल की शाख पर टंगी रेशमी चादर जैसा ही। चप्पल कुछ छोटे तो थे, पर कामचलाऊ तौर पर ठीक बैठ गए। पर्स में कंघी पड़ी हुई थी। बाल खींचे। शीशा देखा तो आश्चर्य हुआ, परमात्मा की अहैतुकी कृपा पर विश्वास हुआ, संतोष का अनुभव हुआ। लैवेटरी के बाहर निकला तो सिंधी सेठ बहुत खुश हो गए, "अब तो आप मेरे बेटे लगते हैं !"

मेरी आंखों से आँसू झर चले। मैंने उनके पैर पकड़ लिए। एक पल किंकर्त्तव्यविस्मृत रहने के बाद उन्होंने कहा, "मुसीबत किस पर नहीं आती ? और भगवान का सहारा किसको नहीं मिलता ?" उन्होंने आदर-पूर्वक मुझे अपने स्थान पर बैठा दिया।

मैंने कहा, "अगर एक टोपी और हो तो देने की कृपा करें; सर में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

ठण्ड लग रही है।"

उन्होंने अपनी टोपी मेरे सर पर रखते हुए कहा, "यही पहनिए ! मुझे जरूरत नहीं, आदत है।"

मैंने कोई उज्र नहीं किया।

अब मुझे लगा कि मैं निरापद हो चुका हूं। परमात्मा की प्रार्थना करने लगा। मैंने कोई अपराध नहीं किया था अपितु अपराधी को दण्डित करने का वास्तविक कर्त्तव्य-पालन ही किया था। जहाँ तक कानूनों का सम्बन्ध है, वे बनाए ही शोषण और प्रपीड़न को औचित्य का गौरव प्रदान करने के निमित्त जाते हैं। कौन नहीं जानता कि अनेक नेता काले धन को चंदे के रूप में डकारते-पचाते रहते हैं, हराम की विदेश-यात्राओं के सिलसिलों में भी तस्करी से नहीं चूकते अर्थात् विदेशी माल खरीदते आते हैं, अपने परिवार के सदस्यों को संसार घुमाते रहते हैं, जनता को झूठे आश्वासन देते नहीं थकते ? पर इन अनाप-शनाप पैसे खर्च करने-कराने वालों की पूजा होती है। रेडियो, टेलीविज़न और अखबार इनकी भोंडी तस्वीरों और बेमतलब तक़रीरों से नाहक़ ही भरे रहते हैं। देश में चाहे भुखमरी हो या बेकारी या बेज़ारी या महामारी, इनका स्मित आनन छच्छाकाल की ही सूचना देता रहता है ! इन सबसे बड़े चोरों को महापुरुष माना जाता है। कौन नहीं जानता कि प्रत्येक उद्योगपति हजारों मगरमच्छों से ज्यादा भयानक होता है ? पर उसकी तूती बोलती है। उसके दिए गए गुप्त या प्रकट चन्दे के बल पर सारी राजनीति अपनी जनसेवा-नौटंकी खेलती है। कौन नहीं जानता कि प्रायः प्रत्येक अभिनेता-अभिनेत्री, गायक-गायिका, संगीतकार-गीतकार काले धन का घर है ? पर इन जनता के असली गिरहकटों को हीरो-हीरोइन माना जाता है। हमारा सारा समाज चोरी और बेईमानी, झूठ और धोखाधड़ी, पाखण्ड और घोटाले की नींव पर खड़ा है...।

अचानक प्रश्न सुना, "टिकट है ?"

मैंने व्यवस्थित उत्तर दिया, "जी हाँ।"

वे कुछ संकुचित हो गए। चुप रहे। कुछ पल बाद बोले, "मैं भी दिल्ली में रहता हूं। बिस्किट का कारखाना है, कोठी है, कार है, परिबार है, जिसमें अब एक मेम्बर बढ़ गया है...।"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

मैंने पुनः झुककर उनके पैर पकड़ लिए, "मुझे पिता की एक बहुत ही धुंधली याद…।"

"अब ऐसा नहीं कह सकते ! लेकिन बार-बार पैर पकड़कर मेरे दिल को न दुखाओ ! मैं पैर छूने की शालीन-पावन परम्परा का सूडो-प्रोग्रेसिव विरोधी तो नहीं हूं, लेकिन इसका अतिरेक भी पसन्द नहीं करता।"

मैं चुप रहा। कुछ देर बाद मुझे नींद आने लगी। मैं ज्यों-का-त्यों सो गया। लेटने तक का ध्यान न रहा, यद्यपि संयोगात् स्थान पर्याप्त था। और तब वह भयानक स्वप्न ! …मैं सड़क पर बेतहाशा भागा जा रहा हूं। अचानक सामने से एक काला, ठिगना और इकहरा पर कसा हुआ व्यक्ति दोनों पंजे फैलाए दौड़ता आता है और "मैं तेरा गला घोंट दूंगा" चिल्लाता दीख पड़ा—अरे, यह शायद पटने वाला रिक्शा-पुलर है ! मैं जिधर से दौड़ा आ रहा था उधर ही पलट गया और बेहद तेज भागने लगा। लेकिन उधर से एक भूधराकार गोरा हाथ में हॉकी-स्टिक लिए "मैं तेरा भेजा खोल दूंगा" चिल्लाता आता दीख पड़ा—अरे, यह शायद फेरर है ! …मैं चीख मारकर उठ खड़ा हुआ, जिससे बर्थ का सिरा सिर से टकरा गया। यदि टोपी न होती तो लहूलुहान हो जाता।

सेठजी ने सांत्वना दी, "ज्यादा थकान और परेशानी पर ऐसा हो ही जाता है। भगवान् को धन्यवाद दीजिए कि सर बच गया ! टोपी ने रक्षा की ! देखिए, आपको इसकी जरूरत थी !"

मैं बैठ गया। वे मुझे ध्यान से पढ़ते रहे। दिन निकल आया। डिब्बे में, स्टेशनों की संख्या-वृद्धि के साथ-साथ, यात्रियों की वृद्धि होती गई। यथास्थान गाड़ी बदली गई। सेठजी ने अखबार खरीदा। मैं भी देखने लगा। उसमें फेरर से सम्बन्धित खबर नहीं थी। फेरर के मरने के समय के कारण सम्भव भी यही था। ऐसी खबर कल ही आ सकेगी ! मैंने संतोष की साँस ली। सेठजी ने अखबार का व्यापार-पृष्ठ पढ़ा और तदनन्तर मैं उसका एकमात्र पाठक शेष रहा। एक फिल्म की समीक्षा पढ़ने लगा। तभी दो लाल पगड़ीधारियों ने डिब्बे में प्रवेश किया।

मेरे काटो तो खून नहीं ! लगा, सारा शरीर बिखर रहा है। सारी इन्द्रियां कट रही हैं, सारा जगत टूट रहा है। फिर भी, साहस करके पृष्ठ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पर नेत्र जमाए रहा। यहाँ साहस और मृत्यु में एक का चयन करना था। अन्य विकल्प था ही नहीं। मैंने स्वभावतः साहस को ही चुना।

पुलिसबालों ने सारे डिब्बे पर एक उड़ती हुई नज़र डाली, लैवेटरी देखी, सीटों के नीचे की छानवीन की, एक कागज देखा और नीचे उतर गए। मुझे दूसरी ज़िन्दगी मिली! राहत की साँस ने प्राण में स्फूर्ति भर दी। इस क्लेश ने सुदृढ़ आश्वासन दे डाला, "अब तुम्हें पहचानना किसी के लिए भी सम्भव नहीं!"

सेठजी ने मुझे घूरते हुए कहा, "बार-बार पुलिस वाले आ रहे हैं—जब तुम सो रहे थे तब भी आए थे!"

मैंने परमात्मा को धन्यवाद दिया, क्योंकि मुझे जवाब की जहमत से बचाते हुए एक लम्बे, सम्भवतः बिहारी सज्जन बोल पड़े, "इधर स्मग्लर्स का बहुत जोर है—दे आर व्हेरी व्हेरी डैंजरस···।"

उनके साथ बैठे मित्र बोले, "हम लोग तो इमैजिनेशन भी नहीं कर सकता कि वो कितना रिच हैं···।"

सेठजी ने कहा, "भारत उनकी मुट्ठी में है!"

सब लोग हँसने लगे,"बात पते की कही!" और राम-राम करते मेरी जान में जान आई। यात्रा लम्बी थी। बीच-बीच में पुलिस वाले आते गए, जाते गए। मैं उनके आने-जाने से निर्द्वन्द्व-सा होता गया। सही-सलामत दिल्ली पहुंच गया। स्टेशन पर सादा पोशाक और वर्दीधारी सिपाहियों का खासा जमघट था। सिर्फ इसी गाड़ी के लिए! मैं समझ गया कि घटना की व्यापक छान-बीन जारी है और मेरा कायाकल्प ही रक्षक सिद्ध हो सकता है! अब डर यह था कि अगर गाँधी मैदान या जामा मस्जिद में अड्डा जमाया तो धर लिया जाऊंगा। भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि इन्हीं प्राणरक्षक पितातुल्य सेठजी की कृपा से कहीं सिर ढकने की जगह मिल जाए! लगता था, भगवान कृपालु थे और हैं क्योंकि सेठजी इस तरह साथ लिए जा रहे थे जैसे पिता ही हों! और कैसे कहें कि वे पिता न थे! मेरा मार्क्सवादी रक्तक्रांति-दर्शन शिथिल होता जा रहा था,"धन-वान व्यक्ति भी दयालु और महान हो सकता है। ऐश्वर्यवान व्यक्ति भी पावन और पूज्य हो सकता है। सर राबर्ट ओवेन और एंजेल्स धनवान होते

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

हुए भी दयालु और महान थे। राम और कृष्ण ऐश्वर्यवान होते हुए भी पावन और पूज्य थे।

सेठजी ने कुली से एक तीन पहिए के स्कूटर पर सामान रखवाया और 'बल्लीमारान' मात्र कहकर पहले मुझे बैठाया और तब स्वयं बैठ गए। कुछ ही मिनटों का रास्ता था। थोड़ी देर में ही मैं सेठजी का मेहमान था! उन्होंने बताया, "१९४७ में सिंध-हैदराबाद से आकर यह आवास किराए पर लिया था। बहुत सस्ते दर थे तब! यहां शहर के दिल से बाहर कौन जाए? थोड़ा-बहुत किराया बढ़ाकर यहीं डटा हूं। यों, पूसा रोड पर कोठी बनवा ली है। उसमें दो जवान और परिवार वाले बेटों को बसा दिया है। वे ही सारा काम-काज देखते हैं। सारा कारबार संतानों में बंटा है। मैं तो नाम-भर का सेठ हूं!..."

एक पूरा मकान सेठजी के कब्जे में था। दूसरी मंज़िल में चार कमरों का बड़ा-सा आवास था। रसोई, स्नानघर वग़ैरह पुराने ढर्रे के होने पर भी ठीक-ठाक थे। नीचे की मंज़िल में एक बड़ा गैरेज और उससे लगे दो छोटे-छोटे कमरे थे, जिनमें एक में ड्राइवर रहता था, दूसरा मेरे लिए खाली करा दिया गया। नीचे एक बड़ा कमरा स्टोर का काम देता था। शांत और सुविधासम्पन्न वातावरण पाकर मैं अत्यधिक प्रसन्न हुआ। ऊपर, सेठजी के परिवार में, यहां रहने वाले, सिर्फ़ चार सदस्य थे—सेठजी, सेठानीजी, एक जवान बेटा और एक जवान बेटी, जो दोनों ही विश्वविद्यालय में पढ़ते थे। एक प्रौढ़ और गम्भीर सिंधी नौकर भी था, लेकिन वह काम से निबटकर अपने घर चला जाता था। अपना घर ड्राइवर का भी था, यद्यपि उसे यहां भी कमरा मिला था, जिसमें रहने से सेठजी को सुविधा रहती थी। जब अवसर मिलता तब वह भी अपने घर चला जाता था। मुझे यहां वह एकांत मिल गया जो मैं चाहता था!

कई दिनों बाद डटकर नहाया-धोया, घर का बना कच्चा खाना खाया और जी भरकर सोया तो लगा कि मैं पहले जैसा मज़बूत और दमदार पीटर ही हूं, संक्रांति के दिवसों का मरियल और डरपोक पीटर नहीं। शाम को सेठजी टहलने जाते थे। कृपापूर्वक मुझे भी लेते गए। वे लालकिले के शान्त और हरे-भरे मैदान में टहलते थे। मैं भी टहला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

यकायक उन्होंने पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है ?"

मैं द्विविधा में पड़ गया। यदि पीटर बताता हूं तो शायद ईसाई होने के कारण वितृष्णा का अनुभव करें ? इससे आगे-पीछे फंसने का भी अंदेशा था। यदि झूठ बोलता हूं तो···ज़मीर तिलमिलाता है ! सांप-छछूंदर की गति ! आश्चर्य हुआ कि इस महापुरुष ने अब तक नाम भी न पूछा था !···अधिक समय न था। मैंने कहा, "पीटर !"

"ओह !···क्या काम करते थे ?"

मैं चुप रहा। वे भी चुप रहे। वातावरण कुछ बोझिल लगा।

"दिल्ली किसलिए आए हो ?"

"जीने के लिए !"

"ओह !···क्या करोगे ?"

"जो प्रभु कराए ! मैं क्या कर सकता हूं ? आज तक वही किया है जो प्रभु ने कराया।"

उन्होंने मुझे ध्यान से देखा और बोले, "मैं तुम पर विश्वास करता हूं···।"

"मैं आपके विश्वास का प्राण देकर भी सम्मान करूंगा ! आपने मेरे साथ जो किया है वह सम्भवतः सतयुग में भी कोई न कर पाता !"

"फ़िलहाल तुम पूसा रोड से काग़ज़-पत्र लाने-लेजाने और मेरे व्यक्तिगत पत्र-व्यवहार इत्यादि का काम करो—नौकर नहीं, बेटे के रूप में। कभी-कभार आने-जाने में साथ रहना पड़ेगा। खाना-पीना, कपड़ा-लत्ता, वास-निवास और पिछत्तर रुपए मासिक···।"

मैं उनके पैरों को पकड़कर बैठ गया, "मैं जनम-जनम तक अहसान-मन्द रहूंगा !"

"क्यों ? तुम एक बेहद खूबसूरत और बहुत ताक़तवर नौजवान हो। मेरी समझ में, यह अधिक नहीं बल्कि कम है।···साइकिल चला सकते हो ?"

"जी हाँ।"

"पढ़े-लिखे तो हो ही ?"

"सनद नहीं है, लेकिन हिन्दी और अंग्रेजी पढ़, लिख और बोल

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

सकता हूं !"

"तो ठीक है—मुझे तुम्हारी ज़रूरत थी।"

"ज़रूरत ? आपने मुझे उबार लिया, क्योंकि मैं बहुत विपत्ति में था...।"

"जानता हूं !" उन्होंने मेरी आँखों में आंखें गड़ा दीं।

मैं कांप उठा। एक शब्द भी न बोल सका। वे मुस्कराए और चारों ओर देखकर धीरे-से बोले, "तुम्हारा तर-ब-तर आना, बिना जूते या चप्पल के पैर, हांपना-कांपना, पैंट-शर्ट फेंकना, टोपी मांगना, बार-बार पुलिसवालों का आना-जाना—सब-कुछ काफी जतानेवाला था...।"

"फिर भी आपने इतनी कृपा की ?"

"कृपा नहीं, कर्त्तव्य ! मैं जानता हूं, तुम्हारी नस्ल और तुम्हारे संस्कार ऊंचे हैं। परिस्थितियों ने क्रूरता के साथ तुम्हें झकझोर डाला था। अंत में तुम एक श्रेष्ठ नागरिक बन सकोगे—सम्भव है, इसमें समय लगे किन्तु होगा ऐसा ही !"

"आप बिना अता-पता जाने मुझे नौकर रख रहे हैं ?"

"नौकर ! यह किसने कहा ? मैं पुत्र को रख रहा हूं ! फिर, अता-पता वाले क्या, अपने बेटे तक गला काट देते हैं, और बिना किसी नाते-रिश्ते के लोग प्रेमवश प्राण तक दे देते हैं। मैं मनुष्य की मूल महानता में अटूट आस्था रखता हूं।"

मैंने चुपचाप उनकी ओर देखा।

वे हँसे। बोले, "अगर तुम्हारी मां कुछ पूछें तो वही बताना जो लाभ-कर हो। न अनावश्यक झूठ, न अनावश्यक सत्य ! वैसे, मैं उन्हें यह बताऊंगा कि लड़का बिना मां-बाप, भाई-बहन, नाते-रिश्ते, दोस्त-हमदर्द वाला है। गलत तो नहीं है ?"

"एकदम ठीक है।"

"नाम...?"

"पीटू चल सकता है ? लोग, पीताम्बर का अपभ्रंश समझेंगे ! झूठा भी नहीं, क्योंकि स्कूल में मुझे पीटू ही कहते थे !"

"ठीक है।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

और, मेरे जीवन का अगला और अच्छा अध्याय आरम्भ हो गया।

मुझे एक साइकिल मिली थी, जिसे मैं अपने कमरे में रख सकता था। प्रायः नित्य एक चक्कर पूसा रोड का लगाना पड़ता। सेठजी के हस्ताक्षर एवं एतद्पूर्व अवलोकन के लिए फ़ाइलें लाना एक महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य था। किन्तु जब वे बाहर गए होते और मुझे न ले गए होते, तब यह कार्य न करना पड़ता। जिस दिन वे स्वयं पूसा रोड गए होते, उस दिन भी। जब-तब मायापुरी स्थित कारखाने जाना पड़ता—कभी-कभी सेठजी के साथ कार में, कभी-कभी साइकिल से। कभी-कभी बाहर के सफर में उनके साथ जाना पड़ता—कभी-कभी ही, क्योंकि सेठजी यात्राएं कम करते थे और पैसे की बचत का ध्यान रखते थे। उनका व्यक्तिगत पत्र-व्यवहार, जो बहुत न था, मेरे ज़िम्मे था। इसलिए, पहले-जैसी फ़ुर्सत और नॉवेल आदि की अधिक पढ़ाई-रसाई सम्भव न थी, किन्तु व्यस्तता और अनुभव के भरपूर लाभ प्राप्त थे।

गोहाटी के डाकघर में जमा रुपयों, छोटी-सी एक सदस्यीय गृहस्थी, मेरी और अमलानादन् इत्यादि की यादें प्रायः आती-सताती रहती थीं। कई बार स्वप्न में मेरी दिखाई पड़ी। एक बार तो बहुत विचित्र रूप में थी! एक तरंग उठी कि पत्र लिखूं—पर मृत्यु तरंग से बलवत्तर है। मन मारना ही तन जिलाना प्रतीत होता…और तब मन मेरी की आलोचना करके अपने-आप को बहलाने लगता! मन प्रकृत्या धूर्त होता है।

इस बीच एक ऐसी घटना घटी जिसने मेरे समग्र अस्तित्व को झंकृत कर दिया। सेठजी खाना खा रहे थे। सेठानी जी साथ-साथ ही खाती थीं। मैं खिला रहा था। नौकर जीवनराम पका रहा था। इस सिलसिले में, उसने एक लोटा मांगा, जो संयोगात् उस समय स्नानागार में था। मैं धड़धड़ाता हुआ गया किन्तु उढ़के दरवाजे देखकर सकते में पड़ गया—स्तब्ध, निर्वाक्, स्थिर, अपलक! सेठजी की युवती पुत्री पूर्णतः निर्वसनावस्था में स्नान-रत थी!…दो पल हम दोनों ही न कुछ बोल सके, न कर सके, न हिल सके, न डुल सके। इसके बाद मैं भागकर रसोईघर पहुंचा और बोला, "मिस नहा रही हैं!"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

"तो कोई बात नहीं।"

पर कोई बात तो हो ही चुकी थी ! मिस लवलीन का बारहवानी सोने का बना शरीर रह-रह कर आंखों में कौंध रहा था। क्या समानुपातिक रूप था ! क्या ज्योतिर्मय रंग था—चाहे तो कोई स्निग्ध दर्पण पर अपना प्रतिबिम्ब देख ले ! मैं उन्हें रोज़ देखता था। वे बहुत सुन्दर थीं। छरहरा लम्बा बदन था, बड़ी-बड़ी आंखें थीं। वे सदा मुस्कराती ही मिलतीं। किन्तु आज जो देखा था, वह प्रकट इन्द्रजाल था, स्पष्ट कुहक था। ओह, नग्नता कितनी बड़ी जादूगरनी होती है ! नग्नता अप्रतिम कुहकिनी है। पर शायद इसके आलोचक अपनी जगह बिल्कुल ठीक हैं, क्योंकि इसका अवलोकन दर्शक की चेतना को आक्रांत किए बिना नहीं रहता।···मुझे अपने आतंकमय अतीत और सेठजी की अपरिसीम कृपा का स्मरण अनायास ही हो आया। उनके विश्वास में व्यवधान की कल्पना-मात्र से मेरा मानव तड़प उठा ! लवलीन बहन-जैसी है···लेकिन, आह, यौन कितना पाशविक होता है ! 'दशरथ-जातक' के जिस कामुक एवं पूर्वग्रहग्रस्त गल्पकार ने राम-सीता को भाई-बहन के रूप में कल्पित किया था, वह कितना यौन-त्रस्त रहा होगा !···मैं लवलीन की निर्वसन सुषमा के इन्द्रजाल से मुक्त न हो पाया। किसी काम में मन न लगा। एक इच्छा हुई कि सेठजी से कहीं बाहर काम लगवाने की प्रार्थना करूं, किन्तु एतद्विषयक ऊहापोह से तथ्य के व्यक्त होने की आशंका-मात्र ने मुझे इससे विरत कर दिया···।

अब लवलीन दीखती तो आंखें झुका लेती; मैं भी कतरा जाता। पर, प्रायः जब वह विश्वविद्यालय से लौटती तब सेठजी-सेठानी जी के विश्राम का समय होता, उसका भाई अरुण दोस्तों के साथ मटरगश्ती और गपशप के कारण देर से आता था, जीवनराम गर्म खाना तैयार करता था; इसलिए, खिलाने का ज़िम्मा मेरे ऊपर ही रहता। अब यह ज़िम्मेदारी माधुर्य और संकोच की रम्य रंगस्थली बन गई थी। लवलीन को 'एक ग्लास पानी' कहने के लिए भी संकोच से लड़ना पड़ता और मुझे 'एक फुल्का और' कहने के लिए साहस को आमंत्रित करना पड़ता ···और इस-सब के बावजूद, एकाध बार आंखें चार होते ही हम दोनों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

को हल्का-सा मुस्कराना भी पड़ता !···

अब न गोहाटी की याद आती, न मेरी की, न डाकघर के खाते की, न एक सदस्यीय गृहस्थी की, न अमलानादन् की ! मैं सोचने पर विवश हो जाता, "क्या प्रकृति ने मनुष्य को प्राणी से अधिक कुछ नहीं बनाया ? गांधी पिता की मृत्यु के समय पत्नी के संग थे ! मुहम्मद अवसान के समय आयशा के अंक में थे !···" पर, परिणाम कुछ न निकलता ; ··· एक दिन मैंने स्वप्न में लवलीन को देखा। मुझे लगा, यदि मैं यहां से हटा नहीं तो सम्भव है कर्त्तव्य-भ्रष्ट हो जाऊं, क्योंकि लवलीन की आंखें रह-रह कर मुझे अनुराग की सूचना देती प्रतीत होती थीं। बिना बताए भागना कायरपन लगता, बताकर हटना अपनी संस्कारगत हीनता का दुंदुभि-नाद करना था और रहकर लवलीन-मुक्त होना सम्भव न था। पहली बार मैंने अनुभव किया कि यौवन का महज़ उन्माद कितना प्रखर और प्रचण्ड है ! अब लगने लगा कि मेरी प्रकरण-परिस्थिति और परिवेश का परिणाम था।···

रविवार की सुहानी शाम थी। मैं जामा मस्जिद के नीचे सुभाष पार्क और कलीमुल्लाह दरगाह के आसपास घूमाघामी कर रहा था। अक्सर आता था। गुरुवार और रविवार को कव्वालियां सुनता, मजमों का मज़ा लेता। उस दिन ताक़त की दवा वगैरह बेचने वाले काशीराम की मजमा-तक़रीर सुन रहा था—वही रटा-रटाया एक ही मज़मून, वही अभ्यास-पुष्ट एक-सी भाव-भंगिमाएं, वही प्रवृत्ति-शोषक एक-सा व्यवसाय, लेकिन, फिर भी, हर बार आकर्षक लगनेवाला ! ठग-विद्या कितनी मनोविज्ञान-सम्पन्न होती है ! मनुष्य जानबूझ कर भी इसके मायाजाल में फंस जाता है। यदि ऐसा न होता तो आज के दर्जनों 'भगवान' और कोड़ियों नेता, उद्योगपति और व्यवसायी, अभिनेता और अधिकारी, सब-के-सब टके सेर बिकते !···सटकर खड़े हुए एक हम-उम्र नौजवान ने ध्यान आकृष्ट किया। घने घुंघराले और बेहद काले बाल, लम्बा-छरहरा पर मज़बूत-मस्क्युलर जिस्म, गोरा-चिट्टा रंग, तीखे तेवर, कंटीली अल्ट्रा-मॉडर्न ड्रेस—अच्छा भी लगा, बुरा भी; रुचि भी हुई, अरुचि भी। काशीराम की तक़रीर की प्रतिक्रियाएं वह

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

मुझी से व्यक्त कर रहा था। मुझे इच्छा या अनिच्छा या दोनों से हां-हूं कहना पड़ रहा था—कम-से-कम सिर जरूर हिलाना पड़ रहा था।

मजमे का टाइम खत्म हुआ। मैं चला। वह साथ हो लिया, "आप कहां रहते हैं ?"

"बल्लीमारान में। आप ?"

"चितली कबर में। क्या करते हैं ?"

"एक सेठ जी की नौकरी। आप ?"

"हमदर्द दवाख़ाने में नौकरी करता हूं और···।" वह रुक गया।

यह प्रावृत्तिक उद्गार और विराम शंकित करनेवाला था। उसकी चालढाल अच्छी न लगी। पर वह पीछा ही नहीं छोड़ रहा था। बोला, "आपका नाम ?"

"पीटू। आपका ?"

"परवेज़।" कुछ पल बाद बोला, "आप दिल्ली में नए लगते हैं ?"

"क्यों ?" मैं सनका और सजग हुआ।

"क्योंकि इतने गबरू जवान होकर प्राइवेट होम-सर्विस में फंसे पड़े हैं, जिसमें न कोई प्रेज़ेन्ट है, न फ्यूचर ! आप चाहें तो मालामाल हो सकते हैं···।"

"कैसे ?" मुझे कुतूहल हुआ।

"आइए, बैठकर तफसील से बात करें।"

हम दोनों सुभाष पार्क की एक बेंच पर बैठ गए। उसने इतस्ततः देख-सुन कर धीरे-धीरे बोलना आरम्भ किया, "एक खूबसूरती हज़ार नियामतों से बढ़कर है। तुम चाहो तो किसी मोटे मुर्गे की लज़्ज़तदार साहबज़ादी फांस लो। कुछ दिन उल्फ़त की फ़िल्मी तक़रीरें और दिल-कश डायलॉग, कुछ रसीले फ़ोटो और बस ! इसके बाद सालों तक 'व्हाइटमेल' करते रहो—'ब्लैकमेल' लफ्ज़ तो एक वाहियात चीज है, ख़ासकर 'इश्क़' के इर्द-गिर्द ! काम का काम, दाम का दाम ! मैंने एक हक्कानी रहनुमा की लाडली बेटी को पकड़ रखा है। जब ज़रूरत पड़ती है, सौ-दो स ौ झटक लेता हूं। देखते ही आग-बबूला हो जाती है, लेकिन मैं फ़ोटो और ख़तों की 'ट्रू कॉपीज़' दिखाकर बड़ी तसल्ली से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

अपना मक़सद पूरा कर लेता हूं। इस रंगीन धंधे में शुरू से आख़िर तक मज़े-ही-मज़े हैं। शुरूआत में कुछ इन्वेस्टमेंट करना पड़ सकता है—कुछेक फ़िल्में देखने-दिखाने में, कुछेक बार चाय-पानी में। इसके बाद ज़न भी, ज़र भी !" उसने सिगरेटें निकालीं। हम दोनों पीने लगे। उसने कहा, "माशूक़ा की शादी के बाद तो पांचों घी में हो जाती हैं !"

पता नहीं कैसे, मेरे मन में लवलीन की तस्वीर कौंध गई और मैं "छी:-छी:" बोल उठा। परवेज़ विचलित नहीं हुआ, "अगर यह धन्धा पसंद न आए तो एक-दो शौक़ीन लीडरों और लालों को फांस लो और दुहते रहो !" उसने आंख की टीप से रहस्योद्घाटन किया। बोला, "मैंने एक हाजी को फांस रखा है। एक दिन उससे रस-बस बढ़ाया था और दो साल हो गए, सैंकड़ों खींच चुका हूं। करोड़पति आसामी है—और, करोड़पति सिर्फ़ शरीफ़ और इज़्ज़तदार ही होते हैं; इसलिए, मैं शराफ़त और इज्जत की थोड़ी-सी फ़ीस लेता रहता हूं। ये दो तो काफ़ी पुख्ता और टिकाऊ ज़रिए हैं। यों, पार्ट-टाइम या ओवर-टाइम इन्कम भी होती रहती है। मजमे में किसी शौक़ीन साहब या लाला या हाजी या क़ाज़ी या पण्डित या ज्ञानी या ग्रन्थी से सटकर खड़े हो जाओ, रब्त-जब्त पैदा करो, क़िले की तरफ़ भूरे मियां के दरगाह के आसपास ले जाओ, थोड़ी-सी इधर-उधर की मज़ेदार बातें-हरकतें और तब शराफ़त की फ़ीस। यह जो इम्पोर्टेड रिस्ट-वॉच पहने हूं, एक टूरिस्ट की 'भेंट' है !" उसने दिखाई, तो बेंच के पास बिजली के खम्भे के कारण साफ़-साफ़ दीख गई। "यह जो ट्वेन्टी-टू कैरट गोल्ड की चेन है, एक मुल्लाजी ने 'दी' थी !" उसने कमीज़ का बटन खोलकर तथ्य प्रमाणित कर दिया। "यह जो नीलम-जड़ी अंगूठी है, एक एम० पी० का 'तोहफ़ा' है ! अहा, इण्डिया गेट की वह सुहानी शाम ! यार, एम० पी० इतनी प्यारी ज़ुबान बोलता था और इतना खूबसूरत था कि मुझे अपने-आप को सम्हालने के लिए अपने-आप से लड़ना पड़ा था ! अहा, उसका सुरीला गला ! अहा, उसका खुशबूदार बोसा !" उसने दो पल विस्मृति की स्मृति का रस लिया। तब अंगूठी दिखाई···और उसे चूमकर बोला, "उस दिन मुझ-जैसे ख़ूंख्वार मर्द में औरत जाग पड़ी थी !" उसने सिगरेट का आख़िरी

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

और लम्बा कश खींचा और उसे फेंक दिया।

"किसी फ़ाइव स्टार होटेल में घुसो ! इन होटलों में करोड़पति ही आते हैं। मिल-मालिक, मुल्क-मालिक, मूवी-मालिक और इनकी बीवियां-बेटियां-भतीजियां। इन-सब को खूबसूरती के ज़रिए लूटा जा सकता है। जब ये साले करोड़ों लूटते हैं, तब इनसे सैंकड़ों लूटना तो जायज़ है। जब ये साले दूसरों की लौंडियों और बीवियों पर हाथ साफ़ करते हैं, तब इनकी लौंडियों और बीवियों पर हाथ न साफ़ करना एक इन्सानी गुनाह है। तुम अशोका या ओबेराय में आज़माइश करो, मुकद्दर खुल जाएगा ! ये साले शराबी-कबाबी फ़ॉरेनर्स ग़ज़ब के होमो होते हैं। इनके कारूं के ख़ज़ाने लूटो ! जिस्मानी मज़े अलग से ! दिल्ली में एक-से-एक पंजाबी खत्री लौंडे पड़े हैं—वे हुस्न के बल पर अनाप-शनाप कमा रहे हैं। दनादन नौकरियां पा रहे हैं, चिकनी-से-चिकनी लौंडिया पटा रहे हैं। लेकिन तुम्हारी-जैसी मर्दाना सेहतवाले और साथ ही बला के स्मार्ट जवान चिराग़ लेकर ढूंढ़ने से भी नहीं मिल पाते—चित-पट सब चल सकती है ! अभी पांच-सात साल बाक़ी हैं। ये बीत गए तो पछताकर रह जाओगे। क़ुदरत भी कोसेगी कि इसको इतना दिलकश हुस्न बेकार ही दिया ! अल्लाह नाराज होगा कि इस मरदूद को जन्नत से दुनिया में भेजना नाकाम गया ! समझदार लोग मौक़ा और वक्त देखकर ही मालामाल हो जाते हैं…"

"उस ज़र में क्या धरा है, जिसमें ज़मीर जलकर ख़ाक में मिल जाए ?"

"फ़ालतू लफ्फ़ाज़ी ज़िन्दगी को तल्ख़ बना देती है ! ग़रीब का ज़मीर और खरगोश का सींग कोई नहीं देख सकता। जिनकी पूजा होती है, वे सब ज़मीर के पुतले नहीं, अमीर लोग हैं। ज़मीर की तुक भी अमीर से ही मिलती है, ग़रीब से नहीं। 'जाट रे जाट, तेरे सिर पर खाट' और 'जाट रे जाट, तेरे सिर पर कोल्हू' में जितना फ़र्क़ है, उतना ही अमीर-ज़मीर और ग़रीब-ज़मीर में ! ज़मीर अमीर की बपौती है—उसे ही मुबारक रहे ! ग़रीब जहाँ ज़मीर की लकीर का फ़क़ीर बना, तबाह हुआ ! और जिनके ज़मीर की तारीफ़ के पुल बांधे जाते हैं, उन-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

सब के हाथ इंसान के लोहू से सने हैं ! दुनिया में ज़र और जोरू की तूती बोलती है। अगर दुनिया में मज़े लूटने हैं तो लूटने की हुनर सीखनी ही पड़ेगी। मज़े लूटने में 'लूटने' लफ्ज़ की बुलंदी पर ध्यान दो ! मज़े मारने में 'मारने' लफ्ज़ के मतलब पर ग़ौर करो ! दुनिया लफ्फ़ाज़ी से नहीं चलती। इसमें वही जीतता है जो जूझता है। जो लूट नहीं सकता, मार नहीं सकता, उल्लू नहीं बना सकता, वही लुटता है, वही मारा जाता है, वही उल्लू बनता है। इंसान भोले-भाले जानवरों को खाता है और तेज़-तर्रार जानवरों को खिलाता है ! दुनिया में शेरखां मिलेंगे, बैलखां नहीं; बलवंतसिंह मिलेंगे, बलवंतबैल नहीं ! दुनिया उसे पूजती है जो उसे लतियाए। तारीख़ की सबसे बुलंद हस्तियां वे हैं, जिन्होंने लाखों-लाख का क़त्ल किया-कराया, अरबों-खरबों का ज़र लूटा-लुटवाया, हज़ारों-लाखों औरतों की इज़्ज़त ली-लिवाई···।"

"तो महापुरुष···?"

"महापुरुष वह है जो पहले से ही आधी-उल्लू जनता को खुश रखते हुए पूरा-उल्लू बना सके या फिर तलवार उठाकर आलम से क़दम-बोसी करा सके। सारे महापुरुष गद्दी या शोहरत के ग़ुलाम रहे हैं। दुनिया को महापुरुषों ने जितना नोचा-खसोटा है, उतना चोरों-डकैतों ने नहीं। काश, दुनिया में महापुरुष न होते ! हिन्दुओं में 'महा' का प्रयोग नाश के साथ जुड़ा रहता है, जैसे महापात्र, महारात्रि इत्यादि में। सचमुच हिन्दू बहुत समझदार हैं !"

मैं ऊबने लगा। उठकर बोला, "आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई ! अब चलता हूं, नहीं तो सेठजी नाराज़ होंगे। फिर मिलेंगे !" मैंने उसका हाथ उठाकर अपने हाथ में लिया, अभिवादन किया और चल दिया। उसका मन कुछ खट्टा तो हुआ पर मायूस नहीं, क्योंकि "ख़ुदा हाफ़िज़" कहकर वह बड़ी मस्ती से दूसरी तरफ़ चला गया।

घर पहुंचने पर सेठजी ने पूछा, "किधर निकल गए थे ? लगता है बोर होकर लौटे हो ?" उन्होंने ध्यान से देखा।

"एक लफंगा गले पड़ गया था। किसी तरह पिंड छुड़ाकर आया हूं, नहीं तो आधी रात हो जाती और उसकी बात आधी ही रहती···!"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

"जामा मस्जिद एरिया चोरों, बटमारों और गिरहकटों से भरा पड़ा है। वाड़ा हिन्दूराव एरिया भी ऐसा ही है। किंग्सवे कैम्प और सराय रुहेला इनके भी कान काटते हैं। जितना बड़ा शहर उतना बड़ा क़हर ! बड़े-बड़े दादा लोग अपने अपने गैंग की बढ़ोत्तरी के लिए नए-नए पट्ठों की तलाश में रहते हैं। जो मक्खी मकड़ी के जाले में फंसी उसका निस्तार कहां ? जिस युवक ने एक बार चाकू पकड़ा वह उसी या किसी चाकू से ही शान्ति पाता है अन्यथा जेल और हेल के बीच दौड़ता-घूमता रहता है। जो व्यक्ति किसी पर अकारण या अर्थार्थ प्रहार करता है वह बूमेरैंगिंग से बच नहीं सकता। तुम मज़बूत नौजवान हो, बहुत खूबसूरत हो—सम्हल कर रहना !"

"मैं आपका परामर्श कभी न भुलाऊंगा।"

उस दिन से मैंने अटन का क्षेत्र परिवर्तित कर दिया। अब टॉउन हॉल और गांधी मैदान की तरफ जाने लगा। वहां दिन-दहाड़े हो या सांझ-सकारे, जुए का बाज़ार गर्म ही पाया। मालिशियों की अनुभव-दग्ध और अपावन आवाज़ों से अरुचि हुई। उनके कार्य-कलाप देखे सुने। मन हुआ, यहां भी न आऊं, परन्तु प्रश्न था, जाऊं कहां ? दुनिया तो बदलने से रही ! यहां देश के दारिद्रय का गहन अनुशीलन किया जा सकता है, जाड़े में रात के शीत से ठिठुरे शव देखे जा सकते हैं, नाना क्षेत्रों से रोजी-रोज़गार की आशा में आए या घर से भागे लड़कों या युवकों के निरीह वैवश्य का साक्षात्कार किया जा सकता है, यहां हरदयाल पुस्तकालय है, पार्क में अक्सर होने वाले कार्यक्रम हैं, जब-तब होते ही रहने वाले मजमे हैं, बाल-गोपालों के खेल हैं और हैं आसपास कई सिनेमे। महीने में एकाध कार्यक्रम या सभा, समय पर रामलीलाएं, नाटक इत्यादि के कारण भी यह स्थान अधिक उपयुक्त लगा।

एक दिन शाम को फ़ुर्सत थी। सेठजी इत्यादि किसी शादी में गए थे। देर से लौटने की बात बता गए थे। जाकर एक लता-मण्डप के तले पड़ी बेंच पर लेट गया। अच्छी बयार डोल रही थी। झपकी आ गई। निर्द्वन्द्वता (पैर में बँधे सैंडल, पैंट की अंदरूनी जेब में सुरक्षित रुपए और बस !) ने उसे नींद में परिणत कर दिया। सो गया। जब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

नींद अधखुली-सी लगी तब आधा-सा अनुभव हुआ, जैसे कोई व्यक्ति पैंट के अन्दर हाथ डालकर शरीर सहला रहा है। मैं पैर शेष शरीर की ओर समेटकर सोने लगा। किन्तु कुछ ही पलों के अनंतर लगा, जैसे कोई व्यक्ति सट के मेरे सीने के आगे के रिक्त स्थान पर आ बैठा है। जब तक मैं पूरी चेतना में आऊं आऊं, प्रतिक्रिया का निर्धारण करूं करूं, तब तक मीठे पान की बहुत तेज़ खुशबू से भरा एक मुँह मेरा होंठ चूसने लगा ! देखा, तो एक भारी-भरकम और काला-कलूटा व्यक्ति ! पुलिस की वर्दी ! पल-भर को सकते में पड़ गया। जब होश-हवास आया तब एक विवशता-भरी कड़क के साथ बोला, "क्या है ?"

"कुछ नहीं मेरे बब्बूगोशा !"

"दूर हटो···।"

"प्यार में पास आने वाले को दुत्कारा नहीं जाता, मेरी जान !"

"मैं कहता हूं, दूर हट जाओ !"

"प्यारे गिलमू, ठाकुर का प्यार बड़ा कड़ा होता है !" और वह धृष्ट पुलिसवाला मुझे दबाने-चूमने लगा। वह इस स्थिति में था कि मैं न उठ सकता था, न बैठ। विवशता में निश्चेष्ट होने ही वाला था कि प्रवृत्ति ज़ोर से चिल्ला पड़ी, "बचाओ ! बचाओ !"

यद्यपि रात के लगभग दस बज रहे थे तथापि मौसम ऐसा था कि काफी लोग थे। उनमें से कुछ दौड़े, "क्या है ? क्या है ?"

पुलिसवाला उठकर खड़ा हो गया, "अबे चिल्लाता क्या है ? मैं पूछता हूं, मुरारी की जेब किसने काटी है ? बेटा, दिल्ली पुलिस का जवान नहीं हूं जो जेब गरम करके खुद ठण्डे पड़ जाते हैं, मध्य प्रदेश से आए हुए पट्ठों में हूं। बड़े-बड़े हव्वूस डाकुओं के छक्के छुड़ा चुका हूं ! तुम किस खेत की मूली हो !"

मैं उठकर खड़ा हो गया—किसी भी परिस्थिति के लिए तैयार ! अतीत की विभीषिकाएं शक्तियां बन गईं। दांए कंधे के भरपूर वार से उसकी छाती पर धक्का दिया, जिससे वह तत्काल तत्क्षण अंधड़ में पेड़ की तरह भहरा पड़ा, "साला अनाथ औरत समझता है मुझे !" और मैंने एक ज़ोरदार लात उसकी पीठ पर मारी।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तभी प्रवृत्ति ने रोक दिया, अतीत ने टोक दिया…

भीड़ इकट्ठी हो गई। पुलिस वाला उठकर खड़ा हो गया। मैं चिल्लाया, "मुझे बिकाऊ रंडी समझता है ? ज़र-ख़रीद ग़ुलाम समझता है ? आजा, तुझे भिड़न्त के लिए चुनौती देता हूं—माई का लाल हो तो सामना कर !" और मैं लता-मण्डप से बाहर मैदान में निकल आया।

मेरे साहस और सत्य से आपूर्ण स्वर ने लोगों के शिष्ठ भाव को सर्वथा जागृत और आश्वस्त कर दिया, "भारत की पुलिस देश पर कलंक है !"

"साले गुण्डों के गुण्डे होते हैं !"

"अंग्रेज गए, शासन बदला, पर पुलिस ज्यों-की-त्यों ही बनी है !"

पुलिसवाला चुपचाप एक ओर को डगर चला। त्वरा में अपना डण्डा ले जाना भूल गया। एक वृद्ध लालाजी ने आवाज़ लगाई, "बेटा, डण्डा तो लेते जाओ—सरकारी होगा !"

इस पर लोग ठठाकर हंस पड़े। पुलिस वाला लौटा नहीं। वृद्ध ने ज़ोर से कहा, "यहीं पड़ा है, जब सन्नाटा हो तब ले लेना—महँगा है !"

इधर ठहाके लग रहे थे, उधर मैं भी अपनी राह पर था, क्योंकि रुकने का मतलब घटिया रुचि के लोगों की नकली हमदर्दी और असली मज़ाक का-शिकार बनना था, बेवकूफ बनना था। मैं त्वरा से चला, जिससे कोई अयाचित-अवांछित साथी न बन बैठे ! कभी-कभी साथी का अर्थ सरदर्द भी होता है ! मुझे यकीन था कि पुलिस वाले के अलावा मुझे किसी ने ठीक से देख नहीं पाया। यदि कोई देखता तो शर्म लगती। चलते-चलतें एकोध व्यंग्य-वाक्य सुनाई पड़ गए थे—है भी तो आफत का परकाला !… शाही ज़माना होता तो मर्दाने हरम में होता !…फिराक साहब देख लें तो पूरा ग़ज़ल लिख मारें !…मैं सोच रहा था, निर्धनता और सुन्दरता बैरी हैं। जहां दोनों साथ हुई, वहां शान्ति नहीं रह सकती। आह, मैं कुरूप क्यों न हुआ ! काश, मैं काला-कलूटा, ठिगना-बौना, मरियल-सड़ियल होता !" किन्तु तभी एक विचार उठा, "तब शायद भीख मांगता होता !…निर्धन के लिए सबकुछ अभिशाप है। उसका सुन्दर होना अभिशाप है—अनाचार न मिला तो दया मिलेगी, जो मन पर कहीं अधिक गहरी चोट करती है। उसका कुरूप होना अभिशाप है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पग-पग पर परिहास और अपमान ! उसकी ईमानदारी पर तरस खाया जाता है, उसकी वेईमानी पर चोट की जाती है। उसकी अहिंसा पर किसी का ध्यान नहीं जाता, उसकी हिंसा पर विराट् कानूनी हिंसा अंतक प्रहार करती है। फिर भी, चूंकि सभ्य समाज को कुलियों और मजदूरों, मिस्त्रियों और शिल्पियों इत्यादि, इत्यादि की सख्त ज़रूरत है, उसे जिन्दा रखा जाता है—आत्मघात एक दण्डनीय अपराध है ! वह मर जाए तो हर्ज—ग़ुलामी कौन करेगा ? वह मोटा हो जाए तो हर्ज—ग़ुलामी कौन करेगा ? मोटा व्यक्ति काम नहीं करता, दाम वटोरता है, नाम कमाता है।"

सेठ जी इत्यादि अभी नहीं आए थे। ड्राइवर स्वभावत: उनके साथ था। जीवनराम काम न होने से आज शाम को ही अपने घर चला गया था। मैंने कोठरी का दरवाज़ा खोला और चारपाई पर जा गिरा। लेकिन नींद कहां ?

जब सेठजी घर से सीधे फैक्ट्री जाते थे तब कभी मुझे ले जाते थे, कभी नहीं, क्योंकि वहां मेरा कोई विशेष प्रयोजन न था। उस मंगल के दिन ऐसा ही था। माता जी कहीं बीच तक के लिए उनके साथ गई थीं। लवलीन ने अरुण से कहा, "हम दोनों की परीक्षाएं सकुशल समाप्त हुई हैं—चलो कनाट प्लेस के हनुमान जी के दर्शन कर आएं—"

"माफ करो, इस समय मैं पढ़ रहा हूं। पीटू को लेकर दर्शन कर आओ। मेरी ओर से भी कर लेना !"

अरुण को 'मेमॉयर्स ऑफ एवो मैन ऑफ प्लेज़र', 'लोलिटा' और 'लेडी चैटर्लीज़ लवर' जैसे यौनाग्निवर्षी उपन्यास पढ़ने का काफी शौक़ था हिन्दी में तो मस्तराम तक को न छोड़ता था ! सेठ जी की उपस्थिति में इनका पढ़ना तो दूर, पास रखना तक सम्भव न था। वे वहुत सख्त किस्म के पिता थे। कई वार गिड़गिड़ाकर मुझसे अपनी कोठरी में रखने को कहता और विवश कर देता। तव मैं पढ़ता ! आज उसे सुनहरा मौका मिला था। कैसे चूकता ! लवलीन ने मुझे साथ लिया और चल पड़ी। यों, वह अकेली जा सकती थी, जाती-आती थी ही, इसलिए, मुझे कुछ ज्ञात, कुछ अर्द्ध ज्ञात और कुछ अज्ञात सुख प्राप्त हुआ।

मैंने अपने सवसे अच्छे कपड़े पहने थे—वे जो अधिकतर प्रेस कराके

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

रखे रहते थे ! बालों को सँवारा था। साफ रहने की आदत थी ही। इसलिए, उसके साथ चलने में किसी विशेष हीन भाव की अनुभूति न हुई। हम दोनों चावड़ी बाज़ार तक पैदल आए। तब तांगे पर बैठे। तांगा पेशावरी नहीं, लाहौरी था। फिर भी, तांगे वाले ने छः सवारियां बैठाईं। एक सिरे पर लवलीन थीं, बीच में मैं और दूसरे सिरे पर एक दीर्घकाय पंजाबी 'माताजी'। तांगा चला। 'माताजी' ने अपनी एक क्विटल की 'कोमल' काया मुझ पर लाद दी ! यह अत्याचार था, किन्तु इससे भी बड़ा अत्याचार उनका 'स्मित हास' था !!…जब जब 'माताजी' के शरीर-सागर का ज्वार उमड़ता, तब तब उत्ताल तरंगें मेरे माध्यम से लवलीन तक को झकझोर देतीं। मैं मारे संकोच के गड़ा जा रहा था। निसर्गतः लवलीन की प्रतिक्रिया का अन्वेषण करने वाली दृष्टि भी सजग थी। मुझे संतोष हुआ कि वह रुष्ट न थी। शायद मेरी 'मुसीबत' को समझ रही थी ! बहरहाल, जब यह 'यात्रा' समाप्त हुई तब मुझे संतोष भी हुआ, असंतोष भी !

हम दोनों अब तक बिना बोले आए थे। मेरा मन रह-रह कर बोलने को होता, पर किस उठान से बोलूं, यह नहीं तय कर पा रहा था। दोनों ने पदत्राण उतारे, हाथ धोए, दर्शन किए। मेरा ईसाई इससे खिन्न नहीं हुआ। जब लवलीन को आंखें मूंदे और सिर झुकाए प्रार्थना करते देखा तब आस्था का अद्वैत स्पष्ट हो गया। मैंने सोचा, तथाकथित नास्तिकता का शतशः व्यर्थ-परिणाम प्रचार किया ही क्यों जाता है ? मैंने सोचा, धर्मों के अलग-अलग नाम रखे ही क्यों जाते हैं ?…लवलीन ने बिना बोले ही प्रसाद दिया—काफ़ी मात्रा में। औरों में भी बांटा। लौटते हुए वह, शायद कुछ दूर होने के कारण, तांगा-स्टैण्ड के बजाय बस-स्टैण्ड की ओर चल पड़ी। धूप तेज़ हो आई थी। ऐसा ठीक ही था। कुछ देर बाद बस आई। शेड रेलिंग वाला था। नीचे नाली थी। मेन-होल के कवर पर थोड़ा-सा गंदला पानी भी दीख रहा था। फिर भी, उद्दण्ड ड्राइवर बस तेजी से लाया, जिससे कई लोगों के कपड़ों पर गंदे छींटे पड़ गए। यही नहीं, वह पहले बस को आगे ले गया, जिससे लोग स्वभावतः उधर दौड़े, तब बैक करने लगा, जिसका परिणाम यह हुआ कि रेलिंग और पीछे आती बस के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

बीच लवलीन डरकर चीख़ पड़ी और बस के हल्के धक्के से गिरने लगी। यदि मैंने उसे पूरी शक्ति से पकड़ा न होता तो गंदे पानी वाली नाली में जा गिरती। पर संयोगात् ऐसा कुछ न हुआ। दो पल लवलीन मेरी बाहों में रही ! तब हम दोनों बस पर सवार हुए। अब मैं सोचता हूं कि उस दिन दिल्ली परिवहन के उस चालक के पैशाचिक उल्लास पर मेरा ध्यान तक न गया था—क्यों ?···

हम दोनों एक ही सीट पर बैठे थे। लवलीन का मुखड़ा अब भी लाल था ! बीच-बीच वह कनखियों से देखती और शुचिस्मिता बन जाती। मैं बिना बोले-सा बोल ही तो पड़ा, "चोट तो नहीं लगी ?"

"इतनी देर बाद पूछते हैं ? क्षमा करें, धन्यवाद देना भूल गई थी !" उसने हाथ जोड़ते हुए कहा।

मैं चुप रहा। मस्तक पर राशि-राशि स्वेदकण अनुभूत हुए।

वह भी चुप रही।···

●●

उस दिन मुझे बहुत खुशी हुई जब ज्ञात हुआ कि सेठजी अपनी पत्नी और पुत्री के साथ कश्मीर जा रहे हैं और साथ में मैं भी रहूंगा। अरुण अपने मनमौजी दोस्तों के साथ दार्जिलिंग जा चुका था। तैयारियां होने लगीं। सेठजी कई बार सपरिवार जा चुके थे। इस बार लवलीन के आग्रह के कारण दो दिन श्रीनगर, दो दिन गुलमर्ग और दस दिन पहलगाम में ठहरने का प्रबंध कर लिया गया था। श्रीनगर के दो दिन शंकराचार्य शिखर और खीर भवानी के कारण रखे गए थे अन्यथा सब-कुछ बहुत अधिक परिचित था। लवलीन पहलगाम को कश्मीर का सर्वोत्तम सौंदर्य-स्थल मानती थी, "वह संसार का, सौंदर्य की दृष्टि से, पहला गांव है—अपने नाम से ही !" सेठजी उससे सहमत थे। सेठानीजी उस सब से सदा-सर्वदा सहमत रहती थीं, जो वे कहते थे।

मेरे लिए सारा कश्मीर नया-ही-नया था। एक अकल्पित स्वप्न !

मुझे भी पहलगाम सर्वोपरि लगा। उसका एकमात्र प्रतिद्वन्द्वी गुलमर्ग गोल्फ़ के खिलाड़ियों का स्वर्ग हो सकता है, किन्तु इसे हीरक-वर्ण, फेन-परिधानावृत, नील-सलिला लिद्दर का दिव्य कलकल-छलछल कहां प्राप्त

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

है ? क्या आश्चर्य, यदि पहलगाम अमरनाथ के स्वर्गारोहण का प्रवेश-द्वार है ! ससार के अन्य सर्वश्रेष्ठ सौंदर्य-स्थल पहलगाम से अवश्य ईर्ष्या करते होंगे !…और उस दिन गहरे-नीले और स्वच्छ-स्वस्थ आकाश को काले-काले बादलों ने झांप लिया था। अहा, आकाश से बलात्कार करने वाले चिमनियों के धुएं से आज़ाद माहौल ! अहा, स्पष्टतः दृश्य रूप में स्वर्ग से उतरती, शिला-संकुलित, स्वच्छ-पावन लिद्दर ! अहा, क्रमशः लघुलताओं, चीड़-देवदारु-सिल्वरफ़र और हिमानी से आच्छादित सोपानत्रय-सम्पन्न अप्रतिम सौंदर्यलोक ! कश्मीर प्रकृति का एक महत्तम काव्य है।

ज़िग-ज़ैग रोड की बस-यात्रा का कोई थकान नहीं ! काले-काले बादल और गोरी-गोरी बात ! धुली-धुली, घुली-घुली, खुली-खुली 'बात' बताते हरे-हरे, भरे-भरे, खरे-खरे बिरछे धरती और आकाश के बीच एक जादू-भरा अंधियारा पूर रहे थे। उस लोक में हृदय प्रेम के आलोक से भर जाता था।…

रेस्ट हाउस में खाया-पिया गया। गर्म कॉफ़ी ने स्फूर्ति का संगीत छेड़ दिया। रिमझिम-रिमझिम बूंदें पड़ रही थीं। लवलीन ने अंगुली से संकेत करते हुए कहा, "पिताजी, चलिए पहाड़ के चरण पर पड़े उस पुल से लिद्दर का सौंदर्य देखा जाए !"

सब लोग चल पड़े। छतरियां थीं ही; इसलिए, अच्छा लगा। हवा इतनी तेज़ थी कि लगता था, छतरियां आकाश में ले उड़ेंगी। पुल तक पहुंचते-पहुंचते हवा और वर्षा दोनों की तेज़ी बढ़ गई। इसलिए, लिद्दर का अनिर्वचनीय प्रवाह-सौंदर्य अधिक न देखा जा सका। लौटना पड़ा। लेकिन लौटते-लौटते सब लोग काफ़ी भीग गए। वह वर्षा छतरी की पहुंच से बाहर की थी !

आवास की व्यवस्था दिल्ली से ही की जा चुकी थी। पहुंचते ही, मेरे अतिरिक्त सबको सर्दी लगी। सेठजी कई क़िस्म के टैब्लेट्स और ब्रांडी इत्यादि लाए थे। लेकिन लवलीन न टैब्लेट्स लेती थी, न ब्रांडी। उसका उत्तम स्वास्थ्य इसी के अनुरूप था, यद्यपि यहां पर स्थिति भिन्न थी। उसने एक कप कॉफ़ी ज़रूर ली। मुझे भी दी गई। सब लोग लेट गए। थकान और सर्दी का दुहरा असर यही चाहता था। लेकिन रात अभी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

होने को थी। इसलिए, मैं सेठजी के पंजे दवाने लगा, जो काफ़ी ठण्डे हो रहे थे। टैब्लेट्स, ब्रांडी, लिहाफ़ और चम्पी का मिला-जुला असर होना ही था। पैर गर्म होते ही वे गहरी नींद सो गए। तब मैंने सेठानीजी के पंजे दवाए। उन्हें भी नींद आ गई। मैं अक्सर ऐसी ख़िदमत कर देता था। दोनों मुझे वेटे के मानिंद प्यार भी करते थे।

इसके वाद, मैं वाइविल पढ़ने बैठ गया। थका या निंदारा न था। संयोगात् अध्ययन-क्रम उस स्थल से सम्वद्ध था, जिसमें राजा डेविड सद्य: स्नाता सुंदरी वाथशेवा को देखते हैं। मैं पढ़ते-पढ़ते सोचने लगा, "धर्म ने मानव की सहज कामनाओं और दुर्बलताओं का सम्मान भी किया है..."

सहसा लवलीन का आहत-सा स्वर सुनाई पड़ा, "मारे दर्द के सर फटा जा रहा है ! एक सेरिडॉन देंगे ?"

मैं इधर लगातार लक्ष्य करता आ रहा था कि लवलीन अब पहले की तरह पीटू कहकर नहीं पुकारती और आप तथा एतद् सम्बद्ध क्रियाओं का प्रयोग करती है। अच्छा लगता था ! तुरंत उठा और टैब्लेट दी। आग्रहपूर्वक ब्रांडी पिलाई। अनुरोध किया, "क्या ऐसे कठिन कष्ट में भी सर दवाने का कर्त्तव्य-पालन न करने देंगी ?"

लवलीन का वेहद तेज़ सरदर्द उसकी उतरी हुई आकृति पर छाया हुआ था। उसने पहले ही टैब्लेट वगैरह न लेकर ग़लती की थी। कुछ न बोली। मैं सिरहाने एक स्टूल पर वैठ गया। सर दवाया। दसों अंगुलियों की हल्की रगड़ से उसे काफ़ी राहत मिली। मस्तक के दोनों ओरों की मेधसंवाहिनी नाड़ियों को दो-दो अंगुलियों से धीरे-धीरे दवाया। फिर भी, उसका पीड़ा-स्वर कम तो हुआ पर मिटा नहीं। मैं सेवाधर्म में पारंगत था। पूछा, "आपके पंजे शायद अभी तक ठण्डे हैं ?"

"हां।"

मैं बिना कुछ कहे स्टूल लेकर पैताने जा बैठा। पंजे दबाने लगा। तब तक दवाता रहा जब तक उसे पूरी नींद न आ गई। अब मुझे भी थकान का अनुभव हुआ। अपनी चारपाई पर जा लेटा। अव भावनाएं जागीं, "कितने कोमल चरण हैं ! कितना उज्ज्वल आनन है !..." किन्तु मैंने उन्हें बलवत्तर नहीं होने दिया। इस बीच वहन की भावना

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

भी उठी, पर यह स्पष्ट था कि मेरा अन्तर इसे स्वीकार नहीं कर रहा। जो हो, मैं इस बात से बहुत संतुष्ट था कि आज मेरा सेवाधर्म इतने नाज़ुक मौक़े पर भी विचलित नहीं हुआ ! और तभी मेरी की याद आ गई,…"तो क्या मेरा रूप और सौंदर्य मेरे लिए अभिशाप-मात्र ही नहीं है ? क्या उसका वरदान-पक्ष भी है ?…" किन्तु इन प्रश्नों के ऊहापोह ने शांति नहीं प्रदान की।

सवेरे सेठजी, सेठानीजी और लवलीन, सब ने मुझे बहुत-बहुत धन्यवाद दिया, "कितने कष्ट से बचाया ! कितना सुख दिया !" मुझे बहुत संतोष मिला। उस दिन पूर्ण विश्राम किया गया, क्योंकि बादल छंटे न थे, हवाएं नरम न पड़ी थीं और जब-तब बूंदाबांदी से सर्दी बढ़ गई थी। मुझे भी यह अच्छा लगा, क्योंकि थकान का अनुभव हो रहा था। रात में पूरी नींद भी न ले पाया था। दूसरे दिन लिद्दर के किनारे-किनारे चलकर किसी चट्टान पर पिकनिक का प्लैन बना। प्लैनर लवलीन के अलावा और कौन हो सकता था ! वह प्रकृति-सौंदर्य के अणु-अणु से अभिज्ञ थी… क्योंकि स्वयं प्रकृति के समग्र तत्त्वों की सुषमा का चेतन सार थी ! नौ बजे हम लोग निकल पड़े। मैं गलीचा और वह थैला लिए था, जिसमें खाना वगैरह रखा था। लेकिन भारीभरकम थर्मस फ्लास्क, जिसमें गर्म कॉफ़ी भरी थी, लवलीन लटकाए थी। मैंने लाख मिन्नतें कीं, "मेरे हक़ को इतनी बेरहमी से मत छीनिए !" पर वह न मानी तो न मानी। सेठजी ने उसका ही समर्थन किया, "कालिदास के 'रघुवंशम्' में वाल्मीकि गर्भिणी सीता को उन घड़ों में सरिता से जल भरकर नन्हें-नन्हें पौधे सींचने का आदेश देते हैं जिन्हें वे सरलता से उठा सकें, क्योंकि इससे उनका पुत्र-प्रेम बढ़ेगा ! यह है भारत की जीवन-कला, संस्कृति-कला, काव्य-कला !! सीता की संतान जिस दिन आलसी बनी उस दिन भारत, भारत न रहेगा, क्योंकि उसकी आत्मा मर चुकी होगी !!!"

मैं चकित और अभिभूत होकर उन्हें देखता-का-देखता रह गया, "धनी लोग भी महान् और विद्वान् हो सकते हैं !…"

सेठजी हंसे, "पीटू, क्या नज़र लगा के ही मानेगा !"

इस पर मेरे अतिरिक्त सब हंस पड़े।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

एक शांत स्थान पर, नदी तट के पार्श्व में, हम लोग जम गए। चट्टान एकदम साफ़ और धुली थी, पर गलीचा न होता तो सर्दी लगती। कुछ देर बातचीत, गपशप हुई। तब खान-पान। इसके बाद सभी लोग आस-पास टहलने-घूमने लगे। सेठजी सेठानीजी से बातें करते हुए कुछ दूर चले गए। शायद लवलीन के लिए लड़के से सम्बन्धित चर्चा हो रही थी। मैं नदी के प्रवाह से सटकर बैठा दाएं पंजे से उसके दुर्दम्य प्रवाह के प्राबल्य का आकलन कर रहा था। लवलीन मुझसे दसेक गज़ दूर नदी के तट पर चहलक़दमी कर रही थी।

एकाएक उसकी चीख़ सुनाई पड़ी! हतप्रभ होकर देखा...वह लड़-खड़ाते कदमों से नदी में बही-सी जा रही है! मैं तत्काल उठकर दौड़ पड़ा। वह घुटनों तक पानी में ही थी, क्योंकि किनारे पर नदी गहरी न थी, लेकिन उसकी सुकुमार देह-लता अतिशय तीव्रगामिनी लिद्दर का तटीय प्रवाह भी नहीं सम्भाल पाई थी। वह सरिता में भरे छोटे-छोटे पत्थरों से आहत होते-होते गिर भी गई। किन्तु उसकी चेतना ने एक कुछ बड़ी चट्टान से चिपट जाने का एकमात्र सम्बल पा लिया था। यह स्पष्ट था कि प्रवाह की तीव्रता में यह सम्बल क्षणिक मात्र सिद्ध होगा और यदि शरीर मंझधार में पहुंच गया तो परित्राण सम्भव नहीं।

कुछ क्षण ऐसे आते हैं, जिनमें मूल मानवत्व व्यक्ति के समग्र अस्तित्व को आच्छादित कर उसे अहं की शृंखला से मुक्त कर देता है। ऐसे क्षण प्रेम में भी प्राप्त हो सकते हैं, किन्तु इनका पूर्ण-पावन विकास रक्षण में दृष्टिगोचर होता है। इस विकास के आकाश के तले न तर्क रह सकता है, न स्वार्थ...

तब यह सब अज्ञात था। मैं यंत्रीकृत त्वरा किन्तु समयोपयुक्त सावधानी के साथ नदी में प्रवेश कर गया, गिरते-पड़ते उस चट्टान के पास पहुंचा जिसे लवलीन की ईषत चेतना ने अभी तक न छोड़ा था—सर्वप्रिय जीवन की अविचल स्पृहा चेतन, अर्द्धचेतन एवं अचेतन मस्तिष्क की वृहत्तम व्याप्ति है! मैंने उसे उठाकर अपनी पीठ पर लाद लिया। वह पूरी शक्ति के साथ मेरे शरीर से लिपट गई। कुछ पल, शायद दम लेने के उद्देश्य से, चट्टान पकड़े खड़ा रहा, तब बहुत सावधानी से किनारे की ओर

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

चला। दो बार पैर लड़खड़ाए लेकिन मैं खड़ा रहने में कामयाब रहा। दुहरे बोझ ने भी प्रवाह के प्रहार से रक्षा की। और किसी प्रकार मैं तट पर आ खड़ा हुआ !

यह सब केवल चार मिनट में हो गया ! जीवन से मरण और मरण से जीवन की दूरी कितनी कम है !! फिर भी, जीवन पर इतना विवाद, मरणपर इतना शोक···और मानव अपने को बुद्धिमान भी मानता है !!!

ये क्षण समग्र लोक-विस्मृति के थे। ये क्षण समग्र आत्म-स्मृति के थे। ये क्षण अक्षुण्ण थे !···जब ये चले गए, तभी ध्यान गया—सेठजी और सेठानीजी रोते-कलपते, चीख़ते-चिल्लाते दौड़े आ रहे हैं, मेरे घुटने छिल गए हैं और कम-से-कम तीन स्थानों से खून निकल रहा है। लवलीन होश में आ रही है···

सेठजी ने कहा, "बेटा, मैं तुम्हारे कर्ज़ से कभी छुटकारा नहीं पा सकूंगा !"

सेठानी जी रोने के कारण बोल तो न पा रही थीं, पर मेरे सिर पर हाथ फिरा रही थीं···

और लवलीन साश्रु लोचनों से मुझे निहार रही थी, निहार रही थी···

और मैं सोच रहा था, "जो लोग किसी की प्राण-रक्षा करते हैं, वे कितने सौभाग्यशाली होते हैं !" पहली बार मुझे अपने-आप पर एक अभूतपूर्व शान्त-गहन गर्व का अनुभव हुआ।

उसी वक्त लौटना पड़ा, क्योंकि घाव ठंडे होने पर बहुत पीड़ा देते हैं—उन्हें अपनी उपेक्षा किञ्चित-मात्र सह्य नहीं है। साथ में कोई दवा-दारू नहीं थी, मरहम-पट्टी का सामान नहीं था। यूं तो लवलीन की कोहनियाँ भी थोड़ी-बहुत छिल गई थीं, पर मुझे ज्यादा लगी थी। तेजी से चला। आश्चर्य हुआ कि सेठजी और सेठानीजी की गति तीव्र हो गई थी ! लवलीन प्राण की पुनर्प्राप्ति के अपरिसीम और अनिर्वचनीय आनन्द के कारण क्षिप्रता से चली आ रही थी। आवास में पहुंचने से पहले एक डाक्टर से मरहम-पट्टी कराई गई, इन्जेक्शन लगवाए गए। आवास पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

ब्राँडी पिलाई गई। मैं लेट गया। सेठजी ने कहा, "बेटा, सिर दवा दूं ?"

सेवा-धर्म मानव की महत्तम उपलब्धि है। इससे बढ़कर कोई वशीकरण नहीं। सोचते-सोचते भी मैंने औचित्य की अवहेलना नहीं की, "मैं बिल्कुल ठीक हूं। तकलीफ तो बेचारी लवलीन को हुई।"

"मैं बिल्कुल ठीक हूं, लगा आपको अधिक है।" लवलीन चिल्ला-सी पड़ी।

और मेरे मुंह से निकल पड़ा, "अगर मैं तुम्हें बचाने में मर भी जाता तो वह सच्चे अर्थों में तर जाना होता !" मैं रुक गया, क्योंकि वाक्य में आवेग का अतिरेक था और, न-जाने कैसे, पहले मिस की जगह लवलीन और अभी-अभी 'तुम्हें' बोल गया था।

सेठानीजी लगातार रोए जा रही थीं। अब आईं और सिर पर हाथ फिराने लगीं। मैंने प्रार्थना की, "माताजी, समय हंसने का है ! रोने का कारण समझ में नहीं आ रहा ?"

कुछ देर बाद मैं सो गया। कितना सोया ? पता नहीं। पर जब जगा तब का पता है। शाम हो चुकी थी। सेठजी सेठानीजी के साथ नित्य नियमानुसार टहलने गए थे। वे हम दोनों को सोता छोड़कर गए थे। लवलीन जाग चुकी थी।

मुझे जागरण-पूर्व के क्षणों में लगा, जैसे कोई कोमल कर मेरे कठोर पैरों के पंजे दबा रहे हैं ! स्वप्न है ?…लेकिन आँखें खुलीं तो देखा, यह स्वप्न न था और कर लवलीन के हैं !

हड़बड़ाकर उठ बैठा, "यह क्या कर रही हैं ?"

"ऐसा क्यों पूछते हैं ?"

मैं चुप, स्तब्ध, साश्रु…

"क्या चाहते हैं कि इतना ऋण चढ़ाते जाएं कि सौ जन्मों में भी न उतार पाऊं ?"

मैं ज़ोर से रो पड़ा।…

लवलीन भी साश्रु हो गई।…

कोई कुछ न बोल सका।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

६. मकड़ी का जाला

सब लोग चाय पी रहे थे। लवलीन बता रही थी, "मैंने मुश्किल से एक-एक बालिश्त की गहराई में प्रवेश किया था कि टाँगें काँप गईं और मैं लड़खड़ाने लगी। सोचा था, दो गज दूर जो काली-सी, चिकनी-सी, धुली-सी, नहाई-सी चट्टान है, उस पर बैठकर एक-दो गीत गाऊंगी, लेकिन 'अपने मन कुछ और है कर्ता के कुछ और !' जो भी हो, जिस चट्टान को लक्ष्य कर जल में घुसी थी, उसने छाती से लगाकर बचाया जरूर ! सोचती हूं, कितना सुन्दर समा था !"

सेठजी ने चाय का घूंट गले से नीचे उतारते हुए कहा, "बहुत सुन्दर वस्तुएं बहुत दूर से ही मनमोहक और लाभकर हो सकती हैं। पास जाने पर वे अभिभूत करती हैं, विनाश करती हैं, समाप्त करती हैं !" वे हँसे।

सेठानीजी बोलीं, "पीटू न होता तो मेरी प्यारी, फूल-सी बेटी लवलीन को लिद्दर अपने में लीन कर लेती ! हाय, इतनी सुन्दर बाला को निगलने में उसे शर्म भी न आती !...और कौन जाने, शायद उसने लवलीन की सुन्दरता और कोमलता पर तरस खाकर ही उसे छोड़ दिया हो !"

लवलीन ने एक छिपती-छिपती, झिपती-झिपती, दिपती-दिपती दृष्टि मुझ पर डाली और कुछ न बोली, क्योंकि संयोगात् मैं उसी को निहार रहा था। इधर ट्राँज़िस्टर से मधुर स्वर गुंजरित हो रहा था—

छोटी-सी बात मोहब्बत की और वो भी कही नहीं जाती;
कुछ वो शर्माए रहते हैं, कुछ हम शर्माए रहते हैं !

हम दोनों को ठीक-ठाक होते-होते तीन दिन लग गए। इसके बाद फिर घूमना-घामना शुरू हुआ। लेकिन चूंकि मेरी पट्टियाँ अभी नहीं उतरी थीं, इस-लिए, दूर की पेंग नहीं मारी जा सकी। पर्याप्त सुविधाएं और पहलगाम का विश्राम ! हम सब स्वस्थतर और सुन्दरतर लगने लगे। शीत स्वास्थ्य का सर्वोपरि मीत है। उसकी कृपा से पश्चिम ने कितना उत्कर्ष किया है !

यथासमय हम लोग दिल्ली आ गए। जीवन की गति पूर्ववत हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

गई। यात्रा जीवन की जड़ता मिटाती है, इसमें चैतन्यता लाती है, उसे अनुभव-सम्पन्न करती है। धीरे-धीरे जीवन बिताना अपने-आपमें एक उपलब्धि हो सकता है, किन्तु उसमें त्वरा यात्रा से ही आती है।

एक दिन शाम को चावड़ी बाजार से होकर गुज़र रहा था कि परवेज़ मिल गया, "आपने तो ईद के चाँद को भी कहीं पीछे छोड़ दिया !"

"क्या करें…?"

"प्राईवेट होम सर्वेन्ट छोटे-मोटे छोकरे हुआ करते हैं, तुम जैसे गबरू रँगरूट नहीं…।"

"मैं अच्छी अंग्रेज़ी जानता हूं, हिन्दी जानता हूं, पर सर्टीफिकेट…"

"पांच सौ में पंजाबयूनिवर्सिटी के बी.ए. का सर्टीफ़िकेट दिला सकता हूं। मेरे एक दोस्त हैं सरदार गुरमेलसिंह मलिक…।"

"हेरा-फेरी का धंधा अपने बूते का नहीं…।"

"यह न भूलो कि तुम भारत में रहते हो, जहां हेरा-फेरी ही असली धंधा है, क्योंकि इसी में सबसे ज्यादा लोग लगे हैं। पंजाबियों का नमूना सामने है, जिनकी तारीफ़ के पुल बांधे ही जाते रहते हैं। पंजाब का पंजाबी भी सरहद की स्मगलिंग और तिजारत की तिकड़मबाज़ी से मालामाल हुआ है, बाकी मुल्क में बसा पंजाबी भी इन्हीं हुनरों के बल-बूते पर मज़े मार रहा है। अगर बढ़िया गाय छाप माल देखा तो चटपट घटिया ज़ेबरा छाप माल निकाल दिया। माल दिल्ली या लुधियाने में बनाया, लेबल जापान या अमेरिका का चिपका दिया ! ताक़त की दवाओं के नापाक और बेशर्मी-भरे धन्धे पर तो पंजाबियों का एकाधिकार है ही—जिधर देखो, उधर लोहू गरमाने वाले बोर्ड और दिलकश पोस्टर ! इधर, ये पट्ठे ज्योतिष पर भी पिल पड़े हैं ! किताबें छापने-बेचने में इनके आ घुसने से अदब बे-अदब बन चुका है ! जहां पंजाबी हों वहां क्यू लग जाना नामुमकिन-जैसा हो जाता है, बोलचाल की नज़ाकत-नफ़ासत खुदकशी कर लेती है, हया-शर्म काफ़ूर हो जाती है। फिर भी, हर जगह इनकी तूती बोलती है। इन की वजह से भारत के अन्य निवासी टके सेर बिक रहे हैं, क्योंकि हर महाज़ पर इनकी लूट-खसोट में इज़ाफ़ा ही होता दीख रहा है। आबादी बढ़ाने में सरदारों का मुक़ाबला मुसलमान भी नहीं कर पा रहे !…खैर, अगर तुममें

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पंजाबियों का-सा दम-खम नहीं है तो किसी अच्छी-सी नौकरी की तलाश करो। यहां क्या धरा है? ज़िन्दा रहने पर बुढ़ापा जरूर आता है। तब क्या करोगे? आज, ख़ुदा न करे, कोई बड़ी बीमारी हो जाए तो अस्पताल के अलावा कोई जगह नसीब नहीं हो सकती। शादी-ब्याह···"

"उसका इरादा ही नहीं है।"

"ऐसे गुज़र हो जाएगा?"

"क्यों नहीं?"

"यार, हिजड़े तक औरत को देखकर आंख मारने लगते हैं; फिर, तुम तो पूरे मर्द लगते हो—जवांमर्द!"

मैं चुप रहा। वह फिर बोला, "कोई ठीक-ठाक नौकरी कर लो। चाहे चपरासी की ही क्यों न हो! प्रॉविडेंट फंड कटेगा तो आगे का डर कुछ कम हो जाएगा। बीमा कराने पर आगे का डर बहुत कम हो जाएगा। पेंशन-वाली नौकरी मिल गई तो आगे का डर बिल्कुल ख़त्म हो जाएगा। नौकरी करने पर भी चाहोगे तो ऊपर से···।"

"जो तरीक़े बताए थे, वे मैं नहीं अपनाना चाहता···"

"बड़ी अच्छी बात है। लेकिन कई बार वे तरीके अपनाने ही पड़ते हैं नहीं तो जीना हराम हो जाता है।" और वह 'खुदा हाफिज़' कहकर चला गया।

वह तो चला गया लेकिन मेरे सिर भविष्य-चिंता की बला डालता गया। मुझे उसकी आज की बातों में कुछ-कुछ सार लगा। जितना ही सोचता, पेचीदगी बढ़ती जाती और मैं उलझता जाता। सरदर्द होने लगा। आकर अपनी कोठरी में लेट गया। सेठजी अपने बड़े बेटे और सेठानी जी के साथ किसी शादी के सिलसिले में बम्बई गए थे। घर पर सिर्फ़ अरुण और लवलीन थे। काम न था, क्योंकि अरुण नावल पढ़ रहा था और लवलीन स्वेटर बुन रही थी। जीवनराम घर जा चुका था। मैं चारपाई पर पड़ा-पड़ा किसी ऐसे काम के बारे में सोच रहा था, जिसमें पुरुषत्व का गौरव भी सुरक्षित रहे और भविष्य का भय मस्तिष्क के टुकड़े-टुकड़े न करे। कुछ समझ में न आ रहा था···

अचानक कुछ आहट-सी हुई। बत्ती जलाई। उठकर दरवाज़ा खोला,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

तो देखा लवलीन खड़ी है ! ऐसा अवसर पहले कभी न आया था। हतप्रभ रह गया। कुछ पल बाद बोला, "आपने तकलीफ क्यों की ? आवाज़ दे देतीं तो ख़ादिम फ़ौरन से पेशतर ही हाज़िर हो जाता…"

"तकल्लुफ़ और तहज़ीब, नज़ाकत और नफ़ासत सीखने आई हूं—खैर, छोड़िए—मैं माप लेने आई हूं!" और वह मेरे शरीर का लेखा-जोखा करने लगी, "यह ऊन पसंद है ? मैंने यह सोचकर पसंद की थी कि भा जाएगी ! बोलो ! बोलो ?"

मैं कुछ न बोल सका। आंखों में आंसू आ गए। उसने पूछा, "तबियत नासाज़ लगती है…"

"कुछ नहीं ज़रा-सा सरदर्द है जो घंटे-भर की नींद मारते ही उड़न-छू हो जाएगा—ऐसा तो होता ही रहता है !"

लवलीन ने बगल की कोठरी देखी। ड्राईवर नहीं था। बोली, "मेरी एक इल्तजा मंजूर होगी ?"

"इल्तजा मेरा हक़ है, हुक्म आपका फ़र्ज़ है !"

"चलो यही सही !"

"तो भूमिका कैसी ?"

"सर दबाने दोगे ?"

"क्षमा…"

"क्षमा बीच में कहां से आ कूदी ?…"

मैं चुप रहा।

"तो लेट जाओ और मुझे सिर दबाने का वरदान दे डालो !"

पता नहीं कैसे, मेरे मुंह से निकल पड़ा, "अरुण…"

"ओह !" लवलीन रुक गई। कुछ पल बाद बोली, "टैबलेट ले आऊं ?"

"एक तो दर्द मामूली है, दूसरे टैब्लेट का असर अच्छा नहीं होता—लगता है, जैसे दिमाग़ सूख गया है। टैब्लेट्स मैंने भी रख छोड़े हैं, लेकिन…"

"गर्म दूध पियोगे ?"

"ख़ूब खा-पी चुका हूं। आप चिंता न करें—हम तो जंगल के दरख्त

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हैं, जो बिना किसी माली की देख-भाल और कांट-छांट के ही बढ़ते रहते हैं। यों, मैं बेहद मशकूर हूं !" पता नहीं कैसे, मैंने झुककर उसके पैर छू लिए ! वह पीछे हटी। कुछ पल खड़ी रही। तब चली गई। मेरी आंखों से आंसू झर चले। बड़ी देर तक खड़ा-का-खड़ा रह गया। सोचा, "परमात्मा ने मुझे इतने दुख और इतने सुख दे डाले हैं, जितने मैं सम्हाल नहीं सकता ! जब मैं दुख के लिए ही बना हूं तब सुख क्यों देते हैं ? मान लो वह मेरा सिर दबाने लगती और अरुण आ खड़ा होता ! मैं तो खैर अपमानित करके तुरंत ही निकाल दिया जाता, और उससे होता ही क्या,क्योंकि सड़क के ठीकरे को ठोकरें ही मिलती हैं, लेकिन लवलीन का कितना अपमान होता, उस पर कैसा लांछन लगता, सेठजी क्या सोचते, सेठानी जी 'माता जी' शब्द से किए गए छल पर क्या अनुभव करतीं ?···?"

मेरा सरदर्द बढ़ गया। मेरे पास एनासीन के टैब्लेट्स थे। दो ले लिए, पर कोई असर होते-होते ही होता है। दर्द से तिलमिलाता-छटपटाता करवटें बदलता रहा। दरवाज़ा बंद करने तक का ख़याल न कर सका। बत्ती भी जलती की जलती रही। दरअसल दिमाग में जो तूफ़ान मच रहा था, उसके मुकाबले सरदर्द कुछ भी न था। बार-बार यही ख़याल साल रहा था कि कहीं अपमानित निष्कासन का प्राणांतक अवसर न आ जाए !···इसी उधेड़बुन में करवटें बदलते-बदलते कब आंखें लगीं, पता नहीं ! ज़िन्दगी मौत से पहले सिर्फ़ जीना जानती है।

आधी रात बीत चुकी थी, जब आंखें खुलीं। देखा, तो कमरे में घुप् अंधेरा है, दरवाज़े बंद हैं, और मेरे सिरहाने बैठी लवलीन धीरे-धीरे सर दबा रही है ।

मैंने बहुत धीरे से कहा, "आप नहीं जानतीं कि आप क्या कर रही हैं। सोचिए, अगर अरुण आ खड़ा हो तो क्या होगा ? मैं अपमानित किया जाऊंगा, सेठजी से विश्वासघात करने वाला माना जाऊंगा, सेठानी से छल करने वाला कमीना कहा जाऊंगा,—लेकिन इस सबसे करोड़ों गुनी तकलीफ यह होगी कि आप पर लांछन लगेगा !···मैं बहुत अभागा इंसान हूं। न माँ, न बाप, न भाई, न बहन; न नाते, न रिश्ते; न जात, न पांत; न ज़र, न ज़मीन; न हुनर, न सनद ! आप आसमान का सितारा हैं तो मैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

धरती का ज़र्रा भी नहीं !

मैं सुबक-सुबक कर रोने लगा, "मैं न पत्थर का बुत हूं, न काठ का कुंदा। आपको देखकर जो खुशी होती है,···काश, उसका बयान मुमकिन होता !···पर मैं मजबूर हूं, मजबूर—एकदम, एकदम मजबूर !···"

मैं रुक गया, क्योंकि आंसू की एक बूंद मत्थे पर आ गिरी थी···

"जिस क़ौम में प्यार जात-पांत, धन-दौलत और ताक़त-शोहरत के आईने में ही देखा जाता हो, उसमें मुझ-जैसे नाचीज़-नाकाम का उससे महरूम रहना ही नियामत है। मैं तो किसी भिखारिन के लायक भी नहीं, फिर आप तो रूप की रानी भी हैं, रंग की भी, धन की भी, और विद्या की भी !"

लवलीन की आंखों से आंसू टपक रहे थे। वह चुपचाप सर दबाए जा रही थी। मुझे लगता, अरुण अब आया, अब आया ! फिर भी, प्रवृत्ति की दुर्दम्य प्रेरणा से अभिभूत होकर, उसके हाथों को अपने हाथों से दबाते हुए बोला, "संसार बहुत क्रूर है लवलीन ! वह भावुकता को कभी नहीं क्षमा करता, भले ही दण्ड देकर बाद में सहानुभूति दर्शा देता हो। सोचिए, अगर अरुण आकर खड़ा हो गया तो क्या होगा ? कृपया···" मैं 'चली जाइए' न बोल सका।

"जाती हूं पीटू !···लेकिन मुझे तुमसे प्यार हो गया है !" वह चुप हो गई। फिर भी, चलते-चलते कहती गई, "यह प्यार अचानक नहीं हुआ, जिसमें सोचने-विचारने का अवसर ही नहीं मिलता, बल्कि फ़ेज़-बाई-फ़ेज़ हुआ है, जिसकी जड़ें बहुत गहराई तक जा चुकी हैं। जो तुमने कहा, वह ठीक है; मैं भी यह सब जानती हूं, लेकिन मैं भी एकदम मजबूर हूं···मुझमें और तुममें फ़र्क़ यह है कि मैं नारी हूं ! नारी जीवन में केवल एक बार प्रेम करती है। नारी जीवन में केवल एकबार प्रेम कर सकती है। यों, वह कई पुरुषों से सम्बद्ध हो सकती है, लेकिन प्रेम कई बार नहीं किया जा सकता।"

वह चली गई। मैं तन,मन और मस्तिष्क से एकदम निश्चेष्ट-सा पड़ा रहा, सोचता रहा, "यहां रहने का अर्थ है, लवलीन के अमूल्य जीवन का नाश। अभी चला गया तो कुछ दिनों में यथार्थ भावुकता पर विजय

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्राप्त कर लेगा। सेठजी से बातचीत करूंगा। प्रार्थना करूंगा यदि कभी कोई जांच-पड़ताल आ पड़े तो कह दें कि यह नौजवान शैशवावस्था से ही मेरी सेवा में रहा है, इस अनाथ शिशु को मैंने ही पाला है। यह बहुत आवश्यक था। यदि फेरर का काण्ड,…" मैं घबरा गया !

सेठजी तीन दिन बाद आए। पूरी तैयारी के साथ, दूसरे ही दिन, यथा समय उनके पैर दबाते-दबाते मैंने कहा, "सेठजी, अब मैं जवान हो गया हूं—चाहता हूं कि जीवन के संग्राम में कूद पड़ूं !"

"अच्छा !" उन्होंने मुझे ध्यान से देखा।

"यह एक बेटे की एक पिता से प्रार्थना-मात्र है। आपके आदेश और आशीर्वाद मेरे पथ-प्रदर्शक और संबल बन जाएंगे। यदि कोई विपत्ति पड़ी तो शरण में आ जाऊंगा, जैसे जहाज का पंछी उड़कर फिर जहाज़ पर आ जाता है…"

"यहां कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई ?"

"बिल्कुल नहीं। मैं वैसे ही जाऊंगा, जैसे एक पुत्र विकास-पथ पर जाता है…"

"मन रोकता है, परंतु मस्तिष्क कहता है कि 'हां' ही कहूं। मिलना और बिछुड़ना प्रकृति का नियम है।"

"एक विशेष प्रार्थना है। यदि कभी आवश्यक हो जाए तो इतना कह दीजिएगा कि इसे मैंने अनाथ शिशु के रूप में पाया था,पाला था…"

सेठजी बात की तह में पहुंच गए, "ओह, ज़रूर ज़रूर !"

"मैं दिल्ली में ही मुकद्दर आज़माऊंगा। आपकी छत्रछाया में सातसौ रुपए डाकघर के बचत खाते में जमा किए हैं। एक बक्सा है, जिसमें कुछ सामान है। बक्सा और पासबुक वगैरह आपके घर पर ही…"

"यह घर तुम्हारा अपना है।"

"तो मैं आज्ञा चाहूंगा !"

वे चकित होकर उठ बैठे, "अभी ही !"

"हां, माताजी, अरुण—और…लवलीन…को मालूम हो गया तो शायद…"

सेठजी गम्भीर हो गए, "मैं आशीर्वाद देता हूं। कभी घबराना नहीं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

विपत्तियां जीवन की मूल सम्पत्तियां हैं। वे अनुभूति की विभूति देती हैं। बहुत थपेड़े लगेंगे, लेकिन तरक्क़ी ज़रूर होगी, क्योंकि तुम एक अहम और खास क़िस्म के मर्द हो।"

मैंने इधर-उधर देखा। माताजी मंदिर गई थीं—कोई विशेष आयोजन था। अरुण एक मित्र के साथ दोपहर का समय शतरंज पर बिता रहा था। और लवलीन वही स्वेटर बुन रही थी! आंसू आ गए। मैंने सेठजी के पैर छुए और चुपचाप चल पड़ा।

दोपहर ढल रही थी। तीन का टाइम होगा। मेरे पैंट की जेब में नब्बे रुपये थे। थैले में ज़रूरी समान था। पैंट और शर्ट साफ-सुथरे थे। जूते पॉलिश से चमक रहे थे। शरीर स्वच्छ था। किसी अच्छे घराने और ख़ानदान का सीधा-सादा, सरल-तरल तरुण लग रहा था। आशाएं और महत्त्वाकांक्षाएं गतिशील बना रही थीं। परवेज़ के परामर्श उत्तेजित कर रहे थे। सेठजी का सहारा आश्वासन दे रहा था। मैंने बस पकड़ी और एक फ़ाइव-स्टार होटल में जा पहुंचा। बस की प्रतीक्षा इत्यादि के कारण कोई पाँच बजे पहुंच पाया था। पूछताछ में जो दो अल्ट्रा-मॉडर्न डालडा हसीनाएं देखीं तो दिल बैठ गया। सोचा, 'अल्ट्रा' का हिन्दी अर्थ 'उल्टा' ही वन सकता है! पश्चिम ने संसार को एक कृत्रिम और बाह्य सभ्यता का कलह-क्षेत्र बना दिया है। बहरहाल, उनसे प्रार्थना की, "मैनेजर साहब से मिलना चाहता हूं।"

"कोई एपोइंटमेंट···?"

"नहीं, कुछ मिनट्स ही लूंगा!"

"मुश्किल है···"

"आपकी मेहरबानी हो तो कुछ भी मुश्किल नहीं हो सकता!"

एक ने दूसरे को कनखियों से देखा, जो ठीक उसी पल होठों पर लिपस्टिक फिराकर और शीशे में अपना मुआयना करके फारिग हुई थी। दोनों शुद्ध कॉलगेट ब्रांड फ़िल्मी मुस्कान में मुस्कराईं। तब एक ने फ़ोन पर नम्बर मिलाए और बोली, "हैलो सर, एक कद्दावर और मजबूत, खूबसूरत और चुस्त नौजवान आपसे सिर्फ कुछ मिनिट्स बात करना चाहता है।···एस, बॉस, ए रेयर फ़िगर!"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

बॉस ने क्या कहा, यह मुझे सुनाई नहीं पड़ा। लेकिन वह युवती उठ कर खड़ी हो गई और चल पड़ी, "आइए !" मैं पीछे हो लिया। विलास और ऐश्वर्य के इंद्रजालपूर्ण जगत का एक अंश देखता-देखता ठेठ पंजाबी साहब के सामने जा पहुंचा। उनका ढाँचा हाईड्रोजन बम का स्मरण कराता था। रंग और आकृति में ईरान, तूरान और हिन्दुस्तान का अजीब गड्डुम-गड्डु ! उन्होंने रोबीली आवाज़ में पंजाबी ढर्रे की अकारांत अंग्रेजी के माध्यम से पूछा, "क्या काम है ?" इसके साथ-साथ वे मुझे अपनी गहरी तजुर्बेकार नज़र से मापने-तोलने लगे।

"सर, कोई काम चाहता हूं।"

"योग्यता ?"

"अंग्रेजी और हिन्दी बखूबी बोल, लिख और पढ़ सकता हूं।"

"कोर्स किया है ?"

"नहीं।"

"सर्टीफ़िकेट्स एण्ड टेस्टीमोनियल्स ?"

"नहीं।"

"किसी की ज़मानत ?"

पल-भर को सेठजी का स्मरण आया, पर मैं अपने बल पर ही मंज़िल पर पहुंचने की कसम खाए बैठा था, "नहीं।"

"नहीं, नहीं, नहीं ! तो फिर, जवाब में भी 'नहीं' !" और वे एक फ़ाइल देखने लगे।

"सर, मैं बहुत मेहनत और ईमानदारी से काम करूंगा।" मैंने अपमान के ज़हर का तीखा घूंट पीते हुए कहा।

"यह दुनिया के अच्छे होटलों में एक है—यहां ऐरे-गैरे नत्थू-खैरे नहीं रखे जा सकते !"

यह घूंट बेहद कड़वा था। मैं परास्त होकर मन-मन-भर के पैरों वापस लौट चला। पास के एक दूसरे बड़े होटल में पहुंचा। वहां प्रश्नोत्तर का अधिक अवकाश न था। 'धर्म-निरपेक्ष' उत्तर अविलम्ब ही प्राप्त हो गया, "यह एक मुस्लिम होटल है। यहां सिर्फ़ मुसलमान रखे जाते हैं। जब हिन्दू और सिख होटेल्स में मुसलमान सिर्फ़ मजबूरी पर रखे जाते हैं,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

क्योंकि मुग़लिया डिशेज़ तैयार करने के लिए सदियों से चली आ रही ख़ानदानी महारत लाज़िमी है, तब मुस्लिम होटेल्स में हिन्दू और सिख भी मजबूरी में ही रखे जा सकते हैं—और इस वक्त ऐसी कोई मजबूरी नहीं है !"

"मैं ईसाई हूं, हालांकि किसी धर्म से द्वेष नहीं रखता।"

"पर मुसलमान तो नहीं हो—'ला इल्लाह इल्लिल्लाह मुहम्मदुर्रसूलिल्लाह' पर यकीन रखने वाले तो नहीं हो !" यह अंतिम निर्णय देकर शेख़ करीमुद्दीन साहब ने "अल्लाह-लिल्लाह रब्बुल आलमीन्" का मंत्र-पाठ किया, मानो काफ़िर से वातचीत का प्रायश्चित्त कर रहे हों।

इन बखेड़ों में रात के आठ बज गए। भूख लग आई थी। रात में सोने की समस्या भी अब मुंह वाए खड़ी थी ! सोचा, "जामा मस्जिद एरिया में ढाबे सस्ते हैं और मस्जिद की सीढ़ियाँ हजारों की शैयाएं हैं ही ! बस, बस पकड़ी और जा पहुंचा। खाना अजीब लगा, जिसमें सिर्फ एक—मिर्च का—स्वाद ही था ! झख मारकर खाना पड़ा, क्योंकि पैसे तो पड़ने ही थे। हाँ, रेट माकूल था। खा-पीकर सीढ़ियों की ओर चला। वहाँ काफी लोग मौजूद थे। मुश्किल से एक ढंग की जगह मिली। तौलिया निकालकर विछा ही रहा था कि एक खिंचा-सा, भिंचा-सा इन्सान आ खड़ा हुआ और मुंह पर बीड़ी का धुआं मारते हुए खड़खड़ी आवाज़ में बोला, "कौन है वे, जानता नहीं कि ये जग्गा बुन्दू उस्ताद की है, जो विछाए ही जा रिया है ?"

इच्छा हुई कि उठकर एक तगड़ा तमाचा रसीद करूं और गरज पड़ूं, "साला भुनगा भी चौंडा होना जानता है ! क्या शाहजहाँ का लख्ते-जिगर है ?" लेकिन ज़ब्त करना पड़ा, क्योंकि उसके लहजे से यह ज़ाहिर था कि बुन्दू उस्ताद कोई दम-खम का बन्दा होगा। नरमी से बोला, "बिरादर, मुझे मालूम नहीं था, क्योंकि जगह खाली पड़ी थी, माफ़ करना !"

वह तर-ब-तर और सतर-पर-सतर हो गया। पुनः बीड़ी नंबर ७०७ के तेज धुएं का एक करारा लच्छा मेरे मुंह पर छोड़ते हुए बोला, "कोई बात नहीं है, तू भी पड़ा रह, मैं भी पड़ा रहूंगा ! नया लगता है, नहीं तो बुन्दू उस्ताद को आधी देहली जानती और मानती है ! अठारह साल से

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

इन्हीं सीढ़ियों पर चैन की बंसी बज रही है ! वेटा, ये वो सीढ़ियां हैं, जिन पर सरमद शहीद लेटता था; जिन पर कल्लू हक़ीर बैठता था; जिन पर आबरू और आरज़ू, मीर और सौदा, मज़हर और तावां, ग़ालिब और मोमिन शेर सुनाते थे !"

"तो यही फटियल बुन्दू उस्ताद है !" मैंने सोचा और बिना कुछ बोले तौलिया बिछाकर लेट गया। थैले के पट्टे को दाईं बांह के घेरे में डाला और तब उसे तकिया बना लिया—दुहरी हिफ़ाज़त ! जूते तौलिए के नीचे छिपाकर रख लिए। कुछ दूर दो बन्दे लेटे-लेटे बातें कर रहे थे। ध्यान गया, "अमां, आजकल औरत मर्द के ऊपर चढ़ रही है !" उत्तर भी सुना, "लेकिन बर्ख़ुर्दार, कुदरत ने यह ज़ाहिर कर दिया है कि उसे भी असली लुत्फ़ तब आता है जब मर्द ऊपर हो !" इस पर हंसी का कोहराम मच गया। बुन्दू उस्ताद ने अपने फटे गले को भी फाड़कर पुरज़ोर दाद दी, "अब्बाजान, तुमने लाख टके की बात कही है ! औरत भी इसे नहीं काट सकती ! दरअसल, अल्लाह ने मर्द को औरत के ऊपर रखा है। सोहबत के ही नहीं, औलाद के मामले में भी यही बात दिखाई पड़ती है—औरत पैंतालीस साल में ही टांय-टांय-फिस्स, लेकिन मर्द पर उम्र का असर नहीं ! तभी तो ख़ातिमुन्नबी रसूलिल्लाह ने, अल्लाह ताला के हुक्म के मुताबिक, मर्द को तरजीह दी है।" एक नई और कुछ ज्यादा गहरी आवाज़ आई, "औरत-मर्द के दर्जे में कशमकश पैदा की जा रही है, जिसका अंजाम यह होगा कि औरत की जीभ पहले से भी ज्यादा चलेगी और मर्द का हाथ नए-नए ज़ोर दिखाएगा !" मैं और सुनता, लेकिन बहुत थका था, इसलिए नींद आते देर न लगी। रात-भर आंखें न खुलतीं, अगर बीच में सर्दी न लगती। थैले से चादर निकालते समय पता चला कि जूते गायब हैं ! दिल धड़क गया, हिम्मत पस्त हो गई, "यह पहले दिन ही ! सर मुंडाते ही ओले पड़े ! प्रथम ग्रासे मक्षिका-पातः ! इस आग़ाज़ पर अंजाम कैसा होगा ? आगे-आगे देखिए होता है क्या ?"

सोचा, उस्ताद ने ही झाड़ लिए होंगे ? लेकिन वे बगल में पड़े फ़र्रा-टेदार खर्राटे ले रहे थे ! अब सोचना पड़ा, अच्छा-ख़ासा घर मिल गया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

था, जिसे छोड़कर भाग खड़ा हुआ ! जब विपत्ति आती है तब बुद्धि जाती है। कहीं 'लौट के बुद्धू घर को आए' वाली बात न हो ?थूककर चाटना न पड़े ? लेकिन इस बिंदु पर मन मज़बूत था। या तो कुछ करूंगा या मरूंगा ! मेरी नाचीज़ ज़िन्दगी इतनी अहम नहीं कि मरने से डरूं ! मरने से वह शान्ति ही पाएगी—खोएगी कुछ नहीं !

तड़के, गजरदम बुन्दू जागा। मैंने अपना रोना रोया तो बोला, "बेटा, नए हो, नहीं तो सस्ते-से-सस्ते चप्पल पहनकर ही यहाँ आने की जुर्रत करते ! चोरी, खैर, उनकी भी होती, पर ज्यादा मलाल न होता। चलो, इसे ठहरने का किराया समझो ! ताज्जुब की कोई बात नहीं, क्योंकि सारी सीढ़ियों की टोटल डेली चोरियां औसतन दस जोड़े चप्पल-जूतों और दो थैलों की बैंठती है ! हिक़ारत है, लोग अल्लाह के मुक़ाम को भी नहीं बख्शते !"

एक बड़े मियां हथेली पर तम्बाकू रगड़ रहे थे। ताल दी तो मुझे दनादन छींक आने लगीं। फिर भी, कानों ने ग्रहण किया, "अगर अल्लाह खुद आकर इन सीढ़ियों पर सो जाए तो उसकी भी जूतियां सही-सलामत न बचें !"

कमीज़ ऊपर उठाकर बनियान के चीलर मारने वाले छोटे क़द के दूसरे बड़े मियां बोले, "भाईजान, आसपास के क्यूरियो वाले उनको लाखों में खरीदकर करोड़ों में बेच दें !"

इस पर बुन्दू उस्ताद इतना हंसे कि उनकी आँखें भर आईं।

दूसरा दिन भी ऐसे ही भटकते-भटकते बीता। जहाँ जाता, सनद या जमानत की बात ! कुछ नीचे उतरा। चपरासी के काम की बात चलाई। फिर भी, प्रत्यय की समस्या बनी ही रही। रात होते-होते सोने की समस्या सामने आ खड़ी हुई। सस्ते चप्पल ले लिए थे। लेकिन वे भी रोज खोते तो कहाँ से आते रहते ? सोचा, गाँधी मैदान के आसपास सो जाऊंगा, क्योंकि स्टेशन पर ख़तरा कहीं ज्यादा था ! खाने के लिए फव्वारे में होटलों और ढाबों की कमी नहीं है। एक होटल में घुसा। किन्हीं भारी-भरकम अधबूढ़े सरदारजी का था। मैंने खाने के बाद काम की चर्चा चलाई। उन्होंने घूरकर देखा तो मुझे लगा, उनकी निगाहें जरूरत से

 29586

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

ज्यादा नोकीली हैं ! बुलंद आवाज़ सुनी, "बाश्शाओ, काम तो है लेकिन अगर कर सको !" और उनका आनन एक बीभत्स सरसता से विकृत हो गया।

मेरी मजबूरियों ने पूछा, "क्या ?"

"बैरे का ! और सारे काम भी।"

"मसलन ?"

"वो तो करते-करते ही समझ सकोगे !"

"क्या मिलेगा ?"

"खाना-पीना, ठहरना-वहरना और पचास रुपए महावार तनख्वाह। टिप तुम्हारी किस्मत जाने ! ड्यूटी चार सवेरे से रात बारह बजे तक ! हाँ, अगर सिर्फ टिप पर रहो तो काम जितना तुम चाहो उतना !"

मैं कुछ झिझका तो, लेकिन परिस्थितियां विवश कर ही बैठीं, "मैं एक गैरतमन्द इन्सान हूं !"

"फ़िकर न करो, यह शरीफों का होटल है। रोज़ गुरुद्वारे जाता हूं, मत्था टेकता हूं, सवा रुपया चढ़ाता हूं !" और वे 'जपुजी साहब' का पाठ-सा करने लगे।

मुझे लगा, मैंने उन्हें गलत समझा था। दूध का जला छाछ भी फूंक-फूंककर पीता है। सरदारजी को गहराई से देखा, क्विटली ढाँचा, ऊंचा क़द, अविभाजित भारत में पंजाब के नक्शे-जैसा विशाल तोंद ! देखता ही रह गया !

दूसरे दिन से काम की बात पक्की हो गई। मैं बैठा रहा। थोड़ी देर बाद उन्हीं के जोड़ की एक सरदारनी जी हाथ में कपड़े से ढंका थाल लेकर आ खड़ी हुईं। उनका रंग काला था यद्यपि गहरा नहीं। चेहरा वड़ा, आवाज़ ऊंची, मुखसीमा का क्रांत अतिक्रमण करने में नितांत मुखर दो बड़े-बड़े दांत, मर्दाना तेवर, "तुसी खुद नहीं आंदे…।"

"आ ही रहा था कि ये गबरू नौजवान आ गया—हज्ज़ारों में एक ! इसे बैरा बनाकर रख लिया है। आसपास किस होटल या ढाबे में ऐसा बैरा मिलेगा ? अशोका और ओबेराय के लेवेलका है ! कई शौकीन बाबू और मनचले लाले सिरफ़ इसका दीदार पाने के लिए कस्टमर बन जाएंगे !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

शोहरत हो गई तो कुड़ियाँ भी…"

सरदारनीजी शरमा गईं, "तुसी तो बावलेपन दी गल्ल करदे हो !"

अब मैं सरदारनी जी की दाढ़ी और मूँछों के बाल देखने में व्यस्त था। वे थे तो थोड़े-थोड़े ही, पर काफ़ी बड़े ! मुझे सेठ जी की एक बात याद आ गई, "हम अच्छे थे, जो विभाजन से पहले भारत आ गए, हालांकि आए १९४७ ई० में ही थे। बाद में, कत्लेआम तो हुए ही, 'पाकिस्तान का माल पाकिस्तान में' के नारे के साथ एक भी सुन्दर स्त्री नहीं आने दी गई…"

सरदार जी की आवाज़ ने ध्यान भंग किया, "ओ ए सोणिए, हीरिए, ग़ज़ब दा खाना है !" वे मेरी ओर मुख़ातिब होकर बोले, "खाना मैं इन्हीं के हाथ का खाता हूं। सादा और ताकतदार !"

यथासमय मुझे एक चारपाई मिली। दिन-भर की दौड़धूप के बाद नींद गहरी ही आनी थी। सो गया। कोई दो बजे रात को नींद खुली—अपने-आप नहीं, शरीर में किसी के स्पर्श के कारण। मालूम हुआ, सरदार जी हैं ! उनका शौक भी विचित्र था ! मेरे लिए यह पहला अवसर था। एक लहर उठी, पड़ा रहूं। लेकिन ऐसा न कर सका। बोल पड़ा, "सरदार जी, माफ करें, मैं…"

सरदार जी मँजे हुए व्यसनी थे, या सच्चे ? पता नहीं। धीरे-से बोले, "मैं इम्तहान ले रहा था—तुम पास हो गए ! मैं एक शरीफ रईस हूं। बीवी-बच्चों वाला; गुरुजी के दिए ग्यारह मुंडे और तीन कुड़ियां हैं। एक मुंडा तो अभी साल-भर का भी नहीं है।"

उनका लेक्चर चालू था और मैं आंखें तथा मुंह फैलाए सुन रहा था। दिमाग़ में ख्याल उठा, "वाह रे भारत ! तेरा बेड़ा गर्क कैसे न हो ? जहां करोड़ों लोग भूखों मरते हों, वहां आबादी का आसमान को छूना मुटमर्दी ही नहीं, हैवानियत भी है। बाल-विवाह दनादन हो रहे हैं ! बच्चे, जवान, बूढ़े, सब आबादी बढ़ाने में जुटे पड़े हैं, भले ही खाना नसीब न हो। पाकिस्तान बने तो बोझ भारत पर पड़ता है, तिब्बत को चीन डकार जाए तो बोझ भारत पर पड़ता है—गरीब की जोरू गांव भर की भाभी ! पंजाबी, सिंधी, तिब्बती, बाँगला देशी, सभी यहीं आ गिरते हैं। यहां की

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

जनता गधों की तरह सिर्फ बोझ ढोने के लिए ही बनी है..."

सरदार जी अपनी चारपाई, जो बगल में ही पड़ी थी, से उठे न थे। अब उन्होंने लेक्चर बंदकर करवट बदली और मैं परमात्मा को धन्यवाद देकर सो गया। दूसरे दिन से काम करने लगा। जी-तोड़ मेहनत थी। पर करनी थी। दो-तीन दिनों में आदत पड़ने लगी। खाना ठीक-ठाक था; लेकिन होटली, घरेलू नहीं। मिर्च-मसाले से भरा। खाना पड़ा। जीवन का छकड़ा, ढचर-पचर ही सही, डगरता मालूम पड़ा। लेकिन मेरा दुर्भाग्य मेरा साथ छोड़ने को तैयार न था। अभी सत्रह दिन ही हुए थे कि देखा, वही पुलिसवाला ठाकुर खाना खाने आया है! लाख कटा, छंटा, पर बच न पाया, क्योंकि बैरा था और संयोगवश वह उन सीटों में से एक पर बैठा था जिनमें मेरी ड्यूटी थी। यदि डरकर भाग खड़ा होता तो एक अंधा भी अपराधी समझ बैठता! सांप छछूंदर की गति हो गई! उसने पानी का गिलास रखते ही पहचान लिया। वेश्याओं और पुलिसवालों की पहचानने की शक्ति ग़ज़ब की होती है! घूरता रहा। मैंने बहुत कोशिश की कि उसकी ओर न देखूं, किंतु मानवीय स्वभाव पर विजय प्राप्त करना सरल नहीं होता—बीच-खूच प्रतिक्रिया के अध्ययन के निमित्त दृष्टि पड़ ही जाती।

खा-पीकर वह चला गया। उसने न मुझसे कुछ पूछा, न सरदार जी से। फिर भी मैं डर गया। परमात्मा से प्रार्थना की कि कोई नई बला न आ पड़े! राम-राम करके वह दिन बिना किसी विघ्न-बाधा के व्यतीत हो गया। दूसरा भी। अब कुछ राहत मिली। जी पोढ़ा हुआ, "कर नहीं तो डर कैसा? ग़ैरकानूनी हरकत उसने की थी, मैंने नहीं।" लेकिन तीसरे ही दिन दोपहर में वही ठाकुर फिर दिखाई पड़ा—आज तीन पुलिसवाले और थे! मेरे काटो तो खून नहीं...

जब तक सरदार जी "दीवान साहब, सत्त श्री अकाल" कहें-कहें तब तक उसने कड़क कर पूछा, "ये नौजवान कौन है?"

सरदारजी के पैरों तले की जमीन खिसक गई, "बैरा!"

"कहां का है?"

"यह तो नहीं जानता।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

"हमें एक चोरी के केस में इसकी तलाश है। थाने ले जाएंगे।"

"ले जाओ।"

"तुम भी चलो।"

चारों पुलिसवाले मुझे और सरदार जी को सीसगंज कोतवाली में ले गए। सरदार जी को तो "आंख मूंदकर ऐरों-गैरों को रखा तो हथकड़ियां पड़ जाएंगी" की चेतावनी देने के बाद छोड़ दिया गया, लेकिन मुझे नहीं। मैंने दारोग़ा जी से अंग्रेजी तक बोली, "मैं एकदम निर्दोष हूं। एक बार यह ठाकुर मुझसे नाजायज़ हरकत करना चाहता था, जिस पर मैं चिल्ला पड़ा और भीड़ इकट्ठी हो गई। गुस्से में आकर मैं इस पर टूट पड़ा। उसी का बदला ले रहा है।" बहुत बोला, बहुत गिड़गिड़ाया, बहुत रोया; पर नक्कारख़ाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है—मुझे सीखचों के अन्दर ठेल दिया गया!

इस वैवश्य और नैराश्य के मध्य भी मुझे यह हर्ष और संतोष प्राप्त था कि फ़िरर के काण्ड की भनक भी नहीं पड़ रही है और चोर के मन-गढंत आरोप से मुक्त होना निश्चित है, क्योंकि न्यायालयों में 'देर है अंधेर नहीं' के निदर्शन भी दृष्टि-श्रुतिगोचर होते रहते हैं! इसकी पुष्टि भी हो गई। अन्दर एक और हमउम्र नौजवान था—हिप्पी-कट जुल्फें, काला रंग, पीले दांत, मुंह से धूम्रपान का घोर नाद! नफ़रत से नजात पाना मुश्किल लगा! उसने मौका मिलते ही बोलना शुरू कर दिया, "जानी, घबराओ मत; अन्दर जो मज़े हैं वो बाहर कहां? वहां लाख खोखट करो, हज़ार पापड़ बेलो, सौ लफड़े करो, तब भी न पेट भरता है, न सोने को जगह मिलती है। यहां भरपेट खाओ और आराम से सोओ! भला हो अंग्रेजों का, जो मामा की ससुरालें बना गए हैं—हिन्दुस्तानी बनाते तो उनसे कोई वापस न निकल पाता! मुझे तो कभी-कभी बाहर अच्छा तक नहीं लगता, हालांकि खुदा का दिया काफी-कुछ मौजूद है! ये साले मुझे भी झूठमूठ ही धर लाए हैं। मैं तो जो ये कहेंगे वह मान लूंगा, जिस कागज पर दस्तख़त कराएंगे उस पर कर दूंगा। अदालत में हकीकत का बयान कर दूंगा। मैजिस्ट्रेट इन हरामियों के ओछे हथकंडे खूब जानते हैं। छूटना तय है। घरवाले ज़मानत की बात कर रहे थे, लेकिन मैंने रोक

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दिया, क्योंकि 'हॉलि डे मूड' में हूं !" वह खुलकर हंसा, "तुम भी ऐसा ही करना, नहीं तो ये राक्षस बहुत सताएंगे।"

दूसरे दिन हम दोनों तिहाड़ पहुंचा दिए गए। मैं बहुत दुखी था। पर कर ही क्या सकता था ? गनीमत यही थी कि उक्त नवयुवक साथ था। वह हताश न होने देता था। अब मुझे उससे सहानुभूति हो रही थी ! परिचय हो गया। उसने जो कहा था, उसमें तथ्य अवश्य था। हवालात की हवा जामा मस्जिद और गांधी मैदान की हवा से बेहतर थी। वहां लात पसार कर सोने की जगह भी नसीब थी। वहां का खाना भी घटिया होटलों और ढाबों के खाने से अच्छा था। वहां बेशुमार 'इंसान' भी न थे। मच्छर और खटमल उतने खतरनाक नहीं, जितने 'इंसान' !

उधर पुलिस अपना केस 'बना' रही थी, इधर हम दोनों 'स्थिर' हो रहे थे। नए साथी का नाम था याकूब। उसने बताया, "मैंने गिरहकटी के धंधे से बिस्मिल्लाह किया था और अब खुदा के फज़ल से राहज़नी का बहादुराना पेशा अख्तियार किया है। ये साले चोरी के केस में फंसाकर मेरी इंसल्ट कर रहे हैं। जब इनके 'राज' में दूसरों की जेबों पर हाथ साफ़ करके इनकी जेबें गर्म करता था तब हाथों हाथ लेते थे, लेकिन जब एक एरिया की हद छोड़कर राहजनी करने लगा, तब झूठा इल्जाम गले मंढ रहे हैं। ये साले समाज के कुत्ते हैं ! लेकिन, यार, तुम्हें तो कभी ऐसा-वैसा करने वालों में…"

मैंने सारी कहानी सुना डाली। वह बोला, "ये साला महेन्दरपरताप सिंघ डबल हरामी है—परले सिरे का जालिम ! न-जाने कितने मासूम लड़कों की इज्ज़त लूट चुका है ! मैं तो तुम्हारी बहादुरी और हिम्मत की दाद देता हूं कि इस दरिन्दे को रात में आफ़ताब का दीदार करा दिया !…"

मुझ पर जोश-खरोश का नशा चढ़ गया, "निकलने दो जो बिना जान लिए छोड़ूँ !"

याकूब ने ध्यान से देखते हुए कहा, "तुम जैसे गब्बूस जवान के लिए वह थुलथुल अद्धड़ है ही क्या ! तुम शेर हो, वह हाथी ! लेकिन हलाक करने की जरूरत ही क्या है ? शुक्रिया अदा करो कि उसकी मेहरबानी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

से यहां बिना हाथ-पैर हिलाए चैन की बंसी बजा रहे हो ! मेरा एक दोस्त है अब्दुल्ला, जो यहां आने के लिए पुलिस को रुपए तक देता है !" कुछ रुककर बोला, "मेरा एक दूसरा जिगरी यार है परवेज़। वह शायद एक दिन कुछ बता रहा था—तुम उसे जानते हो ?"

मैंने बताया।

"यार, उसका धंधा—सच पूछो तो, पार्ट टाइम धंधा है, क्योंकि वह नौकरी में लगा है—ख़तरे से बहुत दूर तक आज़ाद है, लेकिन एक तो मुझे वह पसंद नहीं, क्योंकि मैं मशक्कत की कमाई ही चाहता हूं, दूसरे शक्ल-सूरत और सजाव-सीरत भी अलग है। वह भी कोई मर्द है, जो मेहनत किए बिना खाए-जिए !"

मुझे हंसी आनेवाली थी, पर ज़ब्त कर गया। वह बोला, "हमारा बॉस एक सरदार है, जिसकी पहुंच बड़े-बड़ों तक है। सरदार लोग ख़तरे के धंधों में सबसे ज्यादा दिलचस्पी रखते हैं। तिजारत में भी जोखम उठाने में लासानी ! उसको कहीं से कोई ख़तरा नहीं हो सकता—बड़े बड़े हुक्मरां मुट्ठी में हैं, सैयां भए कोतवाल अब डर काहे का ! यार, तुम उससे भी बीस हो; कसम खुदा की, इक्कीस हो ! एक बार जम गए तो कोठी और कार का आलम सामने होगा !" वह कुछ रुका, फिर बोला, "मैं गुरमेल सिंघ से मिला दूंगा। वारे-न्यारे हो जाएंगे, छक्के पंजे हो जाएंगे, गलगल दम्मे हो जाएंगे ! परवेज़ आने वाला है। उससे ख़बर भिजवा दूंगा। यों, अन्दर रहने के मूड में था, क्यों अब्बाजान से खटपट हो गई है—वे शेर को चपरासी की हैसियत देकर भीगी बिल्ली बनाने पर बेतरह तुल गए थे; लेकिन तुम्हारी ख़ातिर जल्दी ही बाहर निकलना पड़ेगा—अलबत्ता तुम्हारे साथ ! गुरमेलसिंघ दो-तीन फ़ोन करेगा और हम-तुम फ़ौरन बाहर ! सोचा था, कुछ महीने यहां बेफ़िक्री का माहौल मिलेगा, लेकिन दोस्ती का तकाजा, 'होता है वही जो मंज़ूरे खुदा होता है' की तरफ इशारा कर रहा है। पता नहीं, अल्लाह कौन-सी नियामत बख्श दे !"

और मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब एक हफ्ते के अन्दर ही हम दोनों बाहर थे ! हालांकि मैंने याकूब की बातों को गप्पों से ऊपर का दर्जा अता किया था, लेकिन वह इतने दमख़म का बन्दा है—यह

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गुमान भी न कर पाया था।

याक़ूब मुझे अपने घर ले गया। बाड़ा हिन्दूराव के पास रहता था। जगह कम थी, लेकिन फ्रिज और टेलीविज़न का आलम ! उसके पिता एक गड़ामडील आदमी थे। पता चला, जवानी में नामी पहलवान रह चुके हैं। परिवार में अधिक सदस्य न थे। पिता, बड़ा भाई, भाभी और वह। बड़ा भाई स्कूटर चलाता था। पिता पेंशन पाते थे। मुझे नहाने-धोने और खाने-पीने का अच्छा आराम मिला। शाम को याक़ूब बोला, "चलो, गुरमेलसिंघ से मिला लाएं…"

मैं पशोपेश में पड़ गया, तो वह बोला, "अब तुम एक बात को ठीक-ठीक समझ लो—एक बार पुलिस के फेर में पड़ने के बाद कोई शरीफ़ बनकर नहीं जी सकता। ये दारोग़ा क्या पाते हैं ? ये पुलिस वाले क्या पाते हैं ? तो फिर, इनके मकान कैसे खड़े हैं ? जिस दिन चोर, गिरहकट, उचक्के और डकैत न होंगे उस दिन ये भी सफ़ेदपोश बाबुओं की तरह ठन-ठनगोपाल और ढपोरशंख दिखाई पड़ेंगे ! इन्हें अपनी इमारतें और शानो-शौक़त बरक़रार रखने के लिए हमारी बेइन्तहा ज़रूरत है। हमारी तादाद में इज़ाफ़ा इनकी हैसियत का इज़ाफ़ा बन जाता है। इसलिए, इन्हें हम जैसों को बनाना पड़ता है, पालना पड़ता है, बढ़ाना पड़ता है। ऊंचे उसूल लीडरों की लफ्फ़ाज़ी के लिए छोड़ो और ज़िन्दगी के दंगल में शान से कूद पड़ो ! मर्द हो, मर्दानगी से काम लो ! गुरमेल तुम्हें किसी ख़ास काम में ही लगाएगा !"

मन की द्विविधा ने मुझे याक़ूब के साथ ठेल ही तो दिया ! उसने फ़ोन करके टैक्सी मंगवाई और "बिस्मिल्लाहुर्रहमानुर्रहीम" कहता चल दिया। गुरमेल पंजाबी बाग़ में रहता था। शानदार कोठी देखकर मैं हैरत में पड़ गया। लॉन, फ़व्वारा, कालीन, सोफ़ासेट, फ़्रिज, टेलीविज़न, टेली-फ़ोन, एयरकंडीशनर ! याक़ूब ने संक्षेप में परिचय कराया। गुरमेल दर-मियाने क़द का, गोरा और मज़बूत आदमी था। उम्र पैंतीस के आसपास थी। बोला, "यू. पी. में चुनाव हो रहे हैं। तुम बीस नौजवानों के सरगना बनकर जाओ और जिनमें कहा जाए उन सभाओं में मामूली पत्थरबाज़ी का काम करो-कराओ। हो सकता है, कभी पकड़े भी जाओ, पर उससे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

धंधे में रुतबा बढ़ता ही है, घटता नहीं। दूसरे, सवेरे पकड़-धकड़ और दोपहर तक छोड़-छाड़ ! शाम को गिरफ्तार, सवेरे आज़ाद ! हां, अगर इजाज़त मिले तो विरोधी गुण्डों से भिड़ना भी पड़ेगा। तब इम्तहान की कड़ी घड़ी आएगी। बीस रुपए रोज़; खाना-पीना, आना-जाना, सबकुछ अलग।

मैं चुप रहा।

"यू. पी. के भैए भोंदू होते हैं। उनमें एकता नहीं है। वे व्यसनों से ग्रस्त हैं। वे तेली के बैल की तरह चक्कर काटने के लिए ही पैदा किए गए हैं। उनसे डरना कैसा ? और तुम तो पंजाब और हरियाणा तक में शान से जमने लायक़ हो ! मैं एक नज़र में ही आदमी की नस-नस पहचान लेता हूं। तुम्हें देखकर ही आम बंदे की रूह फ़ना हो जाएगी; जहां विग्स का अल्ट्रा-मॉडर्न पैंट और शर्ट डाटा, हंटर शूज़ पहने, जेब में रामपुरी चाकू डाला, वहां सौ भैंयों पर भी शेर की तरह पिल पड़ोगे ! तुम्हारे लिए तीन दिन की ट्रेनिंग काफ़ी होगी···"

"कोई और ड्यूटी ठीक रहेगी, बॉस।" याक़ूब ने मेरा मूड परखकर सिफ़ारिश की।

गुरमेल ने कुछ पल सोचा, विचारा, तब बोला, "एक बहुत बड़ी हस्ती है, जिसकी उमर तो लचक चुकी है लेकिन कमर पतली है, ऊंची नस्ल की चीज़ है, ख़ानदानी;—उसकी सेवा करो और मेवा पाओ ! वह अठारह-बीस साल का ख़ूबसूरत और मज़बूत सेवक ही चाहती है। तुम फ़िट हो !" उनकी हेयर फ़िक्सर से सँवारी मूंछों के बीच से छिटककर जो हंसी कमरे में भर गई, उससे मैं घबरा गया। सामने के लाइफ़-साइज़ शीशे में अपना पूर्ण निरीक्षण करने के उपरांत उन्होंने बात आगे बढ़ाई, "एक मामूली क्लर्क मेरे देखते-देखते लाखों का आसामी बन गया ! बोलो ?"

"फ़िलहाल चुनाव में ही चला जाऊंगा।"

"ठीक।"

उन्होंने उत्तर प्रदेश के निवासी एक वी. आई. पी. से फ़ोन मिलाया, उसे सूचना दी और मुझे पता बताकर रवाना कर दिया। याक़ूब भी साथ जा रहा था। शीघ्र ही मुझे कर्त्तव्य का सम्यक् बोध करा दिया गया। जो

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

ट्रक हमें मिलेगा, उसमें कंकड़, पत्थर, खपरैल के टुकड़े, माटी के ढेले इत्यादि हम ख़ुद इकट्ठे करेंगे। ये सब हल्के होंगे, जिससे किसी को ज्यादा चोट न लगे, क्योंकि उद्देश्य मारना नहीं है, गड़बड़ी पैदा करना है। हम बीसेक होंगे।

कभी-कभार किसी-किसी की मौक़े के मुताबिक़ गिरफ्तारी सम्भव है—अहिंसक गिरफ्तारी अर्थात् बिना घाटे की, कुछ घंटों की। जहां-जहां बड़े-बड़े दिग्गज नेता जाएंगे वहां-वहां हमें भी जाना पड़ेगा। रास्ते में लोगों को ट्रक में 'कचर-कचर कर' बैठाना पड़ेगा। सभा में जय-जयकार, करतल-ध्वनि इत्यादि अनिवार्य तत्त्व होंगे। यदि विरोधी गुण्डे गड़बड़ी करें तो उनसे अहिंसक ढंग से निबटना होगा—अधिक चोट न आए।

मैंने अपने कर्त्तव्य एक काग़ज़ पर नोट कर लिए। अपने दल के लोगों को बार-बार समझा दिए। ईंट-पत्थरबाज़ी का असली मक़सद चोट पहुंचाना नहीं बल्कि वोटर की हमदर्दी और अख़बार की सुर्ख़ी पाना है, जिसके लिए अपने आक़ाओं तक को छोटी-मोटी तकलीफ़ दी जा सकती है—यही ख़ास प्वॉइंट था। हमें अच्छी ख़ासी ख़ूराक मिली। कुछ रुपए पेशगी दिए गए। एक छोटे-मोटे नेता हमारे पर्यवेक्षक के रूप में साथ चले। उनके पास हम सब के नाम-गाम नोट थे—साथ ही, नामा का गामा भी अर्थात् नोट का कोट भी!

हम लोगों का काम काफ़ी मेहनत का था। नारे लगाते-लगाते, जय-जयकार करते-करते गला बैठ जाता। नेता या नेत्री के धुआंधार भाषण के बीच मंच से आने वाले संकेत या समारम्भ के साथ ही तुमुल करतल-ध्वनि करना अनिवार्य कर्त्तव्यों में सम्मिलित था। किसी ने ज़रा-सी भी चीं-चपड़ या नुक्ताचीनी की कि हम टूट पड़ते और दबोच लेते। पत्थरबाज़ी में लाख सावधानी बरतने पर भी एक नेता की नाक में चोट आ ही गई। चोट तो माशाअल्लाह मामूली ही थी पर अख़बार और रेडियो की दुनिया में भूचाल-पर-भूचाल आते रहे। ऐसा लगा जैसे विसूवियस फूट पड़ा है! ऐसा लगा जैसे भीष्म पितामह शर-शय्या पर पड़े हैं! मैंने अपना दायां हाथ बार-बार चूमा, जो इस ज़लज़ले का मरकज़ था! मामला नाज़ुक भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

तो था—नाक का; ···शूर्पणखा की नाक ने क्या-क्या गुल नहीं खिलाए थे, क़यामत बपा करने में कौन-सी कोर-कसर छोड़ी थी !

कई बार हमें अन्य नेताओं की सभाओं में 'मुर्दाबाद' के नारे लगाने के लिए भेजा जाता। इसमें 'ज़िन्दाबाद' से भी ज्यादा लुत्फ़ आया। कोई ख़ास ख़तरा न था, क्योंकि सबकुछ सधा-सधाया था। एक जगह हमसे दूसरों के वोट डलवाने का काम भी लिया गया। किन्तु इसके लिए दो रुपए प्रति मत के हिसाब से अलग पारिश्रमिक दिया गया। एक जगह याक़ूब को लोहे के चने चबाने पड़े—वह जिसका वोट डालने गया था, उस व्यक्ति का दो दिन पहले ही इंतकाल हो चुका था ! पकड़ा गया। पर बाद में छोड़ दिया गया—पुलिस की गिरफ्त से निकल भागने का बहाना ऐसा था, जिस पर कोई कुछ ख़ास कह भी न सकता था; ख़ासकर तब जबकि सम्बद्ध पुलिस वाला निलम्बित भी कर दिया गया हो ! कुल मिला कर हम बहुत संतुष्ट रहे।

लेकिन पश्चिमी उत्तर प्रदेश की एक सभा में जब हम पूर्ण तन्मयता-पूर्वक 'मुर्दाबाद' का कोरस गा रहे थे, तब कोई पचासेक लम्ब-तड़ंग भीम छाप जाट लट्ठ लेकर, जाने कहां से, आ धमके और लगे धुनाई करने। अगर मेरे डग लम्बे न होते तो कब्रिस्तान क़रीब आ जाता ! उधर, मौक़े पर पुलिस न आ जाती तो हमारे बीस के गैंग में कुछ ही सही सलामत लौट पाते। इसके बावजूद तीन को चोटें आ ही गईं। दो के चप्पल गिर गए। एक का एक जूता रास्ते में पैर से सरक गिरा। यह घाटा पर्यवेक्षक महोदय ने पूरा कर दिया।

अब फूंक-फूंककर क़दम रखने का फ़ैसला किया गया। उधर, सरकार ने निगरानी कड़ी कर दी, जिससे हरिजनों और पिछड़े वर्गों, अल्पसंख्यकों और कमज़ोर वर्गों को आतंकित करने की कोई जुर्रत न की जा सके ! इससे हम बहुत खुश हुए। फिर भी, एक सभा में जब हम मनोयोगपूर्वक पत्थरबाज़ी कर रहे थे, तब हमीं में से किसी का फेंका एक टुकड़ा मेरे सर के पिछले और नाज़ुक हिस्से में आ लगा। खून की धार निकल पड़ी। परमात्मा को धन्यवाद कि पर्यवेक्षक महोदय वहीं कहीं मौजूद थे। तत्काल मरहम-पट्टी का माकूल इंतज़ाम किया गया और मुझे पचास रुपए का

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

निष्ठा पुरस्कार भी प्रदान किया गया। फिर भी, अब मुझे यह धंधा ख़तरनाक लगने लगा। यों भी, मैंने इसे मजबूरी में अपनाया था। सोचा, आख़िर यह टिकाऊ धंधा तो है नहीं। कोई ढंग का धंधा खोजना पड़ेगा। बहरहाल, पन्द्रह दिन बाद जब दिल्ली लौटा तब, सिनेमा वग़ैरह के ख़र्च के बावजूद, दोसौ रुपए गरम हो रहे थे! पर्यवेक्षक महोदय ने अपने प्रतिवेदन में मेरी भूरि-भूरि प्रशंसा की। प्रतिष्ठा बढ़ गई।

अब मैं एक अच्छे-से रैन बसेरे में रहने लगा। लेकिन रात में जुए के कारण वहां शांति न रहती थी। कई बार छेड़-छाड़ और धींगा मुश्ती के सिलसिलों में तिल के ताड़ बन जाते। मैं इन चीज़ों से परहेज़ रखता था; इसलिए, गोबर गणेश की पदवी से सम्मानित किया गया। हम लोग सभाओं और जुलूसों के लिए बुक किए जाते रहते थे। मुझे धार्मिक जुलूस ज्यादा पसंद थे, क्योंकि इनमें आमदनी बिना फ़ालतू लफ़ड़ेबाज़ी के होती थी। कई बार ईसाई होने के कारण भी मुझे फ़ायदा होता, क्योंकि धर्मनिरपेक्षता का व्यापक प्रचार-प्रसार एवं दर्शन-प्रदर्शन स्वतंत्र भारत का एक विशेष कार्यक्रम रहा है और है। अतएव, हम लोग धार्मिक आयोजनों, विशेषतः शोभा-यात्राओं की प्रतीक्षा अतीव व्यग्रतापूर्वक किया करते थे। यों, मैंने सरदारजी के होटल में फिर से काम शुरू कर दिया था। ठाकुर ने जब सुना कि मेरी पहुंच गुरमेल तक है और मैं यू. पी. के चुनावों तक का दौरा कर चुका हूं, तब उसका पारा ठीक ऊपर से ठीक नीचे आ गिरा। सरदार भी रोब मानने लगा। ग्राहक-ग्राहिकाओं में मैं बहुत ही लोकप्रिय था, क्योंकि सलाम और मुस्कान का स्वचालित यंत्र बन चुका था! अच्छी आय होने लगी। जिस दिन कोई ख़ास जल्सा होता और अपनी ड्यूटी लगती, उस दिन इधर से तनखवाह कट जाती थी। छह महीनों में मैंने एक हज़ार रुपए बचा लिए।

लेकिन याक़ूब इस सब से संतुष्ट न था, "ऐसी कमाई तो खड़खड़ बुड्ढे और सर सपाट अद्धड़ भी कर सकते हैं। इसमें मर्दानगी और बहादुरी कहां? फिर, इसमें मिलता भी थोड़ा-थोड़ा है। तुमने अपने घोंघापन के बल पर कुछ बचा लिया होगा। सिनेमा बेहद कम देखते हो, जी० बी० रोड कभी जाते ही नहीं, सिगरेट किसी के पिलाने पर ही पीते हो और यही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

शराब के मामले में करते हो ! ऐसे लासानी मूंजी तो बाल-बच्चेदार भी नहीं होते ! ज़िन्दगी का लुत्फ़ लूटो, मज़े मारो—जवानी चार दिनों का मेला है ! जवानी जाकर आती नहीं और बुढ़ापा आकर जाता नहीं। तीर की तरह सर्र से आने और जाने वाली जवानी की तौहीन न करो !"

फिर भी, मैं उत्तेजित न होता था, हालांकि 'लूटने' और 'मारने' वाली 'चीज़ों' से मुझे बेइंतहा नफ़रत थी। मेरा विश्वास था कि 'लूटने' और 'मारने' वाले काम न किए जाएं तो जवानी एक बहुत लम्बी नियामत बन सकती है। मेरा इरादा कुछ रुपए जोड़कर व्यापार करने का था। सुनता था, तीनेक हज़ार ख़र्च कर दूं तो बैंक में चपरासी का काम लग सकता है। लेकिन मन व्यापार पर टिका था। मेरी कई योजनाएं मुझे जामे से बाहर न होने देती थीं।

जब कभी एकांत मिलता, शांति मिलती लवलीन की याद आ जाती। मेरी का प्रकरण बाह्य परिस्थिति का परिणाम अधिक था, आभ्यंतर आवेग का कम। उत्तम प्रेम प्रायः समवयस्कता से समबद्ध रहता है। जानता था, लवलीन के पैरों का धोवन भी नहीं हूं; फिर भी, याद तो बस याद है, जो न राजा देखती है, न रंक ! बीच-बीच सेठजी से मिलने जाता था। बक्सा वगैरह उनके घर पर ही रखे थे। वे मेरी प्रगति से संतुष्ट थे। लेकिन, पता नहीं क्यों, मैं तभी जाता था, जब लवलीन न हो ! इसका यह मतलब नहीं कि उसे देखा ही नहीं था। कभी-कभी दोपहर बाद, जब उसका यूनिवर्सिटी से लौटने का वक्त होता, लुक-छुपकर देख आता था।

एक दिन जब मैं भरी दुपहरी की खरी धूप में आज़ाद मैदान से छुप-छुप कर उसे देख रहा था तब उसकी नज़र मुझ पर पड़ गई। मैं चुपचाप भागा, पर उसने आवाज़ देकर बुला लिया। मैंने, इतने पर भी, भागना उचित न समझा। एक तो इससे उसका दिल दुखता, दूसरे इससे लोग-बाग यह समझ सकते थे कि शायद मैं कुछ छीना-झपटी करके भाग खड़ा हुआ हूं। सिर झुकाए लौट आया। चुपचाप खड़ा हो गया। लगता था, जैसे हज़ारों घड़े पानी पड़ गया ! नमस्ते कहना-करना तक भूल गया ! लवलीन कुछ देर चुपचाप खड़ी-खड़ी एकटक देखती रही, तब बोली, "क्या मैं इतनी डरावनी हूं कि जब कभी घर पर जाते हो, तब यह ध्यान में रख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

कर कि मैं न मिलूं ? इसीलिए जान बचाई थी ?"

मैं चुप रहा। कुछ पल बाद आंखें उठाईं तो…चार आंखें आंसुओं से तर थीं।

तभी कहीं से ठहाकों की आवाज़ें सुनाई पड़ीं। देखा, कुछ दूर एक पेड़ के नीचे बैठे कई लोग ठलुवाबाज़ी कर रहे हैं ! हम दोनों चुपचाप अलग-अलग दिशाओं पर चल पड़े। मैं सोचने लगा, "मैं इस अनिंद्य-पावन सुंदरी के जीवन से खिलवाड़ नहीं कर सकता ! पूजा की देवी को पूजा ही दूंगा। आख़िर मेरा और उसका क्या जोड़ ?"

दिल ग़मगीन और मायूस था। शायद ख़ुदा ने नज़रे इनायत की कि शाम को याक़ूब आ पहुंचा और, काम-धाम को बालाए-ताक़ करता, इंण्डिया गेट की ओर ले गया। देर तक गप्पें चलीं। दिल को सुक़ून मिला। ग़म ग़लत हो गए और पता तक न चला ! रात को चहलक़दमी करते चले आ रहे थे कि जनपथ के एक कमचालू चौराहे पर लाल बत्ती देखकर खड़ी की गई एक कार की ओर इशारा करते हुए याक़ूब बोला, देख इस लड़की के गले में कीमती हार ! झपट ले ! जा, तेरी ट्रेनिंग के लिए अपना हिस्सा खुशी-खुशी बखशता हूं ! कर हिम्मत, बन मर्द—अच्छा ख़ासा सन्नाटा है !"

पता नहीं कहां से मुझमें क्या प्रवृत्ति प्रवेश कर गई कि मैंने दांया हाथ कार की खिड़की के अंदर कर हार पर बाज़ाना झपट्टा मारा और वह, स्वभावतः टूट कर मेरे हाथ में आ गया। जब तक कार में बैठी लड़की और सम्भवतः उसका तरुण भाई सम्हलें, मैं कँगारू की चाल से हवा हो चला। रात का अंधेरा सहायक सिद्ध हुआ। मेरे लम्बे डग तो सारे ही इम्तहानों में कामयाब हो चुके थे ! लेकिन, जैसा कि बाद में मालूम हुआ, सबसे ज्यादा सहायक सिद्ध हुआ याक़ूब, जिसने अपना छह-इंची चमाचम चाकू निकाला और किट से फाल लपलपा कर उन दोनों मेमनों को डराया, "जान की ख़ैरियत चाहते हो तो नौ-दो-ग्यारह हो जाओ—पूरा गैंग साथ है !" वे दोनों जान बचाकर भागे। इस हड़बड़ी में किसी ने यह भी न देखा कि गैंग है किधर, क्योंकि सड़क पर आसपास एकदम सन्नाटा था !

उधर, जब मुझे होश आया तब देखा, पुराने क़िले वाली सड़क पर हूं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

इधर-उधर नज़र दौड़ाई। लाईन क्लियर थी। यह रोड काफ़ी चालू है। स्कूटर मिलते देर न लगी, जिसने आनन-फानन लालक़िले पहुंचा दिया। याक़ूब मुझे निरापद करने और अन्धेरे के कारणों से पिछड़ गया था। लालक़िले के सामने के लॉन्स पर बैठकर मैंने दम लिया और सोचा, "अगर याक़ूब ने ज़ोर न दिया तो यह हार बेचूंगा नहीं। इसमें कुछ हेर-फेर कराके इसे लवलीन को जन्मदिन के उपहार के रूप में भेंट कर दूंगा !... इस विचार से मेरे हृदय को जो शांति मिली, उसका वर्णन सम्भव नहीं। मैं मारे खुशी के पागल हो गया। नशे में चूर व्यक्ति के सदृश झूमता-झामता बल्लीमारान की तरफ़ चला कि हार अपने बकस में छिपा आऊं। लेकिन कुछ दूर जाने पर ध्यान आया कि रात हो गई है, लोगों को शुबहा न हो जाए, लौट पड़ा और सरदार के होटल में जाकर सोने का उपक्रम करने लगा। पर नींद कहां ? वह पर लगाकर उड़ चुकी थी ! बार-बार पेण्ट की अन्दरूनी जेब में हाथ लग जाता ! अभी तक मैं हार ठीक-ठीक देख तक न पाया था। जितना देखा उतने के आधार पर लगा था कि वह बाइस कैरेट के सोने का है, जिसके लॉकेट में लाल जड़ा हुआ है। लवलीन के गले पर कैसा फ़बेगा ! सोना तो शरीर में छिप जाएगा, पर लाल के कारण हार, हारकर भी, अस्तित्व बनाए रखेगा !..."लेकिन वह शक़ कर सकती है ! इतनी क़ीमती चीज मैं कहां से लाया...?" दिल बैठ गया जब बहुत सोच-विचार के बाद भी कुछ स्थिर न कर सका तब यह निर्णय लिया कि सवेरे जाकर बकस में रख आऊंगा, बाद में जैसा होगा देखा जाएगा। अचानक एक विचार उठा, "कहूंगा कि एक पैसों का ज़रूरतमंद इसे सर्राफ़ को बेचने जा रहा था, मैंने खरीद लिया !... और, क्यों न इसे लवलीन की शादी में भेंट करूं...?"

आंखों में आंसू आ गए !

दूसरे दिन गजरदम उठा और सेठजी के घर जा पहुंचा, वहीं नहाया-धोया। नहाते समय हार को देखा। कोई ख़ास काम न करना था। सिर्फ़ बीच की टूटन को जुड़वाना भर था। हार कोई तीनेक हज़ार का लगा। यथा समय बकस में रख दिया। तभी विचार उठा कि क्यों न अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर निकलूं और बाज़ार में देखूं कि ऐसा हार कितने का

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

मिलेगा ! मेरी बाछें खिल गईं। इसी के अनुरूप सज-धज कर निकला। किन्तु पथ पर ध्यान आया कि सम्भव है वह लड़की किसी हाई अप परिवार की हो और इस कारण से पुलिस सरगर्मी से जांच-पड़ताल कर रही हो—कहीं धर लिया गया तो गया सात साल को ! लौट पड़ा। अब ध्यान आया कि आज के काम-काज से हाथ धो चुका हूं, क्योंकि काफ़ी देर हो चुकी है, दिन चढ़े बहुत अर्सा हो गया है। दर असल, मैं बाज़ार खुलने के टाइम को ध्यान में रखकर ही निकला था ! अब सोचा, किधर जाऊं ? कहीं याक़ूब न मिल जाए ?···दिल बैठने लगा। तर्क ने सान्त्वना भी दी, "वह वचन का पक्का है, नहीं तो रात में ही आ धमकता !" और मैं शायद खुशी ग़लत करने के लिए एक फिल्म देखने लगा, हालांकि उसमें उल्टी गंगा बह रही थी—दारासिंघ इश्क कर रहा था !

शाम को याक़ूब मिला। बोला, "कहां उड़ गए थे ? यार, ग़ज़ब के दौड़ाक हो ! पूरे बुर्राक़ ! क़सम ख़ुदा की, लाखों के वारे-न्यारे कर सकते हो !" इसके बाद उसने अपनी दास्तान बयान की, "तुम्हारे रफ़ूचक्कर होते ही मैंने उन दोनों मेमनों को चाकू दिखाकर तिड़ी कर दिया; फिर ख़ुद सर पर पांव रखकर भागा। एक स्कूटर करना पड़ा। सवेरे अख़बार में ख़बर आई है। मज़ा यह है कि लौंडिया किसी वी. आई. पी. यानी 'वेरी इम्पोर्टेंट पर्सन' की थी और महज इसीलिए पुलिस ने एक नामी-गरामी गुण्डों के सरगना को धर भी लिया है ! अब तुम फ्री हो।···मेरी ओर से निसाख़ातिर रहना—याक़ूब की बात पत्थर की लकीर होती है ! तुम्हें एक हार की खुशी मिली है, लेकिन मुझे दो-दो खुशियां मिली हैं—एक तो एक हरामी की लूट के ख़ज़ाने का कुछ माल लुटा, दूसरे एक आदमी मर्द बना दिया !"

"लेकिन यार, जो ग़रीब पकड़ा गया··· !"

"उसका बाल भी बांका नहीं हो सकता, बहुत बड़ा दादा है ! फिलहाल मार-पीट और लानत-मलामत से बचने के लिए हामी भर ली है। अदालत में साफ बदल जाएगा। जिस लीडर का पाला होगा, वह ज़मानत पर छुड़ा चुका होगा ! फिर, मर्द काम करते हैं, दाम बटोरते हैं, नाम कमाते हैं, सारी दुनिया का ठेका नहीं लेते !"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

in Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मैं चुप रहा। 'क़ाज़ी जी क्यों दुबले ? शहर के अंदेशे में !' कहावत याद आ गई।

"अगर तुम साथ दो तो मैं परवेज़ को तैयार करूं और हम तीनों महीने में एकाध मुर्ग़-मुसल्लम का ज़ायका लिया करें ? इससे हाथ की तंगी खरगोश का सींग बन जाएगी ! माल की माक़ूल बिक्री का सारा ज़िम्मा मेरा, क्योंकि ये काम कहीं ज़्यादा ख़तरनाक होता है। किस लाला या पंजाबी की हिम्मत है जो फंसाने की जुर्रत करे ? और ये महाचोर और महा डाकू ऐसा करेंगे क्यों ? इनके छक्के-पंजे लूट के माल की खरीद-फ़रोख़्त पर ही मुनहसिर रहते हैं ! बोलो ?"

मैं चुप रहा।

"बड़ा काम अकेला आदमी नहीं कर सकता। उधर परवेज़ में रूहानी दम-ख़म की कमी है। बिना तुम्हारे ये बेल मुंडेर पर नहीं चढ़ सकती। एक तो फूंक-फूंक कर क़दम रखने से डर नहीं रहेगा, दूसरे ख़ुदा-न-ख़ास्ता फंस भी गए तो गुरमेल है, अब्बाजान हैं, अपना ज़र भी हो जाएगा।"

मैं द्विविधा में पड़ गया। कल के अप्रत्याशित एवं अयाचित लाभ ने मुझे लोभी बना दिया था। मंजा हुआ उस्ताद याक़ूब मेरी वास्तविकता से अनभिज्ञ न रह सका। द्विविधा की मुद्रा पर सत्य स्वतः अंकित हो जाता है। वह मुझे जामा मस्जिद की ओर ले चला। घूमते-घामते एक दुकान पर खड़ा हो गया, "यासीन मियां, इस हब्बूस-लब्बूस रंगरूट के लिए कोई नायाब तोहफ़ा चाहिए—इसके लायक़ ! ज़्यादा क्या कहूं ; समझदार को इशारा काफ़ी !"

यासीन मियां ने तीन बार सिर से पैर तक देखा और तब दो पल के लिए आंखें बन्द कर लीं। तब चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई और लपक कर दुकान के अंदर हो लिए। जब तक मैं पहेली बुझाऊं-बुझाऊं, तब तक वे एक बहुत बड़ा चाकू ले आए, "जैसा सवार वैसा घोड़ा—नौ ंच की चीज़ है; देखकर चंगेज़ भी चीं बोल जाए !" उन्होंने बटन दबाया और तीन तरफ़ा धारवाला लपलपाता-चमचमाता चाकू देखकर मेरे औसान खता हो गए। याक़ूब ने ढाढस बंधाया, "बहादुर लोग हमेशा तलवारों से

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

खेलते रहे हैं, जबकि छैल-चिकनियाँ पतंग उड़ाने को ही नियामत समझते हैं। मर्द वह जो ठोकर मारकर दुनिया से अपना हक़ ले ले !"

पता नहीं कैसे, मैंने चाकू की मूठ पकड़ ली—एक ही चीज़ थी ! ध्यान से निरीक्षण करने लगा, मानों पुश्तैनी चाकूबाज़ हूं। मूठ बहुत मज़बूत थी। चिकनी भी और चमकदार। चाकू का इस्पात ऊंचे दर्जे का था। याक़ूब बोला, "जब यह चीज़ तुम्हारी जेब में होगी और दिल में होगी हिम्मत, तब तुम दुनिया को अपने क़दमों पर पाओगे ! शरीफ़ इंसान में रुस्तम की ताकत हो तो भी बेक़ार, उस पर तो एक फ़ितना भी रोब ग़ालिब कर लेगा। एक बार शराफ़त की ग़ुलामी की जंजीर तोडी कि दुनिया पर हुकूमत हासिल हो गई। देखो सरदारों को, गुंडई के बल पर जहाँ सींक नहीं जा सकती वहां हल पेल रहे हैं !"

मैं कुछ न बोल सका। उसने सौदा पटाया। बहुत कहने-सुनने पर भी तीस रुपए देने पड़े। यासीन मियां ने अहसान जताया, जो ग़ैरवाजिब न था, "बनिया पचास के नीचे टस-से-मस न होता और सरदार सत्तर का राग अलापता, लेकिन यहाँ तो तिजारत में भी इंसान की ख़िदमत करना ही असूल बना लिया है; और अपनों से तिजारत कैसी ! ज़िन्दगी-भर याद करोगे कि कोई चीज़ दी थी !" जब मैं चाकू जेब में रखकर चला, तब याक़ूब ने कहा, "इम्पोर्टेड चीज़ लगती है। मुझे कभी ऐसी लासानी चीज़ नहीं दी साले ने ! यार, तुम्हें जो देखता है वही लट्टू हो जाता है--मर्द देखे तो जवानी की गर्मी से पागल हो जाए और औरत देखे तो बाहों में आने की दीवानी हो जाए !…हो भी तो गड़ामडील !" और वह मुझे शांतिवन की ओर ले चला।

"इधर क्यों ?"

"ट्रेनिंग देने ! दिन में शान्तिवन में न शान्ति मिलती है, न वन; लेकिन रात में वह सचमुच शान्तिवन हो जाता है। राजघाट और शान्तिवन में रात-बिरात या तो शोहदे जाते हैं या गुण्डे। मर्डर तक हो चुके हैं। जो गद्दी पर आता है, वह जनता की ख़ून-पसीने की गाढ़ी कमाई लूटकर समाधियाँ बनाने से नहीं चूकता। कहीं ताजमहल है कहीं ऐतमादुद्दौला, कहीं राजघाट है तो कहीं शान्तिवन—बात एक ही है ! चलो, इससे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

in Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आशिक़ों और गुण्डों का फ़ायदा तो होता ही है !"

एकदम सन्नाटा देखकर उसने चाक़ू मांगा। मैंने दे तो दिया, पर एक अज्ञात भय से ग्रस्त भी हुआ और सजग भी। उसने बटन दबाकर चम-चमाता फाल घुमा-घुमाकर दिखाना शुरू किया, तो मेरी रूह फ़ना हो गई इतने में भी वह बोला, "इस तरह दिखाना चाहिए।" इसके बाद उसने मुझसे यही करने को कहा। ज्यों ही मैं करने लगा त्यों ही उसने लपक कर दाईं कलाई पकड़ ली और तत्काल-तत्क्षण बाएं हाथ का एक हल्का मुक्का पेट पर मारते हुए बोला, "डिफेंस इस तरह।" अब उसने अपना चाक़ू निकाला, जो छह इंच का था। बोला, "जब दो चाक़ूबाज़ लड़ते हैं, तब सबसे पहला काम होता है, दुश्मन की दाईं कलाई पकड़ना और उसी के एकदम साथ अपने चाक़ू को उसकी बाईं जांघ के ऊपर पेट में नीचे से दिल की ओर घुसेड़ देना ! यह है क़ातिलाना हमला। मामूली हमला सिर्फ़ उन पर किया जाता है, जो निहत्थे हों, ख़ोफ़नाक न हों। उस हालत में हाथ के पंजों या कलाइयों पर चोट कारगर साबित होती है।"

कोई, शायद चौकीदार, आता दिखाई पड़ा। हम दोनों ने चाक़ू जेबों में किए। याक़ूब ने बोलना चालू किया, "हां तो 'धरमा' में प्राण इसी तरह झपटता है !···राम-राम गुरु !"

चौकीदार खुश हो गया, "कउन-सा फिलिम का चारचा किया है आप ?"

"धरमा का—पहलवान, देखने लायक़ चीज़ है !"

"नवा है या पुराना ?"

"है तो कुछ पुराना; लेकिन, हवलदार साहब, पुराना चावल ज्यादा लज़ीज़ होता है ! अमर टॉकीज़ में धम से चल रहा।" उसने फ़िल्म पर संक्षिप्त प्रकाश डाला और मुझे लिए हुए चल निकला। कुछ दूर जाकर बोला, "यह यू. पी. का असली भइया था ! हाथ में लट्ठ हो तो ये ठेठ भइए चाक़ू-बाजों पर भी पिल पड़ते हैं और पहाड़ियों से तो अल्लाह ही बचाए ! हां, सरदार भी दमदार होते हैं, लेकिन आम-तौर पर गीदड़-भभकी और बंदर-घुड़की ज्यादा दिखाते हैं, क्योंकि लूट-लाटकर मोटे हो गए हैं। बाकी रहे दक्खिनिए और बंगाली, सो वे चाक़ू देखते ही टें बोल

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

जाते हैं। ये सबसे अच्छे शिकार होते हैं, लेकिन मिलते मुश्किल से हैं, क्योंकि दिमाग़ी कुव्वत में इन्हें बेमिसाल ही समझो। अगर शिकार कश्मीरी हो तो ये समझो कि अल्लाह ने रहमत की है, क्योंकि कश्मीरी मर्द और बाकी दुनिया की औरत बराबर बैठते हैं; और कश्मीरी औरत टकर गई तो लुटते-लुटते भी लूटे बिना नहीं छोड़ेगी—बला की मैन-ईटर हैं ये!" अचानक हँसकर वह एक संस्मरण सुनाने लगा, "यार, एक बार एक बुड्ढी सरदारिन को पछिया रहा था, क्योंकि उसके गले में कीमती हार था। पंजाबी बुढ़ियां सजाव-सिंगार में जवानी का दामन चिता पर ही छोड़ती हैं। क्या बेशर्मी का आलम है! वह खड़खड़ डोकरी क्रीम-पॉउडर और रूज़-लिपस्टिक मले, आंखों में सुर्मा लगाए, साँडनी की तरह घूम रहा थी। मैं उसका हार देखकर मुस्करा रहा था, वह मुझे देखकर खीसें निपोर रही थी। मैंनेशिकार को कांपे पर लाने के मकसद से हल्की-सी आंख मारी, तो बुढ़िया बाग़-बाग़ हो गई—तुर्रा यह कि हया-शर्म का ड्रामा भी खेल गई! बहरहाल, जब मौक़ा हाथ लगा, तब मैं बाज़ की तरह झपटा पर वह भी ग़ज़ब की औरत थी; शैतान की ख़ाला! गोफा बांधकर मुझे पकड़ ही तो लिया और लगी 'चोर! चोर!! उचक्का! उचक्का!!' रेढ़ने। ज़रा-सी ग़फ़लत का मतलब था, अनाप-शनाप मार खाना और सज़ा काटना। मैंने फ़ट से पेट में दो करारे मुक्के मारे और लगे हाथ दाएं बाज़ू पर काट खाया। वह चीखकर छोड़ने के लिए मजबूर हो गई और मैं सर पर पैर रखकर नौ-दो-ग्यारह हो गया—हां, शुरू में 'चोर!चोर!!' चिल्लाना न भूला। जान बची तो लाखों पाए! कान पकड़े कि डोकरियों को भी न छेड़ूंगा—इनको न इज़्ज़त का डर होता है, न मरने का; क्योंकि इज़्ज़त होती नहीं और एक टाँग कब्र में लटकी ही रहती है!"

दूसरे दिन याकूब, परवेज़ और मैं, तीनों ने आज़ाद पार्क में बैठकर अच्छी ख़ासी लूट-योजना बनाई। तीनों ने परमात्मा को साक्षी कर कसम खाई कि यदि कोई एक पकड़ा गया तो बाकी दो का अता-पता न बताएगा, चाहे बोटी-बोटी काट डाली जाए। यदि दो पकड़े गए तो तीसरे का नाम-गाम न बताएंगे, चाहे सर कलम कर दिया जाए, सोचा गया कि रिंग रोड पर राहजनी की जाए। यहां कई मोटे मुर्गे हवा खाने आते हैं। टूरिस्ट भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

in Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

टकर सकते हैं। तय हुआ कि परवेज़ शिकार को चाकू दिखाए, याकूब माल इकट्ठा करे और यह ख़ास ख़याल रखे कि उसकी किसी जेब में कोई छोटा या बड़ा हथियार न रहने पाए, मैं लेकर भाग जाऊं। योजना बन गई। अगले दिन रात को नौ बजे हम टहलने के बहाने से निकले। यह तय कर लिया गया था कि पुलिस की गाड़ी दिखाई देने पर हम तीनों आनन-फानन अलग-थलग हो जाएंगे और अपने-अपने चाकू सुभीते की जगहों में फेंक देंगे। पूछने पर अलग-अलग ढब के बहाने तय कर लिए थे। इससे पहले, कोई गाना गाता चलने लगेगा, कोई चहलकदमी करता दीखेगा, कोई पेशाब करने लगेगा। संयोगवश ऐसा अवसर नहीं आया। बड़ी देर तक भटकने के बाद एक लालाजी रेंगते दिखाई पड़े। थुलथुल थे। शायद टहल कर वापस आ रहे थे। हमने इधर-उधर देखा। मौका माकूल लगा। बस,फौरन से पेशतर परवेज़ चाकू खोलकर खड़ा हो गया। लालाजी की घिघ्घी बंध गई। याकूब ने इतमीनान के साथ तलाशी ली। गले की चेन, हाथ की रिंग और पर्स कब्जे में किए। मैं कुछ कदम दूर खड़ा था। माल मेरे हवाले किया। मैं इधर-उधर देखकर भागा सो भागा। इधर उन दोनों ने जब देख लिया कि मैं सही सलामत काफी दूर निकल गया हूं, तब कड़ी वार्निंग देकर लालाजी को आज़ाद कर दिया। लालाजी कई मिनट बाद ही चिल्ला पाए होंगे! लेकिन बियावान माहौल में सुनने वाला कौन बैठा था? रिंग रोड पर सवारियां ज्यादा चलती हैं, पैदल कम। तेज़ रफ्तार से आते-जाते वाहन सहायक सिद्ध नहीं होते। इकट्ठे होने पर हम तीनों ने रिस्ट वाच न पहनने के लिए लालाजी को जी भर कर कोसा!

कुछ दिन बाद याकूब ने चेन और रिंग बेच दिए। उसका एक बड़े सर्राफ से अच्छा रब्त-जब्त था। दोनों चीजें लूट-रेट पर तीन सौ में बिकीं। सत्ताइस रुपए और अस्सी पैसे पर्स में थे। सारी रकम बराबर बँट गई। पर्स परवेज़ को दिया गया। अब तय हुआ कि एक हफ्ते आराम किया जाएगा। इसी बीच मैंने याकूब की मदद से हार ठीक करा लिया। सर्राफ़ ने लूट-रेट के हिसाब से डेढ़ हज़ार तक लगाए, पर मेरे दिल पर जुम्बिश का निशान तक न आया। मैं तय कर चुका था कि इसे किसी मुबारक

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

मौके पर लवलीन को गिफ्ट के रूप में दूंगा। याकूब से कह रखा था, "यह नायाब तोहफ़ा किसी के लिए…"

"समझता हूं।"

अब की बार तय हुआ कि नावों के पुल पर शिकार खेला जाए। हम अलग-अलग, कुछ-कुछ दूरी पर, चौकसी के साथ, काफ़ी घूमे-घामे, लेकिन कोई माकूल मौका हाथ न लगा। एक बार एक लड़का अपनी मां के साथ आता दीखा। हाथ में कीमती अटैची थी। माँ के गले या हाथ में जेवर होना ज़रूरी था, क्योंकि दोनों क्विक् रिच क्लास के सजे-बजे व्यक्ति थे। लेकिन ठीक उसी वक्त दूसरी तरफ़ से सात-आठ देहाती आते दीखे। "देहातियों से खुदा बचाए", याकूब ने कहा, "ये मुस्तंड बंदूकधारी डकैतों तक के दांत खट्टे कर देते हैं!" कुछ देर बाद पुलिस का वैन आता दीखा। हम फिर फुटक लिए। वैन निकल गया। इसके बाद आमदरपत एकदम कम पड़ गई। हम लोग मायूस होकर लौटने ही जा रहे थे कि एक मामूली थैले में कुछ लिए हुए एक सींकिया नवयुवक दिखाई पड़ा। परवेज़ ने तसल्ली की सांस ली, "चलो, इसे ही आज़माएं—भागते भूत की लँगोटी ही सही।"

इधर-उधर गहरा सन्नाटा था। वह नवयुवक क़रीब आया, परवेज़ ने चाकू निकाल लिया और उसकी गर्दन पर हल्का-सा कोंच देते हुए बोला, "निकाल जो कुछ है!"

नवयुवक ने टूटी-फूटी आवाज़ में कहा, "बाबू, गरीब आदमी हूं…"

याकूब ने धीरे-से कहा, "तो जान से हाथ धोलो, ग़रीबी से छुटाकारा मिल जाएगा; मारकर जमना में फेंक देंगे—न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी!"

नवयुवक ने जेब से रुपए निकाले, "तनखाह के नब्बे रुपिए हैं—मां बीमार है; आज मरी कल दूसरा दिन! दवा-दारू…"

पता नहीं किस शक्ति ने तात्कालिक प्रेरणा प्रदान की कि मैं अप्रत्याशित रूप से, एकदम अचानक ही, बोल पड़ा, "अज़ीज़, इसे न छेड़ो! परमात्मा…"

परवेज़ ने आग-बबूला होकर कहा, "किए-कराए पर पानी फेर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

in Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

दिया !"

याकूब ने साथ दिया, "साधू-महात्माओं को हिमालिया पर रहना चाहिए !"

मैंने उस लड़के से कहा, "जाओ दोस्त, लेकिन अभी या कभी इस घटना की चर्चा किसी से भी न करना—मां तक से नहीं !"

वह रोने लगा। पैर पकड़कर बोला, "हजूर, माई-बाप, आप साच्छात राम..."

"अच्छा, अब जाओ—राम-राम !"

वह "राम-राम" कहता चला गया। अब दोनों साथी मुझपर बेतरह बरस पड़े, "हाथ आए ज़र को पैरों से ठुकरा दिया ! अब भागो, नहीं तो ये नौजवान पुलिस के हवाले करा देगा !"

हम तीनों उलटे पांव लौट चले। निरापद स्थल पर आते ही मैंने कहा, "माफ़ करें, बेचारा बेकस ग़रीब..."

"तो क्या हम राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को लूटेंगे ? बिड़ला और टाटा की तिजोरियां खाली करेंगे ? वहां तो पास फटकने का ख्वाब देखते ही लेने के देने पड़ जाएंगे ! हमारे शिकार आम लोग ही हो सकते हैं। दर असल, हमारे ही क्यों, सारे ही लुटेरों, चाहे वे दुकानदार हों या पुलिस वाले, पटवारी या चौकीदार, गिरहकट या उचक्के, चोर या डकैत, ये या वे, के शिकार आम लोग ही हो सकते हैं, क्योंकि उन्हीं का लूटा जा सकना मुमकिन है, आसान है। बोझा गधे पर लादा जाता है, चीते पर नहीं। यही कुदरत का कानून है। इसमें इंसानियत के जज़बात बेकार हो जाते हैं। लीडरों के बंगलों पर मच्छर भी नहीं भन्ना सकता, धन्ना-सेठों की कोठियों पर संगीनों का पहरा रहता है। यहां फटकते ही कुत्ते की मौत मरना तय रहता है; इसीलिए, सुलताना या मानसिंह भी नहीं फटके, दूसरों की बात ही क्या ? यहां तो चोरी होने पर भी पुलिस आकाश-पाताल के कुलाबे एक कर देती है, फ़ौरन माल बरामद करा देती है।... तीस-तीस रुपए मिलते !" दुख के कारण याकूब बीच में ही रुक गया।

ठीक इसी समय मैंने देखा कि विद्युत शवदाह के निकट, लालकिले के पिछवाड़े, स्टेशन की तरफ़ जाने वाली सन्नाटे की सड़क पर एक सूटेड-

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

बूटेड साहब की कार फेल हो गई है। वह इधर-उधर देख-दूख रहा था, लेकिन नुक्स पकड़ में न आ रहा था। मोटा आसामी लगा। मैंने मौका देखा। बेहद तेज़ रफ्तार से जाने वाले इक्के-दुक्के वाहन मात्र निकल रहे थे, जिनसे संकट सम्भव न था। मित्र-भर्त्सना से उत्तेजित मैं अचानक ही अपना असाधारण चाकू निकालकर साहब पर टूट पड़ा, "निकाल क्या है ?" साहब बहुत हट्टा-कट्टा पंजाबी अधेड़ था। किन्तु आकस्मिक अभियान ने उसे किंकर्त्तव्यविमूढ़ कर दिया। उधर याकूब ने, बिना एक पल खोए, लपककर गले पर हाथ फिराया। लेकिन उस पर चेन न थी। हाथों की अँगुलियां भी कोरी निकलीं। पर जेब में भारी-भरकम पर्स था ! हमारी बाछें खिल गईं। इतने में ही एक ट्रक आता दिखाई पड़ा। याकूब ने कहा, "भागो !" लेकिन मैंने रोका, "तुम कार देखते रहो, इसे मैं सम्हाले हूं। इस तरह भागने पर ख़तरा हो सकता है। पिस्तौल होने पर वार किया जा सकता है।" ट्रक आया और चला गया। जिसके लीवर के ठीक ऊपर बड़ी-से-बड़ी चाकू का नंगा फाल कुंच रहा हो, वह चिल्लाता कैसे ! परवेज़ ने कार के अन्दर रखा सूटकेस उठा लिया। अब कुछ नज़र न आ रहा था। मैंने साहब को कार के अन्दर बंद किया। चाबी अपने कब्जे में की, जिसे कुछ दूर पर फेंक देना था। अब भागने का नम्बर था।

पर्स में पूरे डेढ़ हज़ार रुपए थे। सूटकेस में एक बड़ा विदेशी कैमरा और कीमती, वेस्ट जर्मनी का बना, टेप रेकॉर्डर निकले। रुपये तुरंत बंट गए। सामान बेचने के वास्ते याकूब के हवाले किया गया। इस काम में जल्दबाजी से भण्डा फूट सकता था। सूटकेस मुझे मिला। दोनों दोस्त तारीफों के पुल बांधने लगे। मैं सूटकेस सेठजी के घर में रखे बकस में धर आया। बाद में, लूट-रेट के बावजूद, सामान इक्कीस सौ रुपये में बिका। ये रुपए भी बराबर-बराबर बँट गए। मैंने इन सारे रुपयों को डाकखाने में नहीं जमा किया, क्योंकि बेकार की पूछताछ का अंदेशा था। दूर के एक बैंक में खाता खुलवा लिया। इस शानदार और बहादुराना कामयाबी ने दोनों दोस्तों को मेरा मुरीद बना दिया। मैंने अर्ज़ किया, "यह ग़रीब पर मेहरबानी का नतीजा है ! अमीर को लूटना कोई पाप नहीं, क्योंकि हर अमीर खुद एक लुटेरा होता है।" हम तीनों ने पूरे एक मास के विश्राम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

in Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

का निर्णय किया। अब तक की सारी लूटें अख़बारों में आ चुकी थीं। आख़िरी शिकार एक नामी डॉक्टर था। हमें संतोष हुआ, "भारत में सामान्यत: डॉक्टर ठग होते हैं—जनता से रुपए के ठग, सरकार से आयकर के ठग। इन्हें लूटने पर परमात्मा अवश्य प्रसन्न होगा!" फिर भी, अधिक टांगें पसारने पर ख़तरा था। हम लोग पोशाक में हेर-फेर करके ही लूटते थे, स्कार्स और कट्स भी लगा लेते थे, जिससे पहचान का ख़तरा न रहे। अब तक की मंजिल पुर-अम्न भी थी। किन्तु संतोष आवश्यक भी था, श्रेयस्कर भी। इसलिए, दोस्त भी एक मास के विराम के विन्दु पर सहमत हो गए।

इसी बीच मैंने विचार किया कि ऐसी लूटपाट ख़तरनाक तो है ही, कोई पिस्तौल दाग़ बैठे तो जान पर वन आए! पुलिस की वैन के फंदे में आ गए, तो नजात कहां? क्यों न हम फ़र्स्ट क्लास के रेलवे पैसेंजर्स को मीठी लूट से लूटा करें। ये सारे के सारे लुटेरे ही होते हैं; इसलिए, इन्हें लूटने से पुण्य भी मिलेगा! पहले किसी मोटी मुर्गी या मोटे मुर्गे पर अदाओं-भरी, मीठी-मीठी, प्यारी-प्यारी नज़रों का वार किया जाए, फिर क्लोरोफ़ार्म की मदद से उसे वेहोश करके, पूरी इंसानियत के साथ, लूट लिया जाए। यह अहिंसात्मक लूट होगी! फ़र्स्ट क्लास का सफ़र हराम का पास पाने वाले लीडर और ऑफ़ीसर करते हैं या समाज के सबसे वड़े लुटेरे उद्योगपति और व्यापारी। इन्हें लूटना इन्हें पाप के बोझ से राहत देने का पुण्य करना है। आरम्भ में मैंने अकेले ही प्रयोग की सोची, क्योंकि इसमें पकड़-धकड़ का डर कुछ कम रहता है अगर प्रयोग सफल रहा और आवश्यक हुआ, तो हम तीन हैं ही! इसमें कोई विश्वासघात भी न था—क्योंकि याकूब जब तब भलेमानुसों की जेबों पर हाथ साफ़ करता रहता था—यूं ही, प्रैक्टिस को कायम रखने के लिए—और परवेज़ एक नई अमीरज़ादी को इश्क की डोरी में बांध रहा था—ब्लैकमेल करने के लिए। मेरा प्रयोग कहीं अधिक सभ्यतापूर्ण और शालीन था!

मैं होटल में 'जिस दिन काम, उस दिन दाम' के हिसाब से काम करने लगा था। सरदार को मुझसे लाभ ही था, क्योंकि मेरे रंग-रूप की अच्छी धाक वैठ चुकी थी। मैं कभी-कभी उसको एक दिलकश नज़र से देख भी

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

लेता था। वह बेतरह लट्टू था। मैं गैंडे का सौंदर्य-बोध देखकर मस्त हो जाता था। तो, मैंने नए धंधे के अनुरूप फ़र्स्ट क्लासहिप्पी कट बाल बढ़ाए-सजाए, एक हाई क्लास सूट बनवाया, एक शानदार अटैची ख़रीदी। चाकू के लिए पैंट में दाएं पंजे के पास एक माकूल और गुप्त जगह बनवा ली। बहाना था रुपए रखने का! लेकिन क्लोरोफ़ार्म बड़ी मुश्किल से मिल पाया। एक पंजाबी केमिस्ट ने हज़ार नख़रे दिखाकर ब्लैक रेट में बेचा। मैंने इसे आस-पास से नहीं, लाजपतनगर से ख़रीदा था, जिससे अहचान-वहचान का पचड़ा न पड़े, क्योंकि अख़बार में ख़बर का डर था। जब सारी तैयारी पूरी हो गई, तब ख्याल उठा कि अपना अलग कमरा हो जाए तो बेहतर रहे। सोच-विचारकर राजौरी गार्डन में सौ रुपए महीने पर एक छोटा-सा पर अच्छा कमरा ले लिया। मालिक पंजाबी ब्राह्मण था। उसने आवारा या लोफ़र समझते हुए साफ़-साफ़ 'ना' कर दी थी, "भाई, मैं छड़ों को मकान नहीं देता!" लेकिन उसकी अधबूढ़ी और मोटी पर सजी-बजी और अल्ट्रा माडर्न बीवी पर पिछले पंद्रह दिनों से शीशे के सामने बैठकर, रिहर्सल में पूरी तरह कामयाब फ़िल्मी आशिकाना पोज़ पट्टू डाल गया। पांच बेटों और तीन बेटियों की मां थी। बड़ा बेटा पैंतीस के आसपास का था। बिना पूछताछ के ही शर्मीला टैगोर के पोज़ में बोली, "मेरी शादी बारह साल की उम्र में हो गई थी और पंद्रह के इर्द गिर्द थी जब बड़ा लड़का…"

"लड़का? कौन?…"

उसने साथ के कमरे में शीशे से उलझे अल्ट्रा-मॉडर्न बेटे की ओर इशारा किया। संपन्नता-सूचक तोंद से युक्त उस सामान्यतर शरीर पर कोई दो हज़ार के वस्त्राभूषण सुशोभित थे! वह बोली, "बीस से ऊपर का हो चला…"

"ये आपका बेटा है?"

"ह—आं!"

"ग़ज़ब है! यकीन नहीं होता! मैं तो समझा भाई है!"

वह हेमामालिनी की तरह मुस्कराती बोली, "कई लोग ऐसा ही कहते हैं!"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

in Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

इसके वाद वात पक्की हो गई। मैंने वताया, "सरदार होटल में चीफ़ बेयरर हूं। काफ़ी कमाई हो जाती है।" वह संतुष्ट हो गई। मैंने तहा धरा, "जगह की कमी नहीं है, लेकिन मैं अपना अलग आजाद वसेरा चाहता हूं। यों, लाइफ़ वहुत विज़ी है; वीक में दो-तीन दिन ही, या छुट्टियां लेने पर, आ पाऊंगा!" अंग्रेजी के शब्दों का वहुत प्रभाव पड़ा। उसका पति, जो गिट्ठा-सा, पतला पर नन्हें-से तोंद से युक्त, भैंगा बंदा था, मेरे कभी-कभार रहने की वात से वहुत खुश हो गया; शायद उसे अपनी हथिनी छाप बीवी के कारण कुछ अज्ञात-सी आशंका थी! चूंकि मैं ठेठ अल्ट्रा-मॉडर्न हेयर स्टाइल और कीमती सूट में था, इसलिए उसके वेटी वेटे भी 'रंगा खुश' वोल गए। मैंने सेठानी से यह नहीं वताया। वकस वहीं रखा। लेकिन सूटकेस, हार, पासवुक्स वगैरह इस आवास में रख गया। इससे पकड़े जाने की हालत में माल वरामद होने का डर जाता रहा। होटेल में सिर्फ मामूली कपड़े-लत्ते थे। सेठ जी के घर में वकस जिसमें कुछ अच्छे से कपड़े पड़े थे। जोखिम का सारा माल यहां था। यह घर इतनी दूर था कि कोई गुमान भी न कर सकता था। मैंने किसी से भी बताया नहीं।

अब मैं अभियान पर निकला। दिल्ली-कलकत्ता के बीच के बड़े स्टेशनों का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। कुछ पढ़-पुढ़कर तो कुछ पूछ-पाछ कर उसमें ख़ासी बढ़ोत्तरी की, यह सुन रखा था कि फ़र्स्ट क्लास में चेकिंग सख्त है, इसलिए, एक मेल ट्रेन के लिए कानपुर तक टिकिट लिया। ख़र्च खटका तो, पर दलील मौजूद थी, "धंधे में लागत लगती ही है! कई वार तो पहले तो घाटा भी होता है, लेकिन वाद में वारे-न्यारे हो जाते हैं।" अतः व्यय-चिंता कम हो गई। जनवरी का महीना था। कड़ाके की सर्दी थी। ऊपर से बूंदावांदी! गाड़ी में भीड़ कम ही थी। मैंने एक ऐसा कम्पार्टमेंट चुना, जिसमें सिर्फ चार यात्री थे। एक गंजा और चश्मुद्दीन सरकारी अफ़सर था, जो सूट-बूट डाटे था और एक फ़ाइल पर नज़र गड़ाए था। मैं जान गया, इन फ़ोके तिलों में तेल नहीं! ज़्यादा हुआ तो इम्पोर्टेड रिस्ट-वाच और सौ-दो सौ की भभूत! दूसरा खूसट और वेडौल खद्दरधारी एम. पी. था। 'दिनमान' पढ़ रहा था। निराशा-सी हुई! तीसरे-चौथे एक

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

सिख-दम्पति थे। दोनों अधेड़। मर्द भारी और तोंदियल। औरत गोरी पर मर्द से भी ड्योढ़ी। ऐसे पंजाबी 'नए शोषण-युग के प्रतीक नए मोटे' कहे जा सकते हैं ! इनसे कुछ उम्मीद बंधी। तसल्ली हुई।

रात का सन्नाटा था। सरदार जी ने अंदर से चिटखनी बंद कर दी थी, जिससे यात्रा-निद्रा में व्यवधान न पड़े, भले ही कोई गाड़ी न पकड़ पाने पर हाथ मल-मल कर पछताता रह जाए। मैंने कीमती सूट पर एक कीमती ओवरकोट पहन रखा था। सिर खुला था। शीशे पर हर एक पोज़ आज़माया जा चुका था। हीरोकट जेस्चर में तनकर बैठ गया और एक ऐसी दिलचस्प पांडी पढ़ने लगा, जिसके कवर पर सिर्फ पैंट पहने एक पुरुष बहुत कम कपड़े पहने एक स्त्री को बांहों में भरे हुए चूम रहा था। मैं लगभग खाली अटैची लेकर चला था, जिसके अंदर एक-दो पांड़ीज़, खद्दर का कुर्ता, सदरी और पाजामा, जो वेश-परिवर्तन की रक्षा-कला के अंग थे, तौलिया, टूथपेस्ट और ब्रश मात्र थे। पहचान या निशान की कोई चीज़ नहीं थी। सोचा था, अगर ज़्यादा माल हाथ लगा, तो इसे डिब्बे में ही छोड़ दूंगा।

थोड़ी देर में अफ़सर बर्थ पर जाकर लेट गया। कुछ देर बाद एम. पी. सीट पर ही बैडिंग खोलकर लम्बा हो गया। सरदार जी भी सीट पर ही लेटे-लेटे खर्राटे लेने लगे। लेकिन सरदारनी की आंखें पांडी के कवर पर लगी थीं। मोटी होने के बावजूद वह नरम और गरम दोनों थी। ऊपर से शरम ! गोरी-चिट्टी चीज़ थी। मुझे 'सोणी सो सिखणी···' कहावत याद आ गई। वह मेरे सामने वाली सीट पर ही खिड़की से लगी बैठी थी। सरदार उसकी जांघ पर सर रखे सो रहा था। प्रायः नेताओं, व्यापारियों औरअधिकारियों की बीवियां पतियों की अतिव्यस्तता के कारण अतृप्तकाम रहती हैं। इसीलिए बहुत बार नौकरों के छक्के-पंजे रहते हैं। मैं यह खूब जानता था। मौका देखकर मैंने उसकी ओर एक लुकती-सी, झुकती-सी, रुकती-सी निगाह डाली। उत्तर में एक छिपी-सी, झिपी-सी, दिपी-सी मुस्कान ! मैंने सोचा, परमात्मा कृपालु है और मेरी खरी कमाई की लागत बेकार न जाएगी। मेहनत का फल मीठा होता है !

अब कुछ-कुछ पल रुक-रुककर नज़रें मिलाने का कार्यक्रम चालू हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

in Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

वह आंखें सेंक रही थी, मैं घात में था ! आख़िर वह मुस्करा ही तो पड़ी ! मैंने 'हंसी सो फंसी' के चिरंतन नियम के अनुसार, चुपचाप, बिना एक शब्द बोले, पांडी उसकी ओर बढ़ा दी। वह दो पल रुकी, लेकिन इसके बाद उसने पांडी ले ली। सचित्र चीज़ थी !पच्चीस रुपए में ख़रीदी थी—धंधे की ख़ातिर ! वह वैसे टूटी जैसे दस दिनों का भूखा रसगुल्लों की प्लेट पर।

मैंने सामान का निर्णायक निरीक्षण किया। एक ट्रंक था। उसे स्वयं उतारना युक्तियुक्त न लगा। कुली बुलाकर उतरवाना माक़ूल न जंचा। एक अटैची थी, जिस पर परिचयपत्र टंका था। डर लगा। लेकिन वह नाम रट लेने पर जाता रहा !—मैंने सोचा, यह और अपनी, दोनों अटैचियां आसानी से उठा सकूंगा। परमात्मा जो देगा, उसी पर संतोष करूंगा—संतोषं परमं सुखम् !—व्यग्रतापूर्वक प्रतीक्षा करने लगा कि कब यह निंदारी हो और अपना एक्शन चालू। बार-बार टाइम टेबल पर नज़र डालता। पर वह न सोई, न सोई ! बार-बार पांडी पढ़ती और मुस्करा पड़ती ! मजबूर होकर मैं स्वयं सीट पर लेटकर सोने का नाटक करने लगा।

अब वह पांडी अलग रखकर मुझे देखने लगी ! मैंने कुछ देर बाद करवट बदल ली। इसका नतीजा अच्छा निकला। थोड़ी देर बाद वह ऊंघने लगी। अब मैं चुपके-से उठा। पहले तो पांडी अपनी अटैची में डाली, फिर परिस्थिति का आकलन किया। कुछ देर में ही इटावा आने वाला था। मुझे मालूम था कि यहां यमुना बहती है और टिकसी का मंदिर है। यदि यहां उतरा तो क्या करूंगा ? इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त था। सोचा, यहां जर्नी ब्रेक के नाम पर उतरा जा सकता है। भोर होने में थोड़ी ही देर थी। इससे यह लाभ था कि शहर में ठहरने और वहां से टरकने की सुविधा अधिक आसानी से प्राप्त हो सकती थी। मैंने लैवेटरी जाने के बहाने उठ-चलकर यह तथ्य सुदृढ़ किया कि चारों व्यक्ति सोए हैं।

अब मैंने एक बंद डिब्बे को खोला और क्लोरोफ़ार्म का रूमाल सभी को ख़ूब-ख़ूब सुंघा दिया। इसके बावजूद, डरते-डरते, पहले सरदा-

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

रनी का दायां गाल छुवा। कोई प्रतिक्रिया न हुई। यदि चेत में होती तो एक हल्की मुसकान ज़रूर दीखती ! अब त्वरा की अपेक्षा थी—इतनी कि एक चुम्बन की भावना भी दब गई ! मैंने चारों की घड़ियां खोलीं, चारों के पर्स निकाले और सरदार की अटैची को मापा-तोला। लगा, परमात्मा सबकुछ ठीकठाक करने जा रहा है। इसी बीच इटावा आ गया। मैंने द्वार खोलकर परिस्थिति का निरीक्षण किया। वह प्रतिकूल न थी। इस डिब्बे में कोई आने वाला तक न दीखा। बस चटपट मैंने 'जीसस, माई लॉर्ड' कहा और दोनों अटैचियां लेकर इतमीनान के साथ उतर गया।

द्वार बंद करना न भूला। तब तक एक कुली आ पहुंचा। मैंने संकेत से आज्ञा दे दी और उसने उन्हें उठा लिया। दोनों हल्की ही थीं। टिकिट चेकर से ब्रेक की बात की-कराई और बाहर आ पहुंचा। कुली को रुख्सत किया। यह ज़रूरी था। तब चुपचाप यमुनाजी का रिक्शा किया। सवेरा हो रहा था। शीत के बावजूद इक्के-दुक्के नियमित स्नानार्थी आ-जा रहे थे। मैं भी स्नानार्थी बन गया। नहा-धोकर खद्दर का कुर्ता-पाजामा टांचा। ऊपर से सदरी डाट ली। चंदन लगवाया। शीशा देखा तो युवा कांग्रेस का नेता लगा ! बाछें खिल गईं ! विचार उठा, "कम-से कम चोरी-चमारी में तो नेता छाप पोशाक़ फ़बनी ही चाहिए !"

पण्डाजी को पांच का पत्ता पकड़ाया तो वे चौंक पड़े, "ऐं !...लेकिन सरकार, आप लोग तो राजा हैं !" बातचीत चालू हो गई। पण्डाजी ने अपने वंश का इतिहास बताया और मैंने एक कमरे की प्रार्थना की। प्रार्थना के साथ काम की बात भी चस्पां कर दी, "जो कहेंगे..."

"सरकार की बात ! भुल्लन, नैंक सरकार को ठहरइयो तो !" उन्होंने आवश्यक निर्देश दिए और मुझे सरिता तट पर एक अच्छा स्थान मिल गया। अब मैंने धीरे-से सरदार वाली अटैची के कान उमेंठे। हैरत हुई कि उसमें ख़ास कुछ न था ! तिरेपन रुपए, कुछ रेज़गारी, एक टिक्की लक्स, एक बड़े साइज़ का अफ़ग़ान स्नो, वैसा ही हिमालिया बुके पॉउडर, लिपिस्टिक, एक पैकेट निरोध, एक जनानी कंघी, एक बढ़िया तौलिया और बस ! निराशा हुई, पर चार घड़ियों और पर्सों का संतोष था। पर्स

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

खोले। अफ़सर के में तीन सौ तीन रुपए और इक्यावन पैसे थे, नेता के में पूरे डेढ़ सौ, सरदार के में चार सौ बीस और एक अठन्नी, सरदारनी के में पछत्तर और तीस पैसे। संतोष हुआ। कनकटी अटैची, खाली पर्स लिपि-स्टिक और ज़नानी कंघी वहीं छोड़ दी—"पण्डाजी भी क्या याद करेंगे कि आया था कोई महुवेवाला ! किसी से कहेंगे भी नहीं !" और मैं 'कुछ घंटों के वाद आऊंगा' कहते हुए अपनी अटैची लेकर निकल पड़ा।

समूचे कार्यक्रम में कोई डेढ़ घंटे लग चुके थे। स्पष्ट था कि गाड़ी कानपुर पहुंचने वाली होगी। मैं सेफ़ था। स्टेशन पहुंचा। एक पैसेंजर ट्रेन आगरा जा रही थी। मैं थर्ड क्लास का टिकट लेकर जा वैठा। कुछ देर वाद गाड़ी गधे की रफ्तार से चल पड़ी। मैंने इटावा, ईसा और ईश्वर को धन्यवाद दिया कि अभियान सफल रहा और लाभ का लेखा-जोखा करने लगा, जो तख़मीने से बहुत कम भी न था !

आगरा घूमता-घामता दिल्ली लौटा। आगरे में बाल कटा लिए थे। हिप्पी कट से गांधी कट ! इस बीच अख़वार में ख़बर पढ़ चुका था। चौकन्ना रहना लाज़िमी था। पोशाक लीडराना ही रखे रहा। कोई अड़-चन न पड़ी। कई लोगों ने नमस्ते तक कर डाली !

दिल्ली में जब जीवन यथास्थिति पर आया, तब लवलीन के जन्म-दिवस का स्मरण कैसे न आता ! मैंने सरदारनी वाली रिस्टवाच इसी मौक़े के लिए रख छोड़ी थी, क्योंकि वह एकदम नई लगती थी और सादा पर स्तरीय थी। लवलीन का जन्म-दिवस इक्कीस तारीख़ को पड़ता था। इसलिए, मैं वकस में कुछ कपड़े रखने के वहाने दो दिन पहले ही जा पहुंचा। ऐसा समय चुना था, जिसमें वह हो। जाते ही सेठजी और सेठानी जी के पैर छुए, लवलीन और अरुण को नमस्ते की। चारों खुश हो गए। अरुण ने मेरे नाज़-नक्श पर गौर करके कहा, "हीरो लगते हो ! पार्टनर, वॉम्बे पहुंच जाओ तो, क़सम ख़ुदा की, जिसने छह दिनों में दुनिया बनाई और सातवें दिन आराम फ़र्माया, प्रोड्यूसर्स पीछे पड़ जाएं !"

"क्या दून की हांकते हो ! भारत में नेता हो या अभिनेता, नेत्री हो या अभिनेत्री, प्रोफ़ेसर हो या डॉक्टर, ऑफ़ीसर हो या लॉइयर—सव वंश-परम्परा के अनुसार ही फलते-फूलते हैं। क्या मजाल जो कोई भाई-

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

भतीजावाद की सीमा-रेखा को पार करने की जुर्रत कर सके !" लवलीन ने आलोचना की, जो मुझे बहुत भाई।

मैं सेठजी के पैर दबाने लगा। उन्होंने रोका, "अब तुम···"

"क्या बेटे की स्थिति भी परिवर्तित हो सकती है ?"

सेठानीजी ने उस दिन वापस न जाने दिया, "दूज के चांद हो रहे हो आजकल; उस पर तुर्रा बेटेपन का !" और मैं निरुत्तर रह गया।

रात को मुझे बराबर बैठालकर खाना खिलाया गया। मुझे लगा, मैं सचमुच ऊपर उठ रहा हूं ! और बातों के दौर में लवलीन ने जन्मदिवस का निमंत्रण भी दे डाला ! मेरी खुशी का पारावार नहीं···

छोटा-सा आयोजन था। सेठजी को विदेशी शैली एकदम नापसंद थी। इसलिए, लवलीन की कुछ सहेलियां, अरुण के कुछ मित्र, दोनों बड़े भाई और उनके परिवार, सेठजी, सेठानीजी और मैं—इतने लोग ही थे। न बैलून्स, न कैंडल्स, न केक। फिर भी, गिफ्ट्स आए थे। मैंने एक बढ़िया केस में रखकर घड़ी भेंट की। लवलीन ने स्वीकार कर मुझे कृतार्थ कर दिया ! भोज हुआ। क्रमशः अतिथि जाते गए। दोनों भाई पूसा रोड चले गए। अरुण थक जाने के कारण अपने रूम में सोने चला गया। सेठजी भी सोने लगे। अब सेठानीजी, लवलीन, मैं और जीवनराम घर को पूर्वस्थिति में लाने पर जुट गए। कुछ देर बाद जीवनराम ने इजाज़त मांगी। वह काफ़ी मिठाई और इनाम-इकराम लेकर अपने घर चला गया। अब मैंने भी आज्ञा मांगी। सेठानीजी ने रोका, "हम तीनों गिफ्ट्स देखेंगे ! तुम सवेरे जाना।" जब दीवार घड़ी ने टन्-टन् करके बारह बजाए तब सेठानीजी को नींद का ख़याल आया। वे और लवलीन एक कमरे में ही सोती थीं। मुझे उसी के बाहर बरामदे में चारपाई डालने की आज्ञा मिली। मैं तत्काल सो गया, क्योंकि बहुत थक गया था। सोचा था कि नींद सवेरे सात से पहले न टूटेगी, लेकिन ऐसा न हुआ,···जागा तो मालूम हुआ, लवलीन मेरे छोटे-छोटे बालों पर अपने दोनों हाथों की अंगुलियां फिरा रही है।

घना अंधियारा था, विकट शीत था; रात के दो बजे होंगे। मैं तो लिहाफ़ के नीचे पूरे आराम और यथेच्छ ऊष्मा से सुखी पड़ा था और वह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

चारपाई पर सिरहाने बैठी शीत झेल रही थी! मैं नारी प्रकृति के समर्पण-तत्त्व से अभिभूत हो उठा। इच्छा हुई, उठकर उसके तलवे चूम लूं, प्रार्थना कर दूं, "तुम स्वर्ग की देवी हो, मैं पाताल का नाग! तुम ईडेन की ईव हो, मैं सर्पेन्ट!...अपने को बचा लो!" लेकिन, पता नहीं क्यों, मैं चुप-चाप, सांस दबाए, दिल चपाए, पलकें झंपाए पड़ा रहा! लवलीन, अपनी सुंदर, सुकुमार और मांसल लम्बी-लम्बी अंगुलियों के छोरों से मेरा सर हल्के-हल्के सहला रही थी! मैं स्वर्ग को मुट्ठी में दबाए पड़ा रहा, पड़ा रहा...

अचानक लवलीन ने मेरे मस्तक पर अपना दायां पंजा फिराया। रोमांच हो आया। सांसें दबाए न दबीं और बहुत तेज़ हो गईं। पर मैं न बोला, न उठा...

इसी सिलसिले में, उसने मेरी भृकुटियों पर अपनी ज्येष्ठा फिराई, और, लगता है काफ़ी झिझकते-झिझकते, उसने मेरे अधर पर तर्जनी फेरी।

मेरा तन, मन, यौवन और जीवन—मेरा सर्वस्व—उसे बाहों में भींचकर अपने में मिला लेने के लिए बेताब हो उठा, लेकिन उसी पल मुझे गौहाटी से भागने पर रेलयात्रा का स्मरण हो आया, "घोर विश्वास-घात।" और मैंने एक निरीह वैवश्य के साथ उसकी तर्जनी को अपने अधर से हटा दिया, फुसफुसाते हुए कहा, "लवलीन, कुछ सोचो तो! तुम क्या मुझे पत्थर का बुत समझती हो? मेरे कर्तव्य का विचार करो!"

एक खारा पर प्यारा अश्रु-बिंदु मेरे बोलते हुए मुख में आ गिरा—वह पीयूष-पान मैं कभी, कभी, कभी नहीं भूलूंगा!

"पीटू,...आई...आई लव यू!"

"पर..."

"पर लगाने से प्यार उड़ जाता है। पर और प्यार में सनातन वैर है।"

"कुछ तो..."

"तो मैं आजन्म अविवाहित रहूंगी! प्रतिज्ञा करती हूं! एम. ए. होने जा रही हूं। तेज़ हूं। कहीं लेक्चरर लग जाऊंगी और तुम्हारे नाम की माला जपती-जपती मर जाऊंगी—आख़िर ज़िन्दगी हज़ारों साल की

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

तो होती नहीं !"

अचानक मुझे किसी के जगने और आ खड़े होने की आशंका हुई। मेरे तन से, मन से, प्राण से, आत्मा से उद्‌गार व्यक्त हुआ, "कल दोपहर में कनॉट प्लेस के 'लगूना' में मिल सकोगी ? लगन से बातें···"

लवलीन चिल्ला-सी पड़ी, "एकदम साढ़े ग्यारह बजे !"

मैं मारे डर के पीला पड़ गया, क्योंकि एक तो आशंका कि कोई आ खड़ा न हो, दूसरे यह ऊंची आवाज़ ! आग्रहपूर्वक बोला, "अच्छा, अब···" और लवलीन खुशी-खुशी उठकर चली गई। मेरी जान में जान आई—कैसा अद्‌भुत विपर्यय था ! जिसे जान से ज्यादा चाहता था, उसके जाने पर जान में जान आई ! नींद आने का प्रश्न ही न था—क्या बातें करूंगा ? कहां से आरम्भ करूंगा ? कहां से अंत करूंगा ? क्या प्रकट करूंगा ? क्या गुप्त रखूंगा ? दीवार घड़ी ने चार की सूचना दी—साथ ही, चेतावनी भी, कनॉट प्लेस एक व्यस्त स्थान है। अरुण अक्सर घूमने जाता है। लेकिन दोपहर ? फिर भी; ···तो 'लगूना' के आसपास लगन में मगन टहलता रहूंगा और जब लवलीन दीखेगी तब उसे लेकर··· हुमायूं के मक़बरे की तरफ़ निकल जाऊंगा, जहां किसी लॉन पर बैठकर अपना दिल खोलूंगा।

दूसरे दिन काम पर नहीं गया। वहीं नहाया-धोया और जलपान किया। दस बजे निकल पड़ा। एक हैंड बैग मात्र लेकर। रास्ते में घंटे वाले की दुकान से कुछ मिठाई और कंवरसैन की दुकान से कुछ नमकीन लेता गया। ठीक सवाग्यारह बजे मैं यथास्थान खड़ा हो गया और ठीक साढ़े ग्यारह बजे लवलीन थ्री व्हीलर से उतरती दीखी। मैंने, स्कूटर वाले के जाते ही, पास जाकर धीरे-से कहा, "यहां काफ़ी भीड़भाड़···"

"यही मैं सोच रही थी !"

"हुमायूं टोम कैसा रहेगा ?"

"बहुत ख़ूब ! लेकिन हुमायूं···"

"अभागा था ? नाम भाग्यशाली किन्तु अविराम अभागा ! यही न।"

लवलीन मुस्कराई और दोपहर में चांदनी बरस पड़ी ! हम दोनों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

एकदम क़रीब टैक्सी स्टैंड की ओर चले। फिर भी, मैंने पूछ ही तो लिया, "बारह का टाइम क्यों नहीं रखा था ?"

"तब टैक्सी कैसे मिल पाती ?" लवलीन हंसी और जूही की कलियां खिल गईं,…और कुछ देर में हम दोनों हुमायूं के मक़बरे के एक लॉन पर थे !

दोनों चुप,
दोनों इधर-उधर देखते हुए,
दोनों की आंखें मिलने को बेचैन,…

मुझे बोलना पड़ा, "थोड़ी-सी मिठाई और नमकीन…"

"तो पिकनिक मनाने आए हो ?"

मैंने दोनों डिब्बे खोलकर सामने रख दिए। दो आग्रहों के अनंतर उसने साथ-साथ खाना आरम्भ किया। आसपास कोई न था। थोड़ी दूर, दो माली कार्यरत थे। कुछ दूर, गेट के पास से, एक चौकीदार हमारी निगरानी पर डटा था ! काफ़ी दूर, बेंच पर बैठा, एक युवक हमारी ओर निर्निमेष देख रहा था ! मैंने सोचा, "एक सड़ी हुई क़ौम ग़ुलामी सहन कर सकती है, शोषण सहन कर सकती है, पारस्परिक लूट सहन कर सकती है, चोरी और डकैती सहन कर सकती है, अपहरण और बलात्कार सहन कर सकती है, क़त्ल सहन कर सकती है, पर दो व्यक्तियों का प्यार नहीं सहन कर सकती। क्या यह इसके सड़े होने का अकाट्य प्रमाण नहीं ? जिसका दिमाग़ सड़ गया हो, वही प्यार के खिलाफ़ जिहाद बोल सकता है…"

लवलीन ने विचार-प्रवाह को मोड़ा, "क्या सोच रहे हैं ?"

मैं कठोर वस्तुलोक में आ गया। दृढ़ता से बोला, "मेरे पिता नहीं हैं।"

"मालूम है। यह भी मालूम है कि माता भी नहीं है, भाई भी नहीं है, बहन भी नहीं है, रिश्तेदार भी नहीं हैं। लेकिन यह ठीक-ठीक मालूम है कि तुम हो ! क्या तुम भी नहीं हो ?" वह मुस्कराई। एक गहराई !

"मेरा कोई मूल धर्म नहीं है। यद्यपि मैं सब धर्मों का समान आदर

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

करता हूं तथापि सांसारिक दृष्टि से ईसाई हूं,…" वह चुप रही। मुझे लगा, उसे कष्ट हो रहा है। वोला, "प्रेम सर्वोपरि धर्म है। किसी युग्म में एक के हिन्दू और दूसरे के ईसाई होने पर भी प्रेम हो सकता है और होना चाहिए। फिर, मैंने जितना जाना और सुना है, उसके अनुसार हिन्दू मूल का था; यही नहीं, सम्भवतः ब्राह्मण! यह किसी से छिपा नहीं कि हिन्दू जब धर्म-परिवर्तन करता है, तब गम्भीर कारणों से ही अथवा वैवश्य में ही। हिन्दू धर्म की प्रकृति धर्म-परिवर्तन के विरुद्ध है। "अब क्या तुरुक से भुरुक होना है" कहावत कितनी गहरी और इतिहास-सम्पन्न है!" मुझ पर एक स्मृतिमूलक उदासी छा गई।

लवलीन ने लजाते-लजाते कहा, "प्रेम मानवता की आत्मा है, धर्म संस्कार। सच्चा प्रेम धर्म से विचलित नहीं हो सकता। उसमें धर्म-परिवर्तन का अहित्व केवल अहं की विकृति ही देखना चाहेगी।" और वह मुझसे कुछ अधिक सुनने को व्यग्र हो उठी। मेरे घूरकर देखने पर व्यग्रता अत्यधिक हो गई।

"अगर मैं कहूं कि मैं दो हत्याएं कर चुका हूं!…"

वह अकस्मात् हतप्रभ होकर चीख़-सी पड़ी, "ऐं!…क्या तुम चाहते हो, इस पर विश्वास करूं? परिहास ही है न? बता दो!" और इधर-उधर देखकर चुप हो गई।

मैंने बिना नमक-मिर्च लगाए, बिना कुछ जोड़े-तोड़े, शांतिपूर्वक दोनों प्रकरण सुना दिए और निष्कर्ष घोषित किया, "मेरा अंतःकरण मुझे हत्यारा नहीं मानता।"

कुछ दबी-दबी आवाज़ में वह बोली, "मैं भी नहीं मानती।"

"लेकिन अगर पकड़ा जाऊं तो दुनिया तो मानेगी ही! कानून मानव की हृदयहीनता के प्रतीक मात्र हैं, जो शक्तिशालियों द्वारा शासित होते हैं और दुर्बलों पर शासन करते हैं। मुझे कानून की लकीर का फ़क़ीर बनने से सख्त नफ़रत है। पर…"

"पर लगाकर उड़ने से क्या फ़ायदा जबकि उतरना धरती पर ही है?"

मेरे मन में आया कि बता दूं कि लूट और राहजनी, ठगी और प्रव-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

ञ्चना इत्यादि भी करता रहता हूं। परंतु, इन्हें लवलीन के लिए लव-निमिष मात्र में त्यागा जा सकता है; इसलिए, इस सम्बन्ध में कुछ नहीं बोला। चुप रहा।

"यदि मौन व्रत धारण करना था तो इतनी दूर आने का कष्ट क्यों किया ?"

"मैं एक मामूली वैरा..."

"अपना होटल खोल लो—पहले छोटा-मोटा ही सही; 'व्यापारे वसतिर्लक्ष्मी'..."

"लक्ष्मीजी तो बिना व्यापार के ही ठीक सामने विराजमान हैं !"

लवलीन शर्मा गई—पर खुशी-खुशी।

"मैं डिग्रीधारी नहीं हूं..."

"पर डिग्रीधारियों से इक्कीस लगते हो—दर असल, हो !"

पता नहीं किस शक्ति ने मुझे यह स्वर दे दिया, "कभी पिताजी या माताजी से..."

"ऐसा मौक़ा ही कब आ पाया ?"

"वे कभी न मानेंगे, क्योंकि सितारे और ज़र्रे का क्या जोड़ ?"

"यों, मैं बालिग़ हूं..."

मैं चमत्कृत हो उठा—नारी वस्तुतः शक्ति है ! बोला, "बड़ों का आशीर्वाद..."

"तो पूछ लूं ?" उसने पल-भर के लिए मेरी आंखों में आंखें डाल दीं।

मैं नारी के अद्भुत मनोविज्ञान-सागर में लघुपोत के सदृश कम्पित हो गया, "अभी नहीं। मैं किसी नई बस्ती में एक छोटा-मोटा होटेल खोल लूं और तुम एम. ए. होकर कहीं लग जाओ—तब !"

"तो क्या नौकरी ज़रूर ही करवाओगे ?" उसने आंखें झुका लीं।

"तुम्हीं ने तो कहा था !" मैं कटकर रह गया।

"नारी की मूल प्रकृति नौकरी-चाकरी की नहीं है, किन्तु बढ़ती हुई समस्याओं के नए युग में उसका नौकरी करना उचित तो हो ही चुका है।"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

"तुम न करना !" और यकायक मुझे 'सूत न कपास, जुलाहों से लट्ठमलट्ठा' का स्मरण हो आया, हालांकि हंसी को रोकने में सफल रहा।

लवलीन मुस्कराकर रह गई। कुछ पल बाद बोली, "यह न भूलना कि यह ज़िंदगी जिसकी है, उसी की रहेगी—वह उठा ले तो, ठुकरा दे तो !"

इसका उत्तर मेरे आँसुओं ने दिया।

कुछ देर बाद हम दोनों अपने-अपने लक्ष्यों की ओर चल पड़े।

मैं लगातार जान-पहचान वालों से दूर, जनकपुरी की ओर, होटल खोलने की योजना बनाता रहा। आरम्भ में चार व्यक्ति पर्याप्त होंगे। अपने अतिरिक्त मैंने सरदार होटल के मंगल नामक प्रौढ़ ब्राह्मण और उसी के गांव के दो लड़कों का चयन किया। मंगल को ख़रीद-फरोख्त से लेकर खाना बनाने-परोसने तक का विशाल अनुभव प्राप्त था। दोनों लड़के अथक परिश्रम कर सकते थे। मैंने अपने और मंगल के हितों के पूर्णत: अनुरूप, लाभ में पंचमांश का भागीदार बनाने का प्रस्ताव करना चाहा। लड़कों को दस-दस रुपये मासिक अधिक देकर आकृष्ट किया जा सकता था। मैं मौके की तलाश में रहने लगा। सरदार अपने कर्मचारियों में बराबर फूट डाले रहता था। वह उनमें कभी रब्त-ज़ब्त या काना-फूसी पसन्द न करता। भारत में व्यापार का अर्थ है शोषण या लूट ! इस दृष्टि से वह ठीक ही था ! और पता नहीं कैसे, एक दिन शराब ज्यादा पी जाने के कारण उसका दिया एक विशेष लेक्चर अनायास ही याद आ गया, "मेहनत-मज़दूरी के काम में पंजाबी को कभी न लगाओ—सरदार से तो गुरूजी बचाएं ! ये लोग बड़ी जल्दी लूट-खसोट शुरू कर देते हैं। चूं भी करो तो छाती पर सवार ; चोरी और सीनाज़ोरी ! हमेशा कमज़ोर और गिट्ठे दक्खिनियों को पहल दो। वे न मिलें, तो यू. पी. के भैयों को रख लो। ये एक तो सीधे-सादे होते हैं, दूसरे कमजोर भी। सबसे बड़ी बात यह है कि इनमें फूट बहुत है—एक को पिटता देख कर दूसरा बत्तीसी निकालता है ! ये फटीचर पंजाबियों को गोरों का दर्जा देते हैं, उनसे थर-थर कांपते हैं ! चीं-चपड़ करें तो दो घुसुंड मार-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

कर भगा दो ! जब इनको ठीक इनके वतन में लूटा-पीटा जा सकता है, तब पंजाब या दिल्ली में चाहो तो खाल खींच लो—यहां पुलिस में पंजाबियों का ज़ोर है, और पंजाबी पंजाबी को पहले देखता है, इंसाफ़ और इन्सानियत को बाद में !" सरदार शायद मुझे पंजाबी समझता था। उसके दिमाग़ के मुताबिक़, ख़ूबसूरत और सेहतमंद इन्सान सिर्फ पंजाबी ही हो सकता था। मैं इस 'सरदारोलॉजी' से प्रभावित हुआ था—मनुष्य मूलतः स्वार्थी ही है। त्याग और दया इत्यादि तो ख्याति-क्रम के उपादान मात्र हैं।

मेरा मंगल और उक्त दोनों लड़कों से अच्छा प्रेम था; फिर भी, गम्भीर और व्यावसायिक वार्त्ता के लिए वातावरण का शोध कर रहा था, क्योंकि होटल में यह सम्भव न था, कि यकायक याकूब और परवेज़ दिखलाई पड़ गए ! हम लोगों में तय था कि वे जब आएं तब यह न मालूम होने दें कि हम परस्पर परिचित हैं। इससे कई लाभ थे, जिनमें उनके ग्राहक बनकर आने पर अधिक खाना और कम चुकाना भी शामिल था। आज मैं उन्हें देखकर ख़ुश न हो पाया, "पाप एक ऐसा दलदल है, जिसमें जो पड़ा सो गड़ा, जो गढ़ा सो सड़ा।" लेकिन उन्हें टाला भी तो नहीं जा सकता था। वे मुझसे अधिक बलवान तो न थे, पर थे पेशेवर अपराधी। डर लगता था। भेद खोल सकते थे। उनका प्रभावी व्यक्तियों से हेलमेल था—जेल भिजवा सकते थे। लेकिन यह सब आज ही याद आया ? मन मारकर, मुंह पर मुस्कान घसीटकर, बहाने से बाहर निकला। कुछ दूर बातचीत नहीं हुई। स्टालों के पीछे, गांधी मैदान में पहुंचने पर याकूब बोला, "जानी ईद के चांद हो रहे हो ! न यहाँ दीदार होता है, न वहां !"

"छिपे रुस्तम तो नहीं हो ?" परवेज़ ने जोड़ा।

"क्या बात करते हो—ये जनाब तो खुले रुस्तम हैं !"

मैंने बहाना बनाया, "तबीयत नासाज़ थी। यहीं था, लेकिन चारपाई पर…।"

"ओह ! लेकिन लगते तो लालो-लाल हो ?" परवेज़ को सचाई पर शक था।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

"दरिया से दो बाल्टी पानी निकल जाए तो क्या फ़र्क पड़ता है ! इन जैसे इस्पाती इन्सान के लिए मामूली बीमारी है ही क्या ? फिर कई लोग बीमारी में तगड़े हो जाते हैं। कुछ लोग बीमारी में ही तगड़े होते हैं !" याक़ूब ने अभिधा, लक्षणा और व्यञ्जना का समन्वय किया।

"ख़ैर आ जाओ मतलब की बात पर !"

याक़ूब ने चौतरफ़ा देखकर कहा, "एक भारी पेशकश है, इन्कार न करना।"

मैं हक्का-बक्का-सा बोल पड़ा, "क्या ?"

दोनों हंस पड़े, "ख़ौफ़ न खाओ, अपने धन्धे में ख़ौफ़ के लिए जगह नहीं।"

मैं चुप रहा। याक़ूब ने बताया, "खारीबावली के एक सेठ का मुनीम सेठ के अर्दली के साथ मंगल और शुक्र को पन्द्रह-बीस हज़ार की थैली कोई दो फर्लांग दूर बैंक में जमा कराने जाता है—दिन में साढ़े दस के आसपास। कल मंगल है। खतरनाक जाड़ा है, बूंदाबांदी चालू है, सुनहरा मौक़ा है—वारे-न्यारे हो जाएंगे !"

"भीड़ बहुत होती है।"

"परवेज़ ने एक देसी पिस्तौल का इन्तजाम कर लिया है। देखते ही आम लोगों और तमाशबीनों की रूह फ़ना हो जाएगी, औसान ख़ता हो जाएंगे ! मैं नंगा चाकू निकाल लूंगा। थैली झटकने की ज़िम्मेवारी तुम पर रहेगी। मुनीम है तो कठेठ, पर तुमसे आधा भी नहीं बैठेगा। अर्दली तगड़ा है—हरियाणे का जाट; लेकिन हम दो हथियारों से लैस पठ्ठों के सामने क्या खाकर टिकेगा ? दोनों का अचानक हमले से डर जाना तय है। दोनों अधेड़ हैं और बालबच्चेदार, जिनमें न बेफ़िक्री होती है, न चुस्ती। मेरे भाईसाहब पास की गली में स्कूटर लिए तैयार मिलेंगे : वे तुम्हें थाना पहाड़गंज के पीछे, सुनसान-से, आराम बाग़ प्लेस में छोड़ देंगे। बाद में उनको एक हज़ार देना तय हुआ है। हम तीनों का वही बराबर-बराबर। तुम दो घण्टे बाद राजघाट पहुंच जाना, जहां हम दोनों मिल जाएंगे। हम दोनों ने एक सरदार टैक्सी ड्राइवर से बात पक्की कर ली है। उसे भी, बाद में, एक हज़ार देना होगा। भाईजान और सरदार को प्लैन के बाबत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

कुछ नहीं मालूम।" याकूब दम लेने को रुका।

परवेज़ ने तफ़सील से वताया, "तुम इधर नज़र नहीं आए वर्ना स्कीम पिछले एक हफ्ते से बन रही है। हमने भी 'क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरवा' छोड़कर बुलंदी का रास्ता तय करने का फैसला किया है। एक-दो वार में ही क्या से क्या हो जाएगा और तब हमेशा के लिए तौबा! रेहड़े हांकने वाले सरदार इम्पाला कारों पर हवा से वातें करते दीखते हैं, ढीली सलवार, और लटकता इज़ारबंद, पहनने वाले पंजाबी सूट पहनकर आसमान पर तनी इमारतों से झांकते हैं। किस बल पर? कुछ तो झूठे-सच्चे क्लेम करके सरकार से, हमारे ज़रिए मिलने वाला, पैसा खसोटकर; कुछ हमारे वतन की ज़मीन मुफ्त में पाकर; वाकी लोगों को लूटकर! हम टुकुर-टुकुर देखते रहते हैं और ये वाहर से आए वन्दे हम पर हुकूमत कर रहे हैं! जिस दिन तुमने उस पहाड़-छाप पंजावी को लूटा था—हम गरूर से तन गए थे। वाई चांस, यह सेठ भी पंजावी है! लुटेरे को लूटना ही असली इवादत है।"

"तदवीर ही तक़दीर वनाती है।" याकूब फ़लसफ़े पर उतरा।

मेरी बुरी हालत थी, "डर लगता है! भरा बाजार, दिन का टाइम, करीब का मामला!"

"काफ़ी इन्तज़ाम किया जा चुका है। हाँ, तुम पगड़ी वांध लेना, क्लीन शेव्ड हो ही, सरदार लौंडे लगोगे। मैं लुंगी में आऊंगा और परवेज़ धोती में। हम दोनों अपना-अपना मेकअप तय कर-चुके हैं, तुम अपना कर लेना। बोलना एक लफ्ज़ भी नहीं। वेफ़िक्र होकर।"

"डर लगता है।"

"क्या खुसरों वाली वात करते हो!"

"शेर कभी गीदड़ नहीं हो सकता, मर्द कभी हिजड़ा नहीं हो सकता!"

मैं चुप रहा। याकूब ने बुरा माना, "एक वार जब गैंग बन गया है, तब उसका डिसिप्लिन भी क़ायम रहना चाहिए। तुम लाख तगड़े हो, लम्बे हो, हट्टे-कट्टे हो, खूबसूरत हो, लेकिन तजुर्वे में तो कच्चे हो ही! रोम एक दिन में नहीं वना।"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

परवेज़ ने सख्ती दिखलाई, 'गैंग-रूल्स कड़ी न हों, तो एक दिन भी काम न चल पाए। हमारा काम लीडरों और वनियों का काम नहीं, जो तिकड़म और ठगविद्या पर टिका हो; यह सिपाहियों के काम से भी ज्यादा खतरनाक और मुश्किल है, जिसमें सब तरफ़ से जोखम-ही-जोखम नज़र आता है। खरी कमाई है, सच्चे मायनेमें खून-पसीने की !"

मैंने यथासम्भव अधिकतम प्रयत्न किया कि बच निकलूं, पर वे दोनों ही अड़ गए, "क्या से क्या हो गए हो, यह भी सोचा होता ? आज तक दुनिया में कोई बैल या गधा वनकर दौलत या शोहरत नहीं पा सका। दुनिया उसे सलाम करती है, जो उसे ठोकर लगाए। जिसके जूते की नाल मज़बूत है, वही पैर पुजता है। तारीख़ गवाह है कि जो लूट सका, उल्लू बना सका, आंखों में धूल झोंक सका, वही अज़ीम रहनुमा माना गया, हीरो बन गया। हम तीनों ज्यों ही कोठियों वाले बिजनेसमैन बन जाएंगे, त्यों ही यह छोड़कर वह लूट करने में जुट पड़ेंगे। लूट से नजात कहाँ ? सिर्फ लुटते रहना बुज़दिली है; लूटना मर्दानगी है। धन लूटो, जन लूटो, लज़्ज़त लूटो, इज़्ज़त लूटो, मज़ा लूटो, शोहरत लूटो, वाहवाही लूटो—सारे मुहावरे लूट पर टिके पड़े हैं ! लूटे सो रंगरूट, नहीं तो जाए टूट ! अगर तुम्हें बहुत ज्यादा डर लगता है, तो इसके बाद जो जी में आए सो करना। लेकिन इस बार फ़र्ज़ की इज़्ज़त करनी ही होगी। इन्सान वह जो फ़र्ज़ के लिए जिए और अगर जरूरत पड़े तो उसके लिए कुर्बान हो जाए !"

मुझे हाँ करनी पड़ी। शाम को मौके की गहरी छानबीन करना तय हुआ, "जैसे जंगबाज़ नक्शे का मुआइना करता है वैसे !" परवेज़ हंसा।

वे चले गए। मैं 'जीसस, माई लॉर्ड' रटता-रटता होटल पर आया। काम करता रहा, पर मन न लगा। लवलीन की सौम्य और पावन मूर्त्ति ने मन सौम्य और पावन कर दिया था, पावन मन अपावन कर्म से भयभीत हुए विना नहीं रह सकता। कभी-कभी भय पावित्र्य का पर्याय बन जाता है। भय धर्म का पिता है। भय संयम का प्राण है, नियम का आलोक। मन का भय ही उसे निर्भय बनाए रखता है। भय का अतिक्रमण उसे उत्तेजित और आंदोलित कर देता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

शाम को कलीमुल्ला के दरगाह के नीचे, कम भीड़ वाले, लॉन पर मिलना तय हुआ। मैं डगरा। मन-मन के वेमन पांव! रास्ते में चांदनी-चौक के पुराने चर्च के बाहर खड़े होकर प्रार्थना की, "जीसस, इस बार बचा लो तो फिर कभी लूटपाट न करूंगा। मैं जो कुछ कर रहा हूं, ज़िंदगी को जमाने की मजबूरी की वजह से कर रहा हूं।" आंसू आ गए। पूर्व-नियोजित कार्यक्रम के अनुसार, दोनों दोस्त मुझे मौके पर ले गए। दुकान दिखाई। उससे कोई पचास कदम चलने पर सड़क को एक निर्जन रहने वाली-सी गली काटती थी। तय हुआ कि मैं इसी जगह पर बाज की तरह, शेर की तरह झपटकर थैली छीन लूं और गली के अन्दर भाग जाऊं, जो एक फ़र्लांग वाद एक छोटी-सी सड़क से मिलती है, जहाँ पहले से स्टार्ट किया गया स्कूटर तैयार खड़ा होगा। मैं याकूव के भाई को पहचानता भी था। मुझे ठेठ पंजाबी सरदार के रूप में आना था, थैली झपटकर, हाथ में न रखते हुए, वगल में दबाकर, यदि लोग दीखें तो "पकड़ो! चोर!" चिल्लाते हुए भागना था। किसी की रोक-टोक पर उसे धक्का देकर बुरी तरह गिरा देना या जेव में पड़े नंगे चाकू का इस्तेमाल करना था। जवान सरदार समझा जाऊंगा, इससे पुलिस सरदारों के गिरोह में धर-पकड़ करेगी और हम लोगों पर दिमाग न दौड़ाएगी!

रात में नींद नाममात्र को आई। कभी खुद पकड़े जाने का डर, कभी उन दोनों या किसी एक के पकड़े जाने का डर—अर्दली जेब में पिस्तौल रखता ही होगा! मैं गली में ज़िग-ज़ैग भागूंगा! असली हिम्मत तो याकूब और परवेज़ कर रहे हैं, जो जिस्मानी कुव्वत में कहीं उन्नीस हैं! मैंने जी कड़ा किया। लेकिन लवलीन···! मैंने एशु के सैंकड़ों जाप किए, बस इस बार बच जाऊँ! दिन में यथासमय निकल पड़ा। परवेज़ के घर पर पोशाक बदली। जो पोशाक पहनकर गया था, उसमें कोई अभिज्ञान न रहे, यह ध्यान रखा था। दर्जी के निशान तक नहीं, क्योंकि पैंट-बुश्शर्ट दोनों रेडीमेड थे। जर्सी बनियान के ऊपर और कमीज़ के नीचे पहन ली थी, रूमाल निकाल लिया था। कपड़े पर धोबी का निशान न हो, इसका ख्याल रखते हुए एकदम नए कपड़े पहनकर गया था। इधर सलवार वगैरह भी एकदम नए थे। कट्स और स्कार्स दिन

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

में उचित न लग सकते थे; इसलिए, उनका प्रयोग न किया था। हम चुपचाप एक-एक करके निकले। मुझ पर लोगों ने नज़र तो गड़ाई, लेकिन मैं बिना नज़र उठाए फुर्ती से निकल गया। कुछ दूर और देर पर हम तीनों मिलकर लक्ष्य की ओर गतिशील हुए। याकूब और परवेज़ ने स्कीम बड़ी ही सावधानी और योग्यता से बनाई थी। याकूब ही-ही छाप लाला लग रहा था, परवेज़ तौबा छाप पठान और मैं घुसुंड-छाप सरदार! कड़ाके की सर्दी और हल्की बूंदाबांदी के कारण बाज़ार में अपेक्षाकृत कम भीड़ थी। मुनीम निकला। मजबूत और प्रौढ़ व्यक्ति था। उसकी सेठ-छाप थैली पुराने ढर्रे की थी। मैंने 'जीसस, माई लॉर्ड' स्मरण किया।

गली के मोड़ के पास पहुंचते ही मैंने आकस्मिक और तेज़ झटके के साथ थैली छीन ली, यद्यपि उसकी बद्धियां टूटकर मुनीम के हाथ में रह गईं और मुझे उसे ज़मीन से उठाना पड़ा—मुनीम और अर्दली चाकू और पिस्तौल लिए खड़े याकूब और परवेज़ को देखकर घबरा गए और मैं आनन-फानन लम्बी भाग से भाग निकला। गली में इक्के-दुक्के लोग मिले भी, पर उन्हें कुछ भी पता न था; इसलिए मैं चुपचाप स्कूटर पर जा चढ़ने में सफल हो गया। अब "पीछे क्या हुआ होगा?" की कल्पना की चुड़ैल ने आ दबोचा। किसी तरह दिल को क़रार दिया। इसी बीच आरामबाग प्लेस आ गया। मैंने उतरकर परिस्थिति का आकलन किया। टूटी थैली अब तक बगल में ही दबी थी। लम्बी, मज़बूत और खूबसूरत चीज़ थी! उसे दांएं हाथ में मोड़-माड़कर पकड़ा और पंचकुइयां रोड पर चल पड़ा। जब पिछला स्कूटर अदृश्य हो गया, तब दूसरा पकड़ा और पटेलनगर में उतर गया। विग्स के शो-रूम पर पहुंचकर नए कपड़े खरीदे, 'ट्रायल रूम' में पोशाक बदली। तब कुछ दूर पैदल चलकर एक लेदर-बैग खरीदा, जिसमें सलवार, कमीज़, थैली वगैरह को ठूंसा और इस सबसे निश्चिंत होकर सीधे राजौरी गार्डन के रूम में! अब जी में जी आया। एशु को धन्यवाद दिया। हाथ-मुंह धोया-धाया। कुछ मेवे और बिस्किट पड़े थे, जिन्हें सफ़ा किया; मकान मालकिन ने मेहरबानी करके चाय बना दी, मैंने "मैनी-मैनी थैंक्स" कहकर पी ली। वह खुश हो गई। स्पेशल पोज़ के साथ तीन-चार तरल दृष्टि-दान देती चली गई। मेरा माथा ठनका,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पुरानी यादें आ गईं, दो घण्टे की मियाद और राजघाट…।

इस विषम अवसर पर भी उसे सन्तुष्ट करना पड़ा। मैंने एक तिरछी और मीठी नज़र से, हल्की मुस्कान के साथ, उसकी ओर कई बार देखा। वह पिघलकर मोम बन गई, "खाना खाओ जी ! तन्दूर दी रोटी ते राजमा।"

"एक नींद ले लूं। थककर लस्त-पस्त और चूर-चूर हो गया हूं !" मैंने, 'पंजाबी और प्रेम' के असम्भाव्य अनुप्रास के लोक-प्रचलित विनोद पर ध्यान देते हुए कहा। याकूब की एक पुरानी चेतावनी याद आ गई, "अगर कोई पंजाबी सामने पड़ जाए, तो समझ लो उसका कोई मतलब और मक़सद है, क्योंकि वेज़र, जज़्बात और पंजाबी कभी एकजुट नहीं हो सकते। ये उखड़े हुए लोग हैं, जिनका अगर कोई कल्चर है तो पैसा, मज़हब है तो पैसा, दीन है तो पैसा, ईमान है तो पैसा। ये हर चीज़ को पैसे के शीशे में देखने के लिए मजबूर हैं, क्योंकि और कोई शीशा इन्हें नसीब ही नहीं।"

"चलो कोई गल्ल नहीं !"

मुझे यह जवाब अच्छा लगा।

मैं अपने कमरे में लेट गया। दरवाज़ा बन्द कर लिया। बूंदा-बांदी लगातार चालू थी, हड्डियों को बेधने वाली पछुवा बयार हहर-हहर करके गरज रही थी। दिन में दांत कटाकट कटाने वाला शीत पूरे जोबन पर था। मैंने लिहाफ़ से लिपटकर सोचना शुरू किया, "पता नहीं, वहां क्या हुआ हो ? अगर कोई पकड़ा गया होगा, तो मेरा जाना सीधा जेल जाना है। अगर दोनों मेरी तरह, सही-सलामत होंगे तो टाइम पर न पहुंचने पर बेहद नाराज़ होंगे, लेकिन मुनासिब यही है कि थैली लेकर राजघाट न जाऊं। बहाना बना दूंगा कि अचानक तेज़ बुख़ार और सरदर्द की वजह से टेब्लेटस् खाकर अजमल खाँ पार्क में पड़ा रहा था। इसी बीच मन में एक नापाक ख्याल घुसा, "और न जाऊं, तो…?" लेकिन मैंने इसे बलपूर्वक दिमाग़ से निकाल फेंका। थैली को खोला भी नहीं। निष्ठा साहस की आत्मा है, "पर यह पता कैसे लगेगा कि दोनों सही-सलामत हैं?" मैं बहुत बेचैन हो गया। इतना बड़ा वाक़या हो चुका है ! सारे क्षेत्र में

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

सनसनी फैल चुकी होगी। पूरी दिल्ली-पुलिस पकड़-धकड़ के लिए मुस्तैदी से जुट चुकी होगी। "तो क्या करूं ?" कुछ समझ में नहीं आ रहा था। विवश होकर मैंने इन्तज़ार का सहारा लिया। यहाँ विल्कुल निरापद था। होटल में कोई प्रामाणिक वस्तु न थी। सेठजी के वावत किसी को कुछ भी पता न था। अतएव, 'आ बैल, मुझे मार' से वचना ही ठीक था; सांप की वाँवी में उंगली न डालना ही हितकर था।

समय काटे न कटता था। दिमाग परेशान था। शाम तक पड़ा ही रहा। तव मकान मालकिन ने कुण्डी खटखटाई, उठना पड़ा। वह वोली, "तवीयत कैसी है ? हाए, मैं तो घवरा गई कि क्या वात है, जो अव तक नहीं उठे ! यों भी, ऊव रही हूं। वे जालंधर गए हैं—मासड़जी भगवान को प्यारे हो गए हैं !" वह पल-भर को शोक-विह्वलता की अभि-व्यक्ति के लिए रुकी, तब बोली, 'वड्डा मुंडा जनकपुरी गया है—सुस-राल। वोटी भी साथ गई है। यहाँ सिर्फ पिंकी है, जो इंग्लिश नॉवल में खपी पड़ी है, क्योंकि वाकी सब जालंधर गए हैं।" वे रुककर प्रतिक्रिया का आकलन करने लगीं।

मैंने मुस्कराना और ईषत् दृष्टि से देखकर आंखें नीची कर लेना ही उचित समझा। तव वोला, "सर्दी लग गई है।"

वह शर्माई। कुछ पल रुककर बोली, "तो ब्रांडी पियो, फ़टाफ़ट दूर हो जाएगी !"

मैंने चुटकी लेते हुए उत्तर दिया, "कौन-सी ?...है नहीं, और शौक भी नहीं।"

वह फिर शर्माई, पर तत्काल बोली, "मेरे पास है—इम्पोर्टेड चीज़ ! और दवा का सवव हो तो शौक़ की वात वेकार है। हम वॉमण होकर पीते हैं, तुसी कौन हो ?"

कहना पड़ा, "ब्राह्मण ही हूं, लेकिन नए ज़माने का!" मुस्कराना भी पड़ा।

"पर गल्ल तो वावा आदम दे ज़माने दी करदे हो ?"

जब तक मैं कुछ कहूं-कहूं, तब तक वह वांह पकड़कर उठाते हुए बोली, "चलो, ड्राइंगरूम-कम डाईनिंग रूम में वैठकर दवा-दारू पियो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

और कुछ खा-पी लो !"

अब महसूस हुआ, पेट में चूहे दौड़ रहे हैं ! यथास्थान जा बैठा। यथानिर्देश करने में हित लगा। हाथ जोड़कर बोला, "मैडम, तकलीफ़···।"

वह 'मैडम' शब्द से निहाल होती हुई बोली, "की गल्ल करदे हो ! अभी तबीयत ठीक हो जाएगी, सब चौकस हो जाएगा !"

थोड़ी देर में मेरे सामने नमकीन, काजू, सैंडविच, मांस और ब्रांडी का आलम था ! आहट पाकर पिंकी भी आ गई। उदास थी। मैंने कारण पूछा, तो बोली, कल मेरा बर्थ-डे है, लेकिन घर पर मातम छाया है—न पार्टी, न डांस, न म्यूज़िक, न कुछ !"

मैं कुछ सोचकर बोला, "शायद कुछ हो ही जाए···।"

उसने ना का सिर हिलाकर मेरे जाम में शराब भर दी। प्याले टकराए, 'चीयर्स' कहा और पीना शुरू किया। मैडम ने तो खास नहीं पी, लेकिन पिंकी मेरे भी कान काट गई। नशा चढ़ने लगा। ग़म ग़लत होने लगा। हम तीनों हंस-हंसकर बातें करने लगे। मेरे आग्रह पर पिंकी ने "मोहब्बत कर ले, जी भर ले" गीत गाया, जिसमें शर्बते जन्नत ने अदाकारी भी भर दी। मेरे मदिर लोचन कभी मैडम पर पड़ते, कभी पिंकी पर और उधर से एक-सा संकोच दृगत होता ! मैंने सोचा, "नर सदैव नर रहता है, नारी सदैव नारी रहती है। आयु का अन्तर प्रायः बाह्य प्रतिक्रियाएं ही बिंबित करता है, आभ्यंतर में आमूल-चूल परिवर्तन नहीं कर पाता। वासना की प्रेरक ऊष्मा प्रत्येक प्राणी को चमत्कृत करती है, चाहे उनकी जो भी आयु हो। वृद्धाओं को गर्भ-चिंता नहीं रहती। अतएव, उनकी मुक्त कामनाएं नितांत स्वाभाविक हैं। युवकों और प्रौढ़ों को उनका सम्मान करना चाहिए। मुहम्मद-जैसे युवक ने ख़दीजा जैसी प्रौढ़ा से पावन प्रणय किया था।"

शायद मेरे विचार मेरी दृष्टि पर उतर आए थे, क्योंकि मैडम ने पूछा, "क्या सोच रहे हो ?" और वे मुस्करा पड़ीं।

मैं कटकर रह गया, रंगे हाथों पकड़ा गया था, "यू ही, डांस और म्यूजिक।"

पिंकी जोरों पर थी, "मेरे साथ डांस करेंगे ?"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

मैडम लाख प्रोग्रेसिव थीं, पर थीं तो इण्डियन ही। अच्छा न लगा, "छड़ भी ! थके-थकाए बंदे नाल डांस की गल्ल।"

"क्यों ? वेस्ट में आम बात है।"

"पर ये इण्डिया है; जैसा देश वैसा भेस।"

"क्या इण्डिया है ? कहाँ इण्डिया है ? इण्डिया गांव में हो तो हो, झुग्गियों में हो तो हो, झोंपड़ियों में हो तो हो—गतिशील समाज में इण्डिया मर चुका है; और यह ठीक भी है, क्योंकि हरएक मरता है, हर-एक का अन्त अवश्य होता है ! इंडिया मर गया···।"

"चुपकर; की बकवास करदी ए ?"

"शट-अप मम्मी !" पिंकी तनकर खड़ी हो गई, "इण्डिया मर गया ! पार्लमेण्ट में अंग्रेज़ी चलती है, कैपिटल के साइनवोर्ड अंग्रेजी में हैं, बड़े और भले लोगों की पोशाक फॉरेन है, फ़ैशनेबल यूथ सिगरेट पीते हैं, फ्री-लव का ज़ोर है—इंडिया मर गया। हक़ीक़त से आंख मूंदना बेकार है—इंडिया मर गया !" उस पर शराब का शासन था, उसका नहीं। शायद मेरे सामने वह अपने एडवांसमेन्ट में कोई कोर-कसर नहीं रहने देना चाहती थी ! मैंने उसे ध्यान से देखा—भरा-पूरा बदन, लदा-बदा यौवन, भारीभरकम कूल्हे, मोटी-मोटी बांहें, सांड-जैसी आंखें; बीसेक साल की लेडी-रेसलर लगती थी। रंग गेहुंवा था। मेक-अप कम्प्लीट। नशे में चूर !

मैंने हाथ जोड़े, "आप दोनों अपनी-अपनी जगहों पर ठीक हैं, पर मैडम वड़ी हैं, मदर हैं।"

"आई एम सॉरी !" वह मैडम से माफ़ी मांगने लगी, "क्या करूं, मुझे डांस बहुत पसन्द है। मेहनत से सीखा है। और डांस का मजा तभी आता है, जब डोज़ तगड़ा हो और साथ में अपोजिट सेक्स।" वह अचानक रुक गई।

यह स्पष्ट था कि मैडम समझ नहीं सकीं, क्योंकि उन्हें हिन्दी भी ऐसी-वैसी ही आती थी, अंग्रेजी की बात ही क्या ! बोलीं, "प्यो सुनेगा तो की कहेगा ?"

मैंने, और साथा-साथ पिंकी ने भी, यह जान लिया कि डांस के प्रश्न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पर मैडम झुक रही हैं। मेरा न अभ्यास था, न उत्साह; इसलिए, चुप रहा। पिंकी ने ताना दिया, "बैकवर्ड लोग डांस क्या जानें! यह एक एडवांस्ड आर्ट है!"

पता नहीं कहां से मुझमें भारी जोश-खरोश आ कूदा और मैंने मैडम से इजाज़त लेकर डांस शुरू कर दिया। स्कूल में देखा था, फ़िल्मों में देखा था। लेकिन पिंकी ने ट्विस्ट और भंगड़ा की जो प्योर पंजाब-ब्रांड सिंथीसिस प्रस्तुत की, वह अद्‌भुत थी। डर जाता रहा। पंजाब एग्रीगल्चर का स्थान है, कल्चर का नहीं। वहां का नृत्य, संगीत, साहित्य, समाज—सब-कुछ संस्कृति-मुक्त है। पश्चिम का अनुकरण पर्याप्त है—चाहे जैसा! मैंने भी मनमानी और अंधाधुंधी चालू कर दी। शीतऋतु, वर्षा का वातावरण, मदिरा का प्रभाव, युवती के साथ नृत्य—यौवन शतशः उच्छृंखल हो जाता, यदि मैडम की ईर्ष्यालु दृष्टि लक्ष्य में न आ जाती। पिंकी की हालत मुझसे भी ज्यादा बेचैनी वाली थी, क्योंकि उसे तजुर्बा कम था। वह कभी हाथ दबाती, कभी कमर पर कौंचा-काँची करती, पर इससे आगे न जा पाती। कारण स्पष्ट था। भारी होने के कारण वह जल्दी थक गई। तब मैंने, काफ़ी-कुछ सोच-विचारकर, मैडम से प्रस्ताव किया, "कल पिंकी जैसी स्वीट गर्ल का बर्थ-डे है, मैं गिफ्ट दूंगा! इसी सिलसिले में आपके साथ डांस।"

मैडम ललचाईं तो, पर कन्नी काट गई—शायद पिंकी के कारण, शायद शारीरिक अशक्यता के कारण, शायद स्थूलता के कारण; किन्तु इस प्रस्ताव ने पिंकी के साथ डांस की ईर्ष्या समाप्त कर दी। इधर पिंकी पर नशा सवार था। बोली, "क्या गिफ्ट देंगे?" मेरे पास इटावा वाली चार घड़ियों में एक इम्पोर्टेड चीज़ बाक़ी थी, क्योंकि वह भारत में बहुत कीमती थी और वाजिब क़ीमत किसी ने न लगाई थी। शंका से बचने के कारण लवलीन को भेंट न की थी, अन्यथा इच्छा उठी थी। इसमें दिन, तिथि और मास के अतिरिक्त एलार्म भी लगता था। आज पिंकी ने जो सुख दिया था, मैडम ने जो स्वास्थ्य दिया था, उसके देखते मैंने इसी को देने का निर्णय कर डाला। बोला, "ऐसा गिफ्ट दूंगा, जो याद रहेगा!"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

"क्या · आ ?" पिंकी ने एक्टिंग की। टेलीविज़न ने घर-घर में हीरो, हीरोइन, विलेन और कॉमेडियन पैदा कर दिए हैं; खासकर कॉमेडियन !

मैंने घड़ी का वर्णन किया। वह पानी-पानी हो गई, "दिखाइए !"

मैं कमरे की ओर चला। पिंकी पीछे-पीछे। मैडम उसके पीछे। वे तो चारपाई पर धम्म से बैठ गईं। मैं अटैची खोलने लगा। घड़ी निकालते-निकालते निरोध का पैकेट दीख गया। मैडम तो न देख पाईं क्योंकि चारपाई पर थीं, लेकिन ठीक मुझी पर झुकी पिंकी देख गई, "ओह !" मैं कटकर रह गया। घड़ी दिखाने में ही राहत मिली। पिंकी मारे खुशी के नाचने लगी। मैंने उसकी कलाई में बांध दी। बोला, "मोस्ट एडवांस्ड गर्ल्स मर्दाना रिस्ट-वाच ही पहनती हैं। यहीं मॉडर्न ट्रेण्ड ।"

"ओह, यस, यस !"

"इसे ज्यादा न दिखाइए-बताइएगा, क्योंकि लोग-वाग जल-भुनकर राख हो जाएंगे। नामी स्मग्लर गंडासिंघ चण्डहोक से ले ली थी।"

"प्रॉमिस !" उसने अपना पंजा बढ़ाया और दूसरे हाथ से मेरे पंजे को पकड़कर उस पर दे मारा। वह दोहरे नशे से बेकाबू हो रही थी। मैडम की आँखों में संतोष और ईर्ष्या का विचित्र पर स्वाभाविक संगम हो रहा था, "कितने की ली थी ?"

"यह कभी न बताऊंगा !"

दोनों सस्पेंस में चुप रह गईं। कुछ देर बाद चली गईं।

अब मैं कमरे में ही लेट गया और वे दोनों खाना बनाने में जुट गईं। कुछ मिनट ही बीते होंगे कि पिंकी एक प्लेट में ऑमलेट और एक कप में कॉफ़ी लेकर आ पहुंची, "थक गए होंगे ! मम्मी ने भेजा है !"

"इतनी जल्दी ?"

"अपने यहाँ गैस है—फ़टाफ़ट खाना तैयार ! प्रेशर-कुकर है, वाशिंग मशीन है, टेप-रिकॉर्डर है, जाइंट-साइज़ फ्रिज है, सुपर-साइज़ टी. वी. है, वेस्पा स्कूटर है—कार आने वाली है !"

"आपको देखकर ही लगता है कि मल्टी-मिलियनायर हैं ! क्या कोठी है !"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

"खाइए-पीजिए, नहीं तो ठंडा…"

"अकेले ?"

वह चुप रही। मैंने कांटे-चम्मच से ऑमलेट का एक अण्डा उसके मुंह की ओर बढ़ा दिया। उसने संकोच किया। लाल हो गई। मैंने ज़ोर दिया, "प्लीज !" और उसने खा लिया। अब मैंने उसी कांटे-चम्मच से खाना शुरू किया। वह मगन हो गई। मैं परवेज़ का एक परामर्श याद करने लगा, माशूक़ को पहली मुलाकात में ही जूठा कर देना चाहिए, क्योंकि ना वाक़फ़ियत या नीम-वाक़फ़ियत के हालात में इश्क ज्यादा तेज़ होता है, जो वाक़फ़ियत के इज़ाफे के साथ घटता जाता है। भोंदू लोग जिस्मानी मज़े के लमहे रूमानी लफ्फ़ाज़ी में बिताकर, बाद में, हाथ मलते रहते हैं। माशूक़ के नरम पड़ते ही उसे छोड़ना गदहापन है।

किचन से सजग स्वर आया, "पिंकी !"

वह मेरी ओर एक मदिर दृष्टि डालकर चली गई। मैं बेचैन हो उठा। किन्तु तभी, शायद परवेज़ के परामर्श के स्मरण के कारण, आज का घटनाचक्र साकार हो गया। मन हुआ, न खाऊँ, न पिऊँ—दोस्त क्या सोचते होंगे ? किन्तु बुद्धि ने औचित्य का ही वरण किया—मेरी निष्ठा अडिग है ! मैं समाप्त कर ही रहा था कि मैडम आ गईं। प्रेम से बोलीं, "खाना क्या बनाऊँ ?"

"अब कुछ नहीं। पेट भर चुका है।" मैंने हाथ जोड़कर कहा।

"जब सोना तब बताना।"

"बस अब सोने ही जा रहा हूं।"

"इतनी जल्दी !"

मैं चुप रहा। तब तक पिंकी आ गई। बोली, "नॉवल पढ़ेंगे ? गुलशन नंदा, वेदप्रकाश काम्बोज, कर्नल रंजीत; ग़ज़ब का लिखते हैं !"

"मेरे पास अप-टू-डेट इंग्लिश फ़िक्शन की कुछ हार्ट-स्टरिंग चीज़ें हैं ! हिन्दी में तो मुझे मस्तराम ही मर्दाना लेखक लगा; ही-मैन—जिसके मुकाबले में कुशवाहा 'कांत' और प्यारेलाल 'आवारा' भी पानी भरते नज़र आते हैं—गुलशन नंदा, दत्त भारती किस खेत की मूलियां हैं; मस्तराम अगर ड्रामा लिखता तो लोग प्रेम जालंधरी को कौड़ियों में भी

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

न पूछते ! 'भांग की पकौड़ी' के सामने कोई बुक नहीं ठहर सकती !" मैं नशे में था।

पिंकी सकपका गई। बोलते-बोलते रह गई। मैडम ने कहा, "चल उन्हें आराम करने दे !" और वह बेमन-सी उठकर उसके साथ चल दी।

इधर मैं अपनी उसी उधेड़-बुन में उलझ गया—वही ढाक के तीन पात !

कोई दस बजे होंगे, जब पिंकी आई। मुझे यह भी ध्यान न था कि दरवाज़ा बन्द नहीं बल्कि उढ़का है, जिसे पिछली बार वही उढ़का गई थी। उसने आज़ादी से दरवाज़ा खोला, बेतक़ल्लुफ़ी से बत्ती जलाई और बेफ़िक्री से बोली, "मम्मी को नींद तभी आती है, जब स्लीपिंग पिल्स लें; कभी-कभी तो मुझे भी लेनी पड़ती हैं।"

"यह तो विकसित जीवन का एक चिह्न है—मैरिलिन मुनरो लेती थीं !"

वह खुश होती हुई बोली, "आप हार्ट-स्टरिंग नॉवल्स की बात···।"

मैं कतराया, "कोई देख न ले, जो बावेला मच जाए, तिल का ताड़···।"

"मैं रातों-रात पढ़कर तड़के ही आपके तकिए के नीचे रख जाऊंगी।"

"असर सम्भाल लेंगी ?" मुझ पर नशे का खुमार असर डाल बैठा।

वह शर्मा गई। मैं ही बोला, "आप शर्मा हैं; इसीलिए, इतना शरमा जाती हैं !"

"दीजिए न !" आवाज़ ने कशिश जगा दी।

"मैं तो किराए पर देता हूं !" मैं शरारत पर उतर आया। शरीर शरीर होता है; शरारत से बाज़ नहीं आता।

"क्या चार्जेज़ हैं ?"

"छोड़िए भी ! पता नहीं···?"

"बोलिए तो !"

"वन वर्थ-डे-ईव किस !"

वह कुछ न बोली। मैं भी परेशान करने का लुत्फ़ लेने लगा।

"तो जाऊँ ?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

"आपने मेरी अर्ज का जवाब नहीं दिया ?"

"यू सिल्ली फेलो !" उसने बला की मस्ती के साथ कहा। मैं दंग रह गया; इस बेडौल, मोटी-सी और मामूली औरत में इतना आकर्षण ! क्या आश्चर्य, यदि दर्जनों कलियुगी 'भगवानों' में एक, सहजयानी सिद्ध सरहपा के युग-पुत्र रजनीश सम्भोग से समाधि का प्रतिपादन करते हैं ! क्या आश्चर्य, यदि कोड़ियों कलियुगी 'अवतारों' में एक प्रेमपालसिंह रावत अपनी गौरांग सेविका को बाहों में भर लेते हैं ! क्या आश्चर्य, यदि अनेक कलियुगी 'निरंकारों' में एक गुरबचनसिंघ नोटों से तुलते समय अपनी सरदारनी को साथ बैठालते हैं ! मैं नीचे से ऊपर उड़ा, "क्या आश्चर्य, यदि गांधी स्वयं सेविकाओं का सहारा लेकर चलते थे, क्राइस्ट और बुद्ध वेश्याओं के पास जाते थे, कृष्ण रासलीला रचते थे ! फ्रायड ने मनुष्य को खोलकर रख दिया है।" मैं उठ बैठा।

अब वह कुछ हड़बड़ाई···

"मैंने संयम से काम लिया। खड़ा होकर अटैची खोलने लगा। अब वह एक मोहक द्विधा से ग्रस्त हो गई, "आपकी अटैची तो भानमती की पिटारी है—पता नहीं क्या-क्या रख छोड़ा है !"

मैंने भोलापन दिखाया, "सिर्फ जरूरी चीज़ें हैं इसमें !"

वह मुस्करा गई। मैंने एक बार फिर 'हँसी सो फँसी' का स्मरण किया और पूछा, "'लोलिटा' पढ़ेंगी या 'भांग की पकौड़ी'—दूसरी चीज़ बेहद ज़ालिम है !"

"जो आप दे दें !"

मैंने 'लोलिटा' दिया, "बेहद ज़ालिम चीज़ अकेले में नहीं पढ़नी चाहिए !"

वह कवर-पेज देखते हुए बोली, "तो इजाज़त है ?"

"नहीं !"

"क्यों ?"

"यों ही !"

वह मेरी ओर देखकर हँस पड़ी···

मैंने उसका खाली वाला हाथ पकड़कर चूम लिया—एक, दो, तीन

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

बार···

और वह उतने विकट शीत में भी पसीने-पसीने हो, हाथ छुड़ाकर भाग गई···

मैं गुससुम-सा खड़ा-का-खड़ा रह गया···रेडियो पड़ोस के मकान से व्यंग्य करने लगा, "कारवां गुज़र गया, गुवार देखते रहे···" और तभी लवलीन की याद आ गई—"आह ! क्या मैं निष्ठाहीन प्रेमी हूं ? धिक्कार है ! किन्तु प्रकृति, परिस्थिति और परिवेश ?"—तर्क वासना का अन्तिम शरण-स्थल है।—पता नहीं, कव सोया, कव जागा? लेकिन सवेरे देर से उठा। यह निश्चित था कि इस घर में अंग्रेजी का दैनिकपत्र आता होगा, क्योंकि यह विकसित जीवन का अपरिहार्य चिन्ह है। मैं ठीक निकला। उठते ही पूछा, "मैडम, अख़बार···?"

"रोज़ आंदा है—अंग्रेजी दा !"

"ओह !"

उन्होंने लाकर दे दिया। मैंने देख लिया, रात-भर नावेल में सिर खपाने के कारण पिंकी सो रही है। लेटकर अख़वार पढ़ने का उपक्रम करने लगा, तो तकिए के नीचे कोई चीज़ महसूस हुई—पिंकी वात की पक्की थी ! मैंने एकदम अकेले में, कमरा वंद करके, विजली के उजाले में अख़वार का पहला और दूसरा पन्ना बिना देखे ही छोड़ दिया, लेकिन तीसरे पन्ने पर सवसे पहले एक चित्र देखकर एकदम निस्तेज हो गया—याकूब और परवेज़ मरे पड़े थे !···ख़बर पढ़ी। सार था कि अर्दली ने जेब में रखी भरी पिस्तौल निकालकर दोनों को शूट कर दिया, हालांकि दोनों ने उसे और मुनीम को बहुत अधिक घायल कर दिया था। दोनों बयान तक न दे सके थे। बचने की कोई आशा न थी। यह भी लिखा था कि तीसरा अपराधी, जो सिख था, उन्नीस हज़ार की थैली लेकर भाग गया है और पकड़ में नहीं आया···। मैं रोने लगा, रह-रहकर दोनों दोस्तों की याद कलेजा चीरने लगी। लेकिन, पता नहीं कहां से, एक राहत दिमाग़ को ठंडक पहुंचाने लगी,···अब सारे रुपए अपने हैं,—सिर्फ एक व्यक्ति जानता है, पर वह भी एक तो सरदार समझता होगा, दूसरे बीवी वाला होने के कारण खुद फँसने के डर से चकनाचूर हो रहा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

होगा !—इस राहत पर मैं खुद दर्द और हैरत महसूस कर रहा था, पर वह कायम थी…

अब कोई न था, जो मेरे अपराधी जीवन का साक्षी बनता, "क्या जीसस ने मेरे लिए पुण्य-पथ प्रशस्त किया है ·? क्या मुझे प्रभु की इस इच्छा का सम्मान न करना चाहिए ?…'मैं उठकर थैली के नोट गिनने लगा वे बाकायदा गड्डियों में थे—सौ-सौ के अलग, दस-दस के अलग और इसी प्रकार से पूर्णतः व्यवस्थित। फिर भी, मुझे दो घंटे लग गए। बीच में मैडम चाय के लिए पूछने आई, तो मैंने सोने की बात कहकर टाल दिया। रुपये सचमुच पूरे उन्नीस हज़ार थे।…अब मैंने थैली, सलवार और कमीज़ को किसी उपयुक्त स्थान में जलाने का निश्चय किया। चाय पीकर विन्द्रा पार्क के पास एक सुनसान गली में इन तीनों का पुलिंदा बनाकर दियासलाई की तीली के हवाले किया। जब तक पूरी तरह जलकर राख न हो गए, वहीं आसपास टहलता रहा। तब आवास पर लौटा। लगा अब ज्यादा डर नहीं है। लेकिन घड़ी की वजह से माथा ठनका, "क्या गदहा-पच्चीसी कर बैठा !" यह बड़ी राशि कहीं जमा कराना जेल जाना था। इसे किसी अच्छे धंधे में लगाया जा सकता था। सोचा यहां से जल्दी तीन-तेरह हो जाऊं !—मेरे पास उन्नीस हज़ार थे, तीन हज़ार एक बैंक में, जिसमें पता सरदार होटेल का दिया था और दो हज़ार डाकघर में, जिसमें पता सेठजी के घर के समय से ही लिखा पड़ा था, इनसे जनक-पुरी में होटेल की योजना को साकार किया जा सकता था। सेठजी से, अर्थराशि का उल्लेख किए बिना ही, परामर्श का लाभ उठाना चाहा। कुछ दिन प्रतीक्षा करना उचित प्रतीत हुआ। तब तक मंगल इत्यादि के साथ बात पक्की करनी थी।

दो दिन बाद सरदार होटेल पहुंचा। राव-रंग ठीक थे, लेकिन काण्ड की गूंज विद्यमान थी। मैंने भी भाग लिया, "सरदार कोम शेरां दी ओलाद है ! देखो, दो मोमिन ढेर कर दिए गए, लेकिन शेर शेर का हिस्सा ही नहीं बल्कि सारा-का-सारा नामा लेकर चम्पत हो गया ! दिन-दहाड़े, हाट-बाज़ार में, सरे आम—"

सरदार मूंछों के अन्दर से एक विराट् हँसी हँसा, "सत्त श्री अकाल !

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

वाहे गुरू दी ! जा तेरा रब्ब राखा !—सरदार कोम दी कोई मिसाल नहीं; कैंदे एँ, 'राज करेगा खालसा !"

मैंने पुरज़ोर और पुरअसर समर्थन किया, "करेगा क्यों ? कर रहा है ! पंजाब में किसका राज है ? ज्ञानी ज़ैलसिंह ने गुरु गोविन्दसिंह के लम्बे यात्रापथ को आधुनिक और अनुपम राजमार्ग में बदलते समय यह सिद्ध कर दिया था। जो कार्य महाराज रणजीतसिंह न कर सके थे, वह ज्ञानी ज़ैलसिंह ने किया; और वह भी पूर्ण धर्म-निरपेक्ष रीति से ! अकालियों ने गुरुनानक विश्वविद्यालय बनाकर यह सिद्ध कर दिया था। और पंजाब के बाहर देखो तो ट्रांसपोर्ट पर सरदार-ही-सरदार छाया मिलेगा। होटलों पर वही चमकता दीखेगा। दिल्ली हो या कानपुर—शानदार कोठियों में सरदार ही सरदार—अंधा भी देख सकता है। सरदार, तेरी मिसाल नहीं !"

सरदार की आंखों से आंसू गिरने लगे। किसी तरह बोला, "सरदार लफज का मतलब ही है कि जो सबों से ऊपर हो ! ये कोम शुरू से ही सबसे आगे रही है—जितने वीर इस कोम में हुए हैं, उतने किसी में नहीं…"

मैंने मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया, "अगर सिख न होते, तो लालकिले पर चांद-सितारे वाला नीला झण्डा लहराता होता, तिरंगा नहीं !"

सरदार ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। बीच-बीच में 'सत्तनाम, वाहे गुरु' सुनाई दे पा रहा था। संयोगवश उस समय भीड़ न थी। छुट्टी का दिन था, सवेरे का अवसर। फिर भी, चार ग्राहक और होटेल के सारे कर्मचारी उत्सुक और व्यग्र होकर उसे देखने लगे। अब मैं अपनी टेबल पर बैठे दम्पति को, जो सम्भवतः बाहर से आए थे, अटेंड करने चला गया।

कई दिनों बाद, दोपहर के बीत जाने पर, मौका मिला और मैंने मंगल से कहा, "तुमसे कुछ बातचीत करनी है—दसेक मिनट के लिए।"

वह गम्भीर व्यक्ति था। बोला, "चलो, गांधी मैदान में। मैं पीछे आ जाऊँगा।"

मैंने बिना किसी लम्बी-चौड़ी भूमिका के अपनी योजना समझा दी। छोटी-सी ही थी—हम चार लोग होंगे, उसे लाभ का पंचमांश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मिलेगा जबकि लागत सारी-की-सारी मेरी होगी, दोनों लड़कों को दस-दस रुपए ज्यादा मिलेंगे, एक बड़े कमरे में पांच-पांच आसन-पंक्तियाँ होंगी जिनमें प्रत्येक पर दो-दो व्यक्ति बैठ सकेंगे, आसन से जुड़ी मेज़ पर संगमरमर रखा होगा जिससे सफ़ाई और सुन्दरता बनी रहेगी, क्रमशः दस-दस व्यक्ति बैठ सकेंगे, एक कोने में प्रवेश-द्वार के निकट काउण्टर होगा, कमरे में चार पंखे होंगे, दो बल्ब्स, दो ट्यूब-लाइट्स, दूसरे सटे हुए कमरे में भोजन तैयार होगा, इत्यादि-इत्यादि।

मंगल ने मेरी ओर घूरकर देखा—कुछ पी-पा तो नहीं आया ! जब ऐसा न लगा, तब सोचा, मज़ाक कर रहा हूं ! वह शायद बुद्धू मियां और शेख़ चिल्ली की याद कर रहा था ! लेकिन मुझे पूरी संजीदगी में पाकर, गम्भीर हो गया। बोला, "कम-से-कम दस हज़ार का पेटा बैठेगा ! फरनीचर, संगमरमर, बरतन, सभी के रेट आकास छू रहे हैं ! माल का परमिट पाने में कम-से-कम पांचसौ रुपए घूंस के लिए रखने पड़ेंगे। इसके बाद तो खैर नाम-भर की ही मासिक दच्छिना चलेगी। इंकम टिकस और सैल्स टिकस वालों की माहवारी पूजा अलग चलेगी। इलाके के पुलिस-इंसपिट्टर को खिलाना-पिलाना पड़ेगा, क्योंकि होटल का धंधा लफड़ेबाज़ी वाला है, जिसमें उसका मदत काम आएगा। अगर काम चल डगरा तो एक वकील को टिकाऊ तौर पर साधना पड़ेगा, जो कम-से-कम तीस रुपए माहवार लेगा, लेकिन टिकसों के भरमजाल से आजाद रक्खेगा…"

मैं यह-सब अधिक नहीं तो थोड़ा अवश्य जानता था, "सब भुगतना पड़ेगा; जब ओखली में सिर डाला तब मूसल से डरना कैसा !"

"रुपिया है—म्याऊँ का ठौर…?"

"हो जाएगा; कुछ देर है, कुछ इधर-उधर से जुगाड़ लगाऊँगा, कर्ज मिल जाएगा।"

मंगल ने कुछ देर विचार किया। तब कहा, "कहीं दूर ही देखा जाएगा, क्योंकि यहां तो पगड़ी का रेट ही लाख पार कर चुका है…"

"जनकपुरी अच्छी और नई बस्ती है, लगातार बन और बढ़ रही है…"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

"वहुत अच्छी वस्ती है; उधर अपना देश का कई लोग रहता है, मदत मिलेगा !"

"तो कव चलें ?"

"अगर सचमुच करना है, तो मुझे किसी वहाने से छुट्टी लेना पड़ेगा और तुम तो मन के राजा हो ही—तन के राजा के साथ-साथ ! काम काफी दिन लेगा।"

"एक कमरा है, जहां ठहर सकते हो। वहां से जनकपुरी अधिक दूर भी नहीं है।"

"ठीक। अव चला जाए, नहीं तो सरदार नाराज होगा। कहीं भनक पड़ गई, तो हटते समय पैसा दवाएगा, हज्जार अड़ंगे लगाएगा। तुम मैदान की ओर से जाओ, मैं कटरा नगीनचंद से होकर आऊंगा।"

इसके वाद धीरे-धीरे योजना को कार्य-रूप प्रदान करने की प्रक्रिया का आरम्भ हुआ। मंगल ने 'देस' जाने के वहाने से अपना हिसाव चुकता कराया और राजौरी गार्डन आ गया। हम दोनों लगातार दौड-धूप करते रहे। आख़िर एक जगह मिल ही गई। तीन वड़े कमरे थे; अन्य अपेक्षित 'गृह' पृथक्। मैंने एक वड़ा कमरा, जो पीछे था और जिसका एक दरवाजा पीछे की ओर से खुलता था, अपने लिए, एक भोजन वनाने इत्यादि के लिए और एक, जो आगे और मुख्य था, ग्राहकों के लिए रखना तय किया। रसोई का प्रयोग मंगल और स्टोर का दोनों लड़कों के आवासों के रूपों में हो गया। ऐसी सुविधा उन्हें पहले कभी न मिली थी। तीनों खुश थे। हम चारों ने पर्याप्त परिश्रम किया और किसी प्रकार, राम-राम करके,होटेल चालू हो गया। लगभग तेरह हज़ार का खर्च आया, लेकिन छोटा-सा होटेल साफ-सुथरा और खूवसूरत लगने लगा। शाकाहारी भोजनालय पंजावी-प्रधान क्षेत्रों में इक्के-दुक्के ही हो सकते हैं। जनकपुरी की मिली-जुली वस्ती में अच्छे शाकाहारी भोजनालय के लिए तरसने वाले व्यक्ति कम न थे। भारत के विभाजन के वाद दिल्ली शाकाहारी नगरी नहीं रह गई। मैंने यह सव सोच-विचार लिया था। पर्चे छपवा-वँटवा दिए, पोस्टरवाज़ी करा दी। इसलिए, काम अच्छा चल उगरा। मैंने अपना नाम, धुंधली-सी याद के वल पर, शंकर रख

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

लिया। जाति न लिखता था। आम-तौर पर खद्दर का कुर्ता-पाजामा पहनता। बाल छोटे करा ही लिए थे। छोटी-सी दाढ़ी रखवा ली। हल्की-सी मूंछें भी। यद्यपि चाकू, छोड़ने की इच्छा होने पर भी, न छूटता था, तथापि जीवन की दिशा एकदम परिवर्तित हो गई। काम चल डगरा। अच्छा नामा आने लगा। मुझे जानना-पहचानना कठिन हो गया। मैंने अपने आवास को खूब सजाया और एक स्कूटर ले लिया। होटल में फुर्सत के समय अपने आवास में चला जाना सरल था। इसलिए, राम-कहानी लिखनी शुरू कर दी, जिसके लिए एक गुप्त ड्रॉअर वाली मेज़ ख़रीदनी पड़ी।

मेरा होटेल लोकप्रिय होने लगा। कई पंजाबी ग्राहक तक आने लगे। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि सिखों में भी अनेक शाकाहारी होते हैं। मेरे सिख ग्राहक मेरी पंजाबी-प्रशंसा से सर्वथा संतुष्ट थे, "पंजाबी एक मर्दाना जुबान है। उदाहरणार्थ, पापा कहो तो लगता है किसी पप्पू को पुकारा जा रहा है, बापू कहो तो लगता है किसी बूढ़े को आवाज दी जा रही है, पिताजी कहो तो लगता है कोई पण्डितजी बुलाए जा रहे हैं, लेकिन प्यौजी कहो तो तुरंत सर पर नोकीली पगड़ी बांधे किसी असली सरदार की तस्वीर खिंच जाती है। लड़का कहो तो लगता है जैसे कोई मजनू पुकारा जा रहा है, लेकिन मुण्डा कहते ही सण्ड-मुसन्ड सिख 'ज्वान' दण्ड पेलता हुआ दिखाई दे जाता है। 'मुक्का' या 'घूंसा' में वह बुलंदी कहां जो 'घुसुण्ड' में है! पंजाबी शेरों की भाषा है, जिसमें स्त्री भी बोले तो लगता है रँगरूट बोल रहा है!"

जैसे-ही-जैसे निर्द्वन्द्वता और निश्चिन्तता बढ़ रही थी, वैसे-ही-वैसे अन्तर्द्वन्द्व और चिन्तन प्रखर होता जा रहा था। मन लवलीन में लीन रहने लगा था। कभी-कभी जाने-बूझे रास्तों, तो कभी-कभी विश्वविद्यालय में उससे मिलने दौड़ा जाता। लाख संयम करने पर भी शब्द फूट ही पड़ते, "तुम्हारे बिना ज़िन्दगी बेलज़्ज़त लगती है!"

एक दिन उसने बेहद संजीदगी के साथ कहा, "तो पिताजी से…"

"हिम्मत नहीं पड़ती…"

"कल माताजी बम्बई के एक बहुत बड़े व्यापारी के लड़के की चर्चा

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

चला रही थीं, रिश्ते में कुछ लगता भी है—'देखा-सुना, जाना-पहचाना, सुन्दर-कुलीन और धनी-मानी' और न-जाने क्या-क्या बता गई; …मैं तुमसे प्रार्थना करती हूं…"

मैं चुप रहा।

"माहौल बिगड़ा-बिगड़ा लगता है…"

मैं निराश और व्यग्र हो उठा, "तो…?"

लवलीन मुस्कराई, "तभी एम. ए. के परिणाम और काम की…"

"मेरी आय अच्छी है।"

"फिर भी, पढ़ाई तो…"

"हां, यह ठीक है।"

"लगता है, सबसे लड़कर ही तुम्हें पा सकूंगी!" उसने आंखें झुका लीं, "पर चाहे सिविल मैरिज ही करनी पड़े…" वह चुप हो गई।

मै जानता था, लवलीन-जैसे रत्न की प्राप्ति मुझ-जैसे दरिद्र के लिए असम्भव-जैसी है; किन्तु आशा अंधी होती है; इसलिए, एक प्रत्यय के बल पर जी रहा था। प्रत्यय निराधार न था। लवलीन जब मिलती तब वह बलवत्तर हो जाता। कई बार तो वह होटेल पर आ जाती …!

इसी बीच एक दूसरी समस्या आ पड़ी—एक दिन, यों ही, कॉउंटर पर खड़ा-खड़ा आसमान की ओर देख रहा था कि विचार उठा, क्यों न जोसेफ़ से मिलकर पूछूं कि वह मुझे कहां से लाया था ? मैं कहाँ खोया था ? मैं कहाँ का हो सकता हूं ?—शायद इस तरह माता-पिता इत्यादि का पता चल जाए ! और मैं तत्काल-तत्क्षण स्कूटर लेकर उसके आवास की ओर चल पड़ा, जो विद्यालय के परिसर में ही था। यह परमात्मा की कृपा ही थी कि उसके आवास के समीप मुझे ध्यान हो आया, "मैं ज़रूर फँस जाऊंगा !—मृत्यु-दण्ड !…" और मैं स्कूटर से गिरते-गिरते बचा। उसी वक्त वापस लौटा। किन्तु माता-पिता इत्यादि के दर्शन की स्पृहा अतीव बलवती थी।…एक ख़ौफ़नाक लेकिन कारग़र तरीक़ा सूझा, क्यों न जोसेफ़ को उसके घर पर रात-बिरात अकेले में दबोच लूं और पूछताछ करके, उसे किसी कमरे में बंद करते हुए, बे-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

ख़तरे निकल भागूं ! सूट की पोशाक एक बार फिर, क्लीन-शेव्ड एक बार फिर, चाकू का प्रयोग एक बार फिर—आइडिया ख़तरों से भरा था, लेकिन माता-पिता रक्ताणुओं में व्याप्त होकर स्वयं से परिचित होने के लिए तड़प उठे !—होंगे तो धन्य हो जाऊँगा, न होंगे तो आँसुओं से दिल की आग बुझा लूंगा ! मेरी आत्मा कहती थी, सब हैं—माँ सिर पर हाथ फिराकर रोएगी, पिता छाती से लगाकर चूमेंगे, बहन राखी बाँधकर शुभाकाँक्षा करेगी, भाई गले मिलकर गद्गद् होगा···

मैं अक्सर स्कूल के आसपास चक्कर काटने लगा, लड़कों को लिफ्ट देने लगा। दो लड़के जनकपुरी में, मेरे होटेल के पास, रहने वाले निकल आए। पूछताछ और छानबीन से पता चल गया कि जोसेफ़, तब की तरह अब भी एकाकी है, हालांकि एक नौकरानी रखे है जो खाना बनाकर सफाई-वफ़ाई करके, अपने घर चली जाती है। मैं शारीरिक प्रस्तावना करके अवसर की प्रतीक्षा करने लगा।

उस दिन मानसून-पूर्व की बरसात आ चुकी थी। घनघोर अँधियारा छाया था। रह-रहकर पानी बरसता था मैंने सूट पहना; उस पर बरसाती कोट और हैट ! चाकू जेब में रहता ही था ! चल पड़ा। रात हो रही थी। पानी बरस रहा था। विद्यालय के परिसर में निस्तब्धता व्याप्त थी। गेट पर चौकीदार मिला। सुरक्षित स्थान पर आराम से चिलम का स्वाद ले रहा था। मैंने अदबदा कर पूछा, मिस्टर जोसेफ़ से मिलना है। उसे क्या ज़िच डालनी थी ! बड़े प्यार से सूचना दी, जिसके आधार पर मैंने जोसेफ़ के आवास के बाहर पहुंचकर घंटी बजाई। सारा स्थान जाना-पहचाना लगता था ! जितना सम्भव था उतना देखता रहा···

शायद वह लेट चुका था। कुछ देर से आया। छतरी लगाए। अँधेरे में पहचानने का असफल यत्न करता हुआ बोला, "आप—कौन—?"

"आपका पुराना स्टूडेंट डैनियल वेलिंगटन; अब आर्मी में कैप्टेन !"

वह उलझा तो, पर बोला, "आइए !"

मैं आंगन से होता कमरे में पहुंचा। अन्दर पहुंचकर वातावरण का अध्ययन किया। वह अकेला ही लगा। उधर उसने पूछा, "आपने किस

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

साल—?" और इधर मैंने अन्दर से चिटखनी लगाकर चाकू खोल लिया···

वह मारे डर के चीख-चिल्ला भी न सका, कछुए की तरह सिमट भी न सका, शुतुरमुर्ग की तरह मुंह भी न छिपा सका, कबूतर की तरह आंखें भी न मूंद सका, "मैं कोई लखपति नहीं, एक मामूली स्कूल-टीचर हूं;—मुझे मारो मत, भले ही सबकुछ ले जाओ !" वह पसीने से तर-बतर, थर-थर कांपता, मेरे पैरों पर गिर पड़ा। मैंने उसे एक हाथ से पकड़कर उठाया, कुर्सी पर बैठाया और तब तसल्ली से पूछा, "न मैं जान लेने आया हूं, न ज़र; सिर्फ यह पूछने आया हूं कि पीटर या पीटू शिशु को तुम कहां से लाए थे ?"

उसे जैसे नई जान मिली ! त्वरा से बोला, "कानपुर में माटी के मेले से ! मरे कम्पनी के आसपास लगता है—होली के बाद। मैं एक फ्रेन्ड से मिलने गया था, जो तब क्राइस्ट चर्च कॉलेज में पढ़ाता था और अब बोस्टन यूनिवर्सिटी में लेक्चरार है। बच्चा खो गया था। मैं ले आया। कोई पाप···।"

"ठीक-ठीक बता रहे हो न ? कोई नमक-मिर्च तो नहीं लगाया ?"

"जीसस क्राइस्ट का कसम ! मदर मेरी का क़सम ! होली बाइ-बल का क़सम !"

मैंने उसे एक कमरे में बंद कर दिया और निकल आया। जाते समय चौकीदार से कहता गया, "ज़ोसेफ़ साहब तुमको बुलाता है—थोड़ा-सा मीट देना माँगता है !" मैं नहीं चाहता था कि जोसेफ़ रात-भर काल कोठरी में क़ैद रहे, उसमें भी सोचता रहे कि मैं उसका घर मूस गया हूं। चौकीदार तुरन्त लपक गया। इधर मैंने स्कूटर को, सन्नाटे में पूरी स्पीड पर छोड़ दिया।

अब मैंने होटल की समुचित व्यवस्था कर कुछ दिनों के लिए कानपुर जाने का निश्चय किया। कोई एक सप्ताह इस सब में खप गया। तब मैं कानपुर पहुंचा। माटी के मेले की जगह देखी। यह मेला ख़ास मौके पर लगता है, इसलिए, उस समय सन्नाटा था। आसपास की पूछताछ बेकार साबित हुई। तब दैनिक 'जागरण' में एक विज्ञापन निकलवाया,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

"वर्षों पूर्व माटी के मेले में एक छोटा-सा लड़का, जो काफी लम्बा, स्वस्थ और गोरा था, खो गया था। उसके माता-पिता या भाई-बहन विज्ञापन देखें तो सम्पर्क करें।" मैंने सावधानी बरतते हुए पोस्ट बॉक्स का पता दिया था; जिस होटल में ठहरा था, उसका नहीं। 'जागरण' दिल्ली में कम ही पहुंच पाता है। दूसरे जोसेफ़ कभी हिन्दी का समाचार पत्र न पढ़ता था, "हिन्दी पढ़ने या बोलने से इन्सेल्ट होता है, क्योंकि ये गंवारों और बेवकूफ़ों का लैंग्वेज है!" इधर उसका मेज़बान लेक्चरार भारत में ही नहीं था। कोई खतरा न था। फिर भी, मैं समाचार-पत्र के कार्यालय में पर्याप्त निरीक्षण-परीक्षण के अनन्तर ही गया। परमात्मा की कृपा से सबकुछ ठीक-ठाक रहा। केवल एक पत्र मिला। मैं पते के आधार पर, एक रिक्शे पर बैठा और चल पड़ा। रिक्शे वाला तन से प्रौढ़ किंतु मन से युवक था—यह उसके जबर्दस्त गाने से स्पष्ट हुआ, जिसकी टेक थी, "गाड़ी धीरे हांक डलेवर, जोबन हाले रे !" मैं गीत से प्रभावित हुए बिना न रह सका, क्योंकि यह पंजाबी गीतों से टक्कर लेता था, किंतु मस्तिष्क त्वरा का आग्रह किए बिना न माना, जिसे उसने मान भी लिया। यथासमय लक्ष्य पर आ पहुंचा—अनिर्वचनीय विह्वलता !

जनरलगंज जैसे सम्पन्न व्यवसाय-केन्द्र में उस पुरानी पर तिमंज़िली और बड़ी कोठी को देखकर मुझे गौरव का अनुभव हुआ, "मैं पुश्तैनी रईस ख़ानदान में पैदा हुआ था ?" उस समय घर पर केवल माताजी थीं। यों एक महराजिन खाना पका रही थी और एक तरुण सेवक निवाड़ की चारपाई कसकर ठीक कर रहा था। माताजी ने बिना किसी पूछ-ताछ और जान-पहचान के ही मुझे गले लगा लिया, "तू शंकर ही है न ? विष्णु के चेहरे-मोहरे से काफ़ी-कुछ मिलता-जुलता है, हालांकि रूप-रंग और डील-डौल में ज़मीन-आसमान का वैसा ही अन्तर है जैसा बालापन में था !" और वे बहुत ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं। मैं भी बिना रोए रह न सका। महाराजिन बेलन छोड़कर भागी, सेवक निवाड़ छोड़कर दौड़ा, "शंकर बाबू आ गए ! शंकर बाबू आ गए !!" ऐसा लगा, जैसे यहाँ चिरकाल से मेरी प्रतीक्षा हो रही थी !!!

माताजी ने मुझे छोड़े बिना ही सेवक से कहा, "नीचे जाकर दुकान

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

से उनको और विष्णु को बुला ला और, हाँ, देख, सुभद्रा के घर फोन कर दे !...इसी समय तपेश्वरीदेवी के दर्शन करने चलना है—मैंने पाँच-सौ एक का प्रसाद माना था !''

पलक झपते ही वहाँ अच्छी-ख़ासी भीड़ लग गई। पिताजी और भाई को देखते ही स्पष्ट हो गया कि मैं अपने परिवार में आ गया हूं। हम तीनों काफ़ी मिलते-जुलते थे, यद्यपि वे धोती-कुर्ते में थे और मैं सूट-बूट में। निस्संदेह, कठिनतम जीवन-संघर्ष के कारण मैं बहुत बलिष्ठ और सुदृढ़ हो गया था, तथापि आकृति सत्य की साक्षिणी थी। जैसा अनुभव था, भाई कुछ बड़ा और बहन कुछ छोटी थी। भाभी मायके में हैं, जो लखनऊ में है—शायद भतीजा हो ! बहन का विवाह अभी अठारह दिनों पहले ही हुआ है, ससुराल पास ही हटिया में है ! फिर भी पिताजी ने कहा, ''शंकर, तुम्हारी दाईं जांघ पर एक बड़ा-सा लहसुन था?''

सचमुच था, पर मुझे इतने लोगों के बीच दिखाने में संकोच लगा, ''जी, है !''

माताजी ने कहा, एक बार तू इसी जीने से गिर गया था—गिरा दो-तीन सीढ़ियाँ था, लेकिन सिर में बाँएं तरफ़ घाव का गोल, पाई के बराबर, निशान पड़ गया था, जो गझिन-गझिन झालर के नीचे ढका रहता था, गोली लगने के निशान जैसा, दूरसे या पास से, नज़र नहीं आताथा। इसे चटपट देख डाला गया। तसल्ली हुई। जब माताजी ने विष्णु की पतंगबाजी में मेरे सहायक रूप की चर्चा की तब धुँधली यादें साफ़ आंसू बनकर बरस पड़ीं ! मैंने पूछा, ''लेकिन मुझे कहीं ज्यादा याद गंगा के किनारे स्थित किसी गांव की आती है ?'' मालूम हुआ, ''ठीक ही है, हम लोग पास के उन्नाव ज़िले के हैं। निबई बड़ा बेहड़ स्थान है। वहाँ का आना-जाना अब भी कायम है। जायदाद है, घर है, प्रतिष्ठा है। तुम बचपन में कई बार गए थे।'' मालूम हुआ, ''हम लोग झकाझक कुलवाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं—बीस बिस्वा मरजाद, श्रीकांत के दीक्षित !'' मुझे 'शंकर दीक्षित' नाम पूरा-पूरा भा गया। किन्तु यह आशंका हुई, ''ईसाई वाली बात यहाँ अणु-बम-विस्फोट से कम नाशकारी सिद्ध न होगी !'' इसलिए, मैं एक आद्यन्त नई कथा गढ़ने में लग गया। तैयारी जरूरी

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

in Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

थी । सजातों की वारात में मैंने कन्नी काटी, "थका हूं, अभी होटल पर जाता हूं—सामान वहीं है !"

"पागल हो गए हो क्या ? होटल से सामान कल नहीं आ सकता ?" विष्णु ने बड़प्पन के अधिकार का प्रयोग किया । कितना स्पृहनीय लगा ? कह नहीं सकता !

"तो आराम···"

चटपट मैं एक कमरे में था । तिमंज़िले पर । सन्नाटे में । मैंने बड़ी सावधानी से सूट उतारा, जिससे चाकू न दीखे । पिताजी साथ थे । बोले, "बेटा, तेरा लहसुन ··" वे चुप हो गए । मैंने उन्हें ध्यान से देखा । यह स्वाभाविक था । अंडरवीयर के नीचे लहसुन दिखाने में कोई ख़ास मुश्किल न पड़ी, हालाँकि संकोच लगा । मैंने एक पाजामा मांगा । मिल गया । भाई का था । कुछ छोटा पड़ा, पर पहना और लेट गया । पिताजी इत्यादि चले गए । तव पूरी कथा गढ़ी । इस कथा के विरामों और इसकी सूक्ष्मताओं पर विचार किया, सम्भावित प्रश्नों के उत्तर बनाए । किसी प्रकार वाहर निकलकर एक यज्ञोपवीत डालने का निर्णय किया, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि माता-पिता या भाई-वहन को किसी भी प्रकार की सामाजिक कठिनाई हो । हिन्दू-समाज रूढ़ियों पर दृढ़तापूर्वक चलता है । वास्तव में, प्रत्येक समाज में रूढ़ियां होती हैं, जिनका उद्गम व्यवस्था और मर्यादा में होता है, भले ही उनके प्रवाह को विकृत कर दिया जाए । मैं इस समय प्रेम की गंगा में स्नात् होना चाहता था, क्रांति के सागर में संतरण करना नहीं । लेकिन, लवलीन, वह अपरिहार्य है ! 'लवलीन दीक्षित' सम्भाव्य है ! देखा जाएगा ! नींद-वींद का सवाल न था । उठा, कपड़े बदले । घर में लोगों का हजूम-सा उमड़ पड़ा था । मैं चुपके-से निकल जाना चाहता था, लेकिन सुभद्रा की दृष्टि से न बच पाया, "भैया जाग गए ! भैया जाग गए !" बड़ी मुश्किल से उसे समझाया कि थोड़ी देर में ही होटल का हिसाब चुकता करके, सामान लेकर, वापस आ रहा हूं । निकलकर रिक्शे पर वैठा । रिक्शे वाले से जनेऊ के बारे में पूछा । उसने नयागंज की सड़क के किनारे से खरीदवा दिया । मैं होटल में पहुंचा, जो विरहाना रोड में था । कमरे में जाकर जनेऊ पहना । अव

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

तसल्ली हुई। होटल का हिसाब-किताब चुकता किया और 'घर' पहुंच गया। वहाँ माताजी अपने तपेश्वरीदेवी के पुरश्चरण के निमित्त व्यग्र थीं। फटकार पड़ो, "कह दिया था कि तुम्हारे आने के दिन ही मानता पूरी करनी है।" जो सुभद्रा की वकालत के कारण नरम ही रही। मुझे यह सब जादुई लगता था ! माताजी सुभद्रा इत्यादि के साथ मुझे मन्दिर ले गईं और पाँच-सौ एक का प्रसाद चढ़ाया-बाँटा गया।

उस शाम कोठी पर भारी उत्सव हुआ। सत्यनारायण की कथा कराई गई। ब्राह्मणों का भोज हुआ, मित्रों को पार्टी दी गई, कंगालों में खैरात दी गई। पण्डितजी से 'बिचरवा' कर अगले सोमवार को अखंड-रामायण-पाठ निश्चित किया गया, जिसके बाद इससे भी बड़ा ब्रह्मभोज होना था। मैं घबरा गया ! दिल्ली लौटना था। पर कोई सुनता ही नहीं था, "अब दिल्ली में क्या धरा है ! दिल्ली के जीवन में पाश्चात्य विलासिता का अनुकरण-रोग असाध्य रूप धारण कर चुका है। वहाँ टिक्कीबाज़ और टिप्पस-बाज जाते-जमते हैं—तुम्हारा यहीं इतना बड़ा कारबार है !" बड़े तर्क-वितर्क के अनंतर मुझे मंगलवार को 'कुछ दिनों के लिए, जाने की आज्ञा प्राप्त हो गई, यद्यपि माताजी के आँसू आ गए।

रात को एक अंतरंग गोष्ठी जमी। महफिल की शुरूआत चुटकुलों और लतीफ़ों से हुई, बीच में दो गीत गाए गए, तब मेरी कहानी का आग्रह किया गया, जिसके लिए मैं पूरी तरह से लैस हो चुका था, "जो व्यक्ति मुझे ले गया था, उसका नाम था पण्डित जगन्नाथ त्रिपाठी।"

माताजी ने पूछा, "कान्यकुब्ज था ?"

"नहीं, गौड़। मुझे जब चेत आया, तब मैं मेरठ में था। त्रिपाठी की बदली होती रहती थी। इसलिए पटना में ही रहना पड़ा।"

कुल-पुरोहित पण्डित वाचस्पति वाजपेयी लड्डुओं के प्लेट पर जुटे थे, जो भोजन के पश्चात 'मधुरेण अन्तः' के अन्तर्गत आने वाले कार्यक्रम में सम्मिलित था। भव्य व्यक्तित्व था—दरमियाना क़द, दुहरा शरीर, गोरा रंग, गोखुर के बराबर बड़ी और लम्बी शिखा, मुंडा सिर, ललाट पर त्रिपुण्ड। पहले ही बोलने को व्यग्र थे, परंतु मुख में अर्द्धचर्वित मोदक व्यवधान बन रहा था। अब उसे यत्किंचित् कवलित करते हुए बोले,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

"असली कान्यकुब्ज ब्राह्मण—पूरे बीस विस्वा मर्यादा वाला—अपहृत हो या हृत, या हत ही; किसी ऐरे-गैरे-नत्थू-खैरे के मान का नहीं ! एक बार एक मियाँ ने एक ब्राह्मण बालक का अपहरण किया—तीसरे ही दिन ब्रह्माण्ड-स्फोट से समाप्त ! यह अच्छा था कि जो ले गया था, वह था ब्राह्मण ही ! माना कि कान्यकुब्ज ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ हैं, किन्तु हैं तो सब ब्राह्मण मूलत: एक ही; ऋषियों की संतानें, जैसा कि गोत्रों से स्पष्ट है। यदि अपहरणकर्त्ता ब्राह्मण न होता, तो तीन वर्षों के अन्दर नष्ट-भ्रष्ट हो जाता और 'बरस बारहीं-तेरहीं जरा-मूर हो जाय' वाली भी होकर ही रहती ! गरुड़ तक को ब्राह्मण निगलने पर उगलना पड़ा था।"

सेठ हरकिशनदास कटपीस वाले आइसक्रीम खाते हुए भी यह प्रसंग बड़ी ही तन्मयता से सुन रहे थे। गम्भीरतापूर्वक बोले, "ये प्रसंग किस पुरान में आया है ?"

पण्डित जी ने लड्डुओं की प्लेट को मेज़ पर रख दिया और बोले, "कई में ! भागवत में भी है। तुलसीदासजी ने भी 'ब्राह्मण ज्यों उगिल्यो उरगारि' लिखा है..."

सेठ हरकिशनदासजी ने आइस-क्रीम का अंतिम अंश 'सफ़ा' करते हुए पूछा, "ये प्रमान रमायन में तो नहीं है ?" और उन्होंने तेजस्विता-पूर्ण दृष्टि से सबकी ओर देखा।

सेठ बलभद्दरदास गोटे वाले बोले, "क्या तुमने सारी रमायन पढ़ी है ?"

"आदि से अन्त तक—सत्तावन बार ! बिना पाठ किए अन्न-जल नहीं लेता !" उनका तेज ओज में घुलता-मिलता दीखा।

पण्डित रामचरण शुक्ल ज्वेलर ने प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए कहा, "लाला हरकिशनदास रामायण के कीड़े हैं—एक-एक अक्षर का ज्ञान है !

इधर लालाजी ने नम्रतापूर्वक हाथ जोड़े, उधर पण्डित जी ने चालू किया, "तुलसीदासजी ने रामचरितमानस के अतिरिक्त विनयपत्रिका इत्यादि अन्य महान् ग्रन्थ भी रचे हैं। यह अंश कवितावली का है..."

माताजी ने हाथ जोड़ कर कहा, "पण्डितजी का ज्ञान अथाह है। महाराजिन, गुरूजी को मलाई का कटोरा तो लाना !"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पण्डितजी ग़ज़ब के बंदे थे। छब्बीस कचौड़ियों का सालन और रायता आदि के साथ भोजन, ऊपर से चार किंग-साइज़ लड्डुओं का मधुरांत और अब कोई पाव-भर मलाई ! खाते-खाते बोले, "देवी, बड़ों-बड़ों के घरों में बड़ी-बड़ी स्त्रियाँ देखीं, पर तुझ-जैसी गृहलक्ष्मी दुर्लभ ही है,—ये तेरे तप का प्रताप है कि न जाने कितने सालों बाद लड़का वापस आ मिला और वह भी हट्टे-कट्टे, लब्बूस-हब्बूस ज्वान के रूप में !" और मलाई के साथ भरपूर न्याय करने लगे।

सुभद्रा ने सोच-विचार कर, सजग स्वर-शैली में कहा, "अम्मा हर सोमवार का व्रत करती रहीं। इसी से तो शंकरजी ने शंकर भाई को सही-सलामत वापस ला दिया, उनका बाल भी बांका न हुआ ! यहां बड़े-बूढ़े सोचते थे कि पता नहीं, लड़के को भिखारी उड़ा ले गए हों और हाथ-पैर तोड़कर भीख मंगवा रहे हों; या, अपराधी अपहरण कर ले गए हों, क्योंकि वह बहुत मोटा-ताजा और लम्ब-तडंग था, और अपराध करा रहे हों; या फादर-पादरी टरका ले गए हों और उसे धर्मभ्रष्ट कर दिया हो, क्योंकि उन्हें इतना सुन्दर और प्रभावी ईसाई कहां धरा है—ईसाई तो वे ही बनते हैं, जो विवश, दयनीय और निरुपाय हों ! लेकिन हुआ 'जब जानकीनाथ सहाय करैं तब कौन बिगारि सकै नर तेरो' ही…"

पिताजी ने उसे भाव-विह्वल दृष्टि से देखकर कहा, "सोमवार को अखण्ड रामायण-पाठ अवश्य होगा !"

सभी ने इस प्रस्ताव का सहर्ष अनुमोदन किया। सुभद्रा का सिक्का जम गया।

सबके आग्रह पर मुझे चालू करना पड़ा, "त्रिपाठी ने मुझे अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाया…"

पण्डितजी बिदके, "वहां तो भ्रष्ट समाज होता है बेटा, नंग-नाच और गँगुवा-सुरँती ?"

सेठ बलभद्दरदास ने खण्डन किया, "मेरा लड़का भी पढ़ता है, लेकिन नम्बर एक का धर्मी, कर्मी और मर्मी है। सब धान बाइस पसेरी नहीं बिकते !"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मैंने चालू रखा, "त्रिपाठी ने बारह वर्ष की आयु में यज्ञोपवीत किया..."

पण्डितजी बोले, "इसका मतलब कि इस घोर कलिकाल और रावण-राज्य में भी धर्म पूरी तरह मरा नहीं! यज्ञोपवीत परमं पवित्रम् । यज्ञोपवीत की निन्दा करते ही जयप्रकाश नारायण का पतन हो गया था।"

संकेत पाकर मैं गतिशील हुआ, "पहले उनके औलाद न थीं, न उम्मीद थी। लेकिन मेरे ले जाने के ग्यारह साल बाद अचानक ही हो गई। तब उन्होंने मेरे साथ दुर्व्यवहार आरम्भ कर दिया, जो मुझे सहन नहीं हो सक...।"

विष्णु ने कहा, "बैसवाड़े के पानी में यह ख़ूबी है कि उसे पीनेवाला ज़हर पी सकता है, अपमान नहीं। आल्हा में 'कड़ुवा पानी है महुबे का' कहा गया है। ठीक यही बात वीर बैसवाड़ा पर लागू होती है। महावीर-महाकवि निराला का पौरुष बैसवाड़ामूलक ही था !"

ठाकुर हिमालयसिंह ने तहा धरा, "ये बात चालिस सेर की कही ! बैसवाड़ा का मर्द बात आने पर भिड़ जाता है, चाहे सामने जाट हो या सिख, गोरखा हो या डोगरा, गूजर हो या अहीर, नाग़ा हो या भील, खासी हो या पासी !" उन्होंने मूँछों पर ताव दिया। क्या शरीर था ! लम्बा-चौड़ा वदन, गँठी-कसी माँसपेशियां, तनी मूँछें। तबीयत बाग-बाग हो गई !

रात को एक बजे पण्डितजी ने 'सभा-विसर्जन' की घोषणा की और सबके साथ मुझे भी अपार संतोष हुआ, क्योंकि सभी थक कर चूर हो चुके थे।

दूसरे दिन से दूसरा जीवन ! सवेरे उठकर नहाया-धोया ! जलपान के समय भी जूते-मोजे न चल सकते थे। भोजन केवल धोती पहनकर करना पड़ा, आसन पर पालथी लगा के हिन्दू योगी का जीवन जीता है! मैंने कुछ देखकर, तो कुछ सुनकर, कुछ पूछकर, तो कुछ अनुमान कर, काफ़ी-कुछ समझ लिया। मुझे यह जीवन कठिन ही नहीं, कठोर भी लगा, किन्तु एक विचार भी उठा, "कठिन और कठोर जीवन विताकर ही हिन्दू संसार के इतिहास की कठिनतम और कठोरतम परीक्षाओंमें भी सफल हो सका है। यह हिन्दू का ही जीवट था कि अकबर के दरबार में क़दमबोसी करने

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

के बाद लौटकर पवित्र कर्म करता था ! यह हिन्दू के दम का ही जलूसा था कि पाँचवें जॉर्ज से मिलने के बाद शुद्ध होता था !—"ये विचार पहले झटके में दक़ियानूसी लगे, क्योंकि शरीर प्रवृत्या विलासी होता है, किन्तु दूसरा झटका तर्क का, "पश्चिम के सारे वाद स्वयं असफल सिद्ध हो रहे हैं। यदि विश्व में कोई शाश्वत वाद है तो वह केवलमात्र अद्वैत है, जो पश्चिम को भी अभिभूत करने लगा है।—"लेकिन, मैं जंगल का दरख़्त था—बिना खाद, बिना सिंचाई, बिना कटाई, बिना छँटाई के आसमान चूमनेवाला ! यहाँ की देख-भाल और यहाँ का लाड़-प्यार मुझे अटपटा भी लगता था, आकर्षक भी ! यहाँ लवलीन का प्रवेश सम्भव न था और मैं उसके बिना बस जी सकता था—एक बेलज़्ज़त ज़िन्दगी। यहाँ पंजाबियों और सिंधियों का मज़ाक उड़ाया जाता था, "पंजाबियों का कोई कल्चर नहीं—ले-देकर भंगड़ा है, सो भी युद्ध अधिक लगता है, नृत्य कम; उस पर भी अब ट्विस्ट फाँदा पड़ता है ! मम्मी-डैडी से लेकर सूट-बूट तक ये पश्चिम के दास हैं और मज़ा यह है कि वहाँ इन्हें टके सेर भी नहीं पूछा जाता ! कैनेडा में सरदार को 'रैग-हैड' कहते हैं ! इनके कारण सारे संसार में भारत की प्रतिष्ठा पर आँच आ रही है, साख गिर रही है, उसकी निष्ठा के धज्जे उड़ रहे हैं। एक लतीफ़ा है—बहुत वर्ष हुए, कैनेडा स्थित भारतीय राजदूत ने वहाँ के कर्णधार से पूछा, आपके देश में दूध-दही से लेकर दवा-दारू तक सब-कुछ शुद्ध और अमिश्रित कैसे मिल जाता है ? उत्तर मिला, हमें एक सिख दे दीजिए और देखिए कि दूसरे दिन से ही इन्सान भी शुद्ध और अमिश्रित नहीं मिल पाएगा ! भारत के विभाजन का सबसे बड़ा अभिशाप पंजाबियों इत्यादि का इस भूखण्ड में आना, अनाप-शनाप सुविधाओं के बल पर यहाँ के जीवन पर छा जाना और उसे विकृत कर देना सिद्ध हुआ है—आज जो बेहूदे फैशन, ओछे फिल्मी गाने, भद्दे नाच इत्यादि दीखते हैं, वे इन्हीं की देन हैं। इन्होंने साहित्य-सृजन के व्रत को वृत्ति बनाकर कलुषित कर दिया है। लेखन और प्रकाशन दोनों को ओछे हथकण्डों के बल पर कृत्रिम आधुनिकता का कलह-क्षेत्र बना दिया है। दुःख इस बात का है कि इन्हें मनमानी करने की खुली छूट मिली हुई है। भारत पहले पाश्चात्यों के शासन में था, अब पंजाबियों के !"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

…यह सर्वथा असत्य न था, किन्तु अतिरंजित अवश्य था। मैं पंजाबियों के बीच रह चुका था। अच्छा न लगता। इससे भी अधिक सिंधियों की निन्दा अखरती, क्योंकि उनके साथ मेरे घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो चुके थे। "ये पहले टट्टी में पानी न लेते थे, अब देखा-देखी लेने लगे हैं !" माताजी ने सदर्प स्वर में बताया, "मैं पहले सिंधियों को छूती ही न थी, और, अगर न बच पाती तो नहा लेती थी !" मुझे यह अनुचित लगा। अस्पृश्यता भारतीय जीवन के शरीर का कुष्ठ रही है। इसका उन्मूलन ही वरेण्य है। इसे नूतन आयासों तक प्रसरित करना तो सर्वथा विगर्हणीय ही है।…मैं आज़ाद पंछी था और पिंजरा—चाहे वह सोने का हो या चाँदी का, पीतल का हो या लोहे का—मुझे नहीं भा सकता था। लेकिन, एक ख्याल उठा, "क्या होटल चलाना आज़ादी में शामिल किया जा सकता है ? क्या इसमें कम पचड़े हैं ? इन्सान न आज़ाद पैदा होता है, न आज़ाद पलता है, न आज़ाद जीता है, न आज़ाद मरता है। आदि से अन्त तक सामाजिक बंधन ही उसका जीवन है। कुए में लटका घड़ा तभी सफल है, जब वह रस्सी से बंधा हो—मानव-जीवन तभी सफल है, जब वह मर्यादा में आबद्ध हो। मुक्ति का अर्थ उच्छृंखलता नहीं, आत्मशांति है।'…

७. अज्ञात आयाम

रेल के डिब्बे में बहस चालू थी। एक सूटेड-बूटेड और लम्ब-तड़ंग सरदार गरज रहा था, "पंजाब न हो तो भारत भूखा मर जाए ! पंजाब न हो तो भारत पर पाकिस्तान का क़ब्जा हो जाए ! पंजाब न हो तो भारत खेल-कूद में सिफ़र हो जाए !…"

एक पतला-छरहरा प्रौढ़, जिसका प्रांत समझ पाना सम्भव न था, बोल पड़ा, "भारत न हो तो पंजाब कंगाल हो जाए। उसे लोहे-कोयले आदि का निर्यात करना पड़े। वह मुख्यत: खेतिहर और पिछड़ा क्षेत्र माना जाए। भारत की सुरक्षा पंजाब के एकाधिकार की वस्तु नहीं, क्योंकि उस

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

में राजपूत, जाट, मराठा, गोरखा और डोगरा आदि अनेक जनवर्ग सम्मिलित हैं। पंजाब सदा परास्त ही होता रहा है। स्थल, जल और वायु सेनाओं में पंजाबियों की भरमार के कारण भी ये लोग खुशहाल हैं। जहां तक खेलों का सम्बन्ध है, पंजाब में न कोई ध्यानचंद पैदा हुआ है, न रणजीतसिंह। अपने मुंह मियाँ मिट्ठू…"

सरदार दहाड़ा, "तो क्या पंजाब में सबसे ज्यादा गेहूं…?"

"पंजाब में गेहूं अधिक होता है—पर क्यों? सारे राष्ट्र के अरबों रुपए से बने भाखड़ा बाँध के कारण! पंजाब देश को केवल गेहूं देता है, तो उत्तर प्रदेश वाले, चीनी, आलू, गुड़, आम, तरबूज और खरबूज जैसी अनेक वस्तुएं। बिहार, बंगाल और उड़ीसा लोहा, कोयला और अबरक देते हैं तो गुजरात और असम पैट्रोलियम; केरल और तमिलनाडु रबर, कालीमिर्च और काजू; आंध्र चावल; कर्नाटक चंदन। असम और बंगाल की चाय देश भर के लोग पीते हैं और उसके निर्यात से करोड़ों की विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। भारत का प्रत्येक राज्य अपना-अपना योगदान देता है—ठीक वैसे-ही जैसे शरीर का प्रत्येक अंग अपने-अपने योगदान के द्वारा जीवन को गतिशील और उल्लसित करता है। जो व्यक्ति किसी एक वर्ग या राज्य का स्तुति-गान करता है, वह संकीर्ण तो है ही, असत्यभाषी भी है…"

कई लोगों ने समर्थन किया, "ठीक बात है!" और मैं सोचने लगा, "भारत में एक सड़ी हुई क़ौम रहती है, पर वह मुर्दा नहीं है, और उसकी शल्य-चिकित्सा भी सम्भव है…"

दिल्ली। और लवलीन…

आशा के अनुरूप, अतीत के अनुरूप, स्वरूप के अनुरूप, वह फ़र्स्ट-क्लास लेकर पास हुई। विषय था—अंग्रेजी साहित्य। पिता बड़े आदमी थे। भाई पहुंच के व्यक्ति थे। उसकी अपनी पर्सनॉलिटी थी। लेक्चरर लग गई। मैं बधाई देने गया, तो वही क़ीमती हार की सौगात लेकर! उसने बड़ी खींच-तान और बड़े न-नु-न-च के बाद ही लिया। मुझे यह अभूतपूर्व व्यवहार कष्टकर प्रतीत हुआ। इससे भी अधिक कष्ट सेठजी समेत सबके द्वारा अनाहूत और अयाचित अतिथि के व्यवहार से पहुंचा। और कष्ट तब असह्य हो गया जब तीन नूतन व्यक्तियों का परिचय प्राप्त हुआ, जिनमें

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

in Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

एक बम्बई के किसी उद्योगपति का पुत्र था !…मैं किसी तरह समय काटता रहा और जब माहौल नाक़ाबिले-बर्दाश्त लगा तब बहाने से सरक लिया। किसी ने आग्रहपूर्वक रोका नहीं—लवलीन ने भी नहीं !…उक्त उद्योगपति-पुत्र ठीकठाक नवयुवक था, लेकिन सिंधी धनिकों के सदृश लिब-लिबा और घिचघिचा। लवलीन इसकी चर्चा कर चुकी थी। मैंने सोचा, "अब मैं भी ठनठनगोपाल नहीं हूं। लाखों-लाख का कारोबार है,…लेकिन वहां मन,…तो मन यहाँ भी,…मन को काबू में किया जाएगा !" और मैं कनॉट प्लेस के नरूला होटल के ठीक सामने से खाली हाथ वापस आ गया, यद्यपि गया था क़ीमती शराब की बोतल लेने और किसी माक़ूल जगह पर बैठकर ग़म ग़लत करने,…"बंधन बंधन है, चाहे योग का हो या भोग का या रोग का। मुक्त व्यक्ति वही है, जो अपने योग पर भी शासन करे, भोग पर भी, रोग पर भी।…"

दिन कट भी रहे थे, काट भी रहे थे। शरीर शरीर भी था, अशरीर भी; शरारत भी करता, शराफ़त भी। मैं अक्सर सोचता, "मनुष्य बिना चिंताओं के न तो रह सकता है, न रहना चाहता ही है। चिंता नहीं तो चिता अवश्य मिलेगी ! चिंता ही जीवन की गति है। जो व्यक्ति जितना ही बड़ा होता है, उसकी चिंताओं के आयाम उतने ही बड़े होते हैं। जो व्यक्ति जितना ही उन्नत होता है, उसकी चिंताएं उतनी ही ऊंची होती हैं। पहले मेरी चिंताएं, मेरे स्तर के अनुरूप, छोटी थीं; अब वे बड़ी हैं, और यही श्रेयस्कर हैं। चिंताओं, आओ और मुझे चेत-सम्पन्न करो ! अब…"

अगस्त का पहला हफ्ता था। आसमान पर काले-कजरारे बादल छाए थे। तेज और ठण्डी पुरवा डोल रही थी। धुआँधार बर्षा के आसार थे। मैं होटल के काउण्टर की कुर्सी पर बैठा आसमान की छटा निहार रहा था, घटा निहार रहा था। कोई तीन का वक्त था। सन्नाटा था। मंगल इत्यादि विश्राम कर रहे थे। मेरा ध्यान टूटा। रेडियो स्लो पर चल रहा था—

"पपीहा रे, मेरे पिया से कहियो जाय !…"

मैं एकदम अभिभूत, अनिर्दिष्ट, अकर्मण्य और अकारण ही आहत-सा

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

सुन रहा था, सुन रहा था, सुन रहा था…

चेतना कानों में फुसफुसा रही थी, "प्रेम मानवता की पहली पहचान है। राजा हो या रंक, धन्ना-सेठ या फटेहाल-भुक्खड़, गोरा या काला, ऊँच या नीच, प्रत्येक व्यक्ति, चाहे नर हो या नारी, हल्का या भारी, सुन्दर या कुरूप, सबल या निर्बल, प्रेम के स्पर्श से पुलकित हुए बिना नहीं रहता। सब प्रेम की स्पृहा करते हैं। प्रेम के पावन उपवन में ही जीवन का अतुलित सुमन खिलता है !…" भारी वर्षा होने लगी थी, लेकिन मैं उसे कम और खुद को अधिक देख रहा था; ख़ुद ने ही ख़ुदा को बनाया है…

कि तभी एक टैक्सी आकर होटल के ऐन सामने आकर रुकी ! मैं सजग हो गया, क्योंकि ऐसे सन्नाटे में ही चोर-उचक्के और डकैत-क़ातिल, …लेकिन उससे चितचोर लवलीन उतरी…और जब तक मैं भाड़ा चुकाने के लिए दौड़ूं, टैक्सी हवा से बातें कर रही थी, क्योंकि उसने फ़ेयर अंदर ही चुका दिया था, जो मौसम को देखते ठीक ही था। मैं भीग गया, पर वह नहीं, क्योंकि बरसाती डाले थी। अंदर आकर उसने बरसाती उतारी। सब तरफ़ देखा। तब बोली, "नाराज़ हो ?"

"नहीं।"

"तो इतने दिनों से ख़बर क्यों नहीं ली कि ज़िन्दा हूं या मर गई हूं, ठीक-ठाक हूं या बीमार, सुखी हूं या दुखी ?"

स्वतः सम्भूत उत्तर,…"क्या यही सब मैं नहीं पूछ सकता ?"

वह चुप रही।…

मैंने प्रकरण बदला,"ऐसे विकट समय में तुम अकेली टैक्सी पर…?"

"टैक्सीवाला जाना-पहचाना प्रौढ़…"

"ओह !"

"स्त्री अपनी सुरक्षा के प्रति सदैव सजग रहती है—विशेषकर भारत में, जहां पुरुष के सभ्य होने में पश्चिम से भी अधिक समय लगेगा।" वह थोड़ा-सा मुस्कराई, किंतु आँखों के अन्तराकाश पर छाए काले-काले बादल 'अब बरसे, अब बरसे' व्यक्त कर ही गए, "उस दिन…जब तुम आए थे, उससे पहले,…सच पूछो तो, बॉम्बे के गेस्ट के आने से ही पहले, …विचित्र घटनाएं घटी थीं !" वह चुप हो गई। मैं स्तब्ध।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

"लम्बी-चौड़ी बातों को कहकर मैंने कवेना के सारे सदस्यों के सामने, तुम्हारा नाम ले डाला था···और उस पर कोहराम मच गया। पिताजी-माताजी तो सौ-फ़ीसदी इंकार करके चुप हो गए,···लेकिन अरुण ने तुम्हें और पूसा रोड़ वाले दोनों भाइयों ने मुझे मरवा डालने तक की धमकियां···।"

"क्या···!" मैं क्रोध से पागल हो उठा।

"हम चाहे बंगले में रहें या कोठी में, इम्पाला पर घूमें या फ़िएट पर, सूट पहनें या गॉउन—व्यक्ति की गरिमा के बोध से वंचित हैं। जिस देश में 'नेता' अपनी लोकप्रियता का प्रदर्शन करते हों, जिस देश में 'धर्मा-वतार' हत्याओं के अपराध में बंदी हों, जिस देश में बरसाती मेढकों की तरह 'भगवानों' की टर्र-टर्र से कान फट रहे हों, जिस देश में अभिनेता जनता की प्रवृत्तियों का नग्न-उल्लंग शोषण करते हों, उस देश का अरुण या तरुण कुछ भी कह या कर सकता है···"

वह मेरी लाल आँखें और खूंख्वार आकृति देखकर डर गई, "ये पूंजी-पति भाड़े के टट्टुओं से गोलियां चलवा सकते हैं, छुरे चलवा सकते हैं,··· जो हो, मैंने दो टूक बात कह दी है कि मैं विवाह करूंगी तो सिर्फ़ तुमसे··· अन्यथा अविवाहित रह जाऊँगी!" उसके चेहरे पर मज़बूती थी।

कुछ देर हम दोनों चुप रहे।

"मेरे घर जाने से पहले कहीं गए थे?"

"हाँ।"

"कहाँ?"

"कानपुर।"

"क्यों?"

"अपने माता-पिता और भाई-बहन की खोज में! जो व्यक्ति मुझे छुटपन में ले आया था, उससे मूल स्थान का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। समाचारपत्र में विज्ञापन देने पर सफलता प्राप्त हो गई! लोगों ने आकृति की एकता से ही पहचान लिया था, किन्तु शरीर के दो चिह्न भी देखे। और लवलीन, अब मैं शँकर दीक्षित हूं!" मैं खुशी से खिल गया था—अचानक ही।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

"दीक्षित तो पण्डित होते हैं ?" वह मुस्कराई।

"हाँ।" मैं शांत रहा।

"वहाँ क्या-क्या देख पाया !"

"पिताजी को, माताजी को, बड़े भाई को, भाभी को जो माँ बनने वाली हैं, बहन को जो अभी-अभी ससुराल गई है,···" मैं आर्थिक गौरव बताने में झिझक गया।

"पिताजी काम करते हैं या रिटायर···?"

"पिताजी व्यापार करते हैं।"

"किस चीज़ का ?"

"कपड़े का थोक···" मैं रुक गया।

"तब तो तुम अचानक ही करोड़पति बन गए !" वह हँसी।

मैं चुप रहा।

"आवास कैसा है ?"

"अच्छी-ख़ासी तिमंजिली कोठी है—शहर के ठीक दिल में ! निचली मंज़िल में दुकान और गोदाम है, ऊपर की मंज़िलों में निवास। दो मकान विकसित नगर-भागों में हैं, जिनसे तीन हज़ार किराया आता है।" मैंने आवाज़ का ग़रूर दबाया।

लवलीन हर्ष-विभोर हो उठी, "तभी तो ऐसे थे ! चाहे जैसे रहते, चाहे जो पहनते, हीरोज़ में हीरो !" वह हंसी।

मैंने आंखें नीची कर लीं।

"तो अब अड़चन उधर से भी पड़ सकती है ? उधर के ब्राह्मण··· काने-कुब्जे···बड़े सख़्त···" वह शरारत पर उतरी।

"कान्यकुब्ज ! कन्नौज का प्राचीन नाम। संस्कृत···"

"मेरी एक कान्यकुब्ज सहेली 'नौ कनौजिए, दस चूल्हे' कहावत सुनाया करती थी ! दसवां आग के लिए ! ये लोग तो आपसी खान-पान से भी कतराते हैं !"

मैंने आंखें उठाईं और उसकी आंखों में डाल दीं, "मैं तुम्हारे लिए सब-कुछ छोड़ सकता हूँ, सारी दुनिया से लड़ सकता हूँ, जान दे सकता हूँ !" अब आंसू आए।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

उसके भी ।···

मैं उठा और कॉफ़ी बनाने चल पड़ा, "माफ़ करो, तुम थकी-माँदी आईं और मैं वज्र मूर्ख के समान लफ्फ़ाज़ी के झूले पर पेंग मारता रहा !" मैंने हाथ जोड़े ।

"क्या तक़ल्लुफ़ है ! वाह !!" पर उसने रोका नहीं ।

वारिश नहीं रुकी । शाम होने को थी । मेरे मन में एक विचित्र ईप्सा जागी, "लवलीन ठहर जाए !···" और मैं उतावलेपन से बोल पड़ा, "ऐसे में कहाँ जाओगी ? सबेरे जाना !" और उसके मुख पर लाली झलक पड़ी।

उसने मेरी ओर एक अनिर्वचनीय माधुर्य से परिपूर्ण दृष्टि डाली, पर चुप रही । आंखें आंखों से मिलीं, "नज़र जो उठी इक वफा बन गई, नज़र जो झुकी इक हया बन गई,···" मैंने 'मौनम् स्वीकृति लक्षणम्' के चिंतन-जन्य आधार पर कहा, "ऐसा खाना बनाऊंगा कि नारी-जाति का पाक-कला पर एकाधिकार समाप्त हो जाएगा···"

"ऐसा कम-से-कम इस वर्ष न करो !" उसने गम्भीर मुद्रा बनाई ।

"क्यों ?" मैं एकदम चौंक गया !

"यह अंतर्राष्ट्रीय महिला-वर्ष है !"

हम दोनों ही हँसे, लेकिन मुझे कोई माक़ूल जवाब न सूझा; इसलिए कुछ ज्यादा हँसता चला गया । लवलीन ने जबान खोली, "पश्चिम का वर्ग आदर्श से विचलित होने के कारण, उमंगों और तरंगों पर लहालोट है— कभी यह वर्ष कभी वह दशक ! उनका प्रत्येक कार्य संघर्ष का पथ ही प्रशस्त करता है, शांति का नहीं । १९७५ नर-नारी के संघर्ष का पथ प्रदर्शित कर रहा है । मैंने अभी नर-नारी के मध्य कोई भयावह द्वैत देखा नहीं—अपवादों का उल्लेख व्यर्थ लगा, क्योंकि अपवाद नियम नहीं बन सकता । सामाजिक न्याय का अर्थ है सबको न्याय मिले । अतएव, विशेष नर-वर्ष या नारी-वर्ष, बाल-वर्ष या बालिका-वर्ष सब निष्तत्व हैं । पश्चिम अभी प्रौढ़ नहीं हुआ ।"

"किन्तु शेष विश्व, विशेषत: भारत-जैसे पिछड़े और सर्वमान्य नेतृत्व से रहित देशों की स्थिति ऐसी है कि यदि पश्चिम गधे को बछड़ा कह दे, तो मान लिया जाएगा । बात यह है कि पश्चिम ने शोषणमूलक इति-

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

हास के आधार पर इतना ऐश्वर्य प्राप्त कर लिया है कि वह श्रेष्ठता-ग्रन्थि तथा शेष विश्व हीनता-ग्रन्थि से बच ही नहीं सकता।"

कुछ देर बाद उसने आग्रह किया, "अब पानी रुक-सा गया है—इजाज़त है ?"

मैं विकल हो उठा, "अभी तो···"

"तुम ख़ुद सोचो !" उसने आंखें झुका लीं।

मैंने मंगल को जगाया। काफी सो चुका था। शाम को ग्राहकों के लिए भोजन बनाना था ही। बरसाती पहनी। लवलीन को स्कूटर पर बैठालकर ले उड़ा। रास्ते में बोला, "कानपुर के आवास-काल में हमारे विद्वान् कुल-पुरोहित ने काम और विवाह का महत्त्व समझाते हुए 'स अकामयत' और 'एकाकी न रमने' जैसे अजर-अमर सूत्रों की व्याख्या की थी—आज उनका असली मतलब समझ में आ रहा है।"

लवलीन ने कन्धा दबाते हुए कहा, "क्या विवाह की बातें भी कर आए ?"

मैंने स्कूटर धीमा किया, "माताजी का रुख देखकर पण्डितजी ने बात उभारी तो थी, लेकिन मैं एकदम नाट गया।"

"मुझे डर है, जितना व्यवधान मेरे घर वाले डाल रहे हैं, उससे कहीं अधिक तुम्हारे घर वाले डालेंगे। मैं तो अब कम-से-कम माताजी को पर्याप्त प्रभावित कर सकती हूं।"

"सुनते हैं, पंजाब और सिंध में ब्राह्मण की हालत काफ़ी पतली थी-सवेरे उसे देख लेने पर मत्था ठोंकना पड़ता था, जबकि जमादार शुभ माना जाता था ?"

"यह शायद इसलिए था कि ब्राह्मण का प्रभात-कार्य संध्या-पूजन है, अटन-उल्लास नहीं।"

"मैं तो समझता था, प्राचीन ब्राह्मण-क्षत्रीय-विद्वेष जो पुरखा और नहुष के कालों में जन्मा था, परशुराम के काल में उग्रतम हुआ था, महावीर और बुद्ध के काल में भी विद्यमान था, सारे के सारे खत्री सिख-गुरुओं के कारण एक परिवर्तित रूप में व्यक्त हुआ होगा। सिख-धर्म वस्तुतः खत्री धर्म है···"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

"देखती हूं, तुम एक वहुत कट्टर और विद्वान ब्राह्मण होकर लौटे हो !" उसने गम्भीर स्वर में कहते हुए भी कन्धे पर एक करारी चुटकी ली थी।

मेरा सारा शरीर झंकृत हो उठा, "इस तरह तो हम दोनों सड़क पर होंगे !"

"लेकिन साथ-साथ ! मैंने बी. ए. में एक निवन्ध पढ़ा था, जिसमें महान् लेखक ने किसी लोकगीत की दो पंक्तियां उद्धृत की थीं, जिनमें नारी-मनोविज्ञान का अद्‌भुत एवं तलस्पर्शी उन्मेष हुआ है—

आगि लागि घरु जरिगा, अति सुख कीन।
पिय के संग घइलवा भरि-भरि दीन ॥"

"देखो, यह 'पिय' शब्द न भूलना !"

इसका कोई उत्तर नहीं मिल सका।

अचानक लवलीन विस्मयाविष्ट स्वर में वोली, "अरे, कहां उड़े जा रहे हो ? लालकिला पीछे छूट चुका है !"

मैंने ध्यान दिया। हम कौड़िया पुल के करीब आ चुके थे। स्कूटर मोड़ा और लवलीन को लालकिले वाले चौराहे से कुछ पीछे ही उतार दिया, जिससे किसी की नज़र न पड़े। अनायास-विह्वल स्वर पूछ पड़े, "अव कव ?"

"कभी-कभी फोन करके कॉलेज के आसपास आ जाया करो। डिफेंस कॉलोनी में कई अच्छे रेस्कां हैं। पास ही सफ़दरजंग का मकबरा है, हौज़-ख़ास है, कुतुबमीनार है—सवारी वालों के लिए मज़े ही मजे हैं !" वह शर्माई और चल दी।

मैं उसे जाती हुई देखता रहा···देखता रहा।

"मगन-मगन···मधुर अगन···घनित गगन !" मैं गुनगुनाता उड़ा जा रहा था कि अचानक दरियागंज के सिरे पर, दिल्ली गेट के पास, अपनी ही साइड में, स्कूटर पर आता अरुण दीखा; उसकी नज़र भी पड़ गई, क्योंकि सड़क पर उस पल भीड़ कुछ कम थी। किन्तु, अन्य अवसरों के सदृश, हममें से किसी ने न हाथ उठाया, न हिलाया, न रुकने का संकेत किया, न बुलाया, और मैं कोमल कल्पनालोक से कठोर यथार्थलोक पर

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आ गिरा, "लवलीन शायद मेरी किस्मत में नहीं लिखी।"

दो दिन इसी निराशा में वीत गए। वार-वार दिल मचलता कि फोन करूं। पड़ोस में ही था। मैंने अर्ज़ी दे रखी थी और इससे मायूस होकर ऑफीसर्स से लेन-देन और सांठ-गाँठ करके सौदा पटा रहा था, हालांकि बात ठसक की ज़्यादा और ज़रूरत की कम थी। अभी कुछ देर थी, क्योंकि लेन-देन के बाद अन्धेरे-अन्धेरे में खो जाती है। यह ख़याल आड़े आता था "मरु-मरीचिका में भटकने से क्या लाभ ?" खण्डन भी विद्यमान था, "जिस रस में आप्राण निमग्न हूं, उसे मरु-मरीचिका कैसे मान लूं ?" पर था यह प्रश्न ही; उत्तर नहीं ! "जब लवलीन की प्राप्ति सम्भव नहीं···कानून है, लेकिन अगर उसे या मुझे या दोनों को ही चलता कर दिया गया तो कानून क्या करेगा ?···अभी इधर से अड़चन है, कभी उधर से पड़ेगी !···क्यों न माताजी की इच्छा पर चलूं ? उधर तो लड़की देखना भी कठिन है ? लेकिन उनकी पसन्द·· भाभी—लम्बी, छरहरी, गोरी और शालीन—भइया से लाख दर्ज़े अच्छी हैं।"···"क्या मैं ऐश्वर्य की उपलब्धि के कारण मोहग्रस्त और दुर्वल हो रहा हूं ?"

पिताजी आ पहुंचे, "सुप्रीम कोर्ट में मेरे अज़ीज़ पण्डित रामचरण शुक्ल का केस चल रहा है। मुझे सदा साथ लाते हैं। उनकी एक दुकान यहां भी है। ग्रेटरकैलाश में कोठी है। यह लम्बी कार और सजा-धजा शोफ़र उन्हीं का है।"

मेरे होटल और रहन-सहन का विहंगम अवलोकन करने के अनंतर पिताजी बोले, " यह तुम्हारे ही दम का जलूसा है, जो अकेले इतना-कुछ कर-करा लिया। लेकिन, अब तुमको कानपुर में रहना पड़ेगा। मैं अभी-अभी बनी अशोकनगर की कोठी तुम्हारे नाम कर दूंगा। स्वरूपनगर की कोठी विष्णु के नाम पहले से ही कर रखी है। बेटा, ये इन्कमटैक्स वाले बहुत सताते हैं; लेकिन, व्यापारी 'तुम डाल-डाल, हम पात-पात' बख़ूबी जानता है और सरकार को मुट्ठी में रखता है। सरकार चुनावों को ध्यान में रखकर क्रांतिकारी दीखनें वाले कानून बनाने पर मजबूर हो जाती है, जिनके चंदे के बल पर चुनावों में विजय मिलती है, उनके लिए गुप्त-द्वार खोले रखती है। यह परस्पर का प्रेम एक हाथ से लेने और दूसरे हाथ से

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

देने की सनातन नीति पर आधृत है, किसी वाद पर नहीं। अब मैं व्यापार दो भागों में विभक्त कर दूंगा, जिससे कई टंटे उठ ही न सकेंगे। रहने वाली कोठी और बैंक-बैलेंस अपने नाम रखूंगा—कलियुग में संतानों के मन फिरंट होते देर नहीं लगती !" वे हंस पड़े।

मैं इस ऐश्वर्य की कल्पना तो कर ही रहा था, मेरी पुनर्प्राप्ति पर उनके तथा माताजी इत्यादि के अपार आनन्द का अनुमान भी लगा रहा था कि पिताजी ने पुनः कहना आरम्भ किया, "इन्हीं शुक्लजी की एकमात्र पुत्री को मैंने तुम्हारे लिए चुना है। उसका रूप-रंग और शील-संकोच अलौकिकता पर प्रत्यय करने वाला है ! विष्णु को मैंने उसके योग्य न समझते हुए…चर्चा तक न छेड़ी थी; उधर से भी न छिड़ी थी। लेकिन तुम्हें देखकर पण्डितजी स्वयं लट्टू हो गए हैं। उन्हें अपने दोनों पुत्रों और एकमात्र पुत्री के रंग-रूप पर असीम गर्व था और है, जोकि सर्वथा उचित है। वे और उनकी पत्नी इस आयु में भी सुन्दरतर हैं, तब युवा संतानों का क्या कहना ! किन्तु तुमने उनको नत कर दिया ! बेटा, बहुत बड़ा ख़ानदान है, बड़ों-बड़ों के रब्त-ज़ब्त और नाते-रिश्ते, मर्यादा पूरे बीस बिस्वा और लगभग एक लाख का दहेज—बिना तय-तोड़ किए, कहे-सुने, मांगे-जांचे !" पिताजी मेरी प्रतिक्रिया का पर्यालोचन करने लगे।

मैं सन्नाटे में था,…"मैं ऐसा था—हूं ! यह विस्मयकारी आत्म-साक्षात्कार !"

पिताजी संतुष्ट लगे, "दीप्ति हमारे साथ दिल्ली आई है। हिन्दी में एम. ए. करने के पश्चात् पी. एच. डी. कर रही है।"

"लेकिन मैं तो हाई स्कूल का सर्टीफिकेट भी नहीं रखता…"

"कोई बात नहीं, क्योंकि यह तथ्य उन लोगों को विज्ञात है…"

"ऐसा अनुचित होगा। होनी तो श्रेष्ठता चाहिए थी, पर समता तो अल्पतम…"

"पति पत्नी से प्रत्येक स्तर पर श्रेष्ठतर हो, यह धारणा उस प्राचीन काल में बनी थी जब नारी पर पुरुष का स्वत्वाधिकारपूर्ण निरंकुश शासन चलता था। पति-पत्नी की समता के नूतन काल में यह धारणा काला-

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

तीतहो चुकी है। तुम पी-एच. डी. नहीं हो तो क्या हुआ—सिंहवत् संस्फूर्त्तिमान और बलवान तो हो, मदनवत् मोहक आकर्षक तो हो, वृहस्पतिवत् बुद्धिमान और धृतिवान तो हो ? एक नज़र में ही जिसका पिता लट्टू हो गया, वह स्वयं क्या अनुभव करेगी सोचो ! तुम्हें अपने महत्त्व का बोध नहीं है—तुम हनुमान हो और मैं जाम्बवान् बनकर तुम्हें तुम्हारे गौरव का बोध करा रहा हूं ! अपने-आपको समझो ! नारी समर्पण करती है, व्यापार नहीं; और यहीं वह पुरुष से महानतर हो जाती है।"

मैं निरुत्तर रह गया—श्रद्धावनत···

पिताजी ने सम्यक् आकलन के अनंतर अधिकारपूर्वक कहा, "हां, तो वह यहां किसी उपन्यासकार से मिलने आई है, क्योंकि शोध से उसका सम्बन्ध है। चलो, देख लो !" वे ईषत् स्मित में गद्गद् थे !

"जी···" मैं घिघियाया।

उन्होंने इसे संकोच और नम्रता समझकर प्रसन्नता व्यक्त की, "हमारे वंश में आज तक कभी किसी पुत्र ने पिता के नेत्रों में अपने नेत्र नहीं डाले। यह राम और भीष्म का देश है। श्रवणकुमार केवल भारत में ही उत्पन्न हो सकते थे ! हम लोग तो लड़की-लड़के का विवाह-पूर्व साक्षात्कार ठीक नहीं मानते ; लेकिन, शायद इस मौक़े पर मौज़ूं रहे, क्योंकि, तुम खुद सब समझ लोगे !"

और मैं यंत्रवत् उनके साथ हो लिया।

वह रूप ! वह रूप तो कश्मीर या स्विट्ज़रलैण्ड में उत्पन्न होने पर भी विस्मित कर देता···! हीरक वर्ण, पाटल कपोल, मृग नयन—समस्त अलंकरण सत्य के समक्ष नत हो गए ! उन चरणों की शिरा-लिपि एवं केशिका-लिपि में सौंदर्य ने अपना समग्र इतिहास अंकित कर दिया था···

मैं स्तम्भित रह गया—रोमांचित, स्वेदस्नात्, हृत्कम्पविह्वल—"मैं इसका पात्र नहीं !" किन्तु वाणी एक पग भी न चल सकी; एक-एक अश्रुबिन्दु 'पानी आजु सकल संवारयो काज बानी ह्वै', को सार्थक और बिम्बित कर गए।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

दूसरे दिन पिताजी पुनः आए, "मैं जानता था कि तुम्हें देखकर कोई भी वाला 'ना' नहीं कर सकती ! बाल धूप में सफेद नहीं किए। 'दम बनी रहे घर चुवा करे' वाला जीवन नहीं बिताया। साफ़-साफ़ बता दिया है कि लड़का विषम परिस्थिति पड़ जाने के परिणामस्वरूप उपाधि नहीं प्राप्त कर सका, लेकिन क्या हिन्दी और क्या अंग्रेजी, क्या धर्म और क्या इतिहास में अच्छी पैठ रखता है। दो भाषाओं को समझ, पढ़ और बोल सकता है। उन्हें पहले से भी मालूम था। वे राजी हैं ! बेटा, तुम बहुत ही अधिक भाग्यशाली हो !" पिताजी के नेत्रों से अश्रु निकल पड़े, "तुम न होते तो मैं अपने घर में दीप्ति की कल्पना तक न कर सकता था !!!"

मैं चुप रहा।

"तो यहां का कारबार ज़ल्दी समेटो और वहां का सम्भालो—वह हम दो के मान का नहीं ! तुम्हारा सहयोग हमारे पहले से ही बड़े व्यवसाय को दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति प्रदान करेगा। मां, भाई, भाभी और बहन, सब दिन रात तुम्हारे सपने देखती हैं।"

और पिताजी चले गए।

उस रात एक विचित्र स्वप्न देखा—कश्मीर के निशात बाग में, सबसे ऊँची मंज़िल पर, एक चिनार के तले दीप्ति खड़ी है और मैं उसकी ओर बढ़ रहा हूं…और हम दोनों चुम्बन की सघन-भाषा में, स्नेह भाषा में, हृदय को व्यक्त कर रहे हैं।

जागने पर रोने लगा, "मनुष्य का प्रण जीवन के सत्य के समक्ष इतना दुर्बल हो सकता है ? आह !"

दूसरा स्वप्न देखा—शालीमार बाग़ में मैग्नोलिया के पुष्पित तरु तले लवलीन खड़ी है; उसका दायां हाथ पुष्प लिए है, बायां शाखा पकड़े है, और मैं तरुकमल से उसका दक्षिण चरणकमल स्वच्छ कर रहा हूं।

इसके बाद, आंसुओं की बाढ़ में नींद बह गई, डूब गई।

दूसरे दिन दोपहर के बाद लवलीन आई, "मैं पथ निहारती रही और तुम न आए, न आए !" उसका गला भरभरा आया।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

"क्षमा करना, पिताजी आ गए थे।"

वह कुछ रुककर, आंखें नीची कर, बोली, " उनसे कुछ पूछा था ?"

मैं मौन रहा, किन्तु मेरे लोचन मुखर हो चले।

उसने कुछ क्षण पश्चात् अपने लोचन उठाए, तो मुझे साश्रु विलोककर स्तम्भित रह गई, "क्या उन्होंने इन्कार कर दिया ? इधर, जिस दिन तुम छोड़ने गए थे···अरुण कह रहा था···"वह फूट-फूटकर रोने के लिए होटल के अंदरूनी हिस्से में चली गई। ऐसा पहली बार हुआ था ?

मैंने इतस्ततः देखा। सड़क पार सामने का प्रौढ़ सिख दुकानदार इधर टकटकी लगाए बैठा था। मैंने धीरे से पुकारा, "लवलीन, धैर्य न त्यागो, यहीं आ जाओ।"

आंखें पोंछती आकर वह कॉउण्टर के सामने आकर खड़ी हो गई।

"क्या कह रहा था ?"

"छोड़ो भी !"

"छोड़ने से बात ख़त्म तो हो नहीं जाती। तथ्य की उपेक्षा से वह मिटता नहीं अपितु हानिकारक हो जाता है। तथ्य से संघर्ष ही जीवन का गौरव है।"

"कहता था, पूसा रोड के भाइयों की तरह बात नहीं बल्कि घात करूँगा; पीटू को 'जीजा' नहीं कहूंगा, भले ही जान दे या ले लूं ! पिताजी ने समझाया, लवलीन समझदार लड़की है, तुम नाहक ही जल-भुन रहे हो।"

सामने वाला सरदार शायद अपने पड़ोसी सरदार को बुलाने चला गया था। मैंने लवलीन को बताया। यह भी व्यक्त हुआ, "भारत के लोग सेक्स के मामलों में एकदम सड़ गए हैं, नहीं तो यहाँ इतनी दरिद्रता और इतनी आबादी न होती।"

लवलीन के आँसू थम नहीं रहे थे। मैंने समझाया, "आंसू संक्रामक होते हैं। अगर मैं भी रोने लगा, तो इन दोनों दोपायों को फिलम का मज़ा यहीं, बिना लागत के और बैठे-ठाले ही, नसीब हो जाएगा—देखो, वह तमाशा दिखाने के लिए मकड़ लाया है—आह !" मैं चुप हो गया।

"कुछ दिनों इन्तज़ार के बाद मैं अलग रहने लगूंगी; लेकिन, गीदड़-

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

भभकियों और बंदर घुड़कियों के सामने घुटने न टेकूंगी।"

"इससे नफ़रत के जज़बात में इज़ाफ़ा ही होगा।"

"तो क्या करूँ?" वह फफ़क पड़ी, पर ज़ोर से रोई नहीं, क्योंकि सड़क पार सामने अब दो सरदार थे, जिनकी ठिल्लबाजी यहाँ से देखी जा सकती थी।

"कुछ समझ में नहीं आता। सम्भव है, समय विवेक की शिक्षा दे। काल संसार का सर्वोपरि गुरु है।"

"तुम दार्शनिक कब से हो गए?" उसे मुस्कराना पड़ा, "सुना है, दार्शनिकों को विवाह नहीं भलता? सॉक्रेटीज़ और अरिस्टॉटल ने विवाह से व्यथा पाई थी; इसलिए, इनके बीच की कड़ी के रूप में विख्यात प्लेटो ने विवाह नहीं किया और बहुत सुखी रहे। उनके अनुकरण में पश्चिम के दार्शनिक अविवाहित रहने को वरीयता प्रदान करते रहे हैं।"

मन मे आया कि कहूं—प्लेटों ने पुरुष के समजातीय प्रेम का प्रतिपादन किया है···पर रुका रहा। मुस्कान भी संक्रामक होती है। मुस्कराना पड़ा, "लेकिन बर्ट्रण्ड रसेल ने पहले विवाह पर प्रहार किया और फिर कई विवाह किए।"

"अपने दर्शन का जीवन के द्वारा खण्डन कर दिया! जहां दार्शनिक अधिक होते हैं, वहाँ पतन अवश्यम्भावी हो जाता है। यूनान दार्शनिक की बाढ़ में बह गया। ऐसा कहने वाले भी क्या खूब कहते हैं।"

"यूनान दार्शनिकों की बाढ़ मे बहा नहीं, अपना दाय देकर मानवता के सागर में लीन हो गया—सागर बन गया! सब कुछ शाश्वत है। विनाश आभास है, सत्ता सत्य। विवाह एक वैयक्तिक विभूति है। वशिष्ठ और विश्वामित्र, भारद्वाज और याज्ञवल्क्य विवाह करके भी महत्तम मानव थे। शुकदेव और नारद, शंकराचार्य और दयानन्द अविवाहित रहकर भी महर्षि थे। राम और कृष्ण विवाह करके भी पूज्य हैं। महावीर, बुद्ध विवाहोपरांत पत्नी-त्याग करके भी पूज्य हैं, भले ही कोई उन्हें पलायनवादी कह ले। एशु और यूहन्ना अविवाहित रहकर भी पूज्य हैं, भले ही उनका अनुकरण सम्भव न हो। जीवन एक जटिल अंतर्लापिका है···"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

"और जटिलतर बहिर्लापिका भी···"

हम दोनों के दिलों को ख़यालात से सुकून मिला। सुकून एक सख्त जरूरत है। इसको बुलाए बिना गुजर कहाँ ?···

जाने के वक्त उसने मेरा स्कूटर पर छोड़ने का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया, "दस निरापद रहेगी, क्योंकि परिवार या नाते-रिश्ते का कोई व्यक्ति उसकी सवारी नहीं करता। स्कूटर पर कहीं अरुण ने देख लिया, तो पता नहीं क्या हो जाए ! पूसा रोड,···रहने भी दो !" मैं मान गया, क्योंकि बात मानने लायक थी। बस पर बैठाकर, सी-ऑफ के बाद, वापस आ गया। किसी काम में मन न लगा। कॉउण्टर का नरम काम भी पहाड़ टालने जैसा सख्त लगा। फ़ुर्सत मिलते ही औंधे मुंह लेट गया,···"पारिवारिक मोह ने मेरा बल छीन लिया है ? ऐश्वर्य ने मेरा साहस नष्ट कर दिया है ?···दीप्ति ने मेरी लवलीन छीन ली है ?···क्या से क्या हो गया है ?···मैं परिस्थिति सागर का तृण-गुल्म बन गया हूं !···" कभी रोता, कभी सोता; कभी जगता, कभी ठगता;···'देखा', लवलीन कह रही है, "तुम मुझसे कट रहे हो !" उठ बैठा। रात के दो बजे थे। मन हुआ, इसी समय सेठजी के घर पर पहुंचूं, अरुण को चाकू का तरुण भोजन बना दूं और लवलीन को ले आऊँ।

मैंने उठकर दीवार पर एक मुक्का मारा, जिससे धमाका हुआ,··· और पहाड़ी चौकीदार के सड़क पर डंडा पटकने की आवाज़ सुनाई पड़ी···

मैं चुपचाप लेट गया।

पंजे में दर्द हो रहा था···

अनजाने ही नींद आ गई,···'देखा', लवलीन कह रही है, "तुम मुझसे किनाराकशी कर रहे हो !···" फिर उठ बैठा। छः बज चुके थे।···

नहा-धोकर मंगल से, बातचीत की। तब स्कूटर लेकर लवलीन के कॉलिज की ओर चल पड़ा, जो डिफेंस कॉलोनी में था। नजफ़गढ़ रोड से रिंग रोड,···तेज रफ्तार—"पता नहीं, मिले या न मिले ?" पता चला, लवलीन नहीं आई ! आशंका हुई। सेठजी के घर के लिए चल पड़ा। निजामुद्दीन तक पहुंचते-पहुंचते विचार उठा, क्यों न फ़ोन करके पूछ लूं— यदि किसी अन्य व्यक्ति ने उठाया, तो कॉलिज का चपरासी बन जाऊँगा !

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

बिजली के दफ्तर वाले पब्लिक कॉल से फोन मिलाया और सफल-मनोरथ रहा, "हैल्लो, लवलीन स्पीकिंग ! आप कौन बोल रहे हैं ?"

"मैं तुम्हारा पीटू…"

"नहीं, प्रीतू अर्थात् प्रियतम ! कभी पीटे बिना ही पीटू बन जाओगे ? काश, कभी तुम्हारे हाथों पिट पाती ! पिटे अंग चूम पाती !" आवाज भारी हो गई।

"आज कॉलिज नहीं गईं ?"

"क्या वहाँ फोन किया था ?"

"नहीं, गया था…"

"अभी कल तो मुलाक़ात…"

"मन नहीं माना !"

"तबीयत…"

"ख़राब है ?" स्वर में व्यग्रता थी।

"नहीं-नहीं, ठीकठाक हूं, लेकिन यूं ही कुछ…दिल…"

"मैं आ रहा हूं !"

"मेरी क़सम, तुम यहाँ कभी न आना ! मैं ख़ुद आ जाऊँगी—प्रीतू, मैं बिल्कुल ठीक हूँ; मैं बिल्कुल ठीक हूँ…"

"मेरी क़सम खाओगी, तभी मानूँगा…"

"तुम्हारी क़सम !"

"तो कॉलिज क्यों नहीं गईं ?"

"दिमाग़ पढ़ा सकने लायक़ न था—उस पर तुम छाए थे, तो 'जूलियस सीजर' में ब्रूटस का अंतर्द्वन्द्व कैसे पढ़ा पाती ? अपना द्वन्द्व पढ़ने में ब्रूटस का द्वन्द्व भूल गई ! बस, इत्ती-सी बात है,…एक्सक्यूज मी, अरुण इज़ कमिंग !"

मैं फ़ोन रखकर बाहर निकला।…

सवेरे से ही आसमान पर छाकर उसे सर्वतः आक्रांत करने वाले बादल अब घनघोर रूप से बरसने लगे थे। लेकिन मैं रुका नहीं। ख़ौफ़नाक रफ़्तार !…चलकर ख़ून के प्यासे इसी चाकू से अरुण का ख़ून कर दूं ! अब 'शंकर दीक्षित' से नहीं, 'पीटर' से ही काम चलेगा !…तभी सड़क

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

की नीचाई से, हे कवि, हे उपन्यासकार, शेर-मण्डल की ऊँचाई पर आप दीख पड़े,…और मेरे उद्भ्रान्त मस्तिष्क में एक विचित्र विचार उठा, "इस व्यक्ति पर अपने पूर्ववल तथा पूर्वसाहस का परीक्षण करूँगा—अमिश्रित और शुद्ध 'पीटर' वनकर, 'शंकर दीक्षित' को नेस्त-नावूद कर; जिससे यह विश्वास हो सके कि, चाहने पर, मैं अरुण को उसके तरुण-अरुण रक्त से स्नान करा सकता हूं…"

और मैं चिड़ियाघर के स्टैण्ड पर स्कूटर खड़ा कर शेर-मण्डल की ओर बढ़ा। जब आप ठीक-ठाक नज़र आने लगे, तब सोचा, कोई प्रकृति-प्रेमी नेता या लाला है, जिसे लूट-पीट कर देखूंगा कि मेरे अंदर मेरा लूटू-पीटू —पीटर—ज़िन्दा है या मुर्दा,…जो 'शंकर दीक्षित' के रूप मे समाप्त हो चुका है ?…

इसके वाद की कथा आप जानते हैं।…

मैं अरुण की घात में नहीं दौड़ा।…

मैं सेठजी का चिरकृतज्ञ हूँ।…

मैं लवलीन को प्यार करता हूँ।…

मैं दीप्ति की दीप्ति से प्रकाशित भी हूँ, परास्त भी।…

मैं माताजी का दास हूँ।…

मैं पिताजी का भक्त हूँ।…

आगे की कथा…???

८. पुनश्चः

इस कथा की पाण्डुलिपि की काट-छाँट के लिए क्षमा करें, क्योंकि मैंने नामों और स्थानों में आमूल-चूल परिवर्तन कर दिए हैं, जिसका कारण स्पष्ट है। इस सिलसिले में घण्टों खपाने पड़े। कृपया इसकी प्रति-लिपि करके इसे अग्नि को अर्पित करना न भूलें—प्रश्न विश्वास का है—'विष दे, पर विश्वास न दे'! पता नहीं, भावी क्या करे ? क्या कराए ? किधर ले जाए ?…परमात्मा ने जीवित रखा, कारागार से मुक्त रखा, मिलाया, तो आगे की कथा दिखाऊँगा—लिखूंगा—जरूर ! अच्छा, अल-विदा ! आमीन ! ! ख़ुदा हाफ़िज…! ! !

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman